अध्ययन के क्रम में इसे निम्नलिखित खण्डों में विभाजित कर देखने की जरूरत है —

खण्ड – I

* प्राक् ऐतिहासिक काल और आद्य ऐतिहासिक काल

i) पुरापाषाण काल
ii) मध्यपाषाण काल
iii) नव पाषाण काल
iv) हड़प्पा सभ्यता
v) ताम्रपाषाण काल
vi) महापाषाण काल

KD Job Updates
Deepak PHOTOSTAT
9310521834

इस खण्ड के अध्ययन की विधि—

① इस खण्ड की विशेषता है कि इस खण्ड से जुड़े हुए कालों के अध्ययन के लिए साहित्यिक साक्ष्य का उपलब्ध नहीं होना तथा हमारी पूरी तरह पुरातात्विक साक्ष्य पर निर्भरता। इसलिए इन कालों के अध्ययन में हमारे समक्ष सम्पूर्ण तस्वीर उभर कर नहीं आता परन्तु हम अध्ययन के क्रम में निम्न बिंदुओं पर विचार करते है।

② पुरातात्विक साक्ष्य हमें किसी काल विशेष की कहाँ

तक जानकारी दे पाता है तथा कहाँ यह मौन रह जाता है?

③ यह वह काल है जब भारत में जलवायु परिवर्तित हो रहा है या अधिक शुष्क हो रहा है इसलिए खेती की भूमि और चरागाह की भूमि विकसित हो रही है।

④ लोगों की उपकरणों की बनावट में भी अंतर आ रहा है जहाँ पहले बड़े और भारी उपकरण बनते थे वहीं अब छोटे और हल्के उपकरण बनने लगे इससे मानव की गतिशीलता बढ़ गयी।

⑤ धीरे-धीरे लोगों की बसावट में भी अंतर आने लगा था भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ क्षेत्रों में बस्तियों की संख्या कम हो रही थी वहीं कुछ अन्य क्षेत्रों में बस्तियों की संख्या बढ़ रही थी (मानचित्र पर स्थल देखना है)।

⑥ मानव पहले शिकारी और खाद्य संग्राहक था परन्तु कृषि और पशुपालन की शुरुआत के बाद मानव खाद्य उत्पादक बन गया और यहीं से इतिहास में बड़े परिवर्तन हैं।

⑦ बढ़ती हुयी खाद्य उपलब्धता के साथ लोगों के जीवन में अधिक अवकाश आया और फिर लोगों का

KD Job Updates

आकर्षण धर्म और कला की ओर बढ़ा।

⑥ सबसे बढ़कर भारत की पहली उन्नत और नगरीय सभ्यता हड़प्पा सभ्यता के रूप में इसीकाल में विकसित हुयी।

मार्क्सवादी इतिहासकार
↓
इरफान हबीब

Golden Crescent
↳ इस्राइल सीरिया
8000 ई.पू. खेती आरम्भ

मेहरगढ़
↳ प्रथम कृषि (IND)

चावल
↳ IND (ALD) (कोल्डिहवा)
थाईलैंड (मसाला)

इतिहास लेखन संबंधी विवाद

① भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि का आरम्भ जलवायु संबंधी कारण से हुआ अथवा जनसंख्या वृद्धि के कारण ?

② क्या नवपाषाण काल को नवपाषाण क्रांति की संज्ञा दी जा सकती है।?

③ क्या उत्तर पश्चिम भारत में कृषि का आरम्भ पश्चिम एशिया की देन है ?

④ क्या हड़प्पा सभ्यता के संस्थापक मेसोपोटामिया के लोग थे ?

⑤ क्या हड़प्पा सभ्यता को वैदिक आर्यों ने समाप्त किया ?

[M.Q.] पुरातात्विक अध्ययन सामग्रियों की सीमा के सन्दर्भ में नवपाषाण काल के लोगों के जीवन के विषय में हमें क्या ज्ञान प्राप्त होता है ?

[M.Q.] प्रमुख हड़प्पाई स्थल उत्तर-पश्चिम के अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र तथा लवणता वाले भू जल क्षेत्र में क्यों उदित हुए ?

KD Job Updates

खण्ड - 2

1. वैदिक काल (1500 ई० पू० — 600 ई० पू०)
2. बुद्ध काल (600 ई० पू० — 400 ई० पू०) / महाजनपद काल
3. मौर्यकाल (400 ई० पू० — 200 ई० पू०)
4. मौर्योत्तरकाल (200 ई० पू० — 300 ई०)
5. गुप्तकाल (300 ई० — 600 ई०)
6. गुप्तोत्तर काल (600 ई० — 750 ई०)
7. पूर्वमध्यकाल (750 ई० — 1200 ई०)

अध्ययन की विधि —

चूँकि इस काल की घटनाएँ भी 1 हजार- डेढ़ हजार वर्ष पहले घटित हुयी है इसलिए इन कालों के अध्ययन में भी अध्ययन सामग्री का विश्लेषण बहुत ही आवश्यक है हम चाहे किसी काल की उपलब्धियों का गुणगान करते है अथवा फिर किसी काल की सीमाओं को दर्शाते है परन्तु सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा होता है कि संबंधित काल को जानने का हमारे पास स्रोत किया है।

पहले खण्ड के अध्ययन में हमारे पास केवल पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध था परन्तु इसकाल में साहित्यिक सामग्रियाँ भी उपलब्ध हो गयी। देशी साहित्य

KD Job Updates

के साथ - साथ विदेशी साहित्य भी उपलब्ध है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह मिला हम काल विशेष के अध्ययन में सामाजिक संगठन, राजनीतिक संगठन, धर्म एवं विचारधारा के सन्दर्भ में विस्तार से जान सके परन्तु इसका एक नकारात्मक पक्ष है कि साहित्यिक सामग्रियों पर इतिहास की अधिक निर्भरता जबकि प्राचीन ग्रन्थों की प्रमाणिकता निश्चित नहीं है

इतिहास की तैयारी

इतिहास के अध्ययन का अर्थ है राजनीतिक आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में निरंतरता तथा परिवर्तनों के तत्वों को रेखांकित करना, जिन्हें हम तथ्य के रूप में देखते है वे महज एक दृष्टिकोण को सिद्ध करने के उदाहरण है।

परिवर्तनों के तत्वों को रेखांकित करने के लिए इतिहास को निम्नलिखित उपखंडों में विभाजित कर देखना आवश्यक है—

1. राजनीतिक
   - (a) राजनीतिक विस्तार
   - (b) प्रशासन
2. आर्थिक — कृषि शिल्प वाणिज्य व्यापार मुद्रा अर्थव्यवस्था एवं नगरीकरण।
3. सामाजिक – वर्ण एवं जाति, महिलाओं, शूद्रों एवं अछूतों की दशा।

KD Job Updates

4. सांस्कृतिक

(a) धर्म एवं दर्शन

(b) भाषा एवं साहित्य

(c) कला -

29/09/2018

KD Job Updates

DEEPAK PHOTOSTAT
9310521834

परिवर्तन के क्रम में समझने की जरूरत है—

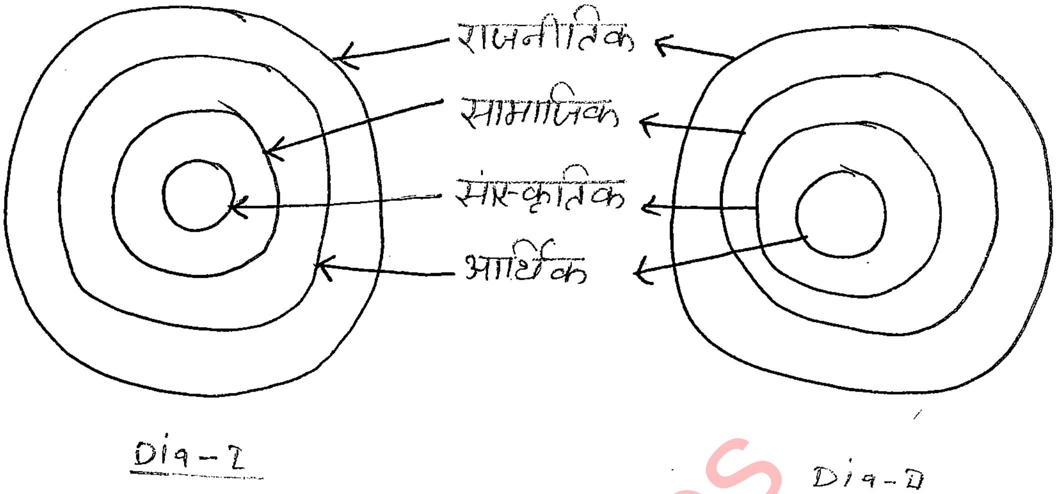

डायग्राम-1 → यह दर्शाता है कि—

a) परिवर्तन के क्रम में राजनीतिक परिवर्तन सबसे तीव्र होता है।
b) आर्थिक परिवर्तन उससे धीमा होता है।
c) सामाजिक परिवर्तन उससे भी धीमा होता है।
d) सांस्कृतिक परिवर्तन सबसे धीमा होता है।

डायग्राम-2 →

यह दर्शाता है कि परिवर्तन के क्रम में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबंध का एक दूसरे से गहरा संबंध होता है। अगर आर्थिक परिवर्तन राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवर्तन का रास्ता तैयार करता है तो बदले में राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक भी अपना आर्थिक कारक पर अपना प्रभाव छोड़ता है।

उदाहरण हेतु मध्य गंगा घाटी में कृषि अर्थव्यवस्था के प्रसार में बौद्ध पंथ के उद्भव का मार्ग प्रशस्त किया तो बौद्ध धर्म ने भी अर्थव्यवस्था पर अपने ढंग से प्रभाव छोड़ा।

KD Job Updates

डायग्राम नं॰ २ आधार पर मॉडल प्रश्न —

प्रश्न→ 6ठी सदी ई॰पू॰ में राज्य निर्माण, नगरीकरण तथा नवीन धार्मिक पंथों की उद्भव के अन्तर्संबंधों को रेखांकित कीजिए।

उत्तर→ भारतीय संस्कृति की मूलभूत संरचना जिसे हम विविधता में एकता के नाम से जानते हैं उसकी आधारभूत संरचना प्राचीन काल में निर्मित हुयी— निम्न कारकों ने इस प्रक्रिया को प्रोत्साहन दिया —

(1) भारत का भौगोलिक आकार और जलवायु संबंधी विविधता के कारण विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के रहन-सहन तथा जीवन पद्धति में अंतर उभर कर आया इसने सांस्कृतिक विविधता को जन्म दिया वस्तुतः भारत में चाहे कोई भी साम्राज्य हो वह सम्पूर्ण भारत पर नियंत्रण नहीं बना सका। परन्तु दूसरी तरफ इस एकता में विविधता का तत्व भी विद्यमान है पहाड़ों, मरुस्थल, और नदियों को पार कर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे और इनके बीच सांस्कृतिक परिवर्तन भी होता रहा। इसी प्रकार कोई भी साम्राज्य सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप (जिसे प्राचीन ग्रन्थों में जम्बू द्वीप कहा गया है) में नियंत्रण नहीं कर सका परंतु एक ऐसे आदर्श शासक, जो सम्पूर्ण जम्बू द्वीप पर नियंत्रण रख पाता, की परिकल्पना बनी रही और विभिन्न शासकों को आकर्षित करती रही ऐसे शासक की पहचान चक्रवर्ती शासक के रूप में की गई

KD Job Updates

(b) धर्म के क्षेत्र में आर्य एवं गैर- आर्य पंथों के बीच सम्मिश्रण देखा गया। आर्यों में यज्ञ की पद्धति प्रचलित थी जबकि गैर-आर्यों में भक्ति अवतारवाद तथा मूर्ति पूजा की। फिर दोनों के संयोग से 8वीं सदी में धर्म का वह रूप निखर कर आया जिसकी पहचान हिन्दू धर्म के रूप में हुयी।

आर्य + यज्ञ / गैर आर्य + भक्ति
(8वीं सदी) हिन्दू धर्म

(c) उसी प्रकार भारतीय उपमहाद्वीप शेषविश्व बाहर की दुनिया से कटा हुआ नहीं रहा है। भारतीय संस्कृति के विकास में देशी तत्वों और विदेशी तत्वों दोनों की भूमिका रही है। भारत का सम्पर्क मध्य-एशिया, पश्चिम-एशिया और दक्षिण- एशिया के साथ रहा और इन क्षेत्रों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ। इतना तक की भू-मध्यसागरीय क्षेत्रों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान के परिणामस्वरूप गांधार कला शैली का विकास हुआ।

देशी + विदेशी = गांधार कला शैली

(d) उत्तर और दक्षिण भारत के बीच भी सांस्कृतिक आदान-प्रदान चलता रहा। दक्षिण से आयी हुई भक्ति ने उत्तर-भारत के धर्म के स्वरूप को परिवर्तित किया। उसी प्रकार स्थापत्य की नागर शैली और दक्षिण की द्रविड़ शैली के दोनों के बीच सहयोग से स्थापत्य की एक नई शैली बेसर शैली का विकास हुआ। इस प्रकार भिन्न सांस्कृतिक तत्वों के मिश्रण से प्राचीन भारत की संस्कृति का आधार निर्मित हुआ। इसे विविधता में एकता का नाम दिया जाता है।

उत्तरभारत / दक्षिण भारत
↓ नागरशैली / ↓ भक्ति, स्थापत्य दक्षिण (द्रविड़)
→ बेसरशैली

KD Job Updates

KD Job Updates

01/10/2018

रोमिला थापर
साम्राज्यवादी इतिहास लेखिका (Anc.)

समिक की जरूरत
⇓
गालेशिया-शुआर्मीन
दशिणकोरिया
गुयाना
etc. (तमिल ↓ श्रीलंका)

H. Car
↳ what is history?

विचारधारा के प्रभाव से की गयी अलग-अलग व्याख्या
⇓
बौद्धिक पूर्वाग्रह

Veil = घूँघट

प्राचीन काल के अध्ययन में इतिहास लेखन के प्रचलित विभिन्न दृष्टिकोण —

(क) इतिहास लेखन से तात्पर्य है कि ऐतिहासिक ~~तथ्य~~ तथ्यों की भिन्न व्याख्याएँ। किसी भी सामाजिक विज्ञान में यह स्वभाविक होता है कि किसी तथ्य विशेष पर विद्वानों की समझ में अंतर हो। कई बार समझ में अंतर के साथ-साथ बौद्धिक पूर्वाग्रह भी इसके लिए उत्तरदायी हो जाता है।

एक प्रसिद्ध इतिहासकार (ई० एच० कार) ने अपनी पुस्तक What is history? में यह दर्शाने का प्रयास किया है कि ऐतिहासिक तथ्य एक होता है, परन्तु इस तथ्य को विद्वान अलग-अलग विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। प्राचीन भारत के इतिहास लेखन को उपर्युक्त सन्दर्भ में ही समझने की जरूरत है। इसमें कई तरह के दृष्टिकोण प्रचलित रहे हैं —

(1) साम्राज्यवादी दृष्टिकोण —

इसके अन्तर्गत भी दो अन्य प्रकार के दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं - प्राच्यवादी (orientalist) तथा

उपयोगितावादी (utilitarian)।

(a) प्राच्यवादी दृष्टिकोण —

विलियम जोंस
विलकिन्सन
कोलब्रुक
कनिंघम

प्राचीन भारत के इतिहास का आधुनिक अध्ययन 18वीं सदी में आरम्भ हुआ और इसमें पहल उन ब्रिटिश विद्वानों के द्वारा की गयी जो भारत में अधिकारी के रूप में काम कर रहे थे। इन विद्वानों में विलियम जोंस, हालहेड, विलकिन्सन, कोलब्रुक तथा आगे कनिंघम आदि का विवरण दिया जा सकता है। इन विद्वानों को प्राच्यवादी कहा गया क्योंकि इन्होंने भारतीय अतीत एवं संस्कृति में गहरी रूचि ली तथा भारतीय संस्कृति की उपलब्धियों को पश्चिमी विश्व में उद्घाटित किया। इन विद्वानों के प्रयास से यूरोप के अन्य क्षेत्रों के विद्वान भी भारतीय संस्कृति में रूचि लेने लगे और फिर यूरोप में प्राच्यवाद के अध्ययन के तीन महत्वपूर्ण केन्द्र उदित हुए — ब्रिटेन, जर्मनी एवं रूस। जर्मनी में बर्लिन की तुलना भारत में बनारस से की जाने लगी और एक जर्मन प्राच्यवादी मैक्समूलर ने भारत की समस के बिना भी उसने भारत पर इतना आधिकारिक

प्राच्यवादी केन्द्र
- ब्रिटेन
- जर्मनी
- रूस

मैक्समूलर - जर्मनी
↓
मार्क्स + मैक्सवेबर

KD Job Updates

तौर पर लिख दिया जैसे की आगे मार्क्स एवं मैक्सेबेवर ने किया था।

ब्रिटिश प्राच्यवादियों के लेखन के औपनिवेशिक उद्देश्य —

(i) भारतीय अतीत एवं परम्परा का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात ब्रिटिश हित में भारत पर बेहतर ढंग से शासन किया जा सकता था।

(ii) वे ब्रिटिश शासनों को भारत में वैधता प्रदान करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने यह आधार बनाया कि ब्रिटिश ही भारतीयों को उनके प्राचीन गौरव से परिचित करा सके है।

योगदान —

(i) विलियम जोंस ने 1784 एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की आगे बम्बई एशियाटिक सोसायटी और फिर बंगाल एशियाटिक सोसायटी की स्थापना हुयी। इन संस्थाओं के द्वारा भारत के प्राचीन ग्रन्थों की खोज हुयी और इनमें से कुछ का यूरोपीय भाषाओं में भी अनुवाद हुआ। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर प्राचीन भारत के इतिहास को समझने का प्रयास किया गया।

अभिज्ञान शाकुंतलम् का पहली काव्य का अनुवाद

KD Job Updates

सिक्के अभिलेखों व स्मारकों का संग्रह
↓
पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग (1871)
↓
कनिंघम

(ii) न केवल साहित्यिक ग्रन्थों का बल्कि पुरातत्व के महत्व को उद्घाटित करने का श्रेय भी प्रात्यवादियों को दिया जा सकता है। 1871 में पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग का गठन हुआ और इसके अध्यक्ष कनिंघम बनाए गए। इस विभाग ने सिक्के, अभिलेख व स्मारक का संग्रह एवं अध्ययन आरम्भ किया। इसलिए कनिंघम महोदय को भारतीय पुरातत्व का जनक माना जाता है।

प्राचीन मुद्रा
↓
आहत मुद्रा — चांदी, तांबा

(iii) ब्रिटिश के द्वारा ही जुलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया की स्थापना की गयी तथा इस विभाग ने आदि मानव के सम्बन्ध में खोज आरम्भ की। इसी क्रम में राबर्ट ब्रुसफुट नामक विद्वान ने जब मद्रास के निकट पल्लवरम् नामक स्थान से जब पत्थर का एक हस्त कुठार (कुल्हाड़ी) खोज निकाला तो फिर भारत में पूर्व ऐतिहासिक काल की सम्पूर्ण समझ ही बदल गयी।

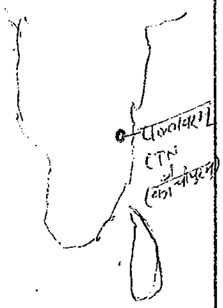

इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता 1924 में भारत की पहली नगरीय सभ्यता का उद्घाटन पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग ने ही किया था।

KD Job Updates

सीमाएँ —

(i) इन विद्वानों ने प्राचीन ग्रन्थों का उद्घाटन तो अवश्य किया परन्तु उन ग्रन्थों के अध्ययन विश्लेषण में ब्राह्मणों का सहयोग लिया। इस कारण प्राचीन भारत का आरम्भिक इतिहास लेखन ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण से परिचालित हो गया।

(ii) फिर संस्कृति के समानांतर लोकभाषा में लिखित ग्रन्थ पालि, प्राकृत में रुचि नहीं दिखाई गयी।

(iii) इन विद्वानों का यूरो-केन्द्रित दृष्टिकोण था अर्थात् इन्होंने भारतीय समाज के मूल्यांकन में यूरोपीय मानदण्ड को अपनाने का प्रयास किया।

(iv) इन्होंने बाहरी विश्व में भारत के सन्दर्भ में अनेक भ्रम फैलाए यथा —

(a) उन्होंने भारत को संतों, सँपेरों और मदारियों का देश घोषित करने का प्रयास किया।

(b) उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि भारतीय संस्कृति का मूल तत्व धर्म है, भारतीय सदा धर्म एवं अध्यात्म में ही डूबे रहे हैं।

मैक्समूलर ने तो यहाँ तक कह डाला कि "जहाँ यूनानियों के लिए जीवन उमंग एवं वास्तविकता थी वहीं भारतीयों के लिए माया।"

अलबरूनी
|
ब्रिटिश विद्वान
महमूद गजनवी के साथ भारत आया।

मैक्समूलर
"यूनानियों के लिए जीवन जहाँ उमंग एवं वास्तविकता थी वहीं भारतीयों के लिए माया"

KD Job Updates

(b) उपयोगितावादी दृष्टिकोण -

19वीं सदी के आरम्भिक दशकों तक ब्रिटेन में विद्वानों का एक नया वर्ग उत्पन्न हुआ इस वर्ग के विद्वानों को उपयोगितावादी कहा गया। इन विद्वानों का दृष्टिकोण प्राच्यवादियों से अलग था। इनकी निम्नलिखित विशेषताएँ थी—

(i) जहाँ प्राच्यवादियों ने भारतीय अतीत और संस्कृति का गुणगान किया था, वहीं उपयोगितावादी भारतीय अतीत और संस्कृति को पतनशील मानते थे तथा ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भारतीय समाज में बल पूर्वक सुधार लाने की वकालत करते थे।

(ii) उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि प्राचीन भारत के लोग राज्य एवं राजनीतिक संस्थाओं का विकास नहीं कर सके तथा वे दण्डे के बल पर ही (शासित) विकसित होते रहे हैं। सर्वप्रथम उपयोगितावादी चिंतक जेम्स मिल ने 'प्राच्य निरंकुशता (ईरान से पूरब जो भी राज्य है वे प्राचीनकाल से ही निरंकुश शासकों के द्वारा ही शासित होते रहे हैं) की अवधारणा' दी। इसने आगे चल कर मार्क्स के द्वारा प्रतिपादित 'एशियाई उत्पादन प्रणाली' की अवधारणा

सामुदायिक स्वामित्व
↑
एशियाई उत्पादन प्रणाली
↓
किसान एवं बुनकरों का राजाओं के बीच सामंजस्य से उत्पादन। नौकरशाही
↓
→ सिंचाई आदि लवणकारी कार्यों पर राजा का शासन होता था
↓
परिवर्तन नहीं हो सका।

KD Job Updates

को आधार प्रदान किया।

(iii) जेम्स मिल ने भारत का प्रथम इतिहास लिखा। यह इतिहास ग्रन्थ 19वीं सदी के आरम्भ में अस्तित्व में आया। इसे हम उपलब्धि के रूप में देख सकते है, परन्तु इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी सीमा थी इतिहास के विभिन्न कालों का नामाकरण। ऐसा प्रतीत होता है कि सोची समझी योजना के तहत भारत के इतिहास की साम्प्रदायिक व्याख्या की गयी और इसे हिन्दू काल, मुस्लिम काल और ब्रिटिश काल के रूप में बताया /बांटा गया।

सिन्धु = हिन्दु
⇓
हिन्दु शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम अरबियों ने किया
⇓
मूल रूप से ब्रिटिश न कहा।

परन्तु निम्नलिखित आधार पर इस नामाकरण का खण्डन किया जाता है —

(1) <u>हिन्दू काल क्यों नहीं? —</u>

(a) प्राचीन काल के लोग स्वयं को हिन्दू नहीं कहते थे बल्कि 8वीं सदी में अरब वालों ने सिन्धु प्रदेश के आसपास को निवास करने वाले लोगों के लिए सिंधु शब्द का प्रयोग किया था फिर सिन्धु शब्द से 'हिन्दू' शब्द चल निकला।

(b) प्राय: हिन्दू काल जैसा नामाकरण कहीं न कहीं ब्राह्मण धर्म को केन्द्र में रखकर किया गया है

सच्चर कमीशन
|
दलित वर्ग के
उत्थान हेतु

परन्तु हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि प्राचीन समय में ब्राह्मण धर्म के विरुद्ध बौद्ध एवं जैन पंथ जैसे विरोधी तत्व भी रहे थे।

② मुस्लिम काल क्यों नहीं ?–

ⓐ इतिहास बहुसंख्यक प्रजा से बनता है न कि अल्पसंख्यक शासक वर्ग से।

ⓑ जहाँ तक शासक वर्ग का सवाल है तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि मुस्लिम शासकों के समानांतर हिन्दू शासक भी शासन करते रहे थे।

ⓒ भारत में इस्लामी शासन की स्थापना किसी एक काल में नहीं हुयी थी बल्कि अलग-अलग कालों में हुयी थी।

मार्क्स
|
भारत में परिवर्तन के गुंजाइश नहीं बाह्य शक्ति ही करेगा
|
निरंकुश शासन
स्वावलम्बी कृषक
ग्रामीण परिवेश
||
कृषक मिल-जुल कर रहते थे।

③ ब्रिटिश काल क्यों नहीं ?–

ⓐ अगर धर्म विभाजन का आधार था तो ब्रिटिश शब्द के बजाए ईसाई काल कहना ज्यादा उचित।

ⓑ ब्रिटिश भारतीय समाज का हिस्सा कभी नहीं हो सके वे दूरवर्ती शोषक ही बने रहे।

मैक्सवेबर
||
सीधे पूंजीवाद आएगा
सामंतवाद नहीं आएगा।
यूरोप में सामंतवाद → पूंजी → समाज
यह भी परिवर्तन नहीं की गुण को बताता है
आपके धर्म में तार्किक सीमा नहीं है
... दृष्टिकोण

उपयोगितावादी चिंतकों का औपनिवेशिक उद्देश्य–

ये चिंतक औद्योगिक क्रांति के उपज थे और भारत का विकास ब्रिटिश वस्तुओं के बाजार के रूप में करना चाहते थे। इसलिए वे भारत में सुधार एवं परिवर्तन

KD Job Updates

राम कृष्ण ~~परमहंस~~ ↳ वेदांत की व्याख्या

03/10/2018

लाना और पाश्चिमी संस्कृति को फैलाना चाहते थे ताकि भारत का आकर्षण ब्रिटिश वस्तुओं की तरफ बढ़े।

· भारत के सन्दर्भ में मार्क्स के विचार—

मार्क्स ने एशियाई समाज को यूरोपीय समाज से पृथक करते हुए एक एशियाई उत्पादन प्रणाली की अवधारणा दी। इस अवधारणा के अनुसार एशियाई समाज एक परिवर्तनहीन समाज ~~था~~ है क्योंकि यूरोपीय समाज की तरह यहाँ वर्ग संघर्ष जैसी चीज नहीं है, यहाँ ऊपर के स्तर पर निरंकुश शासक है जो एक सशक्त नौकरशाही तथा सिंचाई प्रणाली पर अपने नियंत्रण के आधार पर उत्पादन अधिशेष अपने पक्ष में खींच लेता है और किसानों के पास उतना ही बच जाता है जिसमें वह अपना गुजर-बसर कर सके। एशिया में भूमि पर निजी स्वामित्व नहीं था वरन् सामुदायिक स्वामित्व की अवधारणा प्रचलित थी इसे मार्क्स ने प्रारम्भिक समाजवाद का नाम दिया। मार्क्सानुसार यह पद्धति सदियों से चली आ रही थी।

KD Job Updates

(मार्क्स को भारतीय अथवा एशियाई समाज की समझ नहीं थी आगे उसके विचार को भारत में मार्क्सवादी विद्वानों के द्वारा ही चुनौती मिली)

मैक्सवेबर के विचार —

बौद्ध जैन धर्म
आर्थिक व व्यापार
पशुहत्या परहेज
कृषि में work
महाजनी साहूकारी प्रणाली

जर्मन समाजशास्त्री मैक्सवेबर ने भारत में परिवर्तन के मार्ग में एक बड़ी बाधा धर्म एवं जाति व्यवस्था को माना और पूँजीवाद के विकास में इसे एक बाधा के रूप में देखा। इसके अनुसार भारत के किसी भी धार्मिक पंथ में चाहे वह ब्राह्मण पंथ हो या बौद्ध पंथ या जैन पंथ अथवा इस्लाम किसी में भी वह आर्थिक तर्कशीलता नहीं थी जो यूरोप में प्रोटेस्टेण्ट पंथ में रहा था।

(परंतु आगे मार्क्सवादी लेखकों ने इस अवधारणा को अस्वीकार करते हुए यह दर्शाया कि प्राचीन काल जैन एवं बौद्ध पंथ ने नगरीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन दिया था)

KD Job Updates

(२) राष्ट्रवादी दृष्टिकोण

19वीं सदी के अंत में तथा 20वीं सदी के आरम्भ में भारतीय बुद्धिजीवियों का एक समूह भी इतिहास लेखन की ओर आकर्षित हुआ।
दो कारकों ने इनके दृष्टिकोण को प्रेरित किया- प्रथम इनमें से कुछ राष्ट्रीय आंदोलन के उपज थे, दूसरे ब्रिटिश इतिहासकारों के पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण के विरुद्ध इनके मन में प्रतिक्रिया थी।

राष्ट्रवादी समूह के विद्वानों में हम R.C. मजूमदार, प्रो॰ हेमचन्द्र राय चौधरी, आर॰ जी॰ भण्डारकर, के॰ पी॰ जायसवाल, ए॰ एस॰ अल्तेकर आदि की गणना कर सकते हैं।

योगदान -

(i) इन विद्वानों ने जेम्समिल के नामाकरण को अस्वीकार करते हुए भारतीय इतिहास को ~~हिन्दूकाल~~, प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल का नाम दिया।

उपयोगितावादी भारतीय राजनीतिक प्रशासन नहीं बल्कि दण्ड के बल पर शासित रहे हैं।

(ii) इन विद्वानों ने उपयोगितावादी लेखकों के विचार को अस्वीकार करते हुए यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि प्राचीन काल में भी भारतीयों ने राज्य और

प्रशासन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ स्थापित की थी इतना ही नहीं इन्होंने शासन व्यवस्था के रूप में गणतंत्र का भी विकास कर लिया था।

(iii) इन्होंने प्राचीन काल के कुछ कालों पर विशेष शोध करते हुए उस काल की राजनीतिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक उपलब्धियों को उद्घाटित किया।

(iv) इन विद्वानों के द्वारा ही प्राचीन ग्रन्थों की खोज एवं अन्वेषण किया गया। उदाहरण के लिए आर० शर्मा शास्त्री ने 1905 में कौटिल्य के अर्थशास्त्र की खोज की।

राजनीतिक पर्यायवाद का जनक
↓
मैकियावेली
राजनीतिक राजा — प्रजा
दोनों अपने-अपने भाग्य / स्वार्थ से प्रेरित होते हैं

सीमाएँ —

(i) इन विद्वानों के द्वारा प्राचीन भारत के कुछ कालों की उपलब्धियों को अन आलोचनात्मक ढंग से उद्घाटित किया गया और उन कालों को स्वर्ण युग के रूप में देखा गया।

(ii) इन विद्वानों के द्वारा राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन पर विशेष बल दिया गया वहीं आर्थिक, सामाजिक इतिहास को अपेक्षाकृत नजर अन्दाज किया गया।

(iii) इन विद्वानों ने भी अपने अध्ययन में संस्कृत ग्रन्थों को ही महत्त्व दिया वहीं लोक भाषा पालि एवं प्राकृत में

KD Job Updates

लिखित ग्रन्थों को नजरअन्दाज किया। इस कारण जनसामान्य का इतिहास महत्व नहीं पा सका।

(iv) अंत में यद्यपि इन्होंने जेम्स मिल के नामकरण को तो अस्वीकार कर दिया परन्तु इसके काल विभाजन के आधार को बने रहने दिया। उदाहरण हेतु इन्होंने भी भारत में मध्यकाल का आरम्भ मुस्लिम शासन की स्थापना के साथ माना।

(3) मार्क्सवादी दृष्टिकोण :-

इस दृष्टिकोण को लेकर चलने वाले लेखकों ने इतिहास में परिवर्तन की व्याख्या में मार्क्स द्वारा प्रतिपादित वर्ग संघर्ष की अवधारणा को महत्व दिया इसलिए इन्हें मार्क्सवादी कहा गया।

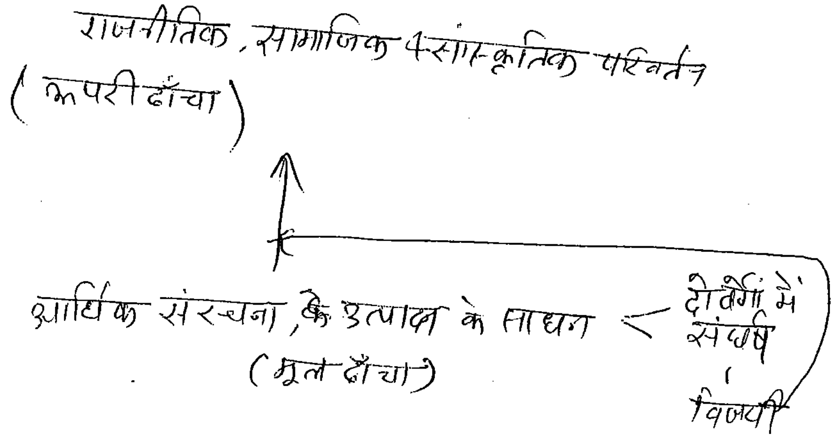

KD Job Updates

D.D. कौशाम्बी मार्क्सवादी इतिहास लेखन की पहल प्रारम्भ की।

प्राचीन काल में मार्क्सवादी इतिहास लेखन की आधारशिला डी॰ डी॰ कौशाम्बी नामक विद्वान ने रखी जिन्होंने 'An Introduction to the study of Indian history' लिखी। [(1956) में।]. आगे आर॰ एस॰ शर्मा, डी॰ एन॰ झा तथा बी॰ एन॰ एस॰ यादव तथा कई अन्य इस परंपरा में लिखते रहे।

विशेषता —

मार्क्सवादी लेखकों ने इतिहास की एक भिन्न व्याख्या प्रस्तुत की। इन्होंने इतिहास में आर्थिक ढांचा अथवा उत्पादन के साधन को विशेष महत्व देते हुए दर्शाया की यही मूल ढाँचा ही सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक ढाँचा को ही परिवर्तित करता है। बदले में राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक संरचना भी आर्थिक ढांचों को प्रभावित करता है। दूसरे शब्दों में ऊपरी ढाँचा भी मूल ढांचा को प्रभावित करता है। अतः उनके विचार में मूल ढाँचे व ऊपरी ढाँचे के मध्य परस्पर संबंधों के आधार पर इतिहास की व्याख्या की जानी चाहिए।

KD Job Updates

योगदान -

(1) अब इतिहास का अध्ययन राजवंशों से आगे बढ़कर आर्थिक, सामाजिक संरचना के अध्ययन की ओर उन्मुख हुआ तथा वर्णनात्मक से विश्लेषणपरक बन गया।

(2) इन विद्वानों ने जेम्स मिल के काल विभाजन को चुनौती देते हुए यह स्थापित करने का प्रयास किया कि मध्यकाल के आगमन के लिए हमें मुहम्मद गोरी के आक्रमण की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए बल्कि हमें आर्थिक सामाजिक ढाँचे की उन कमजोरियों का अध्ययन करना चाहिए जिन कारणों से मोहम्मद गोरी का आक्रमण सफल हुआ और वह कारण था सामंतवाद का उद्भव। इनके अनुसार भारत में मध्यकाल का आरम्भ सामंतवाद के उद्भव के साथ ही माना जाना चाहिए।

(अगर वर्तमान में इतिहास के पाठ्यक्रम में 750 से 1200 ई० के काल को एक पृथक काल करार देते हुए उसे पूर्व मध्यकाल की संज्ञा दी गयी है यह मार्क्सवादी इतिहास लेखकों के

KD Job Updates

प्रभाव में।

Page No. 8, 9, 10, 11, 12

04/10/2018

1679 → जजियाकर (औरंगजेब) उलेमाओं के विरोध पर बिजापुर (mus) पर आक्रमण

③ मार्क्सवादी लेखकों ने संस्कृत ग्रन्थों के समानान्तर पालि एवं प्राकृत ग्रन्थों के महत्व को स्थापित किया। इस प्रकार इतिहास के अध्ययन स्रोत का आधार व्यापक हुआ और अभिजात्य वर्ग के समानांतर जनसामान्य के जीवन के अध्ययन पर भी बल दिया गया।

④ सबसे बढ़कर अब अध्ययन स्रोत का भी आलोचनात्मक परीक्षण किया जाने लगा अर्थात् किसी भी लेखक की रचना के अध्ययन से पूर्व यह जानना आवश्यक हो गया कि इस लेखक का संबंधित शासक से क्या संबंध था तभी उनके लेखन के पूर्वाग्रह को समझा जा सकता था।

सीमाएँ :-

① मार्क्सवादी लेखकों ने अपने लेखन में आर्थिक विभाजन को विशेष महत्व दिया जबकि नस्लीय विभाजन, सांस्कृतिक विभाजन, धार्मिक विभाजन आदि को अपेक्षाकृत नजरअन्दाज कर दिया।

KD Job Updates

(2) मार्क्सवादी इतिहास लेखकों ने कला और साहित्य का स्वतंत्र मूल्यांकन न करके उन्हें भी आर्थिक संबंधों को प्रतिबिम्बित करने का माध्यम बनाया और उनमें भी वर्ग संघर्ष खोजने लगे।

(3) उनकी सीमा को दर्शाते हुए कुछ पुरातत्व शास्त्री कहते हैं इन विद्वानों ने साहित्यिक अध्ययन स्त्रोत को विशेष महत्व दिया है वहीं पुरातात्विक स्त्रोत को अपेक्षाकृत नजर अन्दाज किया है। ऐसा इसलिए कि साहित्यिक कृतियों के आधार पर वर्ग संघर्ष को दिखाना आसान था

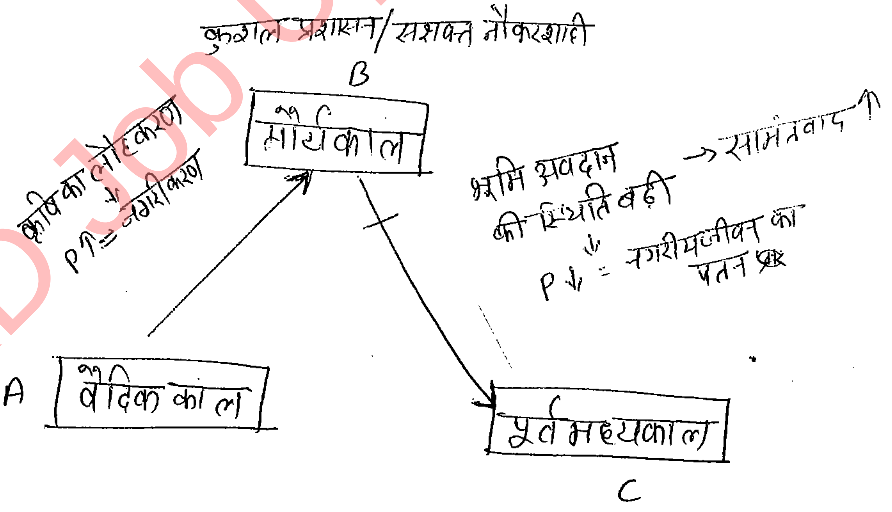

(4) संशोधन-वादी इतिहास लेखन =

आगामी कुछ दशकों मे मार्क्सवादी इतिहास लेखन को चुनौती मिली है और उनकी कुछ मान्यताओं को बदलने का प्रयास किया गया है। इसे निम्न रूप मे

② लैंगिक विभाजन जैसे कारक को इतिहास के अध्ययन के क्रम में विशेष रूप से समझने का प्रयास किया जा रहा है।

③ कमजोर वर्ग यथा जनजाति, श्रमिक तथा अछूतों की दशा को इतिहास के अध्ययन के क्रम में समझने का प्रयास किया जा रहा है।

④ भारत का वह भू-भाग जिसका अध्ययन अब तक तिरस्कृत रहा है उसने इतिहासकारों का ध्यान आकर्षित किया है तथा इतिहासकार उन क्षेत्रों के इतिहास पर विशेष रूप से शोध करने पर बल दे रहे हैं। उदाहरण के लिए उत्तरी-पूर्वी भारत।

⑤ हाल ही में कुछ पुरातत्व विदों ने यह मुद्दा उठाया है कि भारत में वर्तमान इतिहास लेखन पर अध्ययन स्त्रोत के रूप में साहित्यिक ग्रन्थों का अत्यधिक प्रभाव रहा है इसलिए कि भारतीय इतिहास का पुनर्निरीक्षण पुरातात्विक सामग्रियों के आधार पर करने की जरूरत है।

KD Job Updates

(PGW) culture

New Classical NCERT Ancient

प्राचीन काल के इतिहास के अध्ययन के स्त्रोत

प्राचीन काल के अध्ययन में अध्ययन स्त्रोत की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। इस काल के अध्ययन के क्रम मे हम हजारों वर्ष पीछे जाकर यात्रा करते है और सत्य को पता लगाने का प्रयास करते हैं। इसलिए हमारे लिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम अध्ययन के लिए किस प्रकार की अध्ययन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं तथा उनको जानने का हमारे पास कौन-सा स्त्रोत है। यहाँ इतिहासकार को जासूस अथवा गुप्तचर की भूमिका निभानी होती है तथा अध्ययन स्त्रोतों का परीक्षण कर सत्य तक पहुँचने का प्रयास करना होता है।

अध्ययन सामग्रियों को दो भागों मे बाँटा जा सकता है — पुरातात्विक और साहित्यिक।

पुरातात्विक सामग्रियो के अन्तर्गत बर्तन, उपकरण, औजार, मुद्रा, अभिलेख, स्मारक आदि को रखा

जाता है और साहित्यिक स्त्रोत के आधार पर प्राचीन काल की पांडुलिपियाँ और ग्रन्थ को लिया जा सकता है। फिर भी पुरातात्विक और साहित्यिक सामग्रियों के बीच एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींचना कठिन है। वस्तुतः कुछ पुरातात्विक सामग्रियाँ ऐसी होती है जो साहित्यिक महत्व की बन जाती है उदाहरण हेतु अभिलेखों का अध्ययन। वस्तुतः अभिलेखों के अध्ययन हेतु भाषा-विज्ञान की समझ की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार कुछ साहित्यिक सामग्रियाँ भी पुरातात्विक महत्व की बन जाती है उदाहरण हेतु कुछ प्राचीन ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ पुरातात्विक खुदाई के माध्यम से प्राप्त हुयी है।

प्राथमिक स्त्रोत एवं द्वितीयक स्त्रोत में अंतर :-

प्राथमिक स्त्रोत सामग्री वह होती है जो उस काल से संबंधित होती है जिसपर इतिहासकार लिखता है वहीं द्वितीयक स्त्रोत वह है जब संबंधित इतिहासकार को लेखन का आधार बना कर आगे का कोई दूसरा इतिहासकार लिखता है

उदाहरण के लिए अगर हड़प्पा सभ्यता से जुड़े हुए मृदभाण्ड (Pottery), मुहर, तथा कलाकृतियों को आधार बनाकर ब्रिटिश विद्वान गार्डन चाइल्ड इस काल पर लिखता है तो फिर गार्डन चाइल्ड के लेखन में प्राथमिक स्त्रोत का उपयोग माना जाएगा किंतु अगर गार्डन चाइल्ड के लेखन को आधार बनाकर आगे का कोई इतिहासकार लिखता है तो इसे द्वितीयक स्त्रोत के उपयोग के रूप में देखा जाएगा। उसी प्रकार अगर बाणभट्ट के लेखन को आधार बनाकर हर्षवर्धन के काल पर कोई इतिहासकर लिखता है तो उसे प्राथमिक स्त्रोत माना जाएगा परंतु उस इतिहासकार के विवरण को आधार बनाकर आगे को कोई इतिहासकार लिखता है तो उसे द्वितीयक स्त्रोत के रूप में देखा जाएगा।

प्राथमिक स्त्रोत अनुगढ़ एवं अपरिष्कृत होता है वहीं द्वितीयक स्त्रोत कहीं अधिक विकसित एवं परिष्कृत होता है। एक शोध शास्त्री के लिए प्राथमिक स्त्रोत तथा द्वितीयक स्त्रोत दोनों का अपना अलग महत्व है। अर्थात प्राथमिक स्त्रोत संबंधित

KD Job Updates

शोध स्त्रोत शास्त्री को किसी काल विशेष का आरम्भिक अनुभव प्राप्त कराता है वहीं द्वितीयक स्त्रोत उससे संबंधित काल पर एक दृष्टिकोण प्रदान कराता है जिसका आलोचनात्मक परीक्षण कर वह आगे बढ़ सकता है।

सुमित सरकार
↓
(1942 आंदोलन स्वतः स्फूर्ति था)
↓
शेखर उपाध्याय ने आलोचनात्मक परीक्षण किया
नहीं था

05/10/2018

अध्ययन सामग्री के रूप में साहित्यिक ग्रन्थों के महत्व का आलोचनात्मक परीक्षण किया —

अध्ययन स्त्रोत के रूप में साहित्यिक ग्रन्थों का व्यापक महत्त्व रहा है इसकी सबल पक्ष है इसके द्वारा दिए गए विवरणों की व्यापकता एवं प्रचुरता, फिर भी अध्ययन स्त्रोत के रूप में इसका उपयोग करने के क्रम में थोड़ी सावधानी भी बरतने की जरूरत है।

मनुस्मृति (उच्च जाति)
↓
कठोर वर्णव्यवस्था
महिलाओं को पुरुषों के अधीन
↓
अन्तर्जातीय विवाह पर रोक

जब से हमें अध्ययन स्त्रोत के रूप में साहित्यिक ग्रन्थ प्राप्त होने लगे तब से हमें काल विशेष की व्यापक सूचना मिलने लगी आज हम हड़प्पा सभ्यता की तुलना में वैदिक सभ्यता के विषय मे कहीं अधिक जानसके है वस्तुतः पुरातात्विक साक्ष्य से हमें किसी समुदाय के सामाजिक संगठन,

राजनीतिक संगठन, दर्शन तथा विचारधारा आदि की प्रचुर सूचनाएँ नहीं मिल पाती थी जबकि साहित्यिक साक्ष्य से हमें ये सूचनाएँ मिलने लगी।

परंतु तस्वीर का एक दूसरा पक्ष भी है जिसे नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है अध्ययन स्त्रोत के रूप में साहित्यिक ग्रन्थों की निम्न समस्याएँ रही है —

(i) इन ग्रन्थों की प्रामाणिकता का अभाव अर्थात् यह पता करना कठिन है कि किस ग्रन्थ की रचना किस काल में हुयी उदाहरण के लिए रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य लगभग 1000 वर्षों में संकलित हुए उसी प्रकार लेखक का नाम और लेखन का ज्ञात न होना भी समस्या उत्पन्न करती है इसके अतिरिक्त साहित्यिक ग्रन्थ लेखक पूर्वाग्रह से नहीं बचपाते बौद्ध लेखकों ने बौद्ध दृष्टिकोण से तो जैन लेखको ने जैन दृष्टि से अंत में यह ग्रन्थ विशुद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं है बल्कि इनमें इतिहास और मिथक दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

यही वजह है कि पुरातात्विक साक्ष्यों से परिपुष्टि किए बिना साहित्यिक ग्रन्थों के द्वारा प्रदत्त सूचनाओं को

KD Job Updates

लेना थोड़ा जोखिम का काम हो जाता है।

भाषा एवं साहित्य में संबंध—

भाषा एवं साहित्य में अभिन्न संबंध है साहित्य अगर भाव है तो भाषा उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम। [यद्यपि यह सही है कि भाषा के बिना भी साहित्य की उत्पत्ति हो सकती है परन्तु लिपि के बिना नहीं]

साहित्य अथवा भाव का कहाँ तक विस्तार होगा तथा किस समुदाय में उसे स्वीकृति मिलेगी वह इस बात पर निर्भर है कि उसे किस भाषा में व्यक्त किया गया है अगर वह मानक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होता है तो उसे विद्वानों के समाज में स्वीकृति मिलती है अगर वह लोक भाषा में व्यक्त होता है तो फिर वह जन-सामान्य के बीच स्वीकृति पाता है। भाव भाषा से पहले आता है परंतु वह अभिव्यक्ति के लिए भाषा पर निर्भर होता है।

भाषा का विकास—

उत्तर भारत और दक्षिण भारत के संबंध में हम प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक

KD Job Updates

भाषा के विकास को क्रमशः आर्य समूह की भाषा और द्रविड़ समूह की भाषा के रूप में विभाजित करके देख सकते है।

आर्य समूह की भाषाओं का विकास –

यहाँ पर वैदिक संस्कृत

⇓

लौकिक संस्कृत

⇓

क्षेत्रीय रूप

" " प्रथम प्राकृत (पालि) " " "

⇓

" " द्वितीय प्राकृत (प्राकृत) " " "

⇓

" " तृतीयक प्राकृत (अपभ्रंश) " " "

⇓

हिन्दी, गुजराती, मराठी, बँगला, उड़िया, असमिया etc.

(हिन्दी के अन्तर्गत 17 बोलियाँ थी जिनमें अवधी, ब्रजभाषा और खड़ी बोली को विशेष लोकप्रियता मिली)

⇓

खड़ी बोली हिन्दी स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्र भाषा एवं राज भाषा के रूप में स्थापित।

KD Job Updates

भाषा के विकास का एक लम्बा इतिहास रहा है संस्कृत से लेकर आधुनिक आर्य भाषाओं तक भाषा के विकास की निम्न प्रवृत्तियाँ रहीं थी—

(I) अभिजात्य भाषा से लोक भाषा की ओर—

जब किसी भाषा की लोकप्रियता बढ़ने लगी तो उसके समर्थन में व्याकरण की रचना कर उसे मानक भाषा का रूप दिया गया अतः अब वह विद्वत समाज की भाषा बन गयी क्योंकि जन-सामान्य व्याकरण के नियमों को नहीं समझ सकते थे अतः वे उस भाषा से कटने लगे तथा उस भाषा के समानान्तर उन्होंने एक लोकभाषा विकसित कर ली फिर लोक भाषा का व्यापक प्रसार हुआ जबकि मानक भाषा थोड़े ही लोगों में सिमट कर रह गई परन्तु एक ऐसा समय आया कि लोकभाषा के प्रसार को देखते हुए उसे भी मानक भाषा का रूप दे दिया गया फिर उपर्युक्त प्रक्रिया के अनुकूल इसके समानान्तर एक लोकभाषा विकसित हो गयी इसी प्रकार की प्रक्रिया का परिणाम था संस्कृत

KD Job Updates

से लेकर हिन्दी तक भाषा का विकास।

(२) विकास क्रम में भाषा सरलीकरण की ओर उन्मुख

:- भाषा की प्रवृत्ती रही है धीरे - धीरे सरलता की ओर उन्मुख होना इसी कारण इसे जनसामान्य की स्वीकृति मिलती रहती है संस्कृत भाषा अपेक्षाकृत कठिन थी यह एक संयोगात्मक भाषा थी इनमें 8 विभक्तियाँ होती थी और तीन वचन होते थे इसलिए प्रत्येक शब्द के 24 रूप बनते थे परंतु आगे चलकर भाषा संयोगात्मक से वियोगात्मक होने लगी विभक्तियाँ घिसकर टूटने लगी इससे भाषा में अव्यवस्था आने लगी तो फिर विभक्तियों की क्षतिपूर्ति के लिए परसर्गों का विकास होने लगा हिन्दी तक आकर वाक्य में कारक के आठ चिन्ह प्रकट हो गए इस प्रकार भाषा वियोगात्मक और सरल होगयी

द्रविड़ समूह की भाषा —

- तमिल (TN + South A.P)
- कन्नड़ (कर्नाटक)
- तेलगू (AP)
- मलयालम (केरल)

द्रविड़ समूह भाषाओं की पृष्ठभूमि तथा व्याकरण

KD Job Updates

पृथक -पृथक रहा द्रविड़ समूह की भाषाओं में तमिल भाषा प्राचीनतम थी। यह भाषा तमिलनाडु तथा दक्षिणी आन्ध्र के कुछ भाग में विकसित हुयी थी। सर्व प्रथम अत्र संगम साहित्य तामिल में लिखा गया फिर अलवार और नयनार संतों ने इसे लोक प्रिय बनाया।

कन्नड़ भाषा — यह भाषा कर्नाटक क्षेत्र में विकसित हुयी जैन संतों ने इस भाषा का प्रयोग किया इससे इसको लोकप्रियता मिली।

तेलगु — यह आन्ध्र क्षेत्र की भाषा थी विजय नगर साम्राज्य के अन्तर्गत इसे विशेष संरक्षण प्राप्त हुआ।

मलयालम — यह केरल प्रदेश की भाषा थी तथा इसका विकास सबसे बाद में हुआ 18वीं सदी में त्रावणकोर के शासक मार्तण्ड वर्मा एवं राम वर्मा के द्वारा इसे विशेष संरक्षण दिया गया।

KD Job Updates

भाषा एवं लिपि — भाषा अगर ध्वनि है तो लिपि उसका चित्र। लिपि के बिना भाषा का अस्तित्व हो सकता परंतु भाषा के व्यापक प्रसार तथा उसके स्थायित्व हेतु लिपि का होना आवश्यक है वहीं दूसरी तरफ भाषा के बिना लिपि का अस्तित्व ही नहीं रह सकता।

भारत की प्राचीनतम लिपि सिंधु लिपि थी परंतु दुर्भाग्यवश इसे अब तक पढ़ा नहीं गया भारत की पहली लिपि जिसे पढ़ी जा सकी वह थी ब्राह्मी लिपि। उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत में पाये गए अशोक के अभिलेख ब्राह्मी लिपि मे ही लिखे मिलते है। इसके अतिरिक्त उत्तर-पश्चिम में विदेशी लेखकों के द्वारा कुछ लिपियाँ प्रचलित थी जैसे ईरानी प्रभाव में अरामेइक एवं खरोष्ठी लिपि तथा यूनानी प्रभाव में यूनानी लिपि। उत्तर-पश्चिम में अशोक के अभिलेख इन्हीं कृतियों में मिलते है बताया जाता है कि अरामेइक लिपि से खरोष्ठी लिपि और खरोष्ठी लिपि से ब्राह्मी लिपि का विकास हुआ।

KD Job Updates

अरामेइक लिपि
↓
खरोष्ठी
↓
ब्राह्मी
↓
तमिल ब्राह्मी
↓
कुटिलाक्षर
↓
देवनागरी लिपि

ब्राह्मी लिपि का विकास उत्तर भारत से दक्षिण भारत की ओर हुआ। तमिलनाडु में हमें 2 सदी ई०पू० में तमिल ब्राह्मी लिपि का साक्ष्य एक गुफा अभिलेख से मिलता है। तमिल भाषा प्रयोग में भी ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया गया।

फिर माना जाता है कि ब्राह्मी लिपि से कुटिलाक्षर और फिर 10वीं सदी में देवनागरी लिपि का विकास हुआ।

---x---x---x---

Q- ऐसा कहा गया है कि प्राचीन भारत के लोगों में ऐतिहासिक बुद्धि का अभाव था उन्होंने इतिहास संबंधी कोई दृष्टि विकसित नहीं की थी। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत है अपने मत के पक्ष में उत्तर दीजिए?

पाश्चात्य विद्वानों की एक आम धारणा रही है प्राचीन भारत के लोगों को न तो इतिहास की समझ थी न अतीत के यथार्थ तक पहुँचने

KD Job Updates

और न ही इतिहास लेखन के प्रति उत्साह। परंतु इस विषय में किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले प्राचीन भारत के लोगों के उद्देश्य एवं लेखन संबंधी गतिविधियों की गहराई से परीक्षण करने की जरूरत है।

यह सही है कि प्राचीन भारत में कल्हण की राजतरंगणी को छोड़कर कोई भी दूसरा ऐसा ग्रन्थ नहीं है जिसे हम विशुद्ध रूप में ऐतिहासिक कृति कह सके तथा प्राचीन कालीन भारतीय ग्रन्थ धार्मिक कहानियों और मिथकों से भरे पड़े हैं परन्तु यह भी जानने की आवश्यकता है कि प्राचीन भारत के लोगों की इतिहास विषयक दृष्टि समकालीन पश्चिमी विद्वानों एवं आधुनिक विद्वानों से अलग थी इसे निम्न रूप में समझने की जरूरत है —

प्राचीन भारतीय विद्वान समय की गणना रैखीय रूप में न करके चक्रीय रूप में करते थे यथा द्वापर, ~~त्रेता~~.

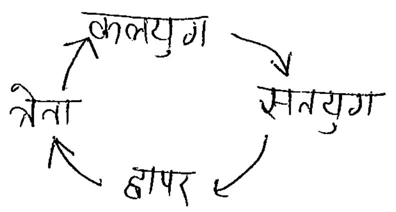

KD Job Updates

वे प्राचीन यूनानी और रोमन विद्वानों की तरह घटनाओं में कार्य-कारण परंपरा नहीं खोजते थे बल्कि उनका इतिहास लेखन संबंधी उद्देश्य महाभारत के ग्रन्थ में व्यक्त हुआ और वह है चार पुरुषार्थों - अर्थ, धर्म, काम एवं मोक्ष को प्राप्त करना। यह स्मरण रखने की जरूरत है कि प्रत्येक समाज की इतिहास संबंधी दृष्टि उसकी अपनी समझ एवं आवश्यकता के अनुकूल होती है। अ

अंत में हमें यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि प्राचीन लोगों की इतिहास संबंधी दृष्टि स्थिर नहीं रही है बल्कि उनमें भी क्रमिक विकास होता चला है यथा पहले के ग्रंथों में राजनीतिक घटनाओं के प्रति अस्पष्ट संकेत है परन्तु आगे पुराणों की रचना के साथ पहलीबार राजवंशों की वंशावली स्पष्ट की जाने लगी और अंत में आत्मकथात्मक रचनाएँ लिखी गयी जो किसी एक शासक की उपलब्धियों पर आधारित थी उदाहरण हेतु बाणभट्ट का हर्षचरित।

KD Job Updates

निष्कर्ष — उपरोक्त तथ्यों के प्रकाश में हम ऐसा कह सकते है यद्यपि प्राचीन भारत के लोगों में इतिहास विषयक संकल्पना उनके समकालीन विद्वानों और आधुनिक विद्वानों से अलग थी परन्तु यह कहना उचित नहीं है कि उनमें ऐतिहासिक बुद्धि का अभाव था।

08/10/2018

साहित्यिक अध्ययन सामग्री के प्रकार —

(1) धार्मिक साहित्य

(a) ब्राह्मण साहित्य — वेद, ~~अरण्यक~~ ब्राह्मण ग्रन्थ, अरण्यक उपनिषद्, 6 वेदांत, रामायण, महाभारत (महाकाव्य), 18 पुराण, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, परासर स्मृति।

(b) जैन ग्रन्थ — 12 अंग

(c) बौद्ध ग्रन्थ — त्रिपिटक (सुक्त पिटक, विनय पिटक, अभिधम्म पिटक), कुछ ब्राह्मण ग्रन्थ

ब्राह्मण साहित्य तथा बौद्ध एवं जैन साहित्य के दृष्टिकोण में अंतर —

ब्राह्मण साहित्य समाज के अभिजात्य वर्ग पर दृष्टिपात करता है, जन सामान्य पर उसकी कम दृष्टि होती है वहीं बौद्ध एवं जैन साहित्य समाज के

KD Job Updates

निचले वर्ग की झलक देता है।

चूँकि यह साहित्य किसी धार्मिक पंथ विशेष के हित से जुड़ा होता है इसलिए यह कई बार भ्रांतियाँ फैलाने का भी काम करता है। ~~क्योंकि~~

वस्तुतः यह धार्मिक पंथ विशेष के धर्म प्रचार विशेष से जुड़ जाता है।

② धर्मेत्तर साहित्य

धर्मेत्तर साहित्य में कौटिल्य के अर्थशास्त्र, ~~मेगस्थनीज की इण्डिका तथा~~ कामंदक के नीतिसार, क्षेमेन्द्र की वृहद् कथा मंजरी आदि प्रमुख हैं। ये धर्म से हटकर कुछ महत्वपूर्ण बातों की जानकारी देते हैं। इसमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र प्रमुख है क्योंकि इसका बल धर्म पर नहीं बल्कि अर्थ पर है।

परंतु इन ग्रन्थों की भी अपनी कुछ सीमा है चूँकि ये कृतियाँ किसी एक काल में संकलित नहीं है इसलिए यह सिद्ध करना कठिन है कि इसका कौन

पुरासाहित्य वेद,

स्मृतिसाहित्य
रामायण
महाभारत
18 पुराण

-सा अंश किस काल में लिखा गया।

③ विदेशी साहित्य

इसके निम्न रूप है —

① यूनानी रोमन साहित्य – यूनानी लेखक हेरोडोटस प्रथम लेखक है जो भारत के सन्दर्भ में लिखता है उसके बाद महत्वपूर्ण लेखक मेगस्थनीज, उसी प्रकार रोमन लेखक प्लिनी, डायोडोरस, स्ट्रैबो, टॉलमी आदि।

विदेशी लेखन के निम्नलिखित महत्त्व —

(I) इनके द्वारा कुछ ऐसे कालों पर भी लिखा गया जिनपर भारतीय अध्ययन स्रोत उपलब्ध नहीं है। उदाहरण हेतु सिकन्दर के इतिहासकारों के लेखन से ही "उत्तर-पश्चिम में" हमें 4थी सदी ई० पू० के इतिहास की सूचना प्राप्त होती है & उसी प्रकार एक अरबी लेखक अलबरूनी 11वीं सदी के पूर्वार्द्ध में उत्तर भारत के सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास की झलक को दिखाता है।

(II) विदेशी लेखक उन पूर्वाग्रहों से मुक्त होते थे जिनसे प्रायः हमारे देशी लेखक ग्रस्त थे। इसलिए उनका विवरण अपेक्षाकृत अधिक निष्पक्ष होता।

देशी लेखक → जातीयवाद से ग्रस्त

KD Job Updates

मेगस्थनीज
- भारत में अकाल नहीं होता है

सीमाएँ —

(1) चूँकि ये विदेशी लेखक हमारे समाज से परिचित नहीं थे इसलिए उनके लेखन से भारतीय समाज में कुछ भ्रांतियाँ भी फैलायी गयी है।

(2) कुछ विदेशी लेखक एक विशिष्ट धार्मिक उद्देश्य लेकर भारत आए थे अतः उन्होंने धार्मिक पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होकर भी लिखा है उदाहरण हेतु चीनी यात्री फाह्यान और ह्वेनसांग।

m.Q. विदेशी लेखकों के विवरणों का प्रयोग करते हुए इतिहासकार के लिए किवदंतियों एवं प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित तथ्यों में भेदकरना अति आवश्यक है। (2014)

(2) आरम्भिक भारतीय ऐतिहासिक परंपरा, जैसा कि वह इतिहास पुराण से प्रतिबिम्बित है किस प्रकार प्रकट हुयी थी इस शैली के विशिष्ट अभिलक्षण क्या है? (2018)

प्रत्येक समाज के इतिहास संबंधी दृष्टि उसके अपनी समझ एवं परंपरा के अनुकूल होती है इसलिए प्राचीन भारत के लोगों की इतिहास संबंधी धारणा को पश्चिमी लेखकों से तुलना करने

Romila Thapar

Lineage to state
वंशावली से राज्य
लोग
परिवार
गाँव
महाजनपद
मौर्यकाल
क्षेत्रीय राजा
... राज्य

KD Job Updates

की जरूरत नहीं है। वह वस्तुतः प्राचीन भारत में जो लोगों की इतिहास संबंधी दृष्टिकोण रही है उसे हम इतिहास पुराण के रूप में देखते हैं और वह क्रमिक रूप में विकसित होती चली है।

यद्यपि कुछ पश्चिमी विद्वानों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि प्राचीन भारत के लोगों में ऐतिहासिक बुद्धि का अभाव था, उन्होंने इतिहास संबंधी कोई ग्रन्थ नहीं लिखा परंतु सूक्ष्म परीक्षण करने पर हम पाते हैं कि भारतीयों की इतिहास विषयक संकल्पना इतिहास पुराण के परंपरा के तहत क्रमिक रूप में विकसित हुयी है। रोमिला थापर ने प्राचीन भारत के लोगों की इतिहास संबंधी दृष्टि को दो भागों में बांटा है अन्तर्निहित इतिहास (Embedded history) तथा बाह्य इतिहास (Externalised history) इनके अनुसार जैसे-जैसे वंशावली का राज्य के रूप में विकास होता गया वैसे-वैसे लोगों के इतिहास संबंधी दृष्टिकोण अधिक स्पष्ट होकर उभरा। आरम्भ में इतिहास मिथकों से लिपटे पड़े थे इसका आरंभिक रूप धार्मिक ग्रन्थों के रूप में देखने को मिलता है परंतु जैसे-जैसे वंशावली से राज निर्माण की प्रक्रिया की ओर बढ़े वैसे-वैसे इतिहास संबंधी दृष्टि स्पष्ट

"Lineage to State"

मिथक
|
कल्पना

KD Job Updates

होती गयी उदाहरण के लिए पटलीबार पुराणों में बंशानुवाली प्रस्तुत की गयी. हर्यक वंश, शिशुनाग वंश. नंद वंश, आन्ध्र सातवाहन वंश, गुप्त वंश आदि का विवरण प्राप्त होने लगा। इसका अगला चरण आत्म कथात्मक रचनाएँ है उदाहरण हेतु वाणभट्ट का हर्षचरित जब एक शासक की उपलब्धि को केन्द्र में रखकर रचनाएँ लिखी जाने लगी।

इस प्रकार, भारतीय ऐतिहासिक परंपरा जिसे इतिहास पुराण के नाम से जाना गया, का महत्वपूर्ण अभिलक्षण है कि प्राचीन भारत के लोगों का इतिहास संबंधी संकल्पना का क्रमिक विकास।

पुरातात्विक साक्ष्य

ब्रिटिश विद्वानों के द्वारा फील्ड आर्कियोलॉजी का विकास किया गया जो एक व्यापक परिवेश में पुरातत्व के अध्ययन पर बल देता। पुरातात्विक साक्ष्य के रूप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण पुरातात्विक साक्ष्यों की गणना की जा सकती है —

अभिलेख → प्राचीन अभिलेख पत्थर एवं ताँबे पर

KD Job Updates

खुदे मिलते है तथा उन्हें दो श्रेणियों में बाँधकर देखा जा सकता है राजकीय अभिलेख एवं निजी अभिलेख। सबसे प्रारम्भिक अभिलेख हड़प्पाई अभिलेख है परंतु उनकी लिपि नहीं पढ़ी जा सकी सबसे पहले पढ़े जाने वाले अभिलेख अशोक के अभिलेख है जो राजकीय अभिलेख के उदाहरण है इसके पश्चात विभिन्न शासकों ने अपने - अपने अभिलेख जारी किए उदाहरण के लिए खारवेल, रुद्रादमन, समुद्रगुप्त आदि।

निजी अभिलेख मंदिरों के दीवारों पर मिले है फिर ताम्रपत्र के रूप में भी अभिलेख जारी किये जाते थे ये भूमिदान पत्र के रूप में होते थे तथा यह भी उस काल के विषय में जानने के स्रोत है।

सिक्के :-

प्रारम्भिक सिक्के व्यापारिक निगमों के द्वारा जारी किए गए थे और इन्हें आहत सिक्के कहते थे इण्डो- ग्रीक शासक प्रथम ऐसे शासक थे जिन्होंने शासकों के नाम से सिक्के जारी किए फिर प्राचीन भारत के विभिन्न राजवंशों के द्वारा सिक्के जारी किए जाते रहे इन सिक्को से संबंधित काल के राजनीतिक इतिहास, आर्थिक इतिहास और धार्मिक इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

KD Job Updates

स्मारक — स्मारक के रूप में उस काल के महत्वपूर्ण स्थापत्यों की चर्चा की जा सकती है मुख्यत: प्राचीन स्थापत्य धर्म से जुड़े मिलते हैं इसके अन्तर्गत स्तूप चैत्य एवं विहार तथा मंदिर की चर्चा की जा सकती है इन स्थापत्यों से राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ता है इसके अतिरिक्त इनसे कलात्मक विकास पर भी प्रकाश पड़ता है।

कुषाण शासक ॥ देवता के रूप में चित्रित

अन्य प्रकार की कलाकृतियाँ —

मूर्तिकला तथा चित्रकला भी इतिहास के अध्ययन के साधन है।

हड़प्पा सभ्यता के साहित्यिक स्रोत नहीं हैं जिसके चलते राजनीतिक, सामाजिक रचनाओं का ज्ञान स्पष्ट नहीं हो पाता

मृद्भाण्ड एवं उपकरण — इनके माध्यम से प्राचीन संस्कृतियों का अध्ययन करना अपेक्षाकृत आसान हो जाता है

पुरातात्विक स्थलों का अन्वेषण —

अन्वेषण

परंपरागत

- आकस्मात खोज (आम लोगों द्वारा)
- दयाराम साहनी, राखलदास बनर्जी (1921)
- साहित्यिक विवरण (Sample)

Smart मॉडल — Sample विवरण

- दूरबीन द्वारा
- उपग्रह द्वारा
- रासायनिक प्रयोग द्वारा
  - मिट्टी का परीक्षण
  - * P4 Ca ज्यादा मिले → जानवर के साक्ष्य
- विद्युत विधि

KD Job Updates

किसी भी पुरातात्विक स्थल के उत्खनन से पूर्व उसका अन्वेषण महत्वपूर्ण होता है इन स्थलों के अन्वेषण की प्रायः दो विधियाँ रही है परंपरागत विधि तथा नवीन विधि।

परंपरागत विधि के तहत हम अकस्मात खोज, ~~चलचित्र~~ तल-चिन्ह संकेत एवं साहित्यिक विवरण को आधार रूप में ले सकते है वहीं नवीनतम विधि में हम हवाई छायांकन, उपग्रह, रासायनिक जाँच, विद्युत उपकरण आदि का उपयोग करते है।

उत्खनन की विधि —

पुरातात्विक स्थलों के अन्वेषण के पश्चात उनके उत्खनन की चुनौती आती है। उत्खनन के लिए प्रायः दो विधियाँ प्रचलित रही है :—

(1) लम्बवत उत्खनन (Vertical excavation)

लम्बवत खुदाई से हमें किसी क्षेत्र विशेष में विभिन्न संस्कृतियों का स्तर विन्यास (Stratigic fication) ज्ञात होता है अर्थात हमें यह ज्ञात होता है कि किसी संस्कृति के बाद कौन-सी संस्कृति स्थापित हुयी थी।

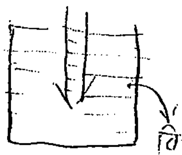

KD Job Updates

(3) क्षैतिज खुदाई — (Horizontal exvication)

क्षैतिज खुदाई से हमें यह ज्ञात होता है कि किस संस्कृति का स्वरूप क्या था क्योंकि इसमें एक बड़े क्षेत्र में खुदाई की जाती है और फिर उस संस्कृति के तहत लोगों के जीवन को समग्रता से समझने का प्रयास किया जाता है प्रायः लम्बवत् खुदाई के पश्चात् क्षैतिज खुदाई की स्थिति उत्पन्न होती है इसलिए दोनों प्रकार की खुदाईयों का अपना अलग-अलग महत्व है।

परंतु क्षैतिज खुदाई के क्रम में निम्न समस्याएँ उत्पन्न होती है —

(1) यह एक बड़ी खर्चीली प्रक्रिया है।

(2) इसमें जनसंख्या के पुनर्वास की चुनौती भी उपस्थित होती है इसलिए भारत में बहुत कम ही स्थलों की क्षैतिज खुदाई हो सकी है।

हाल में नवीन तकनीकी ने किस प्रकार पुरातात्विक अध्ययन को अधिक उपयोगी बनाया है?

वर्तमान में पुरातात्विक अध्ययन में भी कई नए आयाम जुड़ गए हैं —

KD Job Updates

(1) कार्बन डेटिंग और यूरेनीयम डेटिंग — जीवाश्म के काल निर्धारण में कार्बन डेटिंग पद्धति तथा गैर जीवाश्म के काल निर्धारण में यूरेनियम डेटिंग पद्धति।

(Archiometry) (2) आर्कियोमेट्री — इसके तहत प्राचीन सामग्री के अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए उसके आकार को भी मापा जाता है तथा उसके रासायनिक परीक्षण पर भी बल दिया जाता है।

(3) पैलियोन्टोलॉजी → आदि मानव के जीवाश्म के अध्ययन हेतु मॉलीक्यूलर बायोलॉजी (Molicular Biology) तथा DNA का अध्ययन किया जाता है। हाल में ~~कोई~~ Y-Chromosome के अध्ययन के बाद लगभग यह सिद्ध किया जाने लगा है कि वैदिक आर्य बाहर से ही आए थे।

(4) पर्यावरणीय पुरातत्व → इसके तहत पुरातत्व का अध्ययन किसी क्षेत्र विशेष में पर्यावरण के क्षेत्र में होने वाले बदलाव के सन्दर्भ में किया जाता है।

(5) एथिनो आर्कियोलॉजी (Ethno Archaelogy) — इसके तहत अतीत के समुदायों के जीवन से जुड़ी हुयी जानकारी प्राप्त करने के लिए वर्तमान समुदायों के व्यवहार एवं गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है

(6) सैल्वेज आर्कियोलॉजी (Salvage Archeaelogy) → ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विस्तार के कारण कई पुरातात्विक स्थल विनष्ट होने के कगार पर आ गए हैं इसलिए इसका उद्देश्य

KD Job Updates

खतरों से ग्रस्त स्थलों की पहचान कर उन्हें सुरक्षित बनाना।

पुरातात्विक साक्ष्य के महत्व एवं उनकी सीमायें–
(Booklet Page No 16417)

महत्व –

① मानव इतिहास के अधिकांश भाग के अध्ययन के लिए हम पुरातात्विक साक्ष्य पर ही निर्भर हैं।

② साहित्यिक साक्ष्य के विपरीत पुरातात्विक साक्ष्य अपने स्वरूप में अधिक वस्तुनिष्ठ होता है।

③ पुरातात्विक सामग्रियों में मानवीय हस्तक्षेप की गुंजाइश कम होती है।

④ प्राचीन काल का साहित्य अधिकत्तर कुलीन एवं अभिजात्यों पर केन्द्रित है किंतु पुरातत्व उच्च एवं निम्न वर्ग के बीच कोई भेद नहीं करता।

सीमाएँ –

① भले ही पुरातात्विक सामग्रियाँ अपने स्वरूप में वस्तुनिष्ठ हो किंतु उनके आधार पर लिया गया निष्कर्ष व्यक्तिनिष्ठ ही होता है।

② पुरातात्विक सामग्रियों में भी मानवीय हस्तक्षेप की गुंजाइश होती है, उदाहरण के लिए अशोक के कई अभिलेख अपने मूल स्थान से हटा दिये गए हैं।

③ राजकीय अभिलेख साहित्य की तरह एक वर्ग विशेष के

KD Job Updates

दृष्टिकोण को व्यक्त करता है राजाओं ने अपने अभिलेखों के माध्यम से प्रशस्तियाँ लिखवायीं।

(4) फिर हम ऐसा कह सकते है कि हम जिन पुरातात्विक सामग्रियों को महत्वपूर्ण समझकर उनका अध्ययन विश्लेषण करते हैं तो उनमें से सामग्रियों का एक बड़ा भाग ऐसा होता है जो आदिमानव के द्वारा परित्याग कर दिया गया होता है

— सिरिन रत्नागर

फिर जब हम साहित्यिक सामग्रियों और पुरातात्विक सामग्रियों की तुलना करते हैं तो इनके बीच स्पष्ट विभाजन रेखा खींचना मुश्किल हो जाता है। इसका कारण है कि कुछ साहित्यिक सामग्रियों का पुरातात्विक महत्व का होना जबकि कुछ पुरातात्विक सामग्रियों का साहित्य की तरह अध्ययन करने की जरूरत उदाहरण के लिए, महत्वपूर्ण ग्रन्थों की पांडुलिपियाँ जो सैकड़ों एवं हजारों वर्षों से दबी पड़ी हैं वे भी पुरातात्विक सामग्रियों की तरह खुदाई में निकल जाती हैं जबकि पुरातात्विक खुदाई के मध्य अनेक अंकित सिक्के तथा अभिलेख निकल कर आते है जिन्हें पढ़ने की जरूरत होती है।

KD Job Updates

09/10/2018

प्रथम खण्ड

* पुरापाषाण काल (लगभग 5 लाख ई०पू० से 10 हजार ई०पू०)
* मध्यपाषाण काल (10 हजार – 6 हजार ई०पू०)
* नव पाषाण काल (6 हजार ई०पू० के पश्चात)
* हड़प्पा सभ्यता (2600 ई०पू० – 1900 ई०पू०)
* ताम्र पाषाण काल (3500 ई०पू० तथा इसके पश्चात)
* महापाषाण काल (1300 ई०पू० से 500 ई०पू०)

R.S. Sharma
तांबा कांस्य से पहले है S0 इसलिए ताम्र पहले

Topic

(i) भौगोलिक कारक का इतिहास पर प्रभाव

(ii) मानव संस्कृति का विभिन्न युगों में विभाजन

(iii) ~~प्राक~~ प्राग ऐतिहासिक एवं आद्य ऐतिहासिक काल के अध्ययन के स्रोत

(iv) विभिन्न युगों में तकनीकी परिवर्तन, जलवायु संबंधी परिवर्तन, जीविकोपार्जन में परिवर्तन, सामाजिक संगठन में परिवर्तन, संस्कृति का विकास

map — (v) विभिन्न युगों से जुड़े हुए स्थलों का भौगोलिक वितरण (मानचित्र)

(vi) संबंधित युगों में इतिहास लेखन संबंधी विवाद

KD Job Updates

Water harvesting
collection
Dhaulavira (A+ hm)

बेलन नदी घाटी
-(Ald).

(i) भौगोलिक कारण का इतिहास पर प्रभाव

भूगोल इतिहास की धारा को प्रभावित करता है प्राग ऐतिहासिक काल तथा आद्य ऐतिहासिक काल में होने वाले विकास पर हम भूगोल के कुछ प्रभावों को स्वीकार कर सकते है। भूगोलिक कारक के परिप्रेक्ष्य में हम कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार कर सकते है उदाहरण के लिए ——

(i) भारत की पहली तथा नगरीय सभ्यता उत्तरपश्चिम में क्यों विकसित हुयी। 3

(ii) अधिकांश हड़प्पाई स्थल उत्तर-पश्चिम के अर्द्धशुष्क क्षेत्र और लवणता वाले भूजल क्षेत्र में क्यों प्रकट हुए

(iii) सभ्यता पश्चिम से पूर्व की तरफ बढ़ती गयी पूर्व से पश्चिम की ओर क्यों नहीं ?

(iv) भारत के प्रथम साम्राज्य यथा मगध साम्राज्य के केन्द्र मध्य गंगा घाटी का क्षेत्र क्यों रहा था

(v) ऐतिहासिक काल में पाटलिपुत्र के राजनीतिक एवं आर्थिक महत्व का क्या कारण था फिर 1000ई० के पश्चात् पाटलिपुत्र का महत्व क्यों कम हो गया ?

(vi) उत्तर-भारत की तुलना में प्रायद्वीपीय भारत के विकास की गति क्यों धीमी रही थी।

KD Job Updates

(vi) प्राचीन काल से ही भारतीय उपमहाद्वीप में सांस्कृतिक विविधता क्यों बनी रही अर्थात् लोगों का रहन-सहन, खान-पान, पहनावा और ओढ़ावा एवं उत्सव तथा समारोह जलवायु संबंधी कारक से किस प्रकार प्रभावित हुए।

भौगोलिक नियतिवाद की अवधारणा को क्यों स्वीकार नहीं किया जा सकता?

* यद्यपि भौगोलिक कारक विकास की दिशा को प्रभावित करता है परन्तु फिर भी भौगोलिक नियतिवाद की अवधारणा को स्वीकार करना उचित नहीं है एक ही तरह की भौगोलिक स्थिति में अलग अलग समुदाय विकास की अलग-अलग अवस्था में हो सकता है, यहाँ अंतर का निर्धारक कारक है तकनीकी, तकनीकी से भूगोल पर विजय प्राप्त किया जा सकता है।

KD Job Updates

(ii) मानव संस्कृति का विकास तथा उसका विभिन्न युगों में विभाजन

प्रस्तर	ताम्रपाषाण (ताम्र + पाषाण)	लौह युग
(पत्थर)	पत्थर +	लौह
हड्डी	ताँबा + टीन ↓ काँसा	
लकड़ी		

ⓐ प्रस्तर युग (लाखों वर्ष पहले से लेकर लगभग 3500 ई॰पू॰

इस काल में मानव संस्कृति का विकास आरम्भिक अवस्था में थी तथा मानव अपने उपकरण के रूप में प्रस्तर, हड्डी तथा लकड़ी के उपकरणों का प्रयोग करते थे। पुरापाषाण काल, मध्यपाषाणकाल और नवपाषाणकाल प्रस्तर युग से ही संबद्ध रहे हैं।

ⓑ ताम्रपाषाणकाल अथवा ताम्र युग (3500 ई॰ पू॰ के पश्चात्

ताँबा + टिन = काँसा

इस काल में मानव ने प्रथम धातु के रूप में ताँबे का प्रचलन आरम्भ किया फिर भी ताँबे के साथ-साथ प्रस्तर के उपकरणों का भी प्रयोग होता रहा इसलिए इसे ताम्रपाषाण के नाम से जाना गया परन्तु इसी काल में मानव ने तांबे को टीन से मिलाकर काँसे का विकास किया फिर काँसा अधिक मजबूत सिद्ध हुआ

KD Job Updates

हड़प्पा
↓
पत्थर के उपकरण सर्वाधिक

पत्थर > ताम्र > कॉस्य

इसे कॉस्य युग के नाम से जाना गया। हड़प्पा सभ्यता कॉस्य युग से संबद्ध थी परन्तु कॉस्य युग कोई पृथक युग नहीं था बल्कि वह ताम्रपाषाण काल का ही हिस्सा था।

© लौह युग

भारतीय उपमहाद्वीप में लोहे का प्रचलन लगभग 1100 ई०पू० अथवा 1000 ई० पू० से माना जाता है हालांकि नवीन शोधों में इसे 1600 ई० पू० तक पीछे ले जाने का प्रयास किया गया है। लोहे की उपलब्धता ताँबा से अधिक थी तथा ताँबे से अधिक मजबूत धातु भी था इसलिए इसने सभ्यता के विकास की धारा को और भी अधिक प्रभावित किया परंतु चूँकि इसे गलाने के लिए अधिक तापमान की जरूरत होती इसलिए इसका प्रयोग विलम्ब से आरम्भ हुआ।

(iii) अध्ययन के स्रोत

आरम्भिक मानव के गतिविधियों को अध्ययन को दो भागों में बाँटा जा सकता है—

पुरातात्विक साक्ष्य

① <u>प्राग ऐतिहासिक काल</u> → जिस काल के अध्ययन के लिए केवल पुरातात्विक सामग्रियाँ ही उपलब्ध हैं साहित्यिक सामग्रियाँ उपलब्ध नहीं है उन्हें ~~पुरापाषाणकाल~~ प्रागऐतिहासिक काल

KD Job Updates

परंतु जब (राबर्ट ब्रूसफुट) नामक विद्वान ने मद्रास के पास (पल्लवरम्) नामक स्थान पर एक प्रस्तर का हस्त कुठार ~~मिला~~ खोजा इसके पश्चात् भारतीय उपमहाद्वीप में प्राग ऐतिहासिक काल के सन्दर्भ में सम्पूर्ण धारणा ही बदल गयी।

(ii) मुख्यत: पशु जीवाश्म तथा छिट-पुट मानव जीवाश्म के साक्ष्य भी।

(iii) मध्यपाषाण काल से संबंधित शवाधान, निवास स्थल बनाए जाने के आरम्भिक साक्ष्य।

(प्रतापगढ़ के पास (सरायनाहरराय) एवं (महादहा)) जंगली एवं पालतू पशुओं की हड्डियाँ)

(iv) मध्यपाषाणकालीन चित्रकला

पुरातात्विक साक्ष्य से दी गई सूचनाएँ—

(I) उस काल में जलवायु संबंधी परिवर्तन किस प्रकार हो रहे थे तथा उस जलवायु परिवर्तन का लोगों के जीविकोपार्जन पर क्या प्रभाव पड़ा था?

(II) लोग शिकार एवं खाद्य संग्रह करते थे परंतु कैसे शिकार एवं खाद्य संग्रह की तकनीकी में परिवर्तन आ रहा था।

(III) विभिन्न क्षेत्रों में पुरापाषाण काल एवं मध्यपाषाण काल से जुड़े हुए स्थलों का भौगोलिक वितरण।

(IV) उपकरणों की बनावट में होने वाले परिवर्तन और इसके

KD Job Updates

के नाम से जाना जाता है। भारतीय इतिहास का अधिकांश भाग इसी काल से सम्बद्ध है।

② आद्य ऐतिहासिक काल

पुरातात्विक + साहित्यिक साक्ष्य

इसके निर्धारण के दो मानदण्ड है—

ⓐ जिस काल के अध्ययन के लिए पुरातात्विक साक्ष्य के साथ-साथ साहित्यिक सामग्रियों की भी उपलब्धता है किंतु साहित्यिक सामाग्रियों का प्रयोग नहीं हो पा रहा है। यथा- हड़प्पा सभ्यता की लिपि पढ़ी नहीं जा सकी, वहीं वैदिक आर्यों के पास भाषा थी परंतु लिपि नहीं और वैदिक साहित्य मौखिक परंपरा से बढ़ रहा था।

ⓑ दूसरा आधार कृषि का विकास है अर्थात जिस काल में खेती का प्रचलन आरम्भ हुआ उसे आद्यऐतिहासिक काल से जोड़ा गया इस आधार पर हड़प्पा सभ्यता के साथ-साथ नवपाषाण काल और ताम्रपाषाण काल को भी आद्यऐतिहासिक काल से जोड़कर देखने की जरूरत है।

KD Job Updates

प्राग ऐतिहासिक काल के अध्ययन के स्त्रोत

इस काल के अन्तर्गत पुरापाषाण काल तथा मध्य पाषाण काल आते है इसके अध्ययन के निम्नलिखित स्त्रोत है—

(1) प्रस्तर के उपकरण— मूलतः इनका अध्ययन इनके उपकरणों के आधार पर हुआ है पहले ऐसा माना जाता रहा था कि भारतीय उपमहाद्वीप में संभवतः आदि मानव के चिन्ह नहीं है परंतु

कैसे खाद्यान्न की उपलब्धता बढ़ गयी तथा खाद्यान्न की उपलब्धता ने जनसंख्या वृद्धि को कैसे प्रोत्साहन दिया?

(v) सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के विषय में भी सीमित सूचनाएँ प्राप्त।

सीमाएँ —

(1) भारत में प्राग ऐतिहासिक स्थलों का धरती के ऊपरी सतह पर ही अन्वेषण किया गया है परंतु गहरे स्तर पर खुदाई नहीं हुयी है इसलिए अपेक्षित रूप में सूचना प्राप्त नहीं।

(2) जलवायु संबंधी कारण से यूरोप के विपरीत भारत मे हड्डी के उपकरण अधिकतर विनष्ट हो गए हैं।

(3) पुरातात्विक साक्ष्य से राजनीतिक, सामाजिक संगठन तथा विचारधारा के ~~संबंध~~ संबंध में कोई स्पष्ट सूचना नहीं मिल पाती।

आद्य ऐतिहासिक काल

अध्ययन के स्रोत —

(i) नवपाषाणकाल के अध्ययन के लिए प्रस्तर के उपकरण, ताम्रपाषाणकाल के अध्ययन में प्रस्तर एवं तांबे के उपकरण तथा हड़प्पा सभ्यता के अध्ययन में प्रस्तर तांबे एवं काँसे का उपकरण।

(ii) पशु एवं मानव जीवाश्म, शवाधान पद्धति आदि।

(iii) मृदभाण्ड एवं निवास स्थल।

KD Job Updates

(iv) मूर्तियाँ, मृण्मूर्तियाँ (टेराकोटा फीगर्स), आभूषण।

इनके द्वारा दी गयी सूचना / योगदान

i) जलवायु परिवर्तन तथा जीविकोपार्जन पर उसका प्रभाव

ii) तकनीकी विकास तथा कृषि एवं पशुपालन, हड़प्पा सभ्यता के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के शिल्प एवं व्यापारिक गतिविधियों की सूचना

iii) सामाजिक गतिविधियाँ तथा धार्मिक अनुष्ठान की सूचना (कर्मकाण्ड)

सीमायें :—

i) भारत में क्षैतिज खुदाई कम होने के कारण विभिन्न संस्कृतियों के अन्तर्गत जीवन पर अपेक्षित प्रकाश नहीं पड़ पाता।

ii) पुरातात्विक साक्ष्यों से सामाजिक संगठन, राजनीतिक संगठन, धर्म दर्शन आदि की स्पष्ट सूचना नहीं मिलपाती।

पुरातात्विक सामग्रियों के अध्ययन में हाल में जुड़ने वाले नए आयाम —

i) यूरोप में पुरातात्विक सामग्रियों के अध्ययन में मानव समुदाय पर पर्यावरण के प्रभाव पर पहले से ही बल दिया जाता रहा था परंतु इस दिशा में भारत में सीमित प्रयास ही हुआ था किंतु सर्वप्रथम (गार्डन चाइल्ड) ने इस दिशा में प्रयास किया था और वर्तमान में एस॰एन॰ राजगुरु एवं

KD Job Updates

डी॰ पी॰ अग्रवाल जैसे विद्वान ने पर्यावरण के प्रभाव के अध्ययन पर विशेष बल दिया है।

DNA फुटप्रिंटिंग के माध्यम से हाल में हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत विभिन्न नस्ल समूह एवं भारत में वैदिक आर्यों के आगमन पर विशेष रूप में प्रकाश पड़ने लगा है।

हिमालय :-
- ट्रांस
- लघु
- बृहत
- शिवालिक

हिमालय की भूमिका
- → नदियों का निकास
- → जलोढ़ मृदा
- → सिंधु-गंगा मैदान

टोचदरी
पाब
बोलनदर्रा
सुलेमान
किरथर
सिंधु
झेलम
चिनाब
चिनाब

- * Hindu Kush
- * karakoram
- * laddak

Per Punjab — Valley of kashmeer

Shivalik Him. → Gangetic plain = Biodiversity ↑
- गंगा
- यमुना

upper / middle / lower — gangetic region

Garo, khasi, Jayantiya = मेघालय

Aravali
- west — Desert
- east — उपजाऊ

कच्छ का रण / दलदली

छोटानागपुर → खनिज संसाधन ↑ / राढ़ क्षेत्र

सौराष्ट्र क्षेत्र / नदियों का विकास / का छेद

महानदी
गोदावरी

KD Job Updates

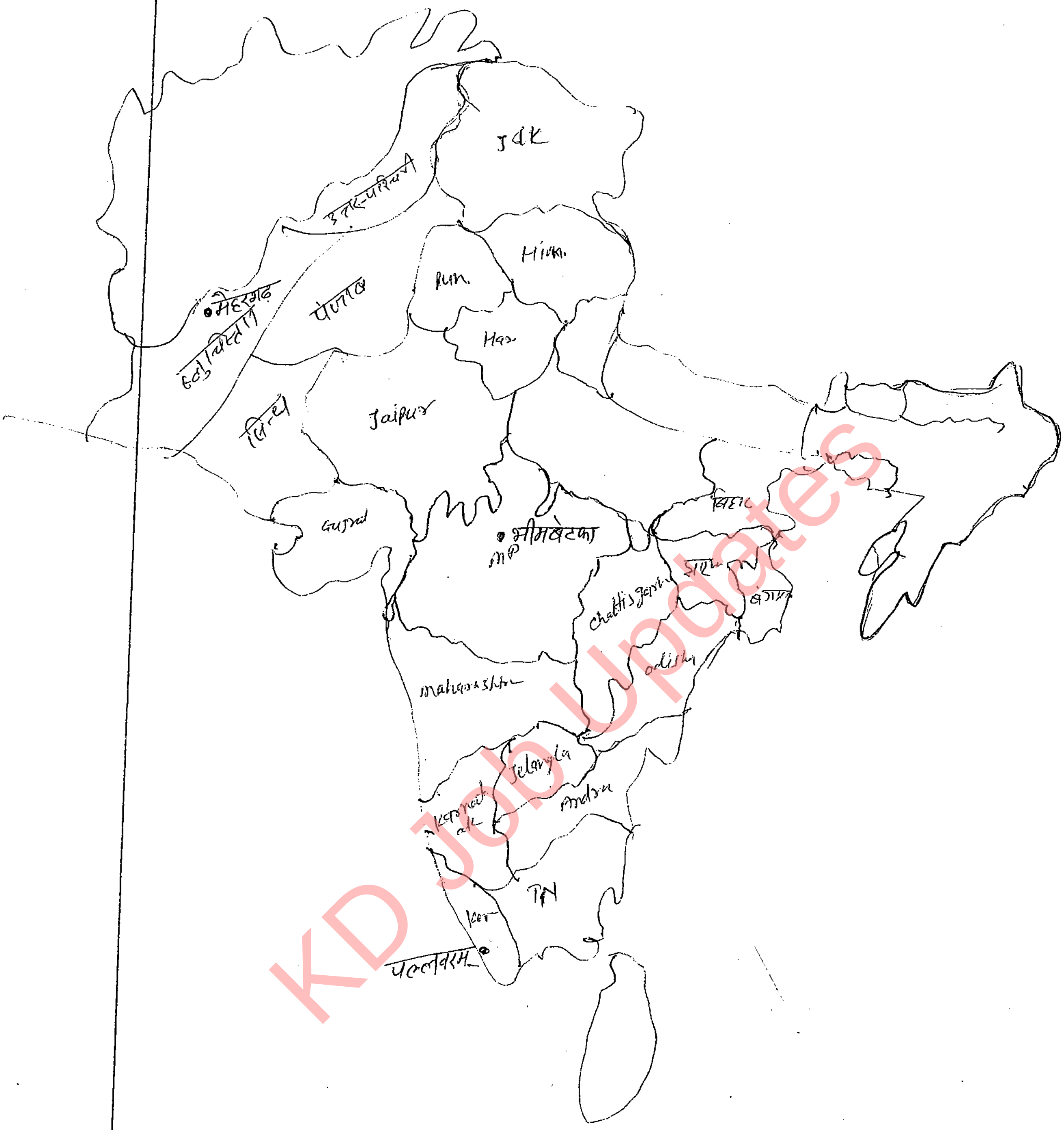

KD Job Updates

पुरापाषाणकाल

एडुवार्ड लारटेट नामक विद्वान ने पुरापाषाणकाल को जलवायु में होने वाले परिवर्तन, तकनीकी परिवर्तन तथा प्राणी समूह की संरचना / स्थिति में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर हम इसे तीन चरणों में बाँटकर देख सकते हैं—

⇓
Homo erectus
⇓ (यहां से)
Homo sapiens
⇓
modern Human

कोड़ (CORE) उपकरण

फलक (Blade)
↓
जिसकी लम्बाई चौड़ाई से अधिक हो

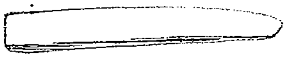

बेधनी — पत्थर में छेदने हेतु
खुरचनी — जानवरों की खाल

i) निम्न पुरापाषाणकाल (5 लाख BC से 70000 + 50,000 BC तक) → चौपर, हस्तकुठार, कोड़
ii) मध्य पुरापाषाणकाल (70,000 or 50,000 — 30000 BC) — शल्क
iii) उच्च पुरापाषाणकाल (30,000 BC — 10,000 BC)

KD Job Updates

निम्न पुरापाषाण काल का काल अत्याधिक लम्बा रहा है जो लगभग 70000 ई० पू० - 50000 ई० पू० तक चलता रहा है जबकि इसका आरम्भ लगभग 5 लाख ई० पू० में माना जाता है। इसी प्रकार मध्य पुरापाषाणकाल लगभग 70,000 ई० पू० or 50,000 ई० पू० — 30000 ई० पू० तक चलता रहा फिर जिसे हम उच्च पुरापाषाणकाल के नाम से जानते है वह लगभग 30,000 ई० पू० से 10,000 ई० पू० तक चलता रहा।

निम्न पुरापाषाण काल में कुछ क्षेत्रीय संस्कृतियों का विकास देखा गया था उदाहरण के लिए पंजाब की सोहन घाटी में चौपर-चोपिंग घाटी तथा मद्रास के आस-पास पल्लवरम तथा अतिरमपक्कम से प्राप्त हस्तकुठार के आधार पर हस्तकुठार संस्कृति अथवा मद्रास संस्कृति।

भौगोलिक वितरण

गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र को छोड़कर भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग सभी क्षेत्रों से पुरापाषाणकालीन स्थल प्राप्त हुए है।

KD Job Updates

मानचित्र

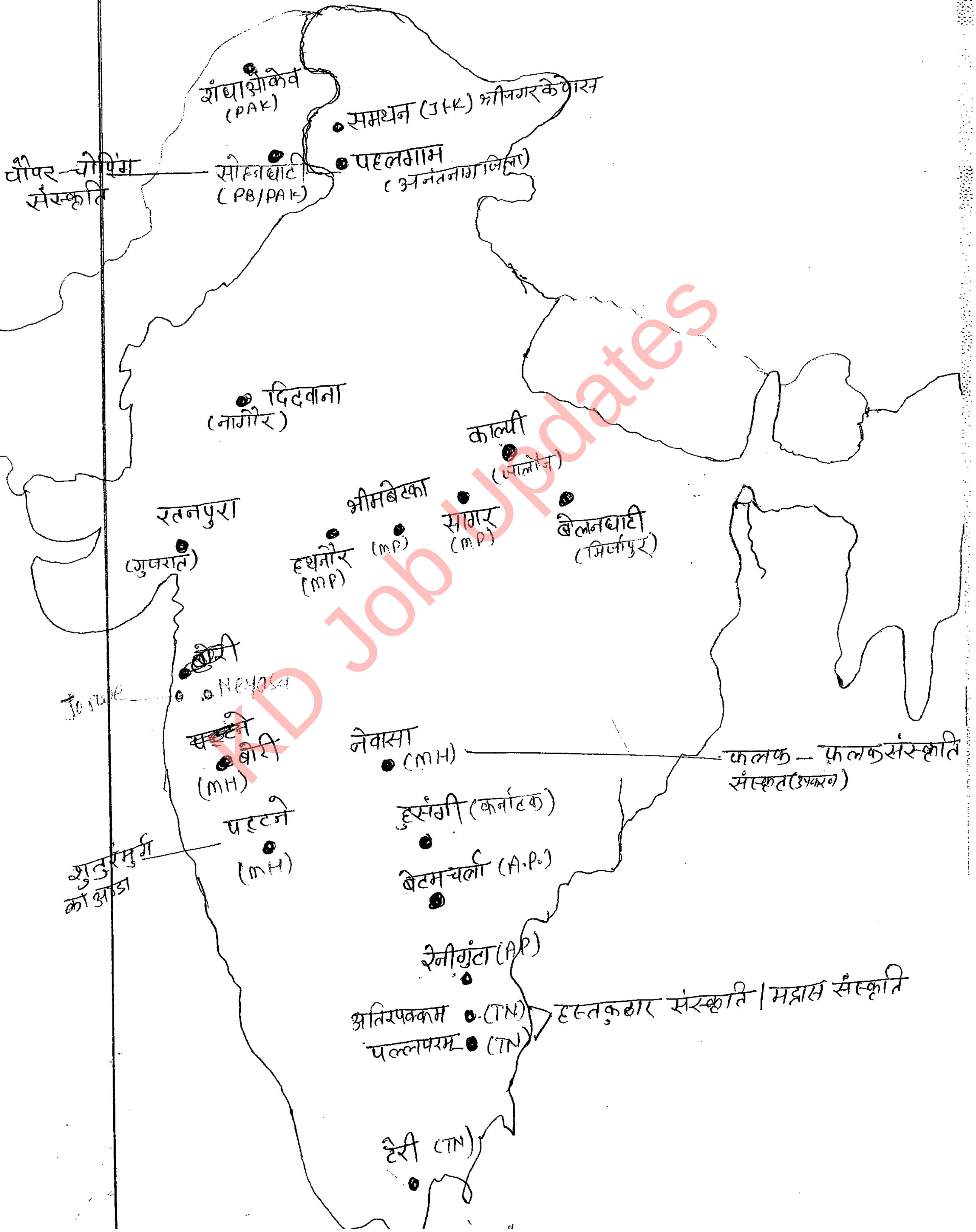

KD Job Updates

संस्कृति – खास क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों का जीवन-यापन का तरीका

↓

वृहद क्षेत्र में फैलकर मानदण्ड अपना ले तो

⇓

सभ्यता ।

जलवायु संबंधी स्थिति –

पुरापाषाण काल प्लीस्टोसिन युग से सम्बद्ध रहा था जब जलवायु में ठण्डक अधिक थी परन्तु निम्न पुरापाषाण काल से उच्च पुरापाषाण काल तक बढ़ते हुए वातावरण शुष्क तथा गर्म होने लगा इससे आगे के बदलाव को प्रोत्साहन मिलेगा।

तकनीकी परिवर्तन –

इस काल में लोग प्रस्तर, हड्डी एवं लकड़ी के उपकरणों का प्रयोग करते रहे थे फिर निम्न से उच्च पुरापाषाण काल तक आते हुए निम्न लिखित प्रकार के तकनीकी परिवर्तन देखने को मिलते है। —

(i) आरम्भ में बड़े-बड़े क्रोड उपकरण बनते थे तथा निम्न पुरापाषाण काल के महत्वपूर्ण उपकरण खण्डक (चौपर)

KD Job Updates

हस्त कुठार तथा विदारिणी (Cleaverer) क्रोड़ पत्थर से निर्मित होते थे परन्तु मध्य पुरापाषाण काल तक आते हुए क्रोड उपकरणों का प्रयोग तो बना रहा परन्तु उनके समानान्तर शल्क उपकरणों की प्रधानता बढ़ने लगी। शल्क उपकरण क्रोड़ से पपड़ियाँ (layers) उतार कर बनाए जाते थे इसलिए ये उपकरण हल्के होते थे अब इस कारण मानव की गतिशीलता पहले की तुलना में बढ़ गई।

(2) ~~फलक~~ शल्क से फलक उपकरण भी बनाए जाने लगे फलक उपकरण वैसे शल्क उपकरण होते थे जिनकी लम्बाई उनकी चौड़ाई से दोगुनी होती थी।

(3) महाराष्ट्र के नेवासा नामक स्थल से फलक प्राप्त हुए है इसलिए इसे (फलक संस्कृति) से भी जोड़ा जाता है।

(3) उत्तर पुरापाषाणकाल में चलकर उपकरणों की बनावट में और भी सुधार हुआ इस काल में शल्क से बने उपकरण बेधनी और खुरचनी (Burin & Scrapper) का अधिक प्रयोग देखने को मिलता है साथ ही इस काल में हड्डी और लकड़ी के उपकरणों का भी प्रयोग होने लगा था।

KD Job Updates

जीविकोपार्जन

यह वह काल था जब मानव शिकारी एवं खाद्य संग्राहक की भूमिका में था लोग मिलजुल कर मुख्यत: बड़े पशु का शिकार करते थे जो उनके लिए भोजन प्राप्ति का कारण था वहीं दूसरी तरफ भोजन के लिए वे जंगली उत्पादों का संग्रह भी करते थे। आरम्भ में यह माना जाता था कि इनके जीवन में शिकार अधिक महत्व था परन्तु परिवर्ती काल के शोधों से यह ज्ञात होता है कि उनके जीवन में शिकार की जगह खाद्य संग्रह अधिक महत्व थे क्योंकि शिकार से प्राप्त माँस शीघ्र ही सड़ जाते थे जबकि जंगली उत्पाद अधिक समय तक टिके रहते थे।

सामाजिक संगठन

पुरापाषाकालीन समाज एक बैंड सोसायटी का उदाहरण है ऐसे समाज में समानता का भाव प्रबल होता है (आरम्भिक समाज बैंड सोसायटी कहलाता फिर जब अतिरिक्त उत्पादन होने लगा तब अन्य को दबाकर एक क्षेत्रीय सरदार उदित होने लगा इसे मुखिया तंत्र का नाम दिया गया इसके आगों का विकास राजतंत्र के रूप

KD Job Updates

में देखने को मिलता है परंतु इसके लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन अधिशेष की आवश्यकता होगी) बैंड समाज में 50 से 70 तक लोग होते हैं और वे मिलजुलकर शिकार तथा खाद्य संग्रह करते शिकार एवं खाद्य संग्रह के मध्य ~~क्षेत्रीय स्तर पर~~ उसी स्थल पर कुछ समय के लिए एक नेता उभरकर आता परंतु कार्य समाप्त होने के साथ उसकी भी स्थिति समाप्त हो जाती।

महिलाओं की स्थिति के विषय में मानवशास्त्रियों का यह अनुमान है क्योंकि इसकाल में ~~शिक~~ शिकार की तुलना में खाद्य संग्रह अधिक महत्वपूर्ण था और महिलाएँ खाद्य संग्रह से जुड़ी रही थी इसलिए महिलाओं की स्थिति अच्छी रही होगी।

संस्कृति

इस काल में मानव ने प्रकृति के साथ धीरे-धीरे संबंध स्थापित करना आरम्भ कर दिया था इसलिए धर्म और कला का विकास होने लगा—

* बेलन घाटी में लोहंदानाला
* राजस्थान में बागौर

नामक स्थल से स्त्री की मूर्ति मिली है जिसकी पहचान देवी से की गई है

KD Job Updates

राजस्थान के चन्द्रावती में एक चर्ट पत्थर पर एक चित्र मिला है उसी प्रकार महाराष्ट्र के पटने से एक शुतुरमुर्ग का अण्डा मिला है जिसपर रेखीय चित्र मिलता है। यह एक विवादास्पद मुद्दा भी बना हुआ है M.P. के भीमबेटका के गुफा चित्र पुरापाषाण काल से संबंधित है अथवा नहीं। कुछ विद्वान इसे उत्तर पुरापाषाणकाल से संबंधित मानते है परन्तु कुछ अन्य विद्वान इसे अस्वीकार करते हुए भीमबेटका के आरम्भिक चित्रों को मध्य पाषाण काल से जोड़ते है।

M.Q.

पुरापाषाणकाल की प्रमुख विशेषताओं को दर्शाते हुए उससे जुड़े हुए कुछ प्रमुख स्थलों पर प्रकाश डालिए।

KD Job Updates

मध्यपाषाणकाल (10.000 ई० पू० के पश्चात्)

मिर्जापुर
- सुहागीघाट

मध्यपाषाण काल से तात्पर्य =

चित्रकला
- गुफा चित्रकला
  - तक्षण — खुरंच कर बनाना
  - सामान्य — रंग से भरपूर चित्रकला
- खुला चित्रकला
  - पत्थरों / पहाड़ों पर

सौन्दर्य अभिरुचि

- मानवीय भाव (करुणा, लगाव) उत्पन्न
→ भौतिकसुख के अतिरिक्त कुछ और
→ कलात्मक - नृत्य, चित्र आदि।
→

इसे पुरापाषाणकाल तथा नवपाषाणकाल के बीच संक्रमण की अवस्था के रूप में देखा गया अर्थात् इसकी कुछ प्रवृत्तियाँ पुरापाषाण काल से मिलती है तो कुछ नवपाषाण काल से।

जलवायु परिवर्तन —

इसके आगमन के काल में प्लीस्टोसिन युग समाप्त हो चुका था और होलोसिन युग आरम्भ हुआ था इसके परिणाम स्वरूप जलवायु परिवर्तन हुआ और जलवायु परिवर्तन ने

तकनीकी एवं जीविकोपार्जन की गतिविधियों में भी परिवर्तन लाया।

तकनीकी परिवर्तन —

अब उपकरणों का आकार छोटा होने लगा छोटे-छोटे पाषाण उपकरण बनने लगे इसे microlith (माइक्रोलिथ) कहा जाता इसकी लम्बाई सामान्यत: 1cm – 5cm तक होती थी। ~~ये उपकरण~~ आरम्भिक छोटे पाषाण उपकरण अज्यामितीय प्रकार के होते थे फिर आगे ये ज्यामितिक प्रकार के बनने लगे।

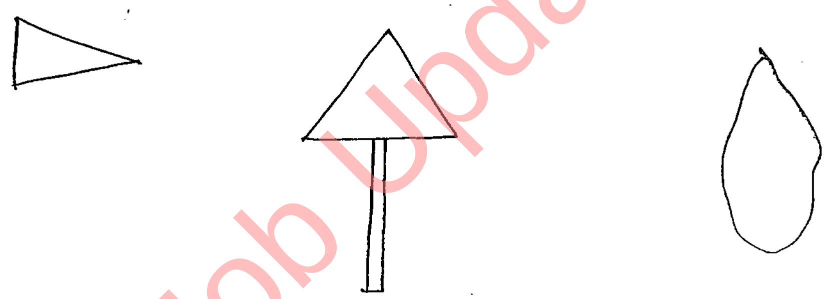

फिर इन उपकरणों को लकड़ी अथवा हड्डी के उपकरणों से जोड़कर अधिक सक्षम उपकरण बनाए जाने लगे इसी क्रम में तीर और कमान का विकास हुआ।

जीविकोपार्जन —

यद्यपि इस काल में भी मानव शिकारी एवं खाद्य संग्राहक ~~थे~~ ही बने रहे थे परन्तु शिकार एवं खाद्य संग्रह की तकनीकी में परिवर्तन आया तथा यह पहले से अधिक बेहतर हुयी। उदाहरण हेतु तीर + कमान के विकास के साथ

KD Job Updates

बड़े - बड़े पशुओं के साथ- साथ छोटे पशु एवं पक्षियों का शिकार भी संभव हुआ। इससे खाद्यान्न की उपलब्धता बढ़ी इससे जनसंख्या वृद्धि को भी प्रोत्साहन मिला होगा। भारतीय उपमहाद्वीप में हमें बड़ी संख्या में मध्य पाषाणकालीन बस्तियाँ देखने को मिलती है।

भारत का मानचित्र

(महत्वपूर्ण मध्य पाषाणकालीन स्थल)

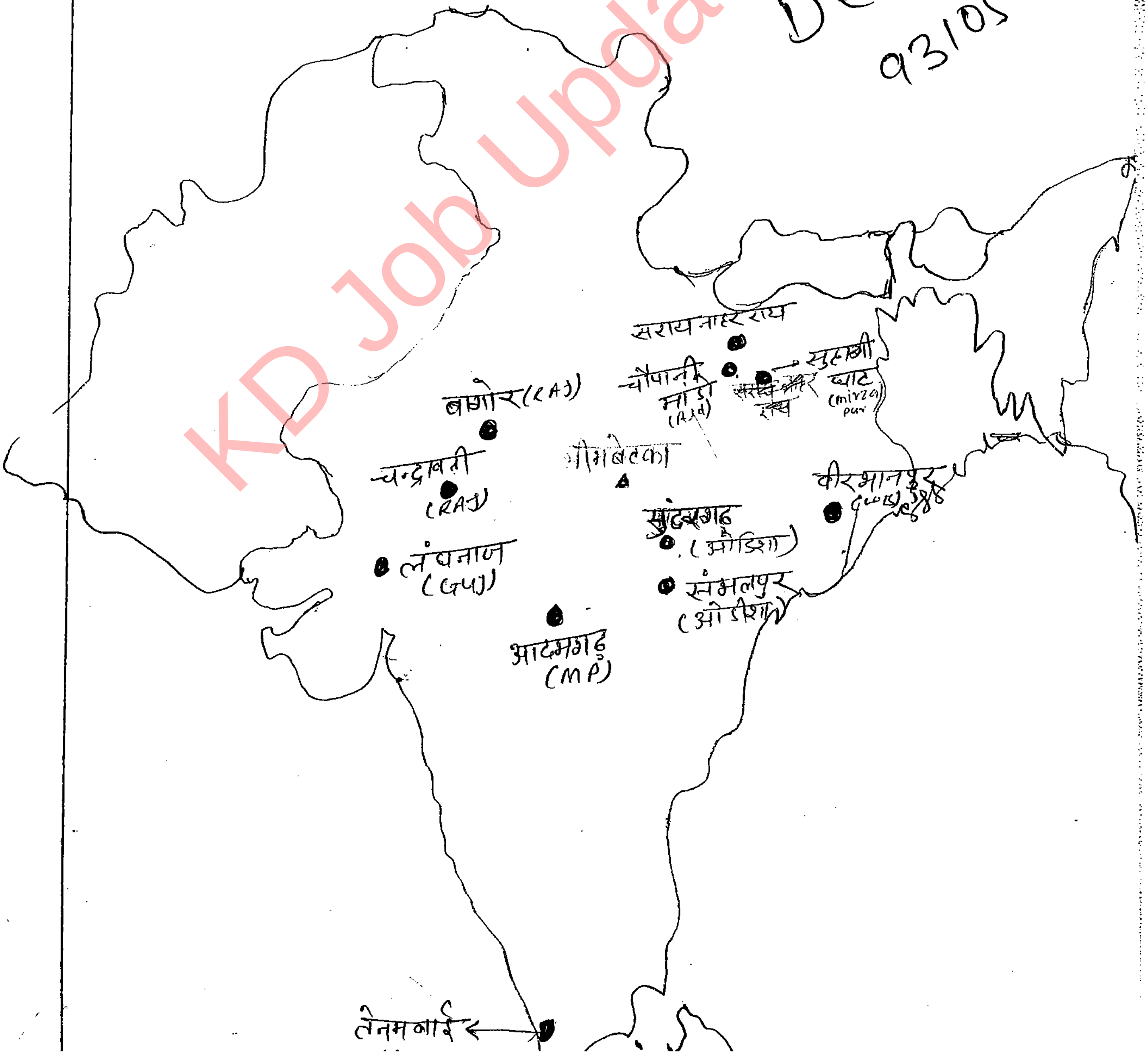

KD Job Updates

DeepakPHOTOSTAT 9310521834

यद्यपि पशुपालन का आरम्भ नवपाषाणकाल से माना जाना चाहिए परन्तु उसका आरम्भिक साक्ष्य मध्यपाषाणकाल से ही मिलने लगता है उदाहरण हेतु राजस्थान में बागौर और मध्यप्रदेश में आदमगढ़ से हमें पशुपालन का साक्ष्य मिला है।

इसी प्रकार कृषि का आरम्भ भी नवपाषाण काल से माना जाना चाहिए किंतु लोगों के द्वारा जंगली किस्म के अनाजों का उपयोग इसी काल में आरम्भ हो गया था। हमें मध्य पाषाण काल से चक्की एवं सिलबट्टे के साक्ष्य मिलते है जो अनाजों के प्रयोग की ओर संकेत करते है।

सामाजिक संरचना –

① मध्यपाषाणकाल का समाज भी बैंड समाज का उदाहरण है परन्तु समुदाय का आकार बढ़ रहा था।

② पहली बार इसी काल में परिवार की अवधारणा विकसित हुयी क्योंकि अब बूढ़े व्यक्तियों को बच्चों की देखभाल के लिए घर पर छोड़ा जाने लगा। इस कारण बूढ़ों पर दबाव थोड़ा कम हुआ तथा महिलाओं की भी गतिशीलता बढ़ी।

③ हालांकि इस काल में लोग यायावर (घुमक्कड़) जीवन जी रहे थे परन्तु स्थायी निवास की दिशा में प्रभाव दिखने लगा था

KD Job Updates

प्रतापगढ़ के पास सराय नाहर राय और महादहा से उखाड़े गए खम्बे के चिन्ह निवास स्थल बनाने की ओर संकेत करते है।

सराय नाहर राय से गर्त-चूल्हों के साक्ष्य मिले है जो भोजन पकाने की ओर संकेत करता है उसी प्रकार नियमित रूप में मृदभाण्डों का उपयोग तो नवपाषाणकाल में आरम्भ हुआ था परन्तु मध्यपाषाणकाल से जुड़े हुए स्थल बेलन घाटी में चौपानी मांडो से मृदभाण्डों का आरम्भिक साक्ष्य मिलता है।

पहली बार मध्यपाषाणकाल से शवाधान की पद्धति का विकास देखने को मिलता है अब मृतक व्यक्ति को दफनाया जाने लगा था और उसके साथ कुछ आवश्यक की सामग्रियां भी दफनायी जाती थी। संभवत: पूर्वजों के प्रति अब सम्मान का भाव विकसित होने लगा था इसके अतिरिक्त जैसा कि कुछ मानवशास्त्री स्थापित करने का प्रयास करते है कि एक समान पूर्वज परंपरा की अवधारणा के माध्यम से लोगों का एक समूह सार्वजनिक संसाधनों पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास कर रहा था।

KD Job Updates

सांस्कृतिक संरचना

लोगों ने अपने परिवेश एवं प्रकृति से संबंध जोड़ना आरम्भ कर दिया था. इसकी अभिव्यक्ति धर्म एवं कला के रूप में हुयी। —

① राजस्थान के बागौर से स्त्रीमूर्ति किसी देवी की ओर संकेत करती है।

② मृतक को दफनाए जाने के समय आवश्यकता की सामग्रियों को रखा जाना मृत्यु के पश्चात के जीवन की ओर संकेत करता है।

③ महादाहा नामक स्थल से बारहसिंह के सींग से निर्मित एक कण्ठहार का मिलना आभूषण की ओर लोगों के आकर्षण को दर्शाता है।

④ सबसे बढ़कर इसकाल में लोगों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति चित्रकला के माध्यम से करनी आरम्भ कर दी थी —

ⓐ मध्यप्रदेश में भीमबेटिका, मिर्जापुर के पास सुहाणी घाट, उड़ीसा के सुन्दरगढ़ और सम्भलपुर तथा केरल से मध्यपाषाणकाल के चित्र मिले है।

ⓑ ये चित्र गुफा के अन्दर और गुफा से बाहर चट्टानों पर मिले है इसी प्रकार ये चित्र तक्षणकला (गुफा की दीवार को खुरचकर) एवं चित्रकला (लाल, पीले एवं हरे रंग निर्मित)

KD Job Updates

दोनों रूपों में मिले है।

(c) इन चित्रों में पशु एवं मानव दोनों को प्रतिनिधित्व मिला है पशुओं में खरगोश, लोमड़ी, कछुआ आदि तथा मानव में स्त्री एवं पुरूष दोनों के चित्र फिर इन चित्रों में जीवन की विभिन्न गतिविधियाँ यथा शिकार, खाद्य संग्रह, दावत एवं समारोह, नृत्य ~~ह~~, गर्भवती महिलाएँ, माता के द्वारा शिशु पाले जाने के चित्र आदि मिलते है।

इन चित्रों के उद्देश्य निम्न है —

(I) उस काल में लिपि अनुपस्थित थी अतः संभव है कि लिपि के अनुपस्थिति में लोग अपने भावों की अभिव्यक्ति कर रहे थे।

(II) संभव है कि शिकार पर जाने से पहले यह किया गया कोई धार्मिक अनुष्ठान था जिसका उद्देश्य बेहतर रूप में शिकार प्राप्त करना था।

मध्यपाषाणकालीन चित्रकला में सौन्दर्य बोध —

① सामुदायिकता का भाव — सामूहिक दावत एवं समारोह साथ उभरते हुए सामुदायिकता के भाव की ओर संकेत करते।

② करूणा का भाव — प्रायः इन चित्रों में देखा गया है कि खाद्य संग्रह से जुड़ी हुयी महिलाओं की आकृति अधिक स्पष्ट

KD Job Updates

है वहीं शिकार कर रहे पुरूषों की आकृति को स्पष्ट रूप में निर्मित न करके प्रतिकात्मक रूप में दर्शाया गया है अर्थात् रेखाओं के रूप में उन्हें अंकित किया गया है अतः ऐसा प्रतीत होता है कि शिकार के मध्य में जो हिंसा होती थी या फिर पशुओं को पीड़ा होती थी वह उन्हें अच्छा नहीं लगता था इसलिए वे अपने आप को स्पष्ट रूप में शिकार की ~~दृ~~ दृश्य नहीं जोड़ना चाहते उसी प्रकार यह भी देखा गया शिकार के दृश्य में किसी अकेले शिकारी को न दिखाकर सामूहिक रूप से उन्हें दिखाया गया है इसका भी अर्थ है कोई अकेला शिकार का दायित्व नहीं लेना चाहता हो यह करुणा के उभरते हुए भाव को दर्शाता है।

KD Job Updates

(3) ~~माता के द्वारा~~ शिशु के प्रति लगाव की भावना ⇒

माता के द्वारा शिशु को पाले जाने का जिक्र इस लगाव की ओर संकेत करता है।

(4) लय की तलाश — इस चित्रकला में नृत्य के दृश्य यह दर्शाता है कि लोगों ने अब लय की तलाश आरम्भ कर दी थी

आधुनिक चित्रकला से कहाँ तक तुलनीय —

① इन मध्यपाषाणकालीन चित्रों में प्रतीकात्मकता है अर्थात् लिपि के अभाव में चित्र भावों को व्यक्त कर रहे है। इसी प्रकार आधुनिक चित्रों में भी प्रतिकात्मकता विद्यमान होती है।

② फिर भी मध्यपाषाणकालीन चित्र आदि मानव के सरल भावों की अभिव्यक्ति है तो आधुनिक चित्र आधुनिक मानव के जटिल भावों की।

नवपाषाणकाल (लगभग 6,000 ई॰पू॰ के बाद)

विशेषता

इस काल में मानव शिकारी और खाद्य संग्राहक से खाद्य उत्पादन की स्थिति में पहुँच गया स्थायी गाँव बसे नियमित रूप में कृषि एवं पशुपालन का आरम्भ हुआ नियमित रूप में मृदभांडों का प्रचलन आरम्भ हुआ इस काल में सामूहिकता की भावना भी मजबूत हुयी।

M.Q. मध्यपाषाणकाल पुरापाषाणकाल तथा नवपाषाणकाल के बीच संक्रमण की अवस्था को दर्शाता है कुछ प्रमुख स्थलों के आधार पर उपर्युक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।

KD Job Updates

जलवायु संबंधी परिवर्तन —

इस काल में प्लीस्टोसिन युग समाप्त हुआ और यह काल होलोसिन युग से जुड़ गया जलवायु परिवर्तन ने तकनीकी विकास एवं कृषि के विकास हेतु मार्ग तैयार किया।

इरफान हबीब ने कहा कि इसने 3000 ई० पू० में इतना तीव्र परिवर्तन हुआ जितना पिछले 30,000 वर्षों में नहीं हुआ।

इतिहास लेखन संबंधी मुद्दा —

गार्डन चाइल्ड नामक विद्वान ने नवपाषाण काल को नवपाषाणक्रांति का नाम दिया है।

क्रांति की अवधारणा के पक्ष में —

① इस काल में मानव शिकारी एवं खाद्य संग्राहक से खाद्य उत्पादक की अवस्था में पहुँचा इस क्रम में उसने प्रकृति की प्रक्रिया में हस्तक्षेप कर उत्पादन के लिए कृत्रिम वातावरण का निर्माण किया अर्थात् अनाजों के जंगली रूप को कृत्रिम वातावरण में बोया और उगाया जाने लगा उसी प्रकार पशुओं को प्रजनन के लिए कृत्रिम वातावरण प्रदान किया गया।

② मानव, भूमि और पशु के बीच संबंध बदल गया तथा मानव उत्पादन के लिए पशु एवं भूमि दोनों का उपयोग करने लगा।

KD Job Updates

③ नवपाषाणकाल में जो विकास हुआ इसके परिणामस्वरूप मानव सभ्यता की दहलीज पर कदम रखा।

क्रांति की अवधारणा के विपक्ष में —

① इस काल में जो परिवर्तन हुआ वह कोई आकस्मात एवं द्रुत परिवर्तन नहीं था बल्कि यह परिवर्तन लगभग 3000 वर्षों के लम्बे अंतराल (लगभग 7000 BC – 3800 BC) में सम्पन्न हुआ।

② हमें पशुपालन मृदभाण्डों के प्रयोग आदि की सूचना मध्य पाषाणकाल से ही मिलने लगती है। आदमगढ़ और बागौर से पशुपालन के साक्ष्य उसी प्रकार चौपानी-मांडो से मृदभाण्ड के आरम्भिक प्रयोग की सूचना मिलती है इतना ही नहीं बल्कि मेहरगढ़ (बलूचिस्तान) तथा बेलनघाटी में कोल्डिहवा इन दोनों स्थलों से कृषि का आरम्भिक साक्ष्य मिला है परन्तु ये दोनों स्थल मध्यपाषाणकाल की उत्तर अवस्था में अस्तित्व में आ चुके थे तथा क्रमिक रूप में विकसित हुए।

③ फिर विभिन्न स्थलों पर परिवर्तनों का कालांतराल और विकास की गति प्रक्रिया भी अलग-अलग रही दूसरे शब्दों में यह परिवर्तन एक रूप नहीं था इसलिए भी इसे क्रांति कहना उचित नहीं लगता।

[M.Q.] नवपाषाणकाल को नवपाषाणक्रांति कहना कहाँ तक उचित है अपने मत के पक्ष में उत्तर दीजिए।

KD Job Updates

19/10/2018

महादहा → बारहसिंह के सींग से कण्ठहार

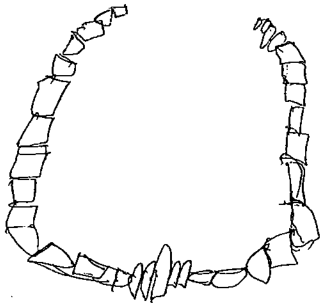

मनका (हड़प्पा)

MAP - I {नवपाषाणकाल}

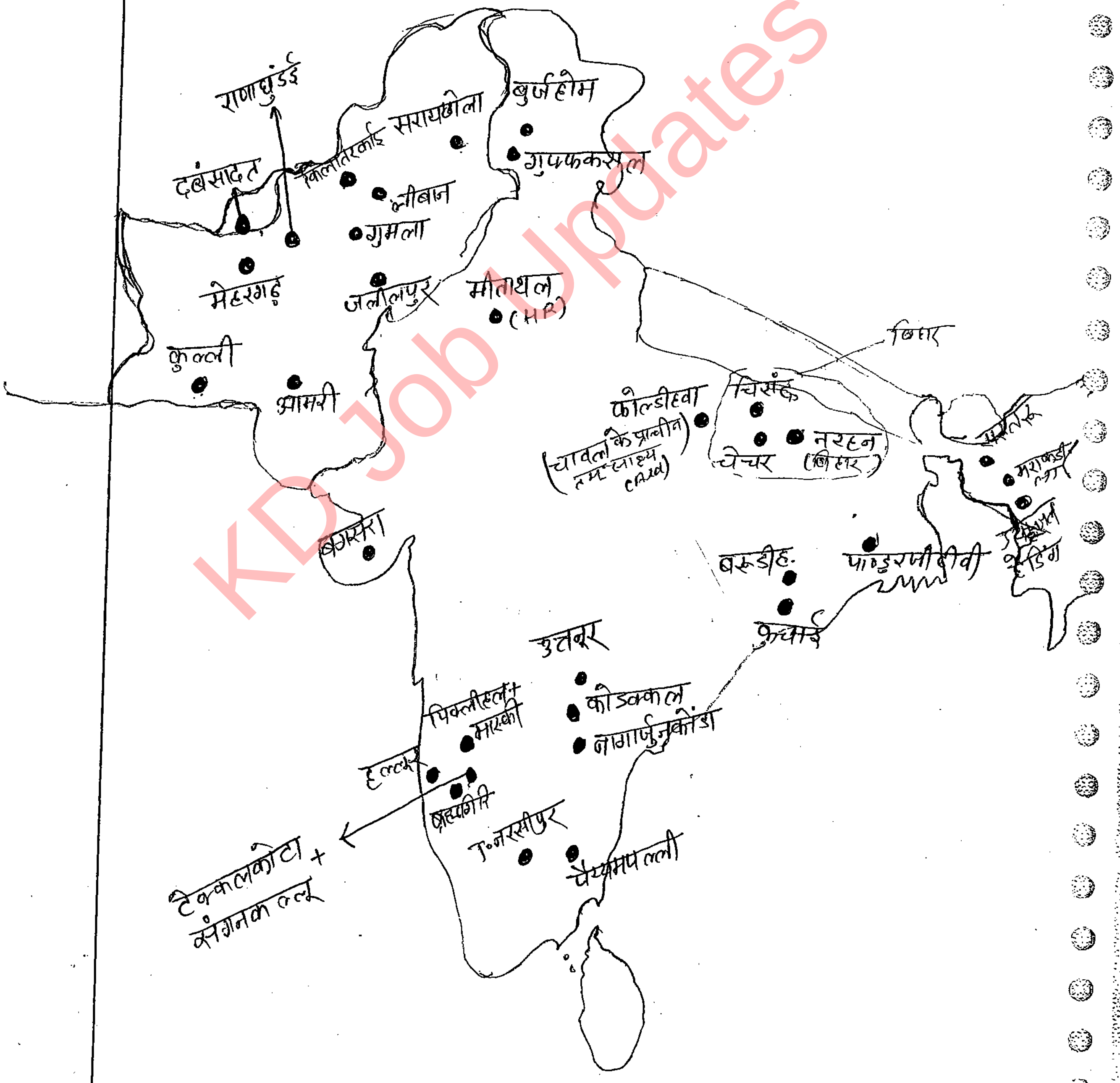

KD Job Updates

दूसरे शब्दों में यह परिवर्तन एक रूप नहीं था, इसलिए भी इसे क्रांति कहना उचित नहीं लगता।

मॉडल प्रश्न :-

नवपाषाण काल को नवपाषाण क्रांति कहना कहाँ तक उचित है? अपने मत के पक्ष में उत्तर दीजिए।

Date 12/10/2018

तकनीकी विकास :- पत्थर से पत्थर को तोड़ कर उपकरण बनाने के बजाए पत्थर से पत्थर को घिस कर उपकरण बनाए जाने लगे। ये उपकरण चिकने एवं खेती के लिए अधिक उपयुक्त होते थे।

जीविकोपार्जन :-

(1) इस काल में कृषि का आरंभ हुआ। कृषि की शुरुआत के संदर्भ में अलग-2 विचार दिए जाते हैं। कुछ विद्वान इसे जनसंख्या वृद्धि जैसे कारक से जोड़ते हैं तो कुछ अन्य जलवायु परिवर्तन जैसे कारक से। वस्तुतः जलवायु परिवर्तन जैसा कारक अधिक महत्वपूर्ण कारक प्रतीत होता है। होलोसीन युग के आरंभ के पश्चात वातावरण अपेक्षाकृत शुष्क हुआ तथा इसलिए खेती के लिए वातावरण निर्मित हुआ।

(2) पशुपालन आरंभ हुआ और कृषि ~~की~~ ~~खेती~~ ~~अब~~ की शुरुआत के बाद अब पशुओं के लिए चारे का उत्पादन संभव हुआ।

(3) विभिन्न नवपाषाणकालिक स्थलों के बीच वस्तुओं का आदान-प्रदान सम्भव था।

(4) मृद्भाण्डों का नियमित रूप से प्रचलन आरंभ हो गया। खाना पकाने के साथ-2 अनाजों को रखने के लिए भी मृद्भाण्डों की जरूरत होती। फिर जब अनाजों का अधिशेष बढ़ा तो चबूतरे पर अनाज रखा जाने लगा। साथ ही धान्य कोठार का भी विकास हुआ। धान्य कोठार का साक्ष्य मेहरगढ़ से प्राप्त हुआ है।

सामाजिक स्थिति :-

(1) **सामुदायिक भावना का विकास :-** अब लोग स्थायी जीवन जीने लगे थे तथा एक बस्ती में एक-दूसरे पर निर्भरता बढ़ गई। फिर दावत और समारोह जैसी गतिविधियाँ भी बढ़ी। कर्नाटक में बुदिहाल नामक स्थल से सामूहिक भोज का साक्ष्य मिला है। इससे सामुदायिकता की भावना मजबूत हुई होगी।

(2) **बूढ़े एवं स्त्रियों पर से काम का दबाव कम होना :-** कृषि के आरंभ के पश्चात् बूढ़े एवं स्त्रियों पर काम का दबाव कम हुआ और उन्हें अपेक्षाकृत अधिक अवकाश मिला।

(3) **सामाजिक विभाजन को बल मिला :-** उत्पादन के पश्चात् सामाजिक विभाजन को बल मिलना स्वाभाविक था क्योंकि कुछ लोगों के हाथों में अधिक संसाधन आया।

KD Job Updates

सामाजिक विभाजन के निम्न प्रमाण है —

(a) सामान्यत: लोग लकड़ी अथवा सरकण्डे के मकान में रहते थे और इस पर गीली मिट्टी की लेप लगाई जाती थी। सामान्यत: मकान आयताकार होते थे परन्तु कुछ मकान गोलाकार भी मिले है जो दर्शाते है ये सरदारों के मकान थे।

(b) फिर धान्य कोठारों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि लोग जरूरत से ज्यादा उत्पादन कर रहे थे तथा किसी क्षेत्रीय सरदार के द्वारा कुछ अनाजों को वसूल कर उन्हें धान्य कोठारों में सुरक्षित रखा जाता है, यह मुखिया तंत्र की उपस्थिति की ओर संकेत करता

(c) शवाधान पद्धति भी सामाजिक विषमता की ओर संकेत करती है। कुछ शवों के साथ सीप की चूड़ियाँ मिली है जो धनी वर्ग की उपस्थिति की ओर संकेत करती है।

संस्कृति :—

(1) शवाधान पद्धति के तहत मृतक व्यक्ति के साथ कुछ वस्तुओं को रखा गया जाना यह दर्शाती है कि मृत्यु के पश्चात के जीवन की परिकल्पना विकसित हो गई थी।

(2) कृषि गतिविधियाँ महज एक आर्थिक सच्चाई नहीं थी बल्कि इसने सांस्कृतिक दृष्टिकोण को भी प्रभावित किया। अनाजों का उपयोग एक-दूसरे की सहायता करने, उधार लेने और देने के लिए इस्तेमाल किया जाता था, इसने बन्धुत्व के लगाव को प्रोत्साहन दिया।

KD Job Updates

(3) किसान अनाज की खपत करने के बावजूद कुछ अनाज बचा कर रख लेते थे ताकि उसका बीज के रूप में उपयोग हो सके। इससे बचत की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला।

(4) उत्पादन में आरंभ के साथ धर्म के क्षेत्र में उपासना का महत्व बढ़ गया इसलिए इस काल में विभिन्न नवपाषाणकालिक स्थलों से देवियों एवं साँड की मूर्तियाँ मिलने लगी।

(5) गुफा चित्रकला का आरंभ हम मध्यपाषाण काल से मानते हैं, नवपाषाणकाल में इस प्रवृत्ति को और भी बल मिला।

भौगोलिक वितरण :-

मानचित्र

KD Job Updates

स्थलों का विवरण :- Booklate (page 39)

Deepak PHOTO STAT
9310521834

KD Job Updates

विचार के प्रमुख मुद्दे :-

(1) नवपाषाणकालीन संस्कृति तथा हड़प्पा सभ्यता के बीच संबंध
(Booklate page - 41-42)

(2) नवपाषाणकालीन संस्कृति स्थल एवं ताम्र पाषाणकालिक के बीच संबंध।
(Booklate page (42))

(3) हड़प्पा सभ्यता और ताम्रपाषाण काल के बीच संबंध।
(Booklate page (39))

मानचित्र

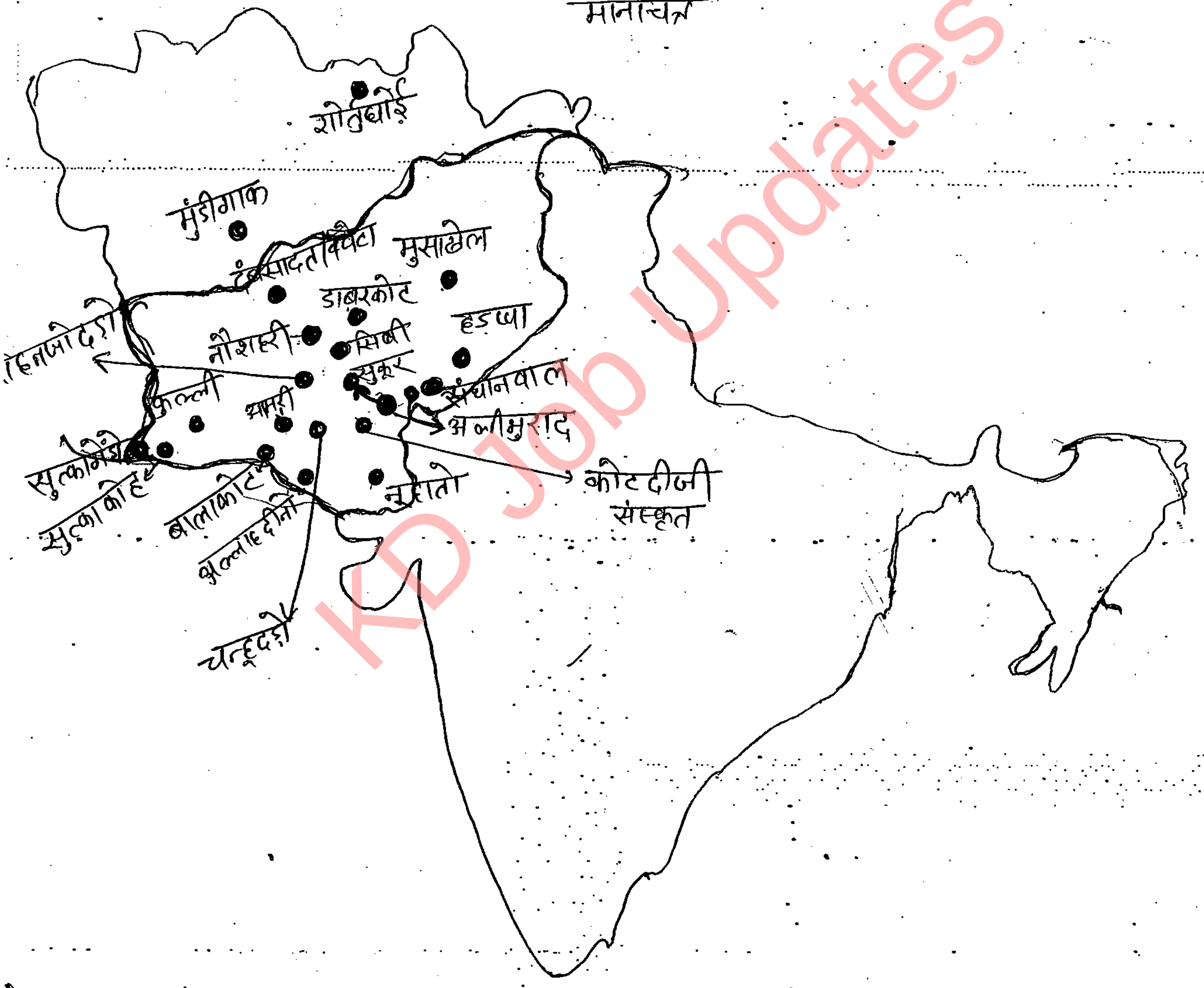

हड़प्पा - I

KD Job Updates

हड़प्पा सभ्यता :-

हड़प्पा सभ्यता के उद्भव की व्याख्या में विवाद क्यों ?

निम्नलिखित कारणों से विवाद :—

(1) हड़प्पा सभ्यता न केवल एक नगरीय सभ्यता थी वरन् यह कई बातों में विलक्षण थी। इसलिए इसके विकास का सूत्र खोजना कठिन प्रतीत हो रहा था।

(2) चूंकि हड़प्पाई लिपि नहीं पढ़ी जा सकी, इसलिए इसके विकास के प्रक्रिया को समझना कठिन हो गया।

(3) ब्रिटिश साम्राज्यवादी लेखक इतनी विकसित सभ्यता के स्थापना का श्रेय भारतीयों को देने के लिए तैयार नहीं थे।

हड़प्पा सभ्यता के उद्भव में मेसोपोटामियाई उद्भव की अवधारणा क्या है? तथा इसे मानने में क्या कठिनाई है? Booklate page - 44

मेसोपोटामियाई उत्पत्ति संबंधी अवधारणा :-

गार्डन एवं क्रेमर :- मेसोपोटामिया से भारत की ओर जनसंख्या का प्रवास हुआ था।

~~व्हीलर~~ मार्टीमर व्हिलर :- मेसोपोटामिया से भारत की ओर नगरीकरण के विचार का प्रवास।

उपर्युक्त विचार की सीमा :-

(1) नगर निर्माण योजना में अंतर।

(2) मोहर तथा लिपि के स्वरूप में अंतर।

KD Job Updates

(3) ईंटो एवं उपकरणों के निर्माण में अन्तर।

निष्कर्ष :- उपर्युक्त विचार तार्किक नहीं है इसलिए हड़प्पा सभ्यता के उद्भव में अन्तर पश्चिम की ग्रामीण संस्कृतियों से क्रमिक विकास के संदर्भ में समझना अधिक उपयुक्त है।

हड़प्पा सभ्यता के ~~क्रमिक~~ उद्भव में क्रमिक उद्भव का सिद्धांत क्या है ? क्रमिक उद्भव की संपूर्ण प्रक्रिया पर एक टिप्पणी कीजिए।— (page 49-50)

(4) मेसोपोटामिया में नहर का प्रयोग जबकि हड़प्पा सभ्यता में नहर के उपयोग का साक्ष्य केवल अफगानिस्तान के शोर्तुघई नामक स्थान पर।

KD Job Updates

क्या हड़प्पा सभ्यता के संबंध में क्रमिक उद्भव का सिद्धांत उद्भव की संपूर्ण व्याख्या कर पाता है?

(अथवा)

प्रश्न :- हड़प्पा सभ्यता के उद्भव में क्रमिक उद्भव के सिद्धांत का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

प्रश्न : कुछ आरंभिक/प्राक् हड़प्पाई स्थलों का दृष्टांत देकर हड़प्पाई स्थलों से उनकी निरंतरता को दर्शाइए।

(page-48, 49)

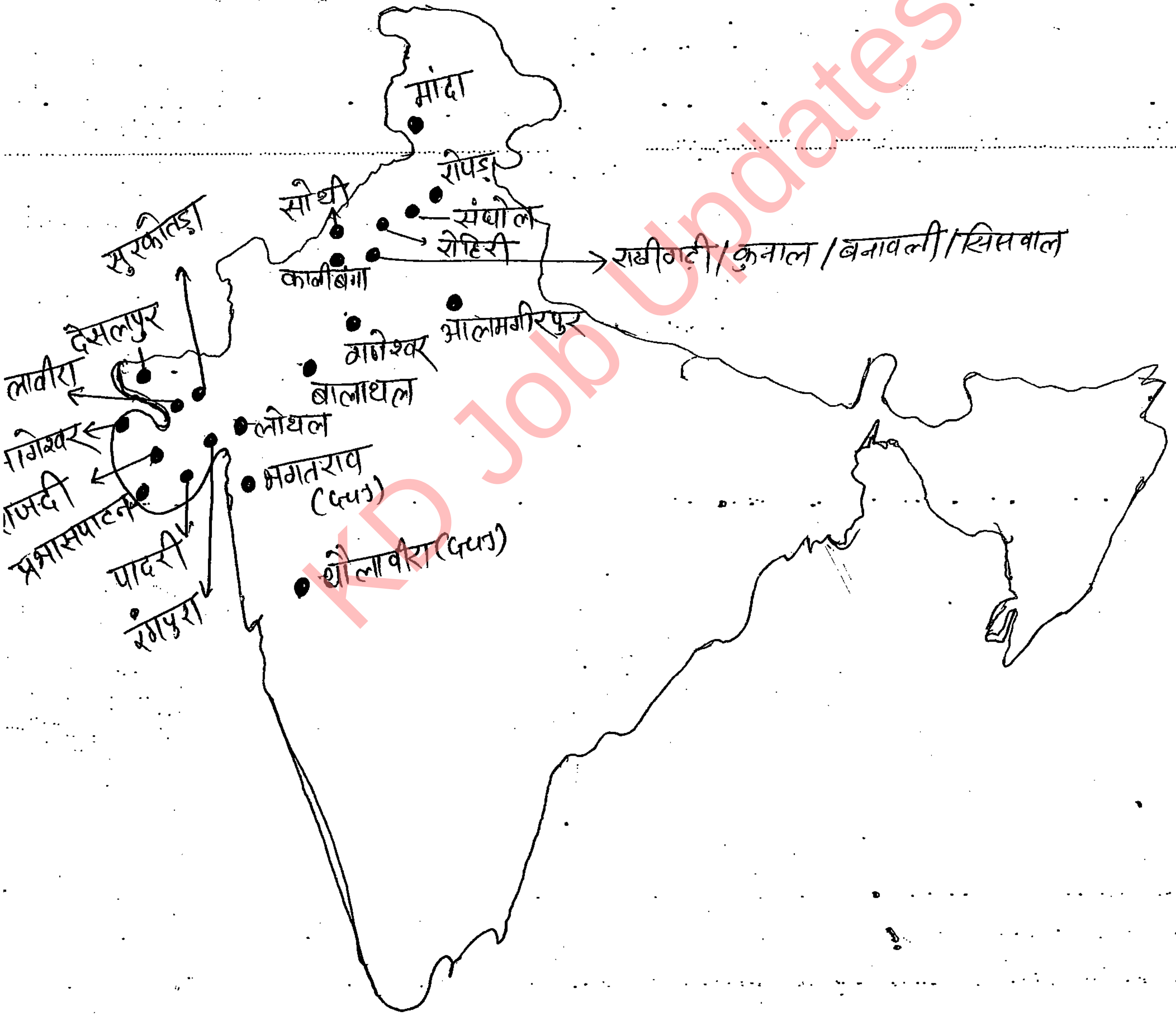

हड़प्पा -2
मानचित्र

KD Job Updates

Date- 15/10/2018

पिछले 8-9 दशकों में हड़प्पा सभ्यता से संबंधित क्या नवीन अनुसंधान हुए हैं?

(1) पुरातत्वविदों ने न केवल नगरीय संरचना की खुदाई की बल्कि पाकिस्तान में कराची के पास अल्लादीनो और हरियाणा में बालू जैसे ग्रामीण स्थलों की भी खुदाई कर हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत गाँवों एवं नगर के संबंधों को समझने का प्रयास किया है।

(2) कुछ पुराने नगरीय स्थलों की दुबारा खुदाई की। उदाहरण के लिए धौलावीरा (गुजरात) (रंग पुर कच्छ) और राखीगढ़ी (हरि.)। फिर यह पाया गया कि इन स्थलों का वास्तविक आकार काफी बड़ा था।

(3) हाल में राखीगढ़ी की खुदाई में अनेक कब्र प्राप्त हुए हैं। DNA Footprinting के आधार पर उनका अध्ययन कर नवीन निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

हड़प्पा

हड़प्पा सभ्यता के उद्भव में क्रमिक उद्भव क्या है? तथा यह सभ्यता के उद्भव की व्याख्या किस रूप में करती है?

नवीन स्रोतों के आधार पर यह माना जाता है कि हड़प्पा सभ्यता का विकास उत्तर पाषाण की ग्रामीण संस्कृतियों से क्रमिक रूप में हुआ है।

तकनीकी - आर्थिक आधार

जैसा कि हम जानते हैं कि हड़प्पा सभ्यता के अध्ययन में हम पुरातात्विक साक्ष्य का ही प्रयोग कर पाते हैं। इन साक्ष्यों के आधार पर हम तकनीकी - आर्थिक परिवर्तन को क्रमिक रूप में समझ सकते हैं —

(1) हल का प्रचलन (राजस्थान कालीबंगा नामक स्थल से आरंभिक हड़प्पाई चरण में जुते हुए खेत का साक्ष्य प्राप्त) है से कृषि उत्पादन को प्रोत्साहन तथा खाद्यान्न फसल के साथ - साथ औद्योगिक फसल के रूप में कपास का भी उत्पादन (मेहरगढ़ के आरंभिक हड़प्पाई स्थल से कपास का साक्ष्य प्राप्त) ।

(2) चाक (wheel) के प्रचलन के ~~परिणामस्वरूप~~ परिणामस्वरूप मृदभाण्डों के निर्माण के साथ - साथ गाड़ी के पहिये के रूप में भी प्रयोग। इससे यातायात के साधन का भी सुगम होना। अब दूर दराज के क्षेत्रों से अतिरिक्त कृषि उत्पादों को एक स्थल पर लाया जाना और उसे धान्य कोठार में सुरक्षित रखा जाना।

(3) ताँबे का प्रचलन आरंभ तथा पहले धातु के उत्पादन से जोड़ना। फिर इस काल में शिल्पकारों का विकास, अलग - अलग शिल्पि समूह अलग-2 क्षेत्र में बस गए और उनके बीच एक संपर्क सूत्र भी कायम हुआ होगा।

(4) दूरवर्ती व्यापार के विकास में खानाबदोश लोगों की भूमिका रही होगी जो सिंधु के कछारी मैदान से ईरान के पठार तक जाते थे।

(5) व्यापार तथा प्रशासन के संचालन के लिए लेखन की जरूरत पड़ती। फिर जैसा कि हम देखते कि गुजरात के पादरी तथा हड़प्पा के आरंभिक हड़प्पाई चरण से लिपि का साक्ष्य प्राप्त।

(6) फिर जैसा कि हमें ज्ञात आरंभिक हड़प्पा के स्थलों के आस-पास अविकसित लोग बसते थे, अतः उनसे रक्षा के लिए रक्षात्मक दीवारें बनाई गई होंगी।

परन्तु जब हम आरंभिक हड़प्पा से हड़प्पाई चरण तक का विकास देखते हैं तो फिर एक समस्या उपस्थित होती है — पूर्व नगरीय चरण से नगरीय चरण के विकास की प्रक्रिया को समझना। यह पहलू इसलिए स्पष्ट नहीं हो पाता कि इसमें राजनीतिक कारक (शासक वर्ग), सामाजिक कारक (सामाजिक रूप से प्रभावी वर्ग), धार्मिक कारक (पुरोहित वर्ग) की भूमिका रही होगी परंतु लिपि न पढ़े जाने के कारण हम इन कारकों से अवगत नहीं हो सके हैं।

प्रश्न - कुछ आरंभिक हड़प्पाई स्थलों के आधार पर आरंभिक हड़प्पा से हड़प्पा के स्तर तक संक्रमण की प्रक्रिया को समझना दिलचस्प है।

लिखित साक्ष्य के अभाव में हड़प्पा सभ्यता जैसी उन्नत नगरीय सभ्यता के उद्भव का मुद्दा आरंभ से ही एक प्रकार के विवाद में उलझा रहा था। पहले इसकी व्याख्या मेसोपोटामियाई कारक के परिप्रेक्ष्य में

करने का प्रयास किया गया। फिर नवीन अनुसंधानों के प्रकाश में इसके उद्भव को सन्दर्भ से समझने का प्रयास किया गया। तब हमें यह ज्ञात हुआ कि इसका उद्भव उत्तर परिपक्व की क्षेत्रीय संस्कृतियों से हुआ है।

कुछ स्थलों का अध्ययन कर इसके उद्भव की प्रक्रिया को बहुत हद तक समझा जा सकता है। कुछ प्राक् हड़प्पाई स्थल यथा बलूचिस्तान में मेहरगढ़, सिंध में आमरी एवं कोटदीजी, राजस्थान में कालीबंगा, गुजरात में धोलावीरा आदि स्थलों से परिवर्तन ~~अथवा~~ एवं संक्रमण की सूचना मिलती है। आरंभिक हड़प्पाई स्थलों से कृषि के साक्ष्य मिलते हैं। कालीबंगा से जुते हुए खेत के साक्ष्य इसके प्रमाण हैं। दूरवर्ती व्यापार के विस्तार की ओर भी संकेत मिलता है। बलूचिस्तान का सम्पर्क संभवतः ईरान एवं पश्चिम एशिया के क्षेत्र से रहा था। उसी प्रकार विभिन्न स्थलों से तांबे का प्रचलन, चाक के प्रयोग एवं शिल्प गतिविधियों की सूचना मिलती है। फिर ~~[illegible]~~ मृणमूर्तियाँ तथा तांबे से निर्मित पशु आकृतियाँ भी इनका सम्बन्ध हड़प्पा सभ्यता से दर्शाने लगती है। फिर मानव एवं पशु मृणमूर्तियाँ एवं धातु की मूर्तियाँ कहीं न कहीं धर्म के विकास की ओर भी संकेत करती हैं। फिर कुछ स्थलों से हमें रक्षा दीवारों के भी साक्ष्य मिलने लगते हैं।

इस प्रकार कुछ प्राक् हड़प्पाई स्थलों के

सूक्ष्म अध्ययन के पश्चात आरंभिक हड़प्पा के चरण से हड़प्पाई चरण तक संक्रमण की प्रक्रिया को समझा जा सकता है।

प्रश्न :- आरंभिक हड़प्पा से हड़प्पाई चरण तक के क्रमिक विकास की अवधारणा का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

(अथवा)

उपलब्ध पुरातात्विक साक्ष्य आरंभिक हड़प्पा से हड़प्पाई नगरीय चरण के उद्भव की प्रक्रिया को कहाँ तक प्रबोध प्रदान कर पाते हैं।

उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर आरंभिक हड़प्पा से हड़प्पा सभ्यता के उद्भव की अवधारणा अपेक्षाकृत अधिक तार्किक प्रतीत होती है परन्तु इस अवधारणा की भी अपनी कुछ सीमाएँ हैं।

बलूचिस्तान में मेहरगढ़, राजस्थान में कालीबंगा, सिंध में आमरी एवं कोटदीजी, गुजरात में धौलावीरा आदि स्थलों के अवलोकन से यह संकेत होता संकेत मिलता है कि हड़प्पा सभ्यता का नगरीकरण एक क्रमिक उद्भव की प्रक्रिया का परिणाम था। इन स्थलों के अध्ययन के आधार पर जैसे कृषि गतिविधियाँ, शिल्पों का विकास, रक्षात्मक दीवारों की स्थापना, मोहरें, मनके आदि के विकास की सूचना मिलती है। इस आधार पर हड़प्पाई नगरीय सभ्यता की जड़ प्राक् हड़प्पाई संस्कृतियों में पाए जाने की सूचना दी गई।

परंतु इस मत को समग्रता से स्वीकार करने में निम्नलिखित कठिनाई है —

① कई ऐसे विकसित हड़प्पाई स्थल हैं जहाँ से पूर्व हड़प्पाई चरण प्राप्त नहीं होता है। उदाहरण के लिए

(गुजरात सौराष्ट्र कच्छ क्षेत्र)

लोथल, देसलपुर, आन्हडदो, रोपड़, मिताथल एवं आलमगीर पुर जैसे स्थलों के नीचे प्राक् हड़प्पाई चरण नहीं मिलता।

(2) कोलिस्तान (पाकिस्तान का राजस्थान के पास वाला प्रांत) क्षेत्र में अनेक प्राक् हड़प्पाई स्थल मिलते हैं परन्तु इनमें महज तीन स्थल हड़प्पाई स्थल के रूप में विकसित हो सके हैं।

इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता के क्रमिक उद्भव के संबंध में आज भी एक प्रकार का धुंधलापन बना हुआ है। यही वजह है कि क्रमिक उद्भव की अवधारणा भी पूरी तरह विश्वसनीय नहीं बनती। संभव है कि आगे जब हड़प्पाई लिपि पढ़ी जाए तो उद्भव की व्याख्या में कुछ नया आयाम खुलकर आए।

प्रश्न:- हड़प्पा सभ्यता के नागरीकरण में धर्म की निर्णायक भूमिका रही। इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (Booklate page - 58)

प्रश्न:- समझाइए कि क्या कारण है कि अधिकांश ज्ञात हड़प्पाशील बस्तियाँ लवणीय भू-जल वाले अर्द्धशुष्क क्षेत्र में अवस्थित हैं?

Ans:- हड़प्पा सभ्यता के उद्भव एवं विकास को भौगोलिक एवं जलवायु संबंधी कारक से पृथक नहीं देखा जा सकता। अतः हड़प्पा सभ्यता के विकास को समझने के लिए हमें उन कारकों

के भू-भाग में वर्षा की स्थिति, जंगलों का स्वरूप एवं भूगर्भीय जल स्रोत सभी पर अवलोकन करने की जरूरत है।

आद्य ऐतिहासिक काल में भी उत्तर पश्चिम से पूरब की तरफ बढ़ते हुए वर्षा की मात्रा बढ़ती चली गई, इसी के अनुरूप जंगल भी घने होते गए। यह एक महत्वपूर्ण कारण था कि सभ्यता का प्रसार उत्तर पश्चिम से क्रमिक रूप में पूरब की ओर हुआ था। यह अनुमान किया जाता है कि उत्तर पश्चिम में वर्षा की मात्रा लगभग (10-25) सेमी. रही होगी। अतः वहाँ जंगल विरल थे। इसलिए इन जंगलों की सफाई तांबे एवं कांसे के उपकरणों से भी संभव हुआ। यह एक महत्वपूर्ण कारण था कि आरंभिक बस्तियाँ इन्हीं क्षेत्रों में विकसित हुईं।

फिर जल स्रोत की आवश्यकता ने भी बस्तियों के स्वरूप को प्रभावित किया। वस्तुतः हड़प्पाकालीन बस्तियाँ अधिकांशतः लवणीय भू-जल वाले क्षेत्र में अवस्थित थीं जहाँ मध्य गंगा घाटी में अनेक प्राकृतिक जल-स्रोत उपलब्ध थे और ये जल-स्रोत मीठे जल वाले स्रोत थे तथा पीने के लिए इनका उपयोग संभव था, वहीं हड़प्पाई क्षेत्र के लवणीय भू-जल वाले क्षेत्र होने के कारण लोग पीने के जल के लिए नदी के जल पर निर्भर थे, या फिर जैसा कि धौलावीरा से ज्ञात होता है कि वर्षा के जल को संरक्षित करने का प्रयास कर रहे थे। परन्तु इस प्रकार का जल-संरक्षण उस काल में दुर्लभ था, इसलिए नदी किनारे

KD Job Updates

बस्तियाँ स्थापित करना उनके लिए आवश्यक हो गया था।

नदी किनारे बस्तियाँ स्थापित होने से उन्हें निम्नलिखित फायदे मिले —

① चूंकि नदी प्रत्येक वर्ष जबोर मिट्टी को बहा कर लाती थी जो काफी उपजाऊ होती थी, इस कारण व्यापक कृषि-उत्पादन का अधिशेष संभव हुआ।

② इन नदियों ने सस्ते परिवहन के रूप में भी अपनी भूमिका निभाई तथा इन नदियों के माध्यम से विभिन्न स्थलों को आपस में जोड़ना तथा एक व्यापार तंत्र का विकास करना संभव हुआ। इसलिए अनुमान किया जाता है कि हड़प्पा सभ्यता जैसी एक उन्नत नगरीय सभ्यता के विकास को उत्प्रेरणा प्रदान करती थी।

उपर्युक्त तथ्यों के प्रकाश में इस बात की व्याख्या करना संभव है कि अधिकांश हड़प्पाई स्थल अर्द्ध-शुष्क एवं लवणता वाले भू-जल क्षेत्र में क्यों स्थापित हुए।

KD Job Updates

हड़प्पा सभ्यता की विशेषताएँ :-

(1) विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में एक तथा भारतीय उपमहाद्वीप में पहली नगरीय सभ्यता।

(2) विलक्षण नगर निर्माण योजना जो समकालीन [illegible] कालीन नगरीकरण के युग में एक दुर्लभ उपलब्धि।

(3) हड़प्पाई नगरीकरण में उन्नत व्यापार की निर्णायक भूमिका क्योंकि कैसे क्षेत्र में भी नगरों की स्थापना संभव जो कृषि के ~~क्षेत्र~~ दृष्टि से पिछड़े हुए।

(4) ज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में भी हड़प्पाई लोगों की अनुपम उपलब्धि, अंकमाला का ज्ञान, नगर-निर्माण योजना विकसित ज्यामिति की ओर संकेत करता था। मापन पद्धति के रूप में feet & Cubic का प्रयोग।

(5) गणना में 16 एवं उनके गुणकों (multiples) का प्रयोग, दशमलव एवं द्विभाजन (Binary) पद्धति का प्रयोग, समकालीन ग्रहों एवं नक्षत्रों का ज्ञान, तांबे एवं कांसे को गलाने की पद्धति का ज्ञान आदि।

(6) सांस्कृतिक विविधता :-

(i) नगरीय जीवन के अनुकूल सांस्कृतिक विविधता पर बल यथा कहीं अग्नि की पूजा तो कहीं [illegible] की पूजा तो कहीं ओरिक ~~[illegible]~~ शवाधान तो कहीं [illegible] शवाधान की पद्धति

नगर निर्माण योजना :-

नगरों की बनावट :- यद्यपि नगरों के निर्माण में एकरूपता की परिकल्पना नहीं की जा सकती [illegible]

ये नगर विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए थे और इन्हें अलग-2 प्रकार की भौगोलिक एवं जलवायु संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। परन्तु फिर भी नगरों के निर्माण में कुछ निश्चित मानदंडों का पालन करने का प्रयास किया गया था। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो एवं कालीबंगा जैसे नगर दो भागों में विभाजित थे। पश्चिमी भाग में दुर्ग क्षेत्र तथा पूर्वी भाग में निचला शहर। दुर्ग क्षेत्र में संभवत: शासक वर्ग के लोग रहते जबकि निचले शहर में सामान्य लोग। दिलचस्पी का विषय यह है कि निचले शहर को भी अत्यधिक व्यवस्थित रूप में बसाने का प्रयास किया गया था।

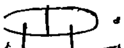

निचला | आम वर्ग

हालाँकि नवीन ~~खोजों~~ शोधों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि नगरों को पूरी तरह ग्रिड प्रणाली पर निर्माण किया जाना या सड़कों का एक-दूसरे को समकोण पर काटना तो व्यावहारिक रूप में संभव नहीं हुआ था किन्तु नगर निर्माण योजना निश्चय ही विलक्षण थी। पहले सड़कें, गलियाँ और नालियाँ बनाई गई थी फिर मकान निर्मित किए गए थे। साथ ही मकानों के निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया था कि मकान की कम से कम एक दीवार गली की नाली से सटी हुई हो ताकि जल निकासी की सुगम व्यवस्था स्थापित हो। फिर प्रत्येक आँगन में कुएँ का होना, पक्की ईंटों से निर्माण कार्य, शौचालय एवं स्नानघर की व्यवस्था सभी ~~अत्यधिक~~ अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि दिखती है।

KD Job Updates

समकालीन सभ्यताओं की तुलना में हड़प्पाई नगरीय जीवन की विलक्षणता :-

समकालीन मिस्र एवं मेसोपोटामिया की सभ्यता के अन्तर्गत शासक वर्ग के लोगों के सार्वजनिक भवनों के निर्माण पर अत्यधिक खर्च किया था। जबकि जनसामान्य कच्चे ईंटों के मकान अथवा झोपड़ियों में रहते थे। वहीं हड़प्पाई शासक वर्ग के लोगों ने सार्वजनिक भवनों के निर्माण पर अपेक्षाकृत कम खर्च किया जबकि जनसामान्य के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाया। जनसामान्य पक्की ईंटों से निर्मित भवनों में रहते थे तथा उस काल में उन्होंने दुर्लभ नागरिक सुविधाओं का उपयोग किया था।

हड़प्पाई नगरों में जल प्रबंधन तथा उसको संरक्षण योजना की विवेचना कीजिए :-

(1) जल प्रबंधन के दो पहलू :-

(a) पीने का जल :-

प्रत्येक आँगन में कुएँ का निर्माण। कुएँ में जल का आना नदी के जल से। परन्तु यह जल रिस-रिस कर आता था इस तरह से प्राकृतिक रूप में जल की सफाई। अगर मकान बहुमंजिली तो ऊपर की मंजिल पर किसी बर्तन में जल ले जाने की व्यवस्था।

(b) जल की निकासी का उत्तम प्रबंध

मकान की एक दीवार का गली की नाली से सटा होना। ऊपर से नीचे जल की निकासी के लिए पक्की मिट्टी के पाइप का उपयोग। गली की नाली का मुख्य सड़क की नाली से जुड़ा होना।

वर्षा की पानी की निकासी के लिए अलग नाली की व्यवस्था।

(2) जल संरक्षण के लिए धौलावीरा में कृत्रिम जलाशय का निर्माण जो जल संरक्षण के क्षेत्र में पहला प्रयोग।

हड़प्पाई नगरीकरण से वर्तमान नगरीकरण को क्या उत्प्रेरणा मिलती है ?

(1) हड़प्पाई लोगों ने पहले सड़के, गलियाँ एवं नालियाँ बनाई तथा फिर मकानों का निर्माण किया, इसलिए उनकी जल निकासी की प्रणाली विलक्षण सिद्ध हुई परन्तु वर्तमान भारत के अधिकांश नगरों में जल-निकासी की समस्या एक बड़ी संकट बनी हुई है।

(2) हड़प्पाई लोगों के बेहतर Governance का ज्वलंत उदाहरण है नगर योजना के नियमों में उल्लंघन का प्रयास नहीं जो वर्तमान नगरों में नहीं दिखता।

(3) ~~शासक~~ हड़प्पाई शासक वर्ग के लोगों ने स्वयं पर कम खर्च किया परन्तु नागरिकों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाया।

(4) हड़प्पाई लोगों ने जल संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रयोग किया था। वर्तमान नगर में पेय जल संकट की समस्या को झेल रहे हैं। किन्तु वहाँ इस प्रकार की तत्परता नहीं दिखती।

हड़प्पा सभ्यता में नगरीय सभ्यता के तत्व :-

Gordon Child के (10) तत्व

(1) बस्तियों का बड़ा आकार।
(2) नियोजित अधिवास।
(3) एक बड़ी जनसंख्या का गैर-कृषि कार्यों में लगा होना।
(4) एक सक्षम शासक वर्ग की उपस्थिति।

KD Job Updates

(5) विकसित व्यापार
(6) लिपि का प्रयोग
(7) सांस्कृतिक विविधता

हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत उपजीविका के क्या आधार थे

~~आधार~~ (1) **पशुपालन** :— खुदाई में विभिन्न प्रकार के पालतू पशुओं के हड्डी प्राप्त।

(2) **कृषि** :— पत्थर, ताँबे एवं काँसे के उपकरणों का प्रयोग (कालीबंगा से जुता हुआ खेत के साक्ष्य), ~~बनावली~~
बनावली से पकाई गई मिट्टी के साक्ष्य।
फसल के रूप में गेहूँ, जौ, मटर, सरसों, चना एवं
गुजरात से चावल का साक्ष्य की प्राप्ति।
औद्योगिक फसल के रूप में कपास। इस प्रकार कृषि फसलों की बहुलता।

(3) **शिल्प एवं उद्योग** :— मृदभाण्डों का निर्माण, मृणमूर्तियों का निर्माण, ताँबे, काँसे एवं पत्थर की मूर्तियों का निर्माण।

(4) **विनिर्माण कार्य** :— नगरों एवं सार्वजनिक स्थलों के निर्माण के बेहतर इंजीनियरिंग (अभियांत्रिकी) की जरूरत पड़ी थी, इसलिए कुशल कारीगरों का एक समूह कार्य कर रहा होगा... साथ ही बड़ी संख्या में श्रमिकों को भी लगाया गया होगा। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो दोनों ही

स्थलों से श्रमिकों का आवास मिला है। इस प्रकार दैनिक मजदूरी भी उपजीविका का साधन था।

(5) व्यापार :-

आंतरिक एवं बाह्य व्यापार विकसित अवस्था में। इसलिए व्यापार उपजीविका का एक प्रमुख साधन।

(6) लिपि एवं लेखन कला की उपस्थिति एक लिपिक वर्ग की उपस्थिति की ओर भी संकेत करता है। इस प्रकार लेखन कार्य भी उपजीविका का एक साधन रहा होगा।

Date
7/10/2018

हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत व्यापार की स्थिति

विकसित व्यापार हड़प्पा सभ्यता के नगरीकरण का कारण और परिणाम दोनों था।

व्यापार के प्रमाण

(1) हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत मानक माप-तौल की प्रणाली तथा मानक मुहरों का प्रयोग विकसित व्यापार की ओर संकेत करता।

(2) मेसोपोटामिया में अक्काद के शासक सरगौन के अभिलेख से यह साक्ष्य मिलता है कि दिलमुन, माकन एवं मेलुहा के व्यापारी वहाँ नगर आते थे। मेलुहा की पहचान हड़प्पा सभ्यता से की।

KD Job Updates

13/10/2018

हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत व्यापार की स्थिति

विकसित व्यापार हड़प्पा सभ्यता के नगरीकरण का कारण और परिणाम दोनों था।

व्यापार के प्रमाण —

① हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत मानक माप तौल की प्रणाली तथा मानक ~~मोहुलों~~ मुहरों का प्रयोग विकसित बाजार की ओर संकेत करती थी।

② मेसोपोतामिया में अक्कार के शासक सरगौन के अभिलेख से यह सूचना मिलती है कि दिलमन - माकन एवं ~~मेलुहा~~ मेलुहा के व्यापारी वहाँ लंगर डालते थे। मेलुहा की पहचान हड़प्पा सभ्यता से थी।

③ गुजरात में लोथल, रंगपुर और रोजदी नामक स्थल की पहचान बन्दरगाह नगर के रूप में। उसी प्रकार बलूचिस्तान में सुत्कागेंडो, सुत्का कोह और बालाकोट बंदरगाह नगर के रूप में स्थापित।

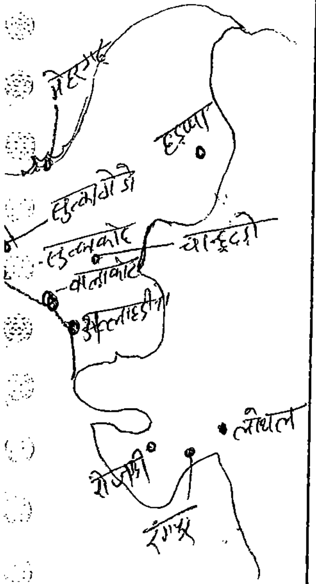

व्यापार को प्रेरित करने वाले मुख्य कारक —

① हड़प्पाई नगरों में एक धनी वर्ग के द्वारा विलासिता संबंधी सामग्रियों की माँग।

② हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत शिल्पियों के द्वारा

KD Job Updates

कच्चे माल की जरूरत है।

व्यापार के प्रकार —

① गाँव से नगर की ओर — खाद्यान्न एवं कृषि उत्पादों की जरूरत।

② नगर से नगर की ओर — लोथल और चन्हुदड़ो में मनका बनाने वाला कारखाना प्राप्त। लोथल में हाथीदांत का काम, मोहनजोदड़ो में शिप का काम इस प्रकार अलग-अलग नगरों में अलग-अलग प्रकार के उत्पादन और इनके बीच परस्पर संपर्क तथा वस्तुओं का आदान-प्रदान।

③ भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न क्षेत्रों के साथ संपर्क यथा राजस्थान, कर्नाटक बिहार के हजारीबाग आदि इन क्षेत्रों से कच्चे माल की प्राप्ति।

④ भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर के क्षेत्रों के साथ व्यापार — फारस की खाड़ी, मेसोपोटामिया, बलूचिस्तान मध्य एशिया तथा उत्तरी-पूर्वी अफ्रीका में मिश्र।

आयात की वस्तुएँ —

मेसोपोटामिया से चाँदी एवं टीन, ईरान से फिरोजा (कीमती पत्थर), कर्नाटक के कोलार से सोना, राजस्थान से तांबा, बिहार के हजारीबाग से

KD Job Updates

निर्यात की वस्तु —

ताँबा, सोना, हाथीदाँत की वस्तुएँ, शिप की वस्तुएँ, कार्नेलियन से निर्मित वस्तुएँ, काली लकड़ी, कपास अनाज आदि। मेसोपोटामिया के साहित्य में मेलुहा से ~~हड़प्प~~ प्राप्त कुछ वस्तुओं का जिक्र यथा लाजवर्द मणि, कार्नेलियन, काली लकड़ी आदि।

हड़प्पाई ~~भारत~~ व्यापार ने वस्तुओं के स्वरूप को किस प्रकार प्रभावित किया? —

प्राचीन काल में नगरीय बस्ती के विकास में कृषि एवं व्यापार दोनों की भूमिका होती है परन्तु हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत कुछ नगरों के विकास में व्यापार ने निर्णायक भूमिका निभाई थी उदाहरण हेतु बलूचिस्तान में सुत्काकोह एवं सुत्काकोह ऐसे क्षेत्र थे जो कृषि की दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े हुए थे किंतु वहाँ भी संपन्न नगरों का विकास हुआ तो इसका एक बड़ा कारण था इन क्षेत्रों का व्यापारिक बन्दरगाह के रूप में विकसित होना।

हड़प्पाई नगरीकरण के उत्थान एवं पतन में मेसोपोटामियाई व्यापार की भूमिका का मूल्यांकन —

ग्रेगरी पार्शेल एवं सीरिन रत्नागर जैसे विद्वानों के द्वारा मेसोपोटामियाई व्यापार को एक निर्णायक

KD Job Updates

कारक के रूप में प्रस्तुत किया जाना।

परंतु दूसरी तरफ D.K. Chakravarti और शेफर जैसे विद्वानों के द्वारा निम्न आधार पर इस मत का खण्डन—

(1) मेसोपोटामिया के साथ व्यापार की मात्रा कितनी इसका हमारे पास कोई आँकड़ा नहीं।

(2) नवीन शोधों के द्वारा यह स्थापित करने का प्रयास कि हड़प्पाई लोगों का मेसोपोटामिया के साथ प्रत्यक्ष व्यापारिक संबंध नहीं बल्कि वे फारस की खाड़ी के व्यापारियों के माध्यम से परस्पर संबंध रखते थे।

(3) नवीन शोधों के आधार पर यह भी लगभग प्रमाणित की संसाधन के मामले में भारतीय उपमहाद्वीप मेसोपोटामिया से कहीं आगे इसलिए मेसोपोटामियाई व्यापार को अधिक महत्व देना उचित नहीं।

M.Q

हड़प्पाई नगरीकरण के उत्थान एवं पतन में व्यापार की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

KD Job Updates

राजनीतिक जीवन —

अध्ययन के साक्ष्य —

हड़प्पाई नगरों में दुर्ग क्षेत्र हड़प्पाई नगरों में सार्वजनिक भवन, उन्नत नगर निर्माण योजना, मानक मुहर, प्रतीक चिन्ह आदि का लगभग 600-700 वर्षों तक अपरिवर्तित रूप में चलना

हड़प्पाई लोगों के राजनीतिक संरचना के विषय में आरम्भ से ही विवाद रहा है सर्वप्रथम स्टुअर्ट पिगॉट महोदय ने मोहनजोदड़ो से प्राप्त दाढ़ी वाले साधु की मूर्ति तथा मेसोपोटामिया से समानता दिखाते हुए इस सभ्यता में पुरोहितों का शासन जैसी अवधारणा को रखी थी परन्तु यह अवधारणा शीघ्र ही खण्डित हो गयी और फिर शासक वर्ग के स्वरूप के विषय में विवाद चलता रहा।

हड़प्पाई राज्य की प्रकृति को दर्शाते हुए इसे एक केन्द्रीकृत साम्राज्य के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया और इसे हड़प्पाई साम्राज्य का नाम दिया गया वहीं एक दूसरे मत के अनुसार इसे एक एकीकृत साम्राज्य के रूप में दर्शाने के बजाए छोटे-छोटे राज्यों के समूह के रूप मे दिखाया गया तथा यह

KD Job Updates

स्थापित करने का प्रयास किया गया यह अलग - अलग राज्य थे परन्तु ये भौतिक विकास के एक ही स्थल पर थे इसलिए इन्हें साम्राज्य समझा गया। जैसा कि हम आगे 16 महाजनपद के रूप में देखते हैं

राजनीतिक प्रणाली
सामान्य / छोटे-छोटे राज्य

इसी प्रकार कुछ विद्वान हड़प्पा सभ्यता के शासक वर्ग को व्यापारी एवं शिल्पियों का प्रतिनिधि मानते हैं इसलिए इस विषय में कोई मान्यता स्थिर नहीं हो पाई है। अगर हड़प्पाई लिपि पढ़ ली गई होती तो फिर हम हड़प्पाई लोगों के राजनीतिक संगठन और विचारधारा को बेहतर रूप में समझ पाते और यह भी जान पाते कि हड़प्पाई नगरीकरण के उत्थान एवं पतन में शासक वर्ग की क्या भूमिका रही।

शासन — 2 मत
पुरोहित वर्ग / व्यापारी शिल्पियों का प्रतिनिधि

सामाजिक संगठन

अध्ययन के साक्ष्य —

मुहरे, मृणमूर्तियाँ, कब्र, ताँबे एवं काँसे की मूर्तियाँ आदि।

KD Job Updates

हड़प्पाई नगरीय सभ्यता का अध्ययन करने पर हमें ज्ञात होता है कि हड़प्पाई समाज विकास के जिस स्तर पर पहुँच चुका था कि हड़प्पाई समाज का एक विभाजित समाज होना बहुत ही स्वाभाविक था। —

जनजातीय समाज —— समतामूलक
|
उत्पादन बढ़ा —— विषमता ↑

हड़प्पाई समाज के शीर्ष पर शासक वर्ग के लोग थे हालांकि हड़प्पाई लोग युद्धप्रिय नहीं प्रतीत होते फिर भी वहाँ एक वर्ग रहा होगा जो राज्य की रक्षा के लिए काम कर रहा होगा फिर एक बड़ी संख्या व्यापारियों एवं शिल्पियों की भी थी जितने बड़े पैमाने पर इस काल में व्यापार हो रहा था उससे यह अनुमान किया जा सकता है कि समाज में व्यापारियों की स्थिति मजबूत एवं प्रभावी रही होगी फिर समाज के निचले शीर्ष पर श्रमिकों का भी एक वर्ग था (हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से प्राप्त श्रमिक आवास) इस ओर संकेत करता है।

पुरुष एवं महिलाओं के बीच क्या संबंध था यह आरम्भ से ही विवाद का विषय रहा है। मुहरों पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व एवं बड़ी मात्रा में महिलाओं की मृणमूर्तियाँ पाए जाना महिलाओं की अच्छी स्थिति की ओर संकेत करता जान पड़ रहा था इसी आधारपर यह धारणा विकसित की गयी थी हड़प्पाई समाज संभवतः एक मातृसत्तात्मक समाज था परन्तु आगे यह धारणा खण्डित हो गयी परिवर्ती काल के दृष्टांतों से यह पाया गया कि मातृ देवी की पूजा महिलाओं की बेहतर स्थिति को नहीं दर्शाती ऐसा हम गुप्तकाल में भी पाते हैं

हाल में राखीगढ़ी में खुदाई के उपरान्त जो कब्रों का अध्ययन हुआ है उसमें कुछ कब्रों में स्वतंत्र रूप से महिलाओं को दफनाया गया है और उसमें कुछ कीमती सामग्रियाँ रखकर कब्र को विशिष्ट बनाने का प्रयास किया गया है यह तथ्य दर्शाता है कि संभवतः ये उस काल की प्रभावशाली महिलाएँ होगी।

KD Job Updates

हड़प्पाई धर्म—

साक्ष्य— मुहरें, मृ० मूर्तियाँ, मृदभांड आदि।

धर्म का दार्शनिक पक्ष— लिखित साक्ष्य के अभाव में धर्म के दार्शनिक पक्ष की भूमिका नहीं।

धर्म का कर्मकाण्डीय पक्ष— पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर निम्नलिखित अनुमान लगाना संभव—

① धर्म का स्वरूप बहुदेववादी — कहीं अग्नि की पूजा, कहीं जल की पूजा, कहीं पशुपति शिव, कहीं वृक्ष पूजा तो कहीं सर्प पूजा। ~~वस्तु~~

वस्तुतः धर्म का यह विविधतामूलक स्वरूप नगरीय जीवन के अनुकूल।

② धर्म का संबंध कहीं न कहीं उत्पादन से

③ भक्ति एवं जीववाद की धारणा की ओर संकेत

④ हड़प्पाई नगरों के पतन के बाद भी हड़प्पाई धर्म सामान्य भारतीय जीवन में घुल मिल गया।

हड़प्पाई स्थापत्य एवं कला—

स्थापत्य— दो प्रकार—

① ~~सनकीय भवन~~ सार्वजनिक भवन एवं अन्य स्थल

KD Job Updates

(2) रिहायशी इलाकों में निर्मित मकान।

सार्वजनिक भवनों का मूल्यांकन –

हड़प्पाई लोगों ने मिस्त्र और मेसोपोटामिया के शासक वर्ग के बीच अलंकरण अथवा सजावट की जगह उपयोगिता पर विशेष बल दिया इसलिए उन्होंने मिस्त्र के पिरामिड तथा मेसोपोटामिया के जिग्गुरत जैसे भव्य स्थापत्य के निर्माण की जगह कुछ चुने हुए सार्वजनिक स्थापत्य ही निर्मित किए और वे स्थापत्य भी सामान्य लोगों के जीवन से अधिक जुड़े थे यथा मोहनजोदड़ो का अन्नागार, हड़प्पा का अन्नागार, मोहनजोदड़ो का वृहद स्नानागार, लोथल का गोदिवाड़ा, धौलावीरा का स्टेडियम आदि।

दूसरी तरफ जनसामान्य के निवास के लिए भी पक्की ईंटों के मकान निर्मित किए गए जो निचले शहर में अवस्थित थे।

कच्ची सामग्री के रूप में प्रयुक्त वस्तुएँ –

कच्ची ईंटें धूप में सुखाई गई ईंटें, आग में पकाई गई ईंटें, पत्थर आदि।

जोड़ने वाली सामग्री का उपयोग — गीली मिट्टी, डामर तथा जिप्सम।

(बिटुमिन)

KD Job Updates

हड़प्पाई कला —

आरम्भ में ऐसा माना गया था कि समकालीन मेसोपोटामिया एवं मिस्र की तुलना में हड़प्पाई कलाकृतियों की संख्या कम है तथा इनमें ~~हड़प्पा~~ अपेक्षाकृत कम विविधता है परन्तु नवीन शोधों के आधार पर यह स्थापित करने का प्रयास किया गया है कि हड़प्पाई लोगों ने बड़े पैमाने पर कलात्मक उत्पाद दिये थे और उनके द्वारा निर्मित कलाकृतियाँ भी बेहतरीन एवं विलक्षण है निम्न रूप में इन्हें समझा जा सकता —

(1) **मुहरे** — अधिकांश मुहरे ~~शेलखड़ी~~ से निर्मित तथा ये अपने स्वरूप में वर्गाकार अथवा आयताकार इन पर पशु की आकृति एवं लिपि अंकित।

(2) **कांस्य कला** — काँसे एवं ताँबे में निर्मित बेहतरीन मूर्तियाँ, चन्हुदड़ो से एक नर्तकी की मूर्ति प्राप्त। हड़प्पा और चन्हुदड़ो से काँसे से निर्मित इक्का गाड़ी कुछ स्थलों से ताँबे एवं काँसे से निर्मित पशु आकृतियाँ। मूर्तियों के निर्माण द्रवी मोम विधि का उपयोग (lost wax Technique)

③ मनके — आभूषण के रूप में मनके का प्रयोग यह बेहतर कलाकृति का उदाहरण। अधिकांश मनके शेलखड़ी में निर्मित इसके अतिरिक्त गोमेद एवं फिरोजा से भी निर्मित मनके।

④ पत्थर की मूर्तियाँ :- विभिन्न हड़प्पाई स्थलों से प्रस्तर की मूर्तियाँ मिली है, उदाहरण हेतु मोहनजोदड़ो से दाढ़ीवाले साधु की मूर्ति जो विचार मग्न दिखता है। हड़प्पा से भी दो मूर्तियाँ प्राप्त हुयी है जिनसे शरीर संरचना का ज्ञान मिलता है हालाँकि मूर्तियों को बेहतर रूप में तराशा गया है परन्तु प्रस्तर की मूर्तियाँ प्रायः भग्न (टूटी) अवस्था मे मिलती है।

⑤ मृण्मूर्तियाँ —

विभिन्न हड़प्पाई स्थलों से आग में पकाई गई बड़ी संख्या में ~~मूर्तिव~~ मिट्टी की मूर्ति मिली है सर्वाधिक संख्या में यह मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुयी है इनमें पशु-पक्षी एवं मानव सभी को प्रतिनिधित्व मिला है परुष की तुलना मे महिलाओं

KD Job Updates

की संख्या अधिक मिलती है अनुमान किया गया था इसका उपयोग खिलौने के रूप में या फिर पूज्य प्रतिमा के रूप में मिलता है हालांकि हाल के शोध में यह स्थापित किया गया है कि संभवतः धनी वर्ग के लोग अपना मकान सजाने में भी इनका उपयोग करते थे।

20/10/2018

हड़प्पा सभ्यता का पतन —

मात्र 600 वर्षों में समाप्त

कब्रगाह R-37 ⇒ हड़प्पाई लोगों के अतिरिक्त लोगों का कब्र।

पुरातात्विक साक्ष्य = अपर्याप्त
- मोहनजोदड़ो से 26 नर कंकाल (संख्या-6000)
- आर्यों का लोग नहीं।

* निरंतर बाढ़ आना — मोहनजोदड़ो
* लोथल में भी बाढ़

हड़प्पा सभ्यता के पतन के विषय में विवाद का क्या कारण है ?—

निम्न कारण हैं —

(1) अपने समकालीन सभ्यताओं की तुलना में हड़प्पा सभ्यता अधिक विकसित प्रतीत होती है किंतु अगर मिस्र का शासक वर्ग लगभग 3000 वर्षों तक अस्तित्व में रह सका परंतु इस सभ्यता के नगरीकरण नगरीय चरण

KD Job Updates

का काल मात्र 600 वर्षों का रहा।

(2) समकालीन सभ्यताओं में यह एक मात्र ऐसी सभ्यता थी जिसके अध्ययन के लिए हमारे पास साहित्यिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है इसका कारण है लिपि का नहीं पढ़ा जाना।

(3) जहाँ तक पुरातात्विक साक्ष्य का सवाल है वहाँ यह भी अपर्याप्त है जैसा कि हमें ज्ञात है मिस्र और मेसोपोटामिया सभ्यता की तुलना में यह कहीं बड़े भौगोलिक भू-भाग में फैली हुयी थी परन्तु इसके अध्ययन में अपेक्षाकृत कम स्थलों की खुदाई हुयी है सबसे बढ़कर बहुत कम ऐसे स्थल हैं जिनकी क्षैतिज खुदाई हुयी है (हाल में धौलावीरा और राखीगढ़ी की क्षैतिज खुदाई से सभ्यता पर अपेक्षाकृत विशेष प्रकाश पड़ने लगा है।)

हड़प्पा सभ्यता के पतन के संबंध में बाह्य आक्रमण की अवधारणा क्या है?—

बाह्य आक्रमण के निम्न अनुमान/अर्थ लगाए जाते हैं—

(1) आर्य आक्रमण की अवधारणा/

(2) अन्य समूहों के द्वारा आक्रमण किए जाने की अवधारणा

KD Job Updates

(i) जहाँ पहली अवधारणा का सवाल है तो इसकी ओर पहला संकेत जॉन मार्शल के अन्तर्गत काम करने वाले एक भारतीय अधिकारी रामप्रसाद चन्दा ने किया था परंतु इसे एक अवधारणा का रूप ब्रिटिश विद्वान और पुरातात्विक सर्वेक्षण के प्रधान मार्टिमर व्हीलर ने दिया।

मार्टिमर व्हीलर ने अपने विचार को पुष्ट करने के लिए निम्न साक्ष्य जुटाये —

(a) उसकी अवधारणा मुख्यतः साहित्यिक साक्ष्य पर निर्भर यथा ऋग्वेद में वर्णित हरियोपिया एवं पुरंदर शब्द पर बल परन्तु साक्ष्य प्रमाणिक नहीं क्योंकि ऋग्वेद किसी एक काल की कृति नहीं।

(b) पुरातात्विक साक्ष्य —

मोहनजोदड़ो से प्राप्त 26 नर कंकाल जिनपर तेज पैने अस्त्रों के घाव तथा हड़प्पा से प्राप्त कब्रगाह-एच के आक्रमणकारी के लाश सिद्ध करने का प्रयास। परंतु यह साक्ष्य पर्याप्त नहीं।

> कब्रगाह-H में दफनाए जाने हेतु रखा गया वस्तु जीवन/पद्धति
> ↓ पंजाब, हरियाणा, बहावलपुर
> → कब्रगाह-H संस्कृति

वस्तुतः मार्टिमर व्हीलर की अवधारणा निम्न उद्देश्य से प्रेरित —

(i) वह इस सभ्यता के उद्भव एवं पतन का कारण स्थापित करने के लिए अत्यधिक व्यग्र था।

(ii) आर्य आक्रमण की अवधारणा कहीं न कहीं भारत पर ब्रिटिश आक्रमण का औचित्य सिद्ध कर रही थी।

KD Job Updates

(2) अन्य समूहों के द्वारा आक्रमण किए जाने की अवधारणा को अस्वीकार नहीं किया जा सकता यद्यपि इसे सभ्यता के विनाश का मूल कारण भी नहीं माना जा सकता। जैसा कि हम जानते है कि हड़प्पाई समृद्ध स्थलों के आस-पास अविकसित शिकारी खाद्य संग्राहक तथा अर्द्ध कृषक लोग बसते थे इन ये लोग हड़प्पाई नगरीय स्थलों की ओर आकर्षित होंगे। फिर जब आगे सभ्यता कमजोर पड़ी और शासक वर्ग में बिखराव आया तो इन्होंने नगरीय स्थलों पर आक्रमण किया होगा बलूचिस्तान और राजस्थान से अग्निकांड के साक्ष्य इस आक्रमण अथवा संघर्ष की ओर संकेत करते जान पड़ते हैं।

M. Q.

(1) परिस्थितिजन्य साक्ष्य के आधार पर इन्द्र दोषी ठहरता है उपर्युक्त कथन के प्रकाश में हड़प्पा सभ्यता के पतन में आर्य आक्रमण की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए (Booklet में Ans)

(2) हड़प्पा सभ्यता के पतन में बाह्य आक्रमण की अवधारणा का परीक्षण कीजिए।

(3) पुरातत्व वैदिक आर्यों को नहीं जानता केवल साहित्य इसे जानता है। इस कथन का परीक्षण कीजिए।

(इस Q का Ans हड़प्पा सभ्यता के पतन एवं भारत

KD Job Updates

में वैदिक आर्यों के आगमन दोनों को एक दूसरे से जोड़कर करने की जरूरत है।)

(4) नवीनतम खोजों के प्रकाश में वैदिक – हड़प्पाकालीन संबंधों पर विभिन्न मतों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (इस प्रश्न का Ans भी वैदिक आर्यों के आगमन के सन्दर्भ में करने की जरूरत है)

हड़प्पा सभ्यता के पतन में जल की अधिकता जैसी कारण का परीक्षण —

इस संबंध में निम्न दो धारणाएँ —

(1) बाढ़ की अवधारणा — जॉन मार्शल के द्वारा मोहन-जोदड़ो नामक स्थल पर 7 बार बाढ़ आने के प्रमाण, S.R. Rao के द्वारा लोथल एवं भगतराव से बाढ़ के प्रमाण।

(2) एक दूसरे प्रकार का जल प्लावन — M.R. साहनी के द्वारा बाढ़ को विवर्तनिक विक्षोभ जैसी घटना से जोड़ने का प्रयास तथा यह सिद्ध करने का प्रयास कि यह बाढ़ कोई साधारण बाढ़ नहीं।

(3) जल की कमी की अवधारणा — H.D. लैमरिक नामक विद्वान ने सभ्यता के पतन का कारण जल की कमी को निर्धारित किया है। इनके विचार में घग्घर की दो सहायक नदियाँ सतलज एवं यमुना को क्रमशः

राजस्थान से संबंधित स्थलों के पतन का कारण)

(4) पर्यावरण असंतुलन —

(a) फेयर सर्विस के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों के अतिरिक्त दोहन के कारण पर्यावरण संतुलन बिगड़ जाना वस्तुतः हड़प्पाई लोगों के द्वारा जिन उन्नत नागरिक सुविधाओं का उपयोग किया गया इसकारण पर्यावरण के संतुलन का बिगड़ना स्वाभाविक था।

(क्या उस समय जनसंख्या इतनी अधिक थी कि प्राकृतिक संसाधनों के इस हद तक दोहन किए जाने की परिकल्पना की जा सके ?)

(b) विष्णु मित्रे ने प्रकृति में अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप को इसका कारण माना।

(c) एक वनस्पति शास्त्री गुरदीप सिंह ने साँभर, डिडवाना और पुष्कर (राजस्थान) में फूलों के परागों का विश्लेषण कर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि 1900 ई०पू० तक इस क्षेत्र में वर्षा की मात्रा अत्यधिक कम)

(d) मानसून के स्वरूप में होने वाले परिवर्तन — 2012 में भारत एवं पाकिस्तान के कुछ स्थलों के परीक्षण के पश्चात इस बात पर बल दिया गया कि मानसून का दूर खिसक जाना इस

KD Job Updates

सभ्यता के पतन का कारण रहा होगा।

(5) पूर्व की ओर विस्तार के क्रम में सभ्यता के स्वरूप में आने वाला परिवर्तन—

D.K. Chakravarti ने इस संबंध में एक पृथक अवधारणा रखी है इनके विचार में हड़प्पा सभ्यता का नगरीकरण ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र, कृषि एवं व्यापार आदि के बीच उचित संतुलन पर आधारित थी परंतु जब यह सभ्यता पूर्व की ओर बढ़ी तो फिर शिकारी – खाद्य – संग्राहक एवं अर्द्ध कृषक आदि जैसे कम विकसित समुदायों पर आरोपित हो गयी इस कारण नगरीकरण चरमरा गया वहीं दूसरी तरफ कम विकसित समुदाय हड़प्पा सभ्यता के सम्पर्क में अपेक्षाकृत अधिक विकसित हो गए।

(6) प्राकृतिक आपदा एवं महामारी जैसी अवधारणा—

प्राकृतिक आपदा एवं महामारी जैसी अवधारणा पर सभ्यता की खोज के आरम्भ से ही बल दिया जाता रहा है परन्तु इस सिद्धांत को स्थापित करना कठिन है क्योंकि यह धारणा किसी एक स्थल पर तो लागू हो सकती है परन्तु सम्पूर्ण सभ्यता पर नहीं।

~~सभ्यता के पतन में राजनीतिक~~

KD Job Updates

(7) सभ्यता के पतन की व्याख्या में राजनीतिक सामाजिक कारणों पर विचार —

किसी भी सभ्यता के उत्थान एवं पतन के लिए आर्थिक भौतिक कारक ही पर्याप्त नहीं हो सकता बल्कि उसमें राजनीतिक एवं सामाजिक कारक भी प्रबल भूमिका निभाते है संभव है कि हड़प्पा सभ्यता में एक सक्षम शासक वर्ग की उपस्थिति नगरीकरण के उत्थान का कारण रहा होगा वहीं उस शासक वर्ग की क्षमता में ह्रास नगरीय संरचना को दुष्प्रभावित कर सकता था इसी प्रकार एक प्रभावी सामाजिक वर्ग की उपस्थिति भी नगरीय संरचना के स्वरूप को अपने ढंग से प्रभावित कर सकता था।

इसलिए संभव है कि राजनीतिक एवं सामाजिक स्तर पर होने वाला कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नगरीकरण के पतन के लिए उत्तरदायी रहा होगा किंतु पुरातात्विक साक्ष्य इन बातों की सूचना देने में अक्षम था इसके लिए साहित्यिक साक्ष्य की जरूरत है।

हड़प्पा सभ्यता के पतन का अर्थ —

सभ्यता की खोज के आरम्भिक दशकों में पतन का अर्थ लगाया गया था कि सभ्यता की समाप्ति।

KD Job Updates

परंतु 1960 के दशक तथा उसके पश्चात् पतन का अर्थ लगाया गया नगरीय चरण का पतन तथा नगरों से लोगों का ग्रामीण क्षेत्र में पलायन कर जाना इसे हम विनगरीकरण की स्थिति के रूप में देख सकते है।

विभिन्न स्थलों पर हमें विनगरीकरण के क्या प्रमाण दिखते है ?—

विभिन्न स्थलों का अवलोकन करने पर हमें निम्नलिखित रूप में नगरीकरण में व्यवधान दिखता है —

① लगभग 2000 ई० पू० में मोहनजोदड़ो से नगरीय जन-संख्या का पलायन देखने को मिलता है। हमें यह भी प्रमाण मिलता है कि विकसित हड़प्पाई चरण में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और बहावलपुर के त्रिकोण में विकसित हड़प्पाई चरण में बस्तियों की संख्या 174 थी परन्तु परवर्ती चरण में बस्तियों की संख्या कम होकर 50 हो गयी इसका अर्थ है कि लोग अन्यत्र पलायन कर गए।

② पंजाब में विकसित स्थल हड़प्पा का भी पतन हो गया वहाँ नगरीकरण की स्थिति छूट गयी वहाँ पर लोगों ने एक क्षेत्रीय संस्कृति विकसित कर ली जिसे कब्रगाह-H संस्कृति के नाम से जाना गया।

KD Job Updates

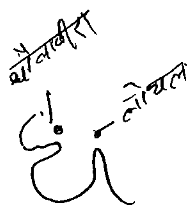

(3) इसी प्रकार राजस्थान, बलूचिस्तान, एवं गुजरात के धौलावीरा एवं लोथल से भी पलायन के साक्ष्य मिलते है। संभव है कि जलवायु संबंधी कारण एवं कुछ अन्य कारणों से नगरीय संरचना को बनाए रखना कठिन हो गया होगा एक तरफ जहाँ उत्तर-पश्चिम में बस्तियों की संख्या कम हो रही थी वहीं दूसरी तरफ पूर्व एवं दक्षिण में बस्तियों की संख्या बढ़ रही थी। यह तथ्य भी जलवायु संबंधी कारक की ओर संकेत करता है।

हड़प्पा सभ्यता के पतन के संबंध में बहुमान्य व्याख्या —

जैसा कि हम जानते है कि हड़प्पा सभ्यता के पतन का अर्थ है 'नगरीय चरण का पतन' तथा हड़प्पाई नगरीकरण एक बड़ा ही सूक्ष्म संतुलन पर आधारित था यथा कृषि एवं व्यापार तथा नगरीय एवं ग्रामीण जीवन के बीच संतुलन। किसी भी कारण से यथा बाढ़, सूखा तथा शासक वर्ग का पतन या फिर क्षेत्रीय स्तर पर होने वाले किसी आक्रमण के कारण वह सूक्ष्म संतुलन बिगड़ गया होगा जिसपर हड़प्पा सभ्यता टिकी हुयी थी।

KD Job Updates

फिर जहाँ तक कारण का सवाल है। हड़प्पा सभ्यता जितने बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैली हुयी थी तथा इसके जलवायु संबंधी कारक में जितनी विविधता थी इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अलग-अलग स्थल पर नगरीकरण में व्यवधान के लिए अलग-अलग कारण उत्तरदायी रहे होंगे यह बात इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि विभिन्न स्थलों का पतन किसी एक काल में नहीं हुआ है लगभग 2000 ई०पू० में मोहनजोदड़ो में नगरीय संरचना का पतन हो चुका था परंतु कालीबंगा और बनावली में लगभग 1800 BC तक यह चलता रहा।

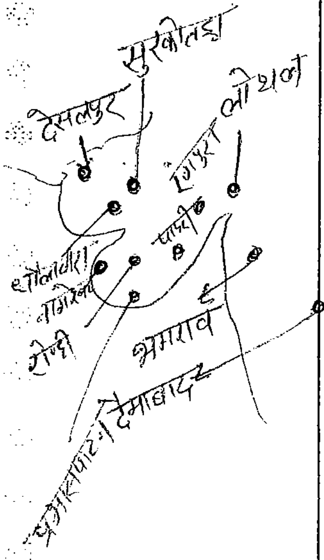

M.Q.

① हड़प्पा सभ्यता का पतन ~~(पर्यावरण संबंधी)~~ आर्य आक्रमण के कारण से नहीं बल्कि पर्यावरण के निम्नीकरण से हुआ था परीक्षण कीजिए (Booklet में Ans) (2013)

② क्या हड़प्पा सभ्यता के संबंध में आकस्मात् पतन की अवधारणा पतन की वास्तविक व्याख्या करने में सक्षम है?

③ पुरातात्वीय साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता के पतन के संभावित सामाजिक राजनीतिक आयामों का प्रत्यक्ष पता तो नहीं देते है वे यह तो बहुत स्पष्ट रूप से इंगित करते है कि हड़प्पा सभ्यता वि-नगरीकरण के क्रमिक प्रक्रम से

KD Job Updates

22/10/2018

हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद भी हड़प्पाई संस्कृति भारतीय संस्कृति में व्याप्त हो गयी अर्थात् सभ्यता की समाप्ति के बाद भी वह अविच्छिन्न रूप में चलती रही।

आर्थिक —

a- पशुपालन — हड़प्पा सभ्यता के काल से ही मवेशी, कूबड़ वाले साड़ व भेड़-बकरी, सुअर आदि पाले जाने के साक्ष्य।

b- कृषि — हल का प्रयोग तथा जौ गेहूँ मटर सरसो, चना एवं चावल आदि फसलों के उपजाए जाने के साक्ष्य।

c- ताँबा एवं काँसा के उपकरण बनाए जाने के साक्ष्य अर्थात् उन्हें गलाने की पद्धति का ज्ञान।

d- यातायात के साधन के रूप में दो चक्के-वाली गाड़ी, चार चक्के वाली गाड़ी और रथ निर्माण के साक्ष्य

e- आंतरिक एवं बाह्य व्यापार की पद्धति विशेषकर उन्नत नगर निर्माण योजना हड़प्पा सभ्यता की महत्वपूर्ण विरासत।

सामाजिक —

a- हड़प्पाई समाज एक विभाजित समाज यथा पुरोहित वर्ग, योद्धावर्ग, व्यापारी वर्ग, शिल्पी कारीगर एवं किसान वर्ग यह विभाजन आगे भी जारी

KD Job Updates

(b) पुरुषों एवं महिलाओं के पहनावे तथा उनके द्वारा प्रयुक्त आभूषण एवं सौन्दर्य प्रसाधन यथा काजल, लिपिस्टिक आदि।

सांस्कृतिक –

(a) वैज्ञानिक दृष्टिकोण —

अंकमाला का ज्ञान, 16 एवं उनके गुणकों का प्रयोग, माप के लिए फीट एवं क्यूबिक का ज्ञान, नगर-निर्माण योजना में विकसित ज्यामितीय का विकास, दशमलव पद्धति एवं विभाजन का ज्ञान गणना हेतु, ग्रह एवं नक्षत्रों का ज्ञान, ताँबे एवं काँसे की ढलाई का ज्ञान

(b) धर्म —

i) पशुपति शिव एवं मातृदेवी की पूजा।

ii) वृक्षपूजा, सर्पपूजा, पशुपूजा, पृथ्वीपूजा, उत्पादनशक्ति की उपासना।

iii) अग्नि एवं जल पूजा। (हड़प्पा सभ्यता से जो हवनकुंड का साक्ष्य प्राप्त उसने वैदिक आर्यों की यज्ञ की पद्धति पर अपना प्रभाव छोड़ा)

iv) भक्तिवाद एवं मूर्ति पूजा सभी वर्तमान हिन्दू धर्म में समाहित।

(c) कला —

i) मनका निर्माण, प्रस्तर की मूर्तियों का निर्माण, कॉस्य एवं ताँबे की मूर्तियों का निर्माण, मृण्मूर्तियों का निर्माण

ii) हड़प्पाई लोगों द्वारा बड़े उदर वाले मानव मूर्तियाँ निर्मित की गई इसने आगे आने वाले युगों में भारतीय मूर्ति-कला को प्रभावित किया।

KD Job Updates

Part – I

पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर अध्ययन

↓

पुरापाषाणकाल

↓

मध्यपाषाण काल

↓

नवपाषाणकाल [भारतीय उपमहाद्वीप में अलग- अलग काल में

↓

ताम्रपाषाणकाल

[आरंभिक प्रयोग 3500 BC में तथा संभवतः आरम्भिक प्रयोग कर्ता: आरम्भिक हड़प्पा संस्कृति के लोग परन्तु उसकाल में लोग भारत के अन्य भागों में ताँबे का प्रचलन आरम्भ नहीं इसका अपवाद केवल राजस्थान]

↓

हड़प्पा सभ्यता

[इस काल में भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ क्षेत्र के लोगों ने ताँबे के साथ- साथ काँसे के उपकरणों का भी प्रयोग किया परन्तु अभी भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य भागों में ताँबे का सीमित प्रयोग।]

↓

हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात (2000 BC से 500 BC के बीच भारत की संस्कृतियाँ। लगभग 1100 BC तक ताम्रपाषाणकाल का चरण चलता रहा परन्तु 1100 BC के बाद लोहे चरण आरम्भ होगया)

↓ ↓ ↓

परवर्ती हड़प्पा संस्कृतियाँ

KD Job Updates

परवर्ती हड़प्पा संस्कृतियाँ (1900 BC - 1300 BC)	अन्य ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियाँ (लगभग 1900 BC-1000 BC)	लौह युगीन संस्कृति
इनमें सिंधु में झूकर संस्कृति, पंजाब, हरियाणा और बहावलपुर में कब्रगाह -H संस्कृति, गुजरात में लाल-चमकीले मृदभाण्ड संस्कृति। ये संस्कृतियाँ भी ताम्र पाषाणकालिक ही थी परन्तु इसमें हड़प्पा सभ्यता की कुछ विशेषताएँ समाहित थी इसलिए इसे परवर्ती हड़प्पा संस्कृति के नाम से जानी गयी।	① नवपाषाणकाल – ताम्र पाषाणकालीन संस्कृतियाँ ⇒ मध्य गंगा घाटी में चिराँद, सेनुवाल, बंगाल में महिसादल, पूर्वी भारत में असम तथा दक्षिण भारत में अनेक नवपाषाण कालीन स्थल अस्तित्व में आए थे ये सीधे तौर पर ताम्र पाषाणकाल में ढल गए क्योंकि लोगों ने तांबे के उपकरणों का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया।	सामान्यतः भारतीय उपमहाद्वीप में 1100 BC or 1000 BC से लौह उपकरणों के प्रयोग की बात की गयी है अतः कुछ संस्कृतियों का विकास लौहयुग में हुआ है:— ① चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति -(PGW) (1500 BC – 500 BC) → यह संस्कृति दो भिन्न चरणों से जुड़ी रही है पूर्व लौह चरण & लौह चरण। यह संस्कृति गंगा यमुना के ऊपरी दोआब, हरियाणा पंजाब तथा राजस्थान के क्षेत्र से मिलता है इससे जुड़े हुए लगभग 750 स्थल प्रकाश में आए है इस संस्कृति का संबंध वैदिक काल से जोड़ा गया है। इस संस्कृति से जुड़े हुए कुछ ऐसे स्थल है यथा नागर कटपालन, दधेरी एवं भगवानपुरा जहाँ से तांबे और कांसे के उपकरण तो मिले है परन्तु लौह उपकरण नहीं

② राजस्थान, मध्य-भारत एवं महाराष्ट्र की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ — राजस्थान एवं महाराष्ट्र में हमें सीधे तौर पर मध्यपाषाण काल के बाद ताम्रपाषाणकाल की बस्तियाँ ही दिखती है बीच में नवपाषाणकाल का स्थल प्राप्त नहीं होता है। इन क्षेत्र में दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान में आहड़ अथवा बनास संस्कृति मध्य भारत में कैथा और मालवा संस्कृति तथा महाराष्ट्र में जोरवे संस्कृति महत्वपूर्ण थी

③ गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति (2000 BC-1500 BC) → गंगा यमुना के ऊपरी द्वारा में यह संस्कृति पनपी इससे जुड़े हुए लोग पशुपालक एवं कृषक थे तथा ताँबे के उपकरणों का प्रयोग करते थे।

इसलिए इनका संबंध ऋग्वैदिक काल से जोड़ा गया है वहीं अन्य

KD Job Updates

स्थलों से लोहे के उपकरण मिले है इसलिए इसका संबंध उत्तर वैदिक काल से जोड़ा जाता है। इसकाल से जुड़े हुए वैदिक साहित्य मिलने लगते है इसलिए इसकाल के अध्ययन में पुरातात्विक सामग्रियों के साथ-साथ साहित्यिक सामग्रियाँ भी उपलब्ध है।

केवल पुरातत्व के आधार पर अध्ययन →

(2) महापाषाणकालीन संस्कृतियाँ → भारतीय उपमहाद्वीप में अनेक क्षेत्रीय संस्कृतियाँ मिली है जिनसे जुड़े हुए लोगों ने पत्थर के बड़े शानदार कब्र बनाए है इसलिए इन्हें पृथक संस्कृतियाँ मानी गयी और इन्हें महापाषाणकालीन संस्कृतियों का नाम दिया गया ये संस्कृतियाँ लगभग 1300 ई०पू० और 500 BC के बीच अस्तित्व में रही। इस संस्कृति में भी दो अवस्थाएँ देखने को मिलती है ताम्रपाषाणकालिक अवस्था एवं लौह युगीन अवस्था। प्रायद्वीपीय भारत से बड़ी संख्या में महापाषाणकालीन स्थल मिले है जो लौह युग से जुड़े हुए है संभवतः दक्षिण भारत में लोहे के उपकरणों का आरम्भिक प्रयोगकर्ता महापाषाण संस्कृति से जुड़े हुए ही लोग थे

(3) उत्तरी कालीन पालिशदार मृदभाण्ड संस्कृति (800 BC के पश्चात) (NBPW) Northern Black Polished W)

यह संस्कृति अपेक्षाकृत अधिक विकसित थी अतः यह आवश्यक रूप में लौह चरण से ही जुड़ी रही थी इसमें इस संस्कृति में प्रयुक्त मृदभाण्ड भी अपेक्षाकृत अधिक विकसित थी और इसे अधिक तापमान पर पकाया गया था यह द्वितीय नगरीकरण की अवस्था से जुड़गयी इसका भौगोलिक प्रसार भी बहुत अधिक था उत्तर-पश्चिम में यह तक्षशिला से लेकर पूरब में बंगाल में तामलुक

KD Job Updates

और दक्षिण में कृष्णा नदी के किनारे अमरावती तक फैली हुयी थी और इससे जुड़े हुए लगभग 1500 स्थल प्रकाश में आए है इसका संबंध गुप्तकाल और मौर्यकाल से जोड़ा जाता है इन कालों के अध्ययन के लिए NBPW स्थलों के अतिरिक्त साहित्य भी उपलब्ध है।

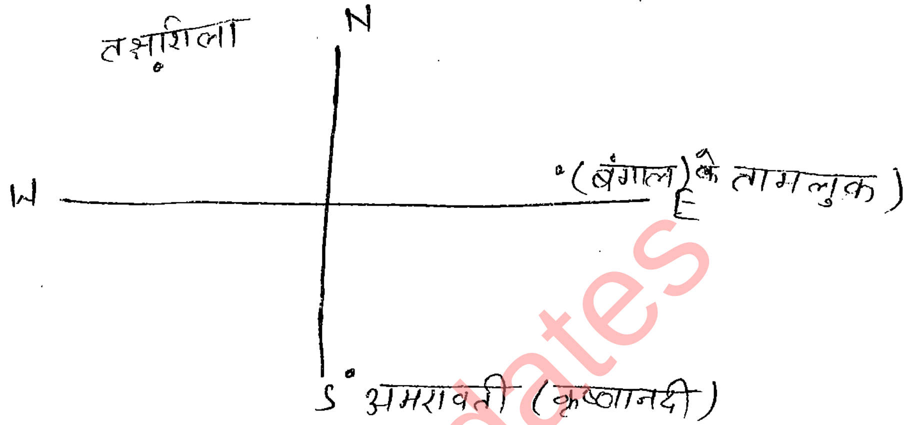

23/10/2018

परवर्ती हड़प्पा संस्कृतियाँ (1900 BC – 1300 BC)

परवर्ती हड़प्पा संस्कृति शब्द से तात्पर्य —

यह संस्कृति हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात नागरिकोत्तर अवस्था की संस्कृतियाँ थी। ये संस्कृतियाँ भी अपने स्वरूप में ताम्रपाषाणकालीन थी फिर भी भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य क्षेत्रों में फैली हुयी ताम्र पाषाणकालिक संस्कृतियों से ये इस रूप में भिन्न थी कि इन्होंने हड़प्पा सभ्यता की कुछ विरासत को अपने में समाहित कर रखा था।

KD Job Updates

हड़प्पा सभ्यता से परवर्ती हड़प्पा संस्कृतियों में अंतर के बिंदु →

① उन्नत इन संस्कृतियों का ग्रामीण चरण में पहुँच जाना।

② हड़प्पा सभ्यता की उन्नत नगर निर्माण योजना को छोड़ दिया जाना।

③ मुहरों, मनकों और लिपि का प्रयोग लगभग छूट जाना।

④ पूर्ववर्ती व्यापार का पतन हो जाना आदि।

किस प्रकार इन संस्कृतियों का हड़प्पा सभ्यता की विरासत से जुड़ाव देखने को मिलता है? —

① परवर्ती हड़प्पा संस्कृति से जुड़े हुए स्थलों पर पुराने मकानों के ध्वंस का उपयोगकर नये मकान निर्मित किए गए।

② सीमित रूप में काँसे, पक्की ईंटें, मुहर एवं मनकों का साक्ष्य भी प्राप्त।

③ सीमित रूप में दूरवर्ती व्यापार भी चलता रहा।

④ परवर्ती हड़प्पाई स्थलों में कम से कम निम्नलिखित स्थल यथा बेटद्वारका, दायमाबाद, कुड वाला जैसे स्थलों की पहचान नगर के रूप में।

KD Job Updates

परवर्ती हड़प्पा संस्कृतियों का भौगोलिक वितरण ⇒

इसे 5 उपक्षेत्रों में बाँटकर देखा जा सकता है —

1. सिंध — झूकर संस्कृति
2. पश्चिमी-पंजाब और बहावलपुर — कब्रगाह-H संस्कृति
3. पूर्वी-पंजाब और हरियाणा
4. कच्छ कच्छ एवं सौराष्ट्र क्षेत्र
5. गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र — गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति

कुछ महत्वपूर्ण परवर्ती हड़प्पाई संस्कृतियाँ इसप्रकार थी —

सिंध में झूकर संस्कृति, पंजाब हरियाणा और बहावलपुर में कब्रगाह-H संस्कृति, गुजरात में चमकीले लाल मृदभाण्ड संस्कृति आदि। फिर गंगा-यमुना दोआब में गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति को भी परवर्ती हड़प्पा संस्कृति के विस्तार के रूप में देखा जाता।

N-W Region —

- ताँबा का विकास
- हल का विकास
- चाक का निर्माण
- मृदभाण्ड का निर्माण
- रक्षात्मक दीवारों का निर्माण

} — ताम्रपाषाणकाल
↳ आरम्भिक हड़प्पा संस्कृति

परवर्ती हड़प्पा संस्कृतियों का आर्थिक आधार —

पशुपालन — भेड़, बकरी, मवेशी

कृषि — जलवायु संबंधी कारण से लोग पूर्व की ओर प्लायन कर रहे थे इस क्रम में लोगों ने संभवतः दो फसल प्रणाली का विकास कर लिया था। अर्थात् जहाँ

KD Job Updates

वहीं इस काल में लोग दो फसलों की खेती करने लगे थे। गेहूँ, जौ, तथा विभिन्न प्रकार के दालों की खेती, गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में चावल की खेती का भी साक्ष्य।

शिल्प— परवर्ती हड़प्पाई संस्कृति के स्थलों पर शिल्पों यथा बर्तन बनाना, ताँबे से उपकरण बनाने का काम, पत्थर के उपकरणों का निर्माण आदि प्रचलित थे।

व्यापार – छोटे पैमाने पर व्यापार का भी प्रचलन था।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था —

परवर्ती हड़प्पाई संस्कृतियाँ ग्रामीण चरण पर ही रह गयी वे नगरीय चरण की अवस्था तक नहीं पहुँच सकी यह भी एक दिलचस्पी का विषय है कि आरम्भिक हड़प्पाई संस्कृति की आर्थिक आधार परवर्ती हड़प्पाई संस्कृतियों की तुलना में कमजोर थी परन्तु जब आरम्भिक हड़प्पाई संस्कृतियाँ एक नगरीय अर्थ व्यवस्था को आधार दे सकी तो फिर परवर्ती हड़प्पा संस्कृतियों की उपस्थिति के बावजूद नगरीकरण की अवस्था के लिए लगभग 1500 वर्षों तक प्रतीक्षा क्यों करनी पड़ी संभवतः इस प्रश्न का उत्तर राजनीतिक एवं सामाजिक कारकों की भूमिका के परिप्रेक्ष्य में दिया जा सकता था परन्तु साहित्यिक साक्ष्य की अनुपस्थिति में यह संभव नहीं हो सका।

KD Job Updates

परवर्ती हड़प्पा संस्कृतियों का महत्व —

इनका महत्व इस बात में है कि हड़प्पा सभ्यता के पतन के बावजूद भी अगर हड़प्पा सभ्यता की विरासत भारतीय संस्कृति को प्राप्त हो सकी तो इसमें एक बड़ी भूमिका परवर्ती हड़प्पा संस्कृतियों की है इन्होंने हड़प्पाई विरासत को ऐतिहासिक काल से जोड़ दिया।

(1) इनके माध्यम से हड़प्पाई तकनीकी यथा तीव्रगामी चाक, ताँबे एवं काँसे ~~ब~~ गलाने की पद्धति चमकीले मृदभाण्ड की परम्परा आगे बढ़ी।

(2) परिवर्ती हड़प्पाई लोगों ने दो फसल प्रणाली का विकास किया।

(3) संभवतः परवर्ती हड़प्पाई लोगों के संपर्क में वैदिक आर्यों ने भी खेती सीखी।

(4) मूर्तिपूजा, पशुपति शिव की पूजा, मातृदेवी की पूजा आदि परंपरा भारतीय धर्म में समाहित हो गयी।

राजस्थान, मध्य भारत एवं महाराष्ट्र की ताम्रपाषाण-कालीन संस्कृतियाँ ⇒

इन क्षेत्रों में ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियों का विकास ~~स्वतंत्र रूप~~ नवपाषाणकालिक स्थल से क्रमिक संक्रमण के रूप में नहीं दिखता बल्कि स्वतंत्र रूप में दिखता है राजस्थान क्षेत्र में मध्यपाषाणकाल के चरण के पश्चात् नवपाषाणकाल का चरण नहीं दिखता बल्कि सीधा ताम्र-

KD Job Updates

कायथा
मालवा
जोरवे

पाषाण के चरण का विकास देखने को मिलता है मध्य भारत में यद्यपि नवपाषाणकाल से जुड़े हुए स्थल दिखते है परन्तु जिन्हें हम कायथा संस्कृति और मालवा संस्कृति के नाम से जानते वे संस्कृतियाँ स्वतंत्र रूप में विकसित हुयी है न कि नवपाषाणकाल से संक्रमण के रूप में, इसी प्रकार महाराष्ट्र में जोरवे संस्कृति का विकास एक ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के रूप में हुआ। इस क्षेत्र में भी हमें नव पाषाणकालीन स्थल नहीं मिलते हैं संभव है कि इन क्षेत्रों की मिट्टी को पत्थर के उपकरणों से तोड़ना कठिन था इसलिए ताँबे के उपकरणों के बन्द प्रचलन के बाद ही इन क्षेत्रों में कृषक बस्तियों का विकास संभव हुआ।

दक्षिणी पूर्वी राजस्थान में आहट संस्कृति (लगभग 2400 BC – 1400 BC) का विकास हुआ इसके स्थल बनास नदी के आस-पास पाये गए इसलिए इसे बनास संस्कृति भी कहा गया। आगे आहट संस्कृति का प्रसार मध्य भारत के कायथा, मालवा आदि क्षेत्रों में देखा गया इसी प्रकार मध्य-भारत में पहले कायथा संस्कृति (2000 BC – 1800 BC) तथा मालवा संस्कृति (1700 BC – 1200 BC) का विकास हुआ ये संस्कृति

KD Job Updates

कायथा, मालवा, नवदाटोली आदि क्षेत्र में फैली फिर आगे इसका प्रसार महाराष्ट्र के इनामगाँव और जोरवे आदि स्थलों पर हो गया। इसके बाद महाराष्ट्र में जोरवे संस्कृति (1400BC - 700BC) विकसित हुयी इससे जुड़ा हुआ पहला स्थल जिसकी खुदाई हुयी है जोरवे है परन्तु फिर देखते-देखते यह संस्कृति लगभग सम्पूर्ण महाराष्ट्र क्षेत्र में फैल गयी।

अध्ययन सामग्रियों का मूल्यांकन

राजस्थान मध्यभारत की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियों के लिए केवल पुरातात्विक साक्ष्य ही उपलब्ध है इस साक्ष्य से हमें मुख्यतः उनकी आर्थिक गतिविधियों और कुछ हद तक धर्म के अनुष्ठानिक पक्ष की जानकारी मिलती है परन्तु इनके राजनीतिक संगठन अथवा सामाजिक संगठन का ज्ञान नहीं मिल पाता है।

आर्थिक गतिविधियाँ –

पशुपालन — भेड़, बकरी एवं मवेशी पालन, पशु का उपयोग मांस के लिए, दूध तथा पशु काम के लिए नहीं।

कृषि – हल के प्रयोग किए जाने के साक्ष्य नहीं परन्तु फसलों की विविधता कृषि गतिविधियों पर प्रकाश डालती है। गेहूँ, जौ, रागी तथा विभिन्न प्रकार के दालों की खेती। मालवा संस्कृति के नवदाटोली

KD Job Updates

नामक स्थल पर बड़ी संख्या में अनाजों के किस्म के साक्ष्य प्राप्त।

शिल्प —

कई प्रकार के शिल्प प्रचलित — मृदभाण्ड निर्माण, ताँबे 4 काँसे का काम, बढ़ईगीरी, आदि।

जोरवे संस्कृति के अनेक स्थल शिल्प विकास की दृष्टि से काफी आगे।

व्यापार —

विभिन्न ताम्रपाषाणकालीन स्थलों का आपस में व्यापारिक विनिमय जोरवे संस्कृति के स्थल दक्षिण में कर्नाटक और आन्ध्रप्रदेश से भी जुड़े हुए और मध्यभारत क्षेत्र से भी इनका सम्पर्क।

अर्थव्यवस्था का स्वरूप —

अर्थव्यवस्था ग्रामीण ही बनी रही यह नगरीकरण की अवस्था तक नहीं पहुँच सकी।

24/10/2018

सामाजिक संगठन —

लिखित साक्ष्य के अभाव में सामाजिक संगठन पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। परन्तु पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समाज विभाजित था। एक प्रकार का मुखिया तंत्र अस्तित्व में था। खाद्यान्न के अन्वेषण से भी यह ज्ञात होता है कि समाज अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न वर्ग एवं निर्धन

KD Job Updates

वर्ग के बीच विभाजित था उसी प्रकार इनामगाँव को जोरवे संस्कृति के स्थल से यह सूचना मिलती है सम्भवतः शिल्पियों को पश्चिम भाग मे बसाया जाता था जबकि कुलीन लोग मध्य क्षेत्र में बसते थे। इनामगाँव से मुखिया के मकान का साक्ष्य मिलता है जिसके पास एक अन्नागार भी मिलता है जो दर्शाता है कि सम्भवतः लोगों से अनाज की वसूली की जाती थी।

धर्म =

साहित्यिक साक्ष्य की अनुपस्थिति में हम लोगों को धार्मिक विश्वास को समझने मे असमर्थ है परन्तु पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर, धार्मिक अनुष्ठान और कुछ हद तक उनके जीवन दृष्टिकोण की ओर भी संकेत मिलता है मध्य भारत एवं महाराष्ट्र के विभिन्न ताम्रपाषाणकालीन स्थलो से ~~पशु~~ स्त्री एवं सांड़ की मूर्तियाँ मिली है जो उत्पादन के देवता की ओर संकेत करते है। उसी प्रकार शवाधान पद्धति मृत्यु के पश्चात जीवन की ओर इशारा करते है। इन लोगों की शवाधान की विशिष्ट पद्धति रही थी। शव को आँगन में अथवा घर में फर्श के नीचे दफनाया जाता था कुछ मृतक व्यक्ति के पैर के नीचे का भाग काट लिया जाता था जो एक अंधविश्वास की ओर संकेत जान पड़ता है बच्चों को मिट्टी के पात्र में रखकर दफनाया जाता था (जोरवे संस्कृति के जोरवे नामक स्थल से सिर-विहीन देवी की मूर्तियाँ प्राप्त)

सिरविहीन देवी की मूर्ति ⇓ जोरवे

मध्यभारत एवं दक्कन के ताम्रपाषाणकालिक संस्कृतियों का महत्व →

मध्यभारत एवं दक्कन के ताम्रपाषाणकालिक संस्कृतियों का महत्व ⇒

एक सामान्य धारणा यह रही है कि हड़प्पा सभ्यता आद्य ऐतिहासिक काल की महान धरोहर है अतः सामान्यतः आद्य ऐतिहासिक काल पर काम करने वाले अधिकांश पुरातत्वविदों का हड़प्पा सभ्यता केन्द्रित दृष्टिकोण रहा है तथा हड़प्पा सभ्यता की परिधि से बाहर के कृषक समुदायों की अपेक्षाकृत अवहेलना की गयी थी परन्तु नवीन शोधों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि हड़प्पा सभ्यता की परिधि से बाहर कुछ समृद्ध ग्रामीण समुदाय विकसित हुए थे और ये ग्रामीण समुदाय ऐतिहासिक काल तक चलते रहे और सामान्य भारतीय जीवन में घुल-मिल गए। ऐसे ही समुदाय थे मध्य-भारत, दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान तथा दक्कन ताम्रपाषाण कालिक संस्कृतियों के लोग। इन्हीं संस्कृतियों के अन्तर्गत दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान एवं दक्कन क्षेत्र की प्राक् ऐतिहासिक संस्कृतियाँ आद्य ऐतिहासिक संस्कृतियों में रूपांतरित हो सकी।

महापाषाणकालीन संस्कृतियाँ =

विशेषताएँ ⇒

(1) महापाषाण से जुड़े हुए लोगों को अलग संस्कृति का समझा गया क्योंकि इन्होंने अपने कब्र रिहायशी इलाके से अलग करके बनाये। इसका अर्थ लगाया गया कि इसके अन्तर्गत एक पृथक सामाजिक संगठन विकसित हुआ था। फिर इसके कब्र भी बहुत शानदार है

KD Job Updates

और कब्रों का स्वरूप अलग- अलग है यथा कक्षयुक्त कब्रें, ~~कब्र~~ कक्ष विहीन कब्रें तथा स्मारक के रूप में निर्मित कब्रें।

(2) महापाषाणकालीन समुदाय के साक्ष्य भारतीय ~~उपमहाद्वीप~~ के विविध क्षेत्रों से मिले है यथा- उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान के पास कराची, बलूचिस्तान के पास मकरान, उत्तर भारत में जयपुर एवं आगरा के निकट तथा बेलनघाटी के स्थल कश्मीर में बुर्जहोम एवं गुफ्फकराल आदि। परन्तु सबसे अधिक स्थल प्रायद्वीपीय भारत से प्राप्त हुए हैं।

(3) महापाषाणकालीन संस्कृति को कोई एक संस्कृति न मानकर विविध संस्कृति मानी जानी चाहिए तथा इसका कार्यकाल भी लगभग 1300 ई.पू. से 500 ई.पू. तक रहा।

(4) महापाषाणकालीन समुदाय के लोग ताँबे के साथ-साथ लोहे का भी प्रयोग किया परन्तु आरम्भिक काल स्थल महज ताँबे के प्रयोग से ही जुड़े थे। वहीं प्रायद्वीपीय भारत के स्थल आवश्यक रूप में लौह युग से जुड़ गए।

अर्थव्यवस्था :-

लौह उपकरणों के प्रयोग के बावजूद भी महापाषाणकालीन समुदाय के लोग नगरीकरण की अवस्था तक नहीं पहुँच सके वस्तुत: इनके द्वारा प्रयुक्त किए गए लौह उपकरण मुख्यतः युद्ध उपकरण थे। कृषि उपकरण के रूप में इनका प्रयोग बहुत ही कम दिखता है फिर यद्यपि उन्होंने प्रायद्वीपीय भारत में धान की खेती आरम्भ कर दी थी तथा कृत्रिम सिंचाई का भी उपयोग करते थे। परन्तु ~~चूँकि ये~~

पहाड़ों की ढलानों पर खेती करते थे इसलिए अपेक्षित मात्रा में कृषि अधिशेष उत्पन्न ही कर सके।

फिर भी इनकी अर्थव्यवस्था ताम्रपाषाणकालीन अर्थव्यवस्था से अधिक मजबूत थी। महाराष्ट्र के जूनापानी से लेकर तमिलनाडु के आदिचन्नाल्लूर तक शिल्प गतिविधियों की सक्रियता थी तथा एक प्रकार का व्यावहारिक तंत्र भी कायम था।

प्रायद्वीपीय भारत की महापाषाणकालीन समुदायों का महत्व इस बात में निहित है कि इन्होंने दक्कन से लेकर सुदूर दक्षिण के क्षेत्र तक वह आधार निर्मित किया जिसके परिणामस्वरूप ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में दक्कन क्षेत्र में सातवाहन राज्य, सुदूर दक्षिण में चोल, चेर और पाड्य राज्य स्थापित हो सके।

परवर्ती हड़प्पा एवं ताम्रपाषाणकालीन स्थल

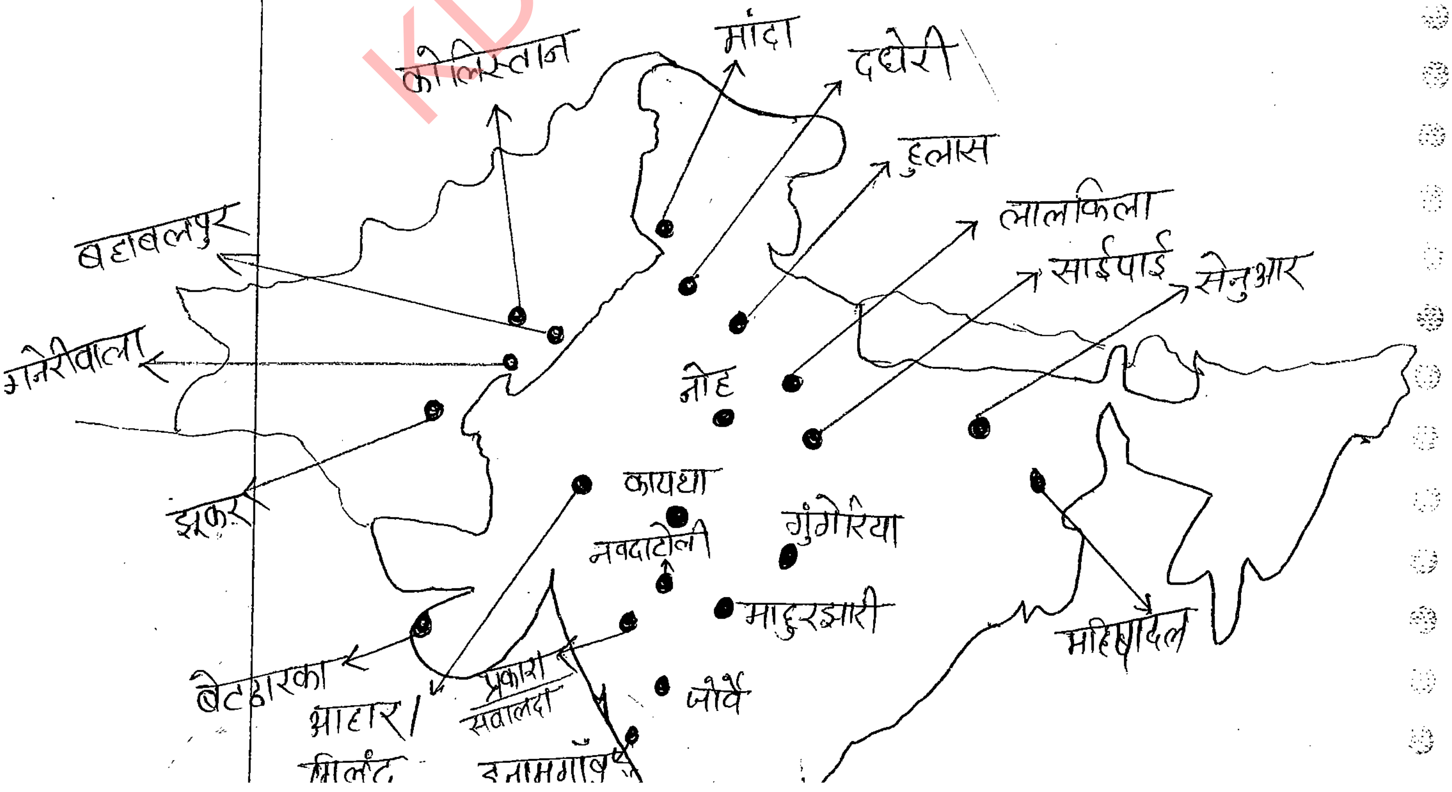

KD Job Updates

महापाषाण कालीन स्थल

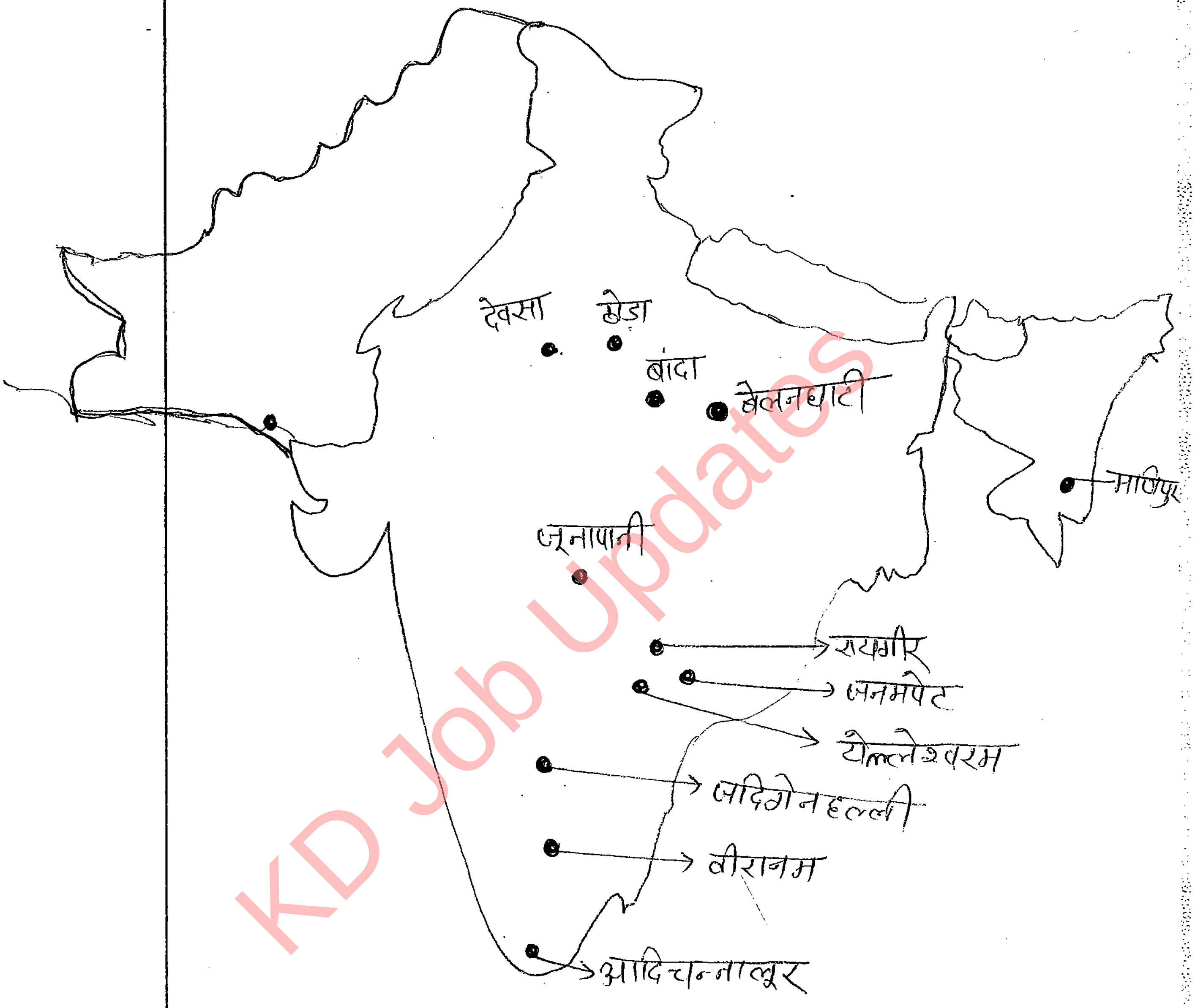

KD Job Updates

KD Job Updates

25/10/2018

(Necessary of the mother of invention)

खण्ड – 2

TOPIC

वैदिक काल (लगभग 1500 BC – 600 BC)

बुद्धकाल or महाजनपद काल (600 BC – 400 BC)

मौर्यकाल (400 BC – 200 BC)

मौर्योत्तर काल (200 BC – 300 ई०)

गुप्त काल (300 ई० – 600 ई०)

गुप्तोत्तर काल (600 ई० – 750 ई०)

पूर्व मध्यकाल (750 ई० – 1200 ई०)

KD Job Updates

तैयारी की पद्धति —

① अध्ययन के स्रोत ⇒ इस खण्ड के अध्ययन में पुरातात्विक साक्ष्य के साथ-साथ साहित्यिक साक्ष्य भी प्राप्त होने लगता है और फिर साहित्यिक साक्ष्य के माध्यम से किसी काल खण्ड के विषय में विस्तृत जानकारी मिलपाती है। इसलिए प्रायः पुरातात्विक साक्ष्य के समानांतर साहित्यिक साक्ष्य को ज्यादा महत्व दे दिया जाता है अतः विभिन्न काल खण्डों के अध्ययन में पुरातात्विक साक्ष्य और साहित्यिक साक्ष्य दोनों को परिपुष्टि की करने की समस्या बनी है।

मृदभाण्ड निर्माण
→ धूसर रंग
→ चित्र सहित / बिना
↓
समुदाय
↓
चित्रित धूसर मृदभाण्ड संस्कृति

② राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में परिवर्तन के तत्वों को रेखांकित करना ⇒

— परिवर्तन का अध्ययन विभिन्न कालों को निम्न खण्डों में बाँटकर किया जा सकता है —

राजनीतिक

① भौगोलिक विस्तार
② प्रशासन

आर्थिक कृषि, शिल्प, वाणिज्य व्यापार, मुद्रा अर्थव्यवस्था एवं नगरीकरण

सामाजिक → महिलाओं, शूद्रों एवं अछूतों की दशा।

KD Job Updates

सांस्कृतिक
a- धर्म एवं दर्शन
b- भाषा एवं साहित्य
c- कला।

परिवर्तन को परिभाषित करते समय निम्न फार्मूले पर गौर करना जरूरी है:—

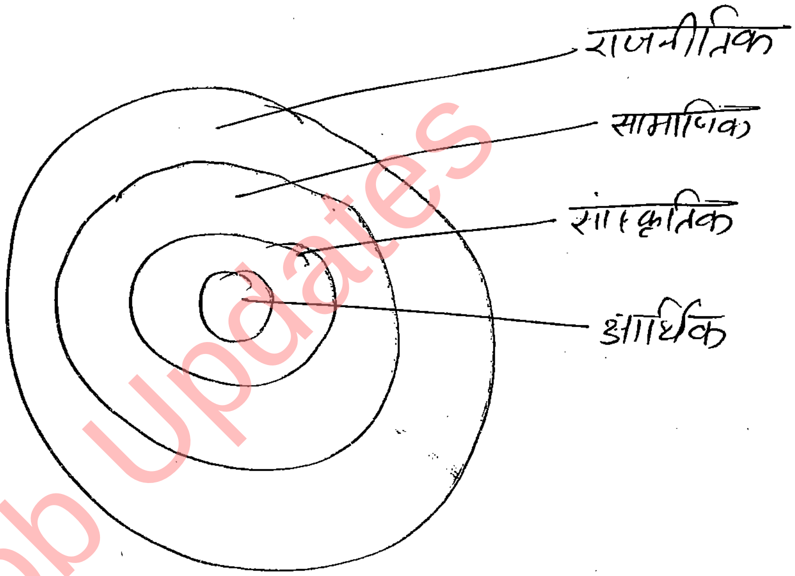

परिवर्तन को रेखांकित करने के लिए राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक ~~घटक~~ ढाँचे को परस्पर जोड़कर देखने की जरूरत है। अर्थात आर्थिक परिवर्तन राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन को उत्प्रेरणा देता है तो राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतियाँ भी भी आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करता है और अर्थव्यवस्था को दिशा प्रदान करता है। उदाहरण हेतु अगर बुद्ध कालीन आर्थिक और सामाजिक संरचना ने बौद्ध पंथ के उद्भव का आधार तैयार किया तो

एवं समाज में होने वाले बदलाव को समर्थन किया।

③ इतिहास लेखन की समझ =

इतिहास लेखन से तात्पर्य है विभिन्न काल खण्डों के अध्ययन में प्रचलित प्रभावी दृष्टिकोण। वर्तमान में मार्क्सवादी दृष्टिकोण एवं संशोधन वादी लेखकों के दृष्टिकोण में टकराहट देखी जा सकती है। विभिन्न काल खण्डों का अध्ययन करते हुए निम्नलिखित मुद्दों पर विचार करना बड़ा ही स्वभाविक हो जाता है—

ⓐ लोहे के उपकरणों के प्रयोग ने उत्तर वैदिक काल के राजनीतिक एवं ~~सामाजिक~~ आर्थिक जीवन में क्या परिवर्तन लाए।

ⓑ क्या लौह उपकरणों के प्रयोग ने 6ठीसदी ई० पू० में द्वितीय नगरीकरण को जन्म दिया।

ⓒ क्या मौर्य साम्राज्य एक केन्द्रीकृत साम्राज्य था?

ⓓ क्या मौर्योत्तर काल अंधाकार युग था?

ⓔ क्या गुप्त काल को स्वर्ण युग करार दिया जा सकता है?

KD Job Updates

④ अतीत तथा वर्तमान के बीच संवाद –

वस्तुतः इतिहास को अतीत एवं वर्तमान के बीच होने वाले संवाद के रूप में देखा जाता है इसलिए प्राचीन समाज का अध्ययन करते हुए अगर संभव हो सके तो कई स्थलों पर परवर्ती काल से तुलना की जा सकती है।

KD Job Updates

वैदिक काल (1500–600 BC)

अध्ययन के स्त्रोत

साहित्यिक स्त्रोत

वैदिक साहित्य (श्रुति)

मंत्र —व्याख्या→ ब्राह्मण

मंत्र:
- a- ऋग्वेद
- b- सामवेद
- c- यजुर्वेद
- d- अथर्ववेद

ब्राह्मण (मंत्रों की व्याख्या)

- a- मंत्रों की आनुष्ठानिक व्याख्या — ब्राह्मण
- b- मंत्रों की रहस्यवादी व्याख्या — अरण्यक
- c- ब्रह्म और आत्मा के बीच संबंधों का निरूपण — उपनिषद

पुरातात्विक साक्ष्य

चित्रित धूसर मृदभाण्ड स्थल (लगभग 750 स्थल अब तक प्रकाश में), इनमें लगभग 30 की खुदाई)

- a- ऋग्वैदिक काल से जुड़े स्थल → वैसे स्थल जहाँ से ताँबे एवं काँसे के उपकरणों के प्रयोग के साक्ष्य मिलता है परन्तु लोहे के उपकरणों का नहीं।
- b- उत्तर-वैदिक काल से जुड़े स्थल → वैसे स्थल जहाँ से लौह उपकरण के साक्ष्य मिले है। गंगा-यमुना के ऊपरी दोआब में बड़ी संख्या में ऐसे स्थल मिले है

वैदिक आर्य उद्भव

① अलग-2 क्षेत्रों से आए — यूराल — डेन्यूब नदी से

② वैदिक आर्य भारत के मूलवासी — अतिवादी विचार

विपक्ष में → दक्षिण भारत में प्रसार के बजाए विदेशों से

भारत के आर्य यहाँ से जुड़े थे और कहीं नहीं यह से जुड़े रहे

③ भारत से 4000 BC पूर्व प्रवास नहीं मिलता

एक बड़ी संख्या में आर्य आए और आक्रमण कर भारत में बसे —— मार्टिमर व्हीलर

↓
हरयुपिया4 पुरंदर का उदाहरण

(वैदिक कबीला) → (लोमलकोई)

(A1) v/s (A2) = संधि → 4 देवता

इन्द्र, मित्र, वरुण और

(8) नवीनतम खोजों के प्रकाश में वैदिक हड़प्पा कालीन संबंधों पर विभिन्न मतों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (815 om) — 150 word

परुष्णी
रावी नदी

हड़प्पा सभ्यता और वैदिक आर्यों के संबंधों को लेकर प्रायः दो प्रकार के अतिवादी विचार मिलते रहे है = एक विचार वैदिक आर्यों को हड़प्पा सभ्यता का विनाशक सिद्ध करता रहा है तो दूसरा विचार उन्हें हड़प्पा सभ्यता का संस्थापक बताता रहा है।

प्रथम विचार के प्रतिपादक एक ब्रिटिश विद्वान मार्टिमर व्हीलर रहे है जिन्होंने साहित्यिक साक्ष्य को आधार बना कर वैदिक आर्यों को हड़प्पा सभ्यता को विनाश नष्ट करने वाला बताया है उसीप्रकार कुछ अन्य विद्वान दूसरे विचार का प्रतिपादन करते रहे है ~~किन्तु~~ उनके विचार में लगभग

KD Job Updates

4000 BC – 800 BC के बीच भारत में भारत बाहर से जनसंख्या का कोई बड़ा अप्रर्वजन नहीं दिखता इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक आर्य देशी मूल के ही थे तथा इन्होंने ही हड़प्पा सभ्यता को स्थापित किया था। परन्तु परवर्ती काल के विद्वानों ने उपर्युक्त दोनों विचारों को चुनौती दी – प्रथम विचार को अप्रमाणिक मान कर समाप्त कर दिया गया तो दूसरे बिचार के सन्दर्भ में यह कहा गया कि वैदिक आर्य एक समूह में नहीं आए थे बल्कि छोटी-2 टुकड़ी में आए थे तथा दीर्घकाल में उनका अप्रर्वजन हुआ था।

अभी हाल में जीनोम तकनीकी के तहत Y-क्रोमोसोम के अध्ययन के आधार पर यह सिद्ध किया जाने लगा है कि आद्य ऐतिहासिक काल में भारत में जनसंख्या का अप्रर्वजन हुआ था तथा वैदिक आर्य भारत में लगभग 2000 BC – 1500 BC भारत में आए। अतः लगभग यह बात सिद्ध हो जाती है कि वैदिक आर्य न तो हड़प्पा सभ्यता के संस्थापक थे और न ही विनाशक।

KD Job Updates

29/10/2018

वैदिक आर्यों का भौगोलिक विस्तार

ऋग्वैदिक काल ⇒ ऋग्वेद में 42 नदियों का जिक्र इनमें 19 नदियों का स्पष्ट विवरण। इन नदियों के नाम के आधार पर भौगोलिक प्रसार की सूचना।

मानचित्र

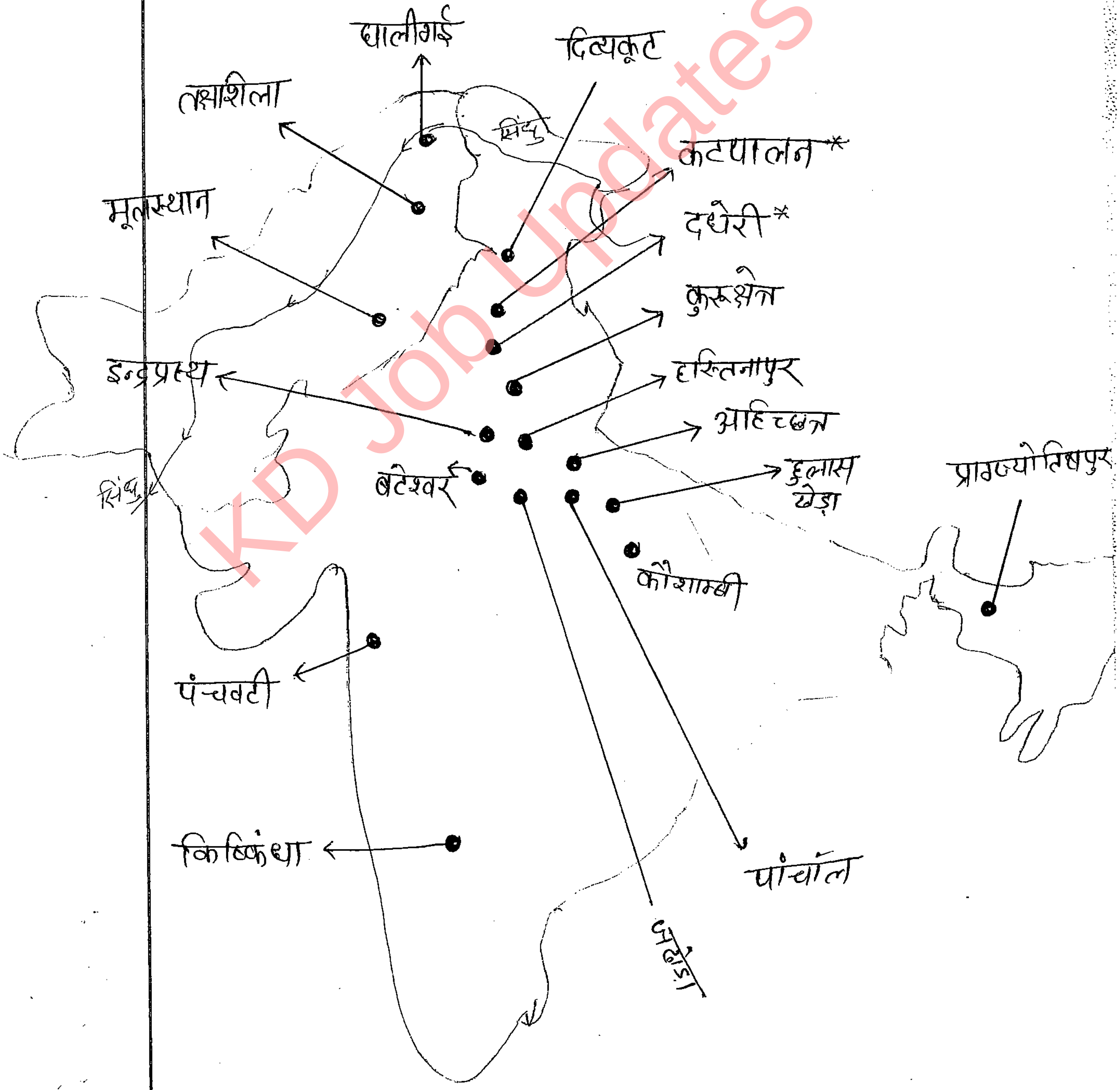

KD Job Updates

पश्चिम से सिंधु की सहायक नदियाँ → (कुर्रम) क्रुमु, शुभया (सोहन), गोमल (गोमती), कुंभा (काबुल) → स्वी अफगानिस्तान

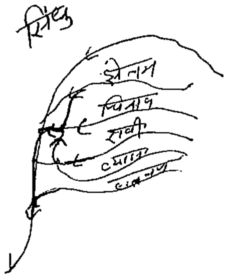

पूरब से सिंधु नदी की सहायक नदियाँ → वितस्ता (झेलम), अस्किनी (चेनाब), परूष्णी (रावी), विपाशा (व्यास) तथा शतद्रु (सतलज) – सिंध एवं पंजाब

सरस्वती, दृषद्वती तथा अपाया – राजस्थान एवं हरियाणा

धन्व शब्द का भी विवरण मिलता है, जिसका अर्थ होता है मरूस्थल इससे भी राजस्थान में ऋग्वैदिक आर्यों के विस्तार की सूचना प्राप्त।

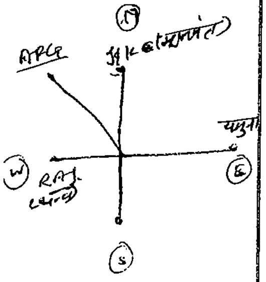

मरूदवृद्ध नदी तथा मूजवंत पर्वत की चर्चा → मूजवंत की पहचान हिमालय से हुयी है, इसका अर्थ ऋग्वैदिक आर्यों का प्रसार कश्मीर में भी।

यमुना, गंगा एवं सरयू → यमुना की चर्चा तीन बार जबकि गंगा की चर्चा एक बार इससे अनुमान लगाया जाता है कि ऋग्वैदिक आर्यों की पूर्वी सीमा यमुना नदी तक ही सीमित।

कुछ हद तक पुरातात्विक साक्ष्यों के द्वारा इस बात की पुष्टि यह पुरातात्विक साक्ष्य है। चित्रित धूसर मृदभाण्ड के साक्ष्य यथा नागर, दधेरी, कटपालन एवं भगवानपुर। ये ऐसे चित्रित धूसर मृदभाण्ड स्थल जहाँ लौह के साक्ष्य प्राप्त नहीं

अर्थात् ऋग्वैदिक आर्यों का प्रसार पंजाब, हरियाणा सिंध, कश्मीर, राजस्थान तथा पश्चिमी उत्तरप्रदेश। सिंधु नदी एवं पूर्व से 5 उसकी सहायक नदियाँ तथा सरस्वती

KD Job Updates

से मिलकर बनता है। सप्त सैंधव क्षेत्र जो ऋग्वैदिक आर्यों का केन्द्रीय क्षेत्र।

उत्तर वैदिक काल ⇒

इसकी सूचना उत्तर वैदिक ग्रन्थों से एवं कुछ हद तक इसकी पुष्टि लौह युक्त चित्रित धूसर मृदभाण्ड स्थलों से।

एतरेय ब्राह्मण ⇒

जहाँ ऋग्वेद में गंगा-यमुना के ऊपरी दोआब को पूर्वी एवं दक्षिणी क्षेत्र करार दिया गया था वहीं एक उत्तर-वैदिक ग्रन्थ एतरेय ब्राह्मण में इस क्षेत्र को मध्यदेश कहा गया।

ऊपरी दोआब (गंगा-यमुना) के उत्तरी भाग में स्थित कुरु राज्य, पंचाल राज्य ऊपरी दोआब के मध्य भाग में स्थित।

शतपथ ब्राह्मण ⇒

ऐसा माना जाता है कि उत्तर वैदिककाल के अंत तक सभ्यता का विस्तार पूर्व की ओर।

कौशल राज्य → सरयू नदी के किनारे स्थापित।

काशी राज्य →

विदेह राज्य → शतपथ ब्राह्मण से यह सूचना की राजा विदेह के द्वारा सदानीरा नदी के किनारे अग्नि की सहायता से साफ एवं पवित्र कर अपने राज्य की स्थापना

KD Job Updates

अथर्ववेद ⇒ इस ग्रन्थ में मगध एवं अंग की चर्चा थे राज्य वैदिक सभ्यता से बाहर पूर्व एवं दक्षिण स्थित।

गंगा-यमुना के दोआब क्षेत्र में लौह सामग्रियों से युक्त चित्रित धूसर-मृद्‌भाण्ड स्थलों से वैदिक आर्यों की पुष्टि।

राजनीतिक संरचना

ऋग्वैदिक काल	उत्तर-वैदिक काल
(1) राज्य जन आधारित था, क्षेत्र आधारित नहीं अर्थात् ऋग्वैदिक राजनीतिक संरचना जनजातीय पद्धति पर आधारित तथा लोग अर्द्धखाना बदोश जीवन जीते थे। एक मात्र गांधार क्षेत्र की तुलना क्षेत्र से।	(1) जनजातीय संरचना बिखरने लगी एवं क्षेत्र पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था का विकास हुआ अर्थात् अब लोग स्थायी जीवन जीने लगे थे।
(2) राजा की स्थिति स्पष्ट नहीं थी इसकी पहचान अपने कबीले के साथ होती थी एवं वह जनस्य गोप (जन का प्रधान), राजा का पद युद्ध की आवश्यकता के अनुकूल था।	(2) राजा की स्थिति अधिक स्पष्ट हुयी अब इसे सर्वजनीय सर्वभूमिपति एकराट कहा जाने लगा अब राजपद के साथ कुछ महत्वपूर्ण यज्ञ भी प्रारम्भ हो गए यथा अश्वमेघयज्ञ, वाजपेय यज्ञ, राजसूय यज्ञ।
(3) ऋग्वैदिक काल में कर प्रणाली स्पष्ट नहीं। एक 'बाली' नामक कर का विवरण प्राप्त होता है इसे कर नहीं बल्कि स्वैच्छिक	(3) इस काल तक कर व्यवस्था में सुधार हुआ बलि इसका एक अनिवार्य कर बन गया,

'बलि' कर प्रणाली

KD Job Updates

भेंट कहते हैं। राज्य की आमदनी का मुख्य जरिया था युद्ध की लूट का माल में राजा को बड़ा अंश प्राप्त होना।	इसके अतिरिक्त भाग (कृषि उत्पादन का अंश) शुल्क (चुंगी) जैसा कर भी लिया जाने लगा।
(4) राजा के दायित्व सीमित थे अतः अधिकारियों की संख्या भी सीमित यथा पुरोहित, युवराज, व्रजपति (चारागाह का प्रधान), सेनानी, ग्रामणी, विशपति, पुरूप (दुर्ग का प्रधान) आदि।	(4) क्षेत्र आधारित विकास के साथ राजा का दायित्व भी पहले की तुलना में बढ़ गया। इसलिए अधिकारियों की संख्या में वृद्धि हुई। अतः उत्तर-वैदिक ग्रंथ में हमें 12 रत्नियों का विवरण प्राप्त होता है। (रत्निनों)
(5) ऋग्वैदिक काल में स्थायी सेना का विकास नहीं बल्कि कबीले के लोग ही सैनिक सेवा प्रदान करते थे। उसी प्रकार ऋग्वैदिक काल में रक्त संबंध से पृथक व्यावसायिक नौकरशाही का विकास नहीं हुआ।	(5) उत्तर-वैदिक काल में भी स्थायी सेना का विकास नहीं बल्कि सामान्य प्रजा ही सेना का काम उत्तर वैदिक काल तक भी व्यावसायिक नौकरशाही विकसित नहीं हुई थी।
(6) ऋग्वेद में हमें कई कबिलाई संस्थाओं तथा उनके कार्यों की सूचना मिलती है। ये संस्थायें थी सभा (जनों एवं न्याय के कार्यों से संबंधित), समिति (जन-सामान्य से संबंधित तथा सम्भवतः राजा के निर्वाचन से इसका संबंध), विदथ (इसके स्वरूप में मतभेद एक	(6) इस काल में राज्य का आकार बड़ा हो गया था। इसलिए जनजातीय संस्थाओं का महत्व कम हो गया। इस काल तक विदथ एवं गण जैसी संस्थाएँ लुप्त हो गयी तथा सभा एवं समिति ने अपने पहले जैसा प्रभाव खो दिया।

KD Job Updates

दृष्टिकोण के अनुसार परिवार की खुशहाली के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान से संबंधित संस्थान), गण (एक प्रकार अराजक गणतंत्र का बोध कराता) इन संस्थाओं के द्वारा राजा के पद पर अंकुश रखा जाता था।

(7) प्रशासन की सबसे छोटी इकाई परिवार अथवा कुल था। उसके ऊपर ग्राम स्थापित हो गया, ग्राम के ऊपर विश विश के ऊपर जन। इस काल में जनपद का विकास नहीं हुआ था। उदाहरण हेतु ऋग्वेद में जन शब्द की अनेक बार चर्चा परंतु जनपद की एक बार भी चर्चा नहीं।

(7) प्रशासन की सबसे छोटी इकाई के रूप में कुल ही बना रहा परन्तु सबसे बड़ी इकाई जनपद हो गया।

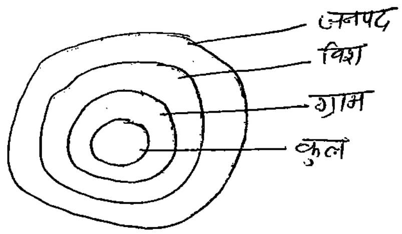

KD Job Updates

अर्थव्यवस्था

ऋग्वैदिक काल	उत्तर-वैदिक काल
① यह मुख्यतः पशुचारण पर आधारित थी। उदाहरण के लिए पशुचारण से संबंधित ऋग्वेद में अनेक शब्दावलियों का प्रयोग मिलता है यथा युद्ध को गविष्टि, दूरी माप की इकाई को गवयतु कहा गया। परन्तु कृषि का महत्व था यद्यपि कृषि द्वितीयक पेशा थी। ऋग्वेद में बीजों की बुआई, फसलों की सिंचाई, कटाई, दावनी (थ्रेसिंग) आदि गतिविधियों का विवरण प्राप्त होता है। उसी प्रकार भूमि में दिए जाने वाले खाद को 'करिषु' एवं हल को 'लांगल' कहा जाता। ऋग्वैदिक आर्य लकड़ी के हल का प्रयोग करते थे। ऋग्वेद में यव अथवा धान्य की चर्चा मिलती, इसकी पहचान जौ से की गई है।	① इस काल की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व बढ़ गया। इस काल में गंगा-यमुना के ऊपरी दोआब में वैदिक आर्यों का प्रसार हुआ। इस काल में लोहे का प्रचलन आरम्भ हो गया था यद्यपि आरंभिक लौह उपकरण युद्धशस्त्रों के रूप में प्रयुक्त हुए थे परन्तु कुछ हद तक कृषि उपकरण भी बनाए गए हैं। यह हँसिया, कुदाल (इस काल में लौह का काल के माध्यम से भी जंगल को साफ करना कुछ हद तक आसान हुआ। इस काल में फसलों की संख्या में भी वृद्धि, जौ के साथ-साथ चावल (व्रीहि), गोधूम का उत्पादन होने लगा। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के दाल भी उपजाए जाने लगे। कृषि के बढ़ते हुए महत्व की सूचना हमें शतपथ ब्राह्मण नामक ग्रंथ से भी मिलती है जहाँ राजा जनक को स्वयं हल पकड़ कर

KD Job Updates

	जुताई करते हुए दिखाया गया है। इसका अर्थ है कि इस काल में उच्च कुल के लोग भी कृषि से जुड़े हुए थे।
② इस काल में कुछ शिल्प गतिविधियों का विवरण मिलता है यथा चमड़े का काम, रथ निर्माण, बढ़ईगीरी, ताँबे काँसे के बर्तनों का निर्माण (ऋग्वेद में धातु, सुवर्ण एवं अयस की चर्चा, सुवर्ण की पहचान ताँबे से) बुनाई भी शिल्प गतिविधियों में शामिल।	② उत्तर-वैदिक काल में शिल्प गतिविधियों में अपेक्षाकृत वृद्धि चमड़े का काम, बढ़ईगीरी रथ निर्माण धातु कार्य। उत्तर-वैदिक ग्रंथों में सोने एवं ताँबे अथवा काँसे के अतिरिक्त चाँदी तथा श्याम-अयस अथवा कृष्ण-अयस (लोहा का विवरण प्राप्त) एक उत्तर वैदिक ग्रंथ वाजसनेयी संहिता में विविध प्रकार के शिल्पों का विवरण प्राप्त।
③ इस अर्थव्यवस्था में व्यापार की भूमिका सीमित थी। अर्थव्यवस्था मुख्यतः उपहार वितरण प्रणाली पर कार्य करती थी। परंतु साथ ही व्यापारिक गतिविधियों की सूचना मिलती है, उदाहरण के लिए ऋग्वेद में पणि नामक व्यापारियों का विवरण मिलता है जो संभवतः गैर आर्य थे एवं आर्यों के साथ तनावपूर्ण संबंध।	③ अर्थव्यवस्था में व्यापार की भूमिका अपेक्षाकृत बढ़ गई उदाहरण के लिए उत्तर वैदिक ग्रंथों में हमें गण संघ एवं श्रेष्ठी जैसे शब्दों का विवरण पाते हैं।

KD Job Updates

(4) अर्थव्यवस्था मुख्यतः वस्तु विनिमय प्रणाली पर कार्य करती थी। यद्यपि सिक्के के रूप में निष्क एवं शतमान का विवरण मिलता है परन्तु यह नियमित सिक्के नहीं। निष्क का अर्थ था कोई स्वर्ण आभूषण एवं शतमान सौ गायों का बोध कराता था।	(4) नियमित सिक्के विकसित नहीं हुए यद्यपि उत्तर-वैदिक ग्रंथों में हमें कृष्णल जैसी मुद्रा का जिक्र मिलता है, परंतु इसका स्वरूप स्पष्ट नहीं तथा यह भी कोई नियमित सिक्का नहीं।
(5) यह एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था ऋग्वेद में हमें पुर अथवा दुर्ग शब्द तो मिलता है, परंतु नगर शब्द नहीं	(5) तैत्तरेय अरण्यक नामक ग्रंथ में नगर शब्द का विवरण प्राप्त हुआ है परन्तु उत्तर-वैदिक कालीन अर्थव्यवस्था भी एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था ही बनी रही। यद्यपि दो स्थल यथा हस्तिनापुर एवं कौशाम्बी जिनकी पहचान नगर के रूप में करने का प्रयास किया जाता है परन्तु इन्हें भी अधिक से अधिक ~~अद्ध~~ आद्य नगर ही कहा जा सकता है।

KD Job Updates

30/10/2018

समाज

ऋग्वैदिक काल	उत्तर - वैदिक काल
ऋग्वैदिक समाज एक प्रकार के कबिलाई पद्धति पर आधारित था इसलिए परवर्ती काल की तुलना में इस काल में समता का भाव अपेक्षाकृत अधिक प्रबल रहा। ऋग्वेद में तीन वर्णों की चर्चा की गई है - पुरोहित, राजन्य एवं शेष लोग। परंतु यहाँ वर्ण विभाजन पेशे पर आधारित था अर्थात पेशे में परिवर्तन के साथ वर्ण स्थिति में भी परिवर्तन आ जाता था। उदाहरण के लिए ऋषि विश्वामित्र जन्म से राजन्य थे परन्तु पेशे से पुरोहित बन गए। इसी प्रकार ऋषि भृगु के वंशज ने पुरोहित को छोड़कर राजन्य के पेशे को अपना लिया था। इस प्रकार ऋग्वैदिक काल में पर्याप्त गतिशीलता थी।	इस काल तक आते-आते कबिलाई संरचना टूटने लगी एवं वर्ण विभाजित समाज अस्तित्व में आया। ऋग्वेद के 10वें मण्डल के प्रथम पुरुष सूक्त में पहली बार 4 वर्णों का वर्णन मिलता है यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र। साथ ही पुरुष सूक्त के मिथक में आदि पुरुष के 4 अंगों से 4 वर्णों को निकालते हुए दिखाया गया। इसमें शूद्रों की स्थिति सबसे नीचे थी। इसका दायित्व था ऊपर के 3 वर्णों को द्विज का दर्जा प्राप्त परंतु शूद्र उनसे अलग। इस प्रकार उत्तर-वैदिक काल में सामाजिक गतिशीलता बाधित होने लगी।
ऋग्वैदिक समाज एवं पितृसत्तात्मक समाज था इसलिए पुरुषों का दर्जा ऊपर था फिर भी महिलाओं की स्थिति खराब	इस काल में तुलनात्मक रूप में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में गिरावट आयी। उदाहरण के लिए ऐतरेय ब्राह्मण नामक

KD Job Updates

नहीं थी यद्यपि वीर पुरुषों की कामना की जाती थी परंतु पुत्रियों के जन्म को हतोत्साहित नहीं किया जाता था। लड़कियों का विवाह यौवनारंभ के बाद किया जाता था, वे पति के साथ यज्ञ में भाग लेती थी इसी प्रकार वे सभा की बैठक में भी हिस्सा लेती थी।

ऋग्वैदिक समाज एक पितृसत्तात्मक समाज था। अतः परिवार के मुखिया की स्थिति मजबूत थी। उन्हें अपने परिवार के अन्य सदस्यों का नियमन करने का अधिकार था। सामान्यतः परिवार के मुखिया क्षमाशील एवं करूणाशील होते थे परंतु इसके अपवाद भृज्यु एवं ऋतस्य की कथा में देखने को मिलता है।

ऋग्वेद में बहुपतित्ववाद तथा रक्त संबंध में विवाह की ओर संकेत मिलता है। बताया जाता है कि सूर्य की पुत्री सूर्या दो अश्विनी भाईयों के साथ रहती

ग्रंथ में पुत्रों को परिवार का रक्षक एवं पुत्रियों को दुःख का कारण बताया गया। फिर भी महिलाओं की स्थिति में अधिक गिरावट नहीं आयी थी। इनका विवाह यौवनारंभ के बाद ही होता था उन्हें शिक्षा का भी अधिकार प्राप्त था इस काल में कुछ शिक्षित महिलाओं गार्गी, मैत्रेयी आदि। हालाँकि इस काल में महिलाओं का सभा में प्रवेश वर्जित हो गया था।

इस काल तक आते-आते परिवार के मुखिया की स्थिति और भी मजबूत हुयी। वह परिवार के अन्य सदस्यों को पैतृक संपत्ति से वंचित कर सकता था उदाहरण के लिए विश्वामित्र ने अपने 50 पुत्रों को घर से निष्कासित कर दिया था।

उत्तर-वैदिक काल के समाज का एक विशिष्ट लक्षण बन गया गोत्र की अवधारणा का विकास। गोत्र शब्द गोष्ठ से निकला है तथा गोष्ठ से तात्पर्य है कि जिनकी

थी उसी प्रकार द्रौपदी की कथा से बहुपतित्ववाद की ओर संकेत मिलता है रक्त संबंध में विवाह की ओर संकेत यम एवं यमी की कथा में मिलता है बताया जाता है कि यमी ने अपने भाई यम से विवाह करने का अनुरोध किन्तु यम ने उसे ठुकरा दिया था।

ऋग्वेद में हमे दास एवं दासियों का भी जिक्र मिलता है सामान्यतः युद्ध बंदियों को दास बना लिया जाता था तथा दासों के समूहों में आर्य एवं गैर-आर्य दोनों थे।

गायें एक साथ बांधी जाती थी सामान्यतः वैदिक ऋषियों की गायें एक एक साथ बांधी जाती थी। अतः वे एक गोष्ठ के अतः गोष्ठ से द्विगोष्ठ की अवधारणा आयी। ये गोत्र ऋषियों गोत्र होते थे तथा में केवल ब्राह्मणों के गोत्र होते थे, परन्तु ब्राह्मणों ने ये गोत्र अपने यजमानों को दिये। वैदिक काल में गोत्र की प्रथा नहीं थी यह आगे के काल में विकसित हुयी।

उत्तर वैदिक काल की एक अभिनव परिकल्पना है आश्रम व्यवस्था का विकास एक आर्य के जीवन को 4 आश्रमों में बाँटा गया यथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास तथा चारों आश्रमों के पृथक दायित्व निर्धारित किए गए। इसके दो घोषित उद्देश्य थे। प्रथम 4 पुरुषार्थ यथा अर्थ, धर्म, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति। दूसरे 4 प्रकार के ऋणों से मुक्त होना यथा देव, ऋषि ऋण, पितृ ऋण 4 मानव जाति के ऋण।

परंतु इसका वास्तविक उद्देश्य था निजी उद्यम तथा सामाजिक नियंत्रण के बीच एक प्रकार का संतुलन।

वस्तुतः उत्तर - वैदिक काल तक तीन ही आश्रम स्थापित थे चौथा आश्रम सन्यास बुद्ध काल में विकसित हुआ।

मानचित्र

KD Job Updates

मानचित्र

KD Job Updates

धर्म

ऋग्वैदिक काल

(i) ऋग्वैदिक कालीन धर्म की प्रमुख विशेषता थी प्रकृति का दैवीकरण तथा धर्म में पुरुष भावों की प्रधानता दूसरे शब्दों में ऋग्वैदिक आर्य प्रकृति की जिन गुत्थियों को नहीं सुलझा सके उन्होंने उसका दैवीकरण कर दिया इसी प्रकार सर्वश्रेष्ठ देवता के रूप में इन्द्र अग्नि एवं वरुण स्थापित हुए इन्द्र युद्ध एवं वर्षा के देवता थे इस काल में आर्यों के जीवन में युद्ध के महत्व को देखते हुए इन्द्र का दर्जा ऊपर आना स्वाभाविक था। दूसरे प्रमुख देवता के रूप में अग्नि स्थापित हुए अग्नि यज्ञ के देवता, पुरोहित के देवता थे तथा घर-घर के अतिथि भी थे। क्योंकि प्रत्येक आर्य के घर में अग्नि प्रज्वलित किया जाता था। अग्नि का उपयोग भोजन पकाने के साथ-साथ जंगलों की सफाई के लिए भी होता था।

उत्तरवैदिक काल

(i) उत्तर वैदिक कालीन धर्म में भी हम दोनों प्रकार के गुण पाते है यथा प्रकृति का दैवीय एवं पुरुष भावों की प्रधानता परंतु चूँकि ऋग्वैदिक कालीन जनजातियाँ मूलक समाज एक कृषक समाज में ढलने लगा था इसलिए देवताओं की स्थिति में परिवर्तन देखा गया। इस काल में सर्वश्रेष्ठ देवता के रूप में प्रजापति, विष्णु, एवं रुद्र स्थापित हो गए। प्रजापति को इस सृष्टि के सृजनकर्ता एवं रुद्र को विनाशक के रूप में देखा जाने लगा। इस प्रकार जिसे हम आगे   के रूप में जानने लगते है, इनका बीज रूप इस काल में विकसित हो गया था।

वस्तुतः इस काल में वैदिक आर्य स्थायी जीवन जीने लगे थे इसलिए उनके जीवन की प्राथमिकताएँ भी बदल गयी थी।

KD Job Updates

इसलिए इसका महत्त्व होना स्वाभाविक था। तीसरे प्रमुख देवता वरुण थे, उन्हें ऋतस्यगोप (प्राकृतिक नियमों का सूचक) घोषित किया गया। वस्तुतः ऋत की परिकल्पना ऋग्वैदिक आर्यों की सर्वोच्च आध्यात्मिक उड़ान थी।	
(2) ऋग्वेद में कुछ देवियों का भी जिक्र मिलता है यथा ऊषा, निशा, अरण्यी, शची आदि परंतु इसका स्थान देवताओं से अपेक्षाकृत नीचे है।	(2) इस काल में भी कुछ देवियों की चर्चा मिली है यथा अग्नि की पत्नी आग्नेय, इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी किंतु इनका स्वतः अस्तित्व नहीं बल्कि पहचान अपने पति के साथ है।
(3) ऋग्वैदिक धर्म का स्वरूप बहुदेववादी था, परन्तु हमें धार्मिक एकेश्वरवाद (Kathenotheism) का भी साक्ष्य मिलने लगता है। इसका अर्थ है, अलग-अलग देवताओं को सर्वश्रेष्ठ समझना। इसके अतिरिक्त विशेषतः अग्नि वाले सूक्त में एकेश्वरवाद का भी तत्व मिलने लगता है जबकि यह घोषित किया गया है कि अग्नि एक अथवा अनेक।	(3) उत्तरवैदिक धर्म का स्वरूप भी बहुदेववादी था, परन्तु क्रमिक रूप में वह भी एकेश्वरवाद की ओर बढ़ता चला गया फिर उत्तरवैदिक काल के अंत तक अद्वैतवाद की अवधारणा आयी।

KD Job Updates

31/10/2018

ब्रह्म, जीव, प्रकृति
⇓
एक है
⇓
(अद्वैतवाद)

ऋग्वैदिक काल	उत्तरवैदिक काल
*(a) ऋग्वैदिक धर्म का उद्देश्य भौतिक सुखों की प्राप्ति था दूसरे शब्दों में लोक मोक्ष हेतु नहीं बल्कि प्रजा; पुत्र और धान्य के लिए उपासना करते थे।	*उत्तरवैदिक कालिन धर्म का भी उद्देश्य भौतिक सुखों को ही प्राप्त करना था उत्तर वैदिक काल में ही चलकर मोक्ष जैसी अवधारणा विकसित हुयी।
*(b) ऋग्वैदिक कालीन धर्म का स्वरूप मानववादी था।	* उत्तर वैदिक कालीन धर्म का स्वरूप भी मानववादी ही बना रहा।

(मानववाद से तात्पर्य है कि संसार और शरीर के महत्व को समझना)

Red line ↓
संविधान का उल्लंघन
सरकार विरोधी
विविधता विरोधी

ऋग्वैदिक काल	उत्तरवैदिक काल
*(c) ऋग्वैदिक काल में उपासना की पद्धति के लिए प्रार्थना एवं यज्ञ का प्रचलन था परन्तु यज्ञ की पद्धति अधिक कर्मकाण्डीय नहीं थी क्योंकि इसमें मंत्रो उच्चारण एवं पशुबलि को विशेष महत्व प्राप्त नहीं था।	* इस काल में न केवल यज्ञ का प्रचलन बढ़ गया बल्कि यज्ञ में मंत्रो उच्चारण एवं पशुबलि को ही विशेष महत्व प्राप्त हो गया। इस प्रकार वैदिक धर्म कर्मकाण्ड प्रधान बन गया।

~~इसलि~~

इसलिए वैदिक काल के अंत में कर्मकाण्ड प्रधान धर्म के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुयी जो उपनिषद के चिंतन के रूप में प्रकट हुयी।

वैदिक दर्शन

[Page No 104]

ऋग्वैदिक धर्म
⇓
बहुदेववादी प्रवृत्ति
⇓
बहुदेववाद से धार्मिक एकाधिकैकवाद की प्रवृत्ति का विकास

KD Job Updates

↓

एकेश्वरवाद का तत्व अग्नि सूक्त में

↓

ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में आदिपुरुष 4 वर्णों के अतिरिक्त इस सृष्टि के निर्माण का वर्णन

↓

उत्तरवैदिक

↓

धार्मिक कर्मकाण्ड से पृथक होकर अरण्यक के द्वारा तप पर बल दिया जाना

↓

उपनिषद ने वैदिक कर्मकाण्ड को अस्वीकार कर ब्रह्म एवं जीव की एकता की बात की इसे अद्वैतवाद के नाम से जाना गया। इसने मोक्ष पर बल दिया और मोक्ष हेतु ज्ञान को आवश्यक माना फिर उपनिषद् का अद्वैतचिंतन भारतीय दर्शन का प्राणतत्व बन गया

वैदिक काल का महत्व ⇒

(Booklet No 105)

- हालांकि आर्य हड़प्पाई लोगों की तरह कोई नगरीय सभ्यता नहीं दे पायी परन्तु, अपने पीछे एक बौद्धिक विरासत छोड़ गई यह विरासत अद्वैतवादी चिंतन है जो भारतीय दर्शन का प्राण तत्व बन गया।

- वैदिक साहित्य भारतीय साहित्य की महान धरोहर तथा संस्कृति भाषा वैदिक आर्यों की महान देन

KD Job Updates

◉ ऋग्वेद के संवाद सूक्त में नाट्यकला के विकास का भी साक्ष्य।

◉ उषा की प्रशंसा में भी सूचित लिखे गए वह उत्कृष्ट प्रकार के काव्य का उदाहरण।

◉ सामवेद भारतीय संगीत पर आरम्भिक ग्रन्थ

◉ वैदिक आर्यों को अंकमाला का ज्ञान तथा उन्हें धातु शोधन और चमड़े शोधन की तकनीकी का ज्ञान

◉ वैदिक आर्यों की दृष्टि आशावादी थी इसलिए एक नये क्षेत्र में वे अपने आप को ~~एक~~ नए सफलता पूर्वक स्थापित कर सके जब वे पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ते गए तब उन्होंने पश्चिमी साहित्य में अपना विवरण देना बंद कर दिया ~~इसलिए~~ इस तरह उन्होंने अपने आप को वर्तमान से जोड़े रहने का प्रयास किया।

इतिहास लेखन का मुद्दा ⇒

इस काल से संबंधित इतिहास लेखन के निम्न मुद्दे उभरकर आते है ———

(1) वैदिक आर्यों की देशी उत्पत्ति थी अथवा कहीं बाहर से आए थे।

(2) वैदिक आर्यों का सामना भारत में किन लोगों से हुआ तथा उनके साथ संबंधों का क्या स्वरूप रहा

③ उत्तर वैदिक काल के राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन में परिवर्तन लाने में लौह उपकरणों की क्या भूमिका रही — (Booklet 96)

इस संबंध में प्रभावी मत यह है कि उत्तरवैदिक आर्यों के राजनीतिक जीवन में लौह उपकरणों की निश्चय ही भूमिका रही थी परन्तु आर्थिक जीवन में इसकी सीमित भूमिका रही क्योंकि अधिकांश लौह उपकरण युद्धास्त्र रूप में मिले हैं कृषि के रूप में नहीं।

परवर्ती काल के साथ संवाद —

वैदिक आर्यों की विरासत वर्तमान युग तक पहुँचती है आधुनिक काल में भी चाहे वर्ण एवं जाति व्यवस्था के अध्ययन की बात हो तो हम पीछे वैदिक काल तक जाने हेतु के विवश हो जाते उसी प्रकार लैंगिक विभाजन के अध्ययन के क्रम में भी वैदिक काल का अध्ययन आवश्यक हो जाता है क्योंकि उस काल में परवर्ती हड़प्पा की तुलना में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी सबसे बढ़कर वैदिक अद्वैतवादी चिंतन भारतीय दर्शन की परंपरा में इतना महत्वपूर्ण हो गया कि आगे शंकराचार्य ने इसे विकसित किया और स्वामी विवेकानन्द ने इसके वैश्विक स्वरूप को उद्घाटित किया।

KD Job Updates

प्रश्न ⇒ ऋग्वैदिक काल से उत्तर वैदिक काल तक आते हुए सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन के तत्वों को रेखांकित कीजिए।

or

ऋग्वैदिक काल से उत्तरवैदिक काल तक आते हुए सामाजिक क्षेत्र में आपको विकास के कौन से लक्षण दिखते है सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

Q. ऋग्वैदिक काल से उत्तर वैदिक काल तक आते हुए धर्म के क्षेत्र में निरंतरता के बिंदुओं को रेखांकितकीजिए

KD Job Updates

बुद्ध काल एवं महाजनपद काल
(600 — 400)BC

अध्ययन स्रोत के आधार पर
↓
→ प्रागऐतिहासिक (पुरा.)
→ आद्यऐतिहासिक (पुरा.+साहि.) लिपि ×
→ ऐतिहासिक काल (पुरा.+साहि. साक्ष्य/पढ़ी)

अध्ययन स्रोत =

इस काल में ऐतिहासिक काल आरम्भ हुआ अतः इस काल के अध्ययन में हमारे समक्ष देशी एवं विदेशी दोनों प्रकार के स्रोत उपलब्ध है।

(Booklet 110-11)

साहित्यिक स्रोत =

① धार्मिक साहित्य ⇒ (A) a- ब्राह्मण साहित्य
b- 6 वेदांग

(B) बौद्ध साहित्य ⇒ त्रिपिटक

(C) जैन साहित्य ⇒ चौदह पर्व

② गैर धार्मिक साहित्य → • कौटिल्य के अर्थशास्त्र का कुछ अंश

विदेशी साहित्य = उत्तर-पश्चिम की घटनाओं की सूचना प्राप्त करने हेतु एक मात्र स्रोत यूनानी

KD Job Updates

लेखकों के विवरण पर निर्भर है।

पुरातात्विक साक्ष्य —

* उत्तरी कालिक ~~श्यद~~ पालिशदार मृदभाण्ड स्थल (NBPW)
* आहत सिक्कें (पंचमार्क सिक्के)

[M.Q.] बुद्ध काल के अध्ययन में अध्ययन स्त्रोत के रूप में संस्कृत साहित्य के समानान्तर प्राकृत साहित्य के महत्व को उद्घाटित करो।

[M.Q.] यूनानी लेखकों के विवरण ~~की~~ ~~ब~~ के बिना महाजनपद काल के इतिहास का ~~बिव~~ अध्ययन अधूरा रह जाता है इस कथन की टिप्पणी कीजिए।

महाजनपद काल प्राचीन भारत के इतिहास में नवीन संस्थाओं के निर्माण का काल है—

राजनीतिक क्षेत्र — बड़े राज्य के रूप में महाजनपद तथा उनसे भारत के प्रथम साम्राज्य मगध साम्राज्य का विकास

आर्थिक क्षेत्र — व्यापक कृषि अधिशेष के साथ व्यापार का विकास तथा द्वितीय नगरीयकरण का आरम्भ

सामाजिक क्षेत्र — कबाइली समाज का आधार पूरी तरह वर्ण विभाजित समाज ने ले लिया तथा वर्ण विभाजन का आधार जन्म को बना दिया।

धर्म के क्षेत्र — धार्मिक पंथों की प्रधानता, कर्म, पुनर्जन्म एवं मोक्ष की अवधारणा का विकास।

KD Job Updates

1500 BC – 500 BC के बीच राज्य निर्माण

→ कान्फ्रेस्ट का सिद्धांत
→ सामाजिक विविधता
→ मार्क्सवादी व्याख्या

महाजनपदकाल

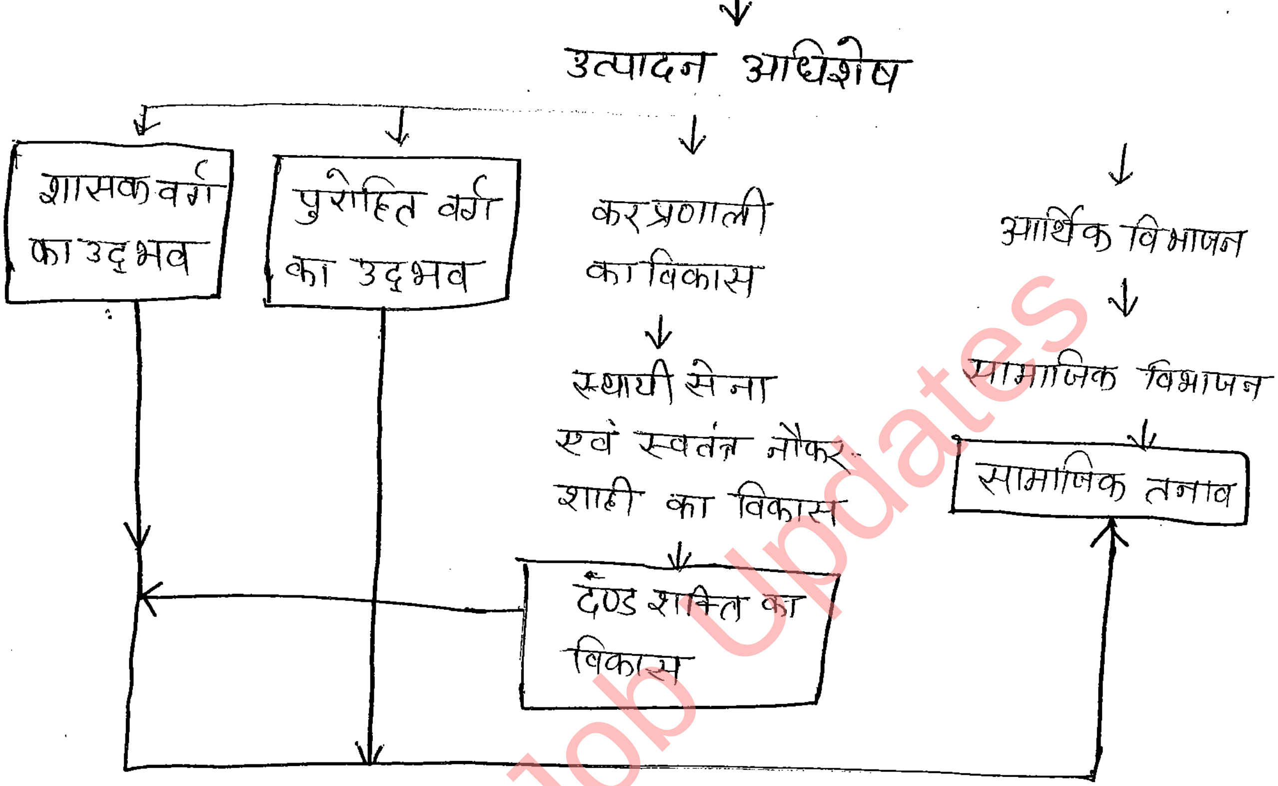

KD Job Updates

Deepak PHOTOSTAT 9310521834

01/11/2018

(A) राजनीतिक स्थिति

16 महाजनपद :—

बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों का विवरण प्राप्त होता है ये महाजनपद इस प्रकार थे —

A – अवन्ति, अंग और अश्मक
C – चेदि
G – गांधार
K – काशी, कोशल, कुरु, कम्बोज
M – मत्स्य, मल्ल, मगध
P – पांचाल
S – शूरसेन
V – वज्जि, वत्स

मानचित्र

KD Job Updates

Deepak PHOTOSTAT
9310521834

अवध साम्राज्य का उद्भव एवं विस्तार :–

अवध साम्राज्य साम्राज्य निर्माण की दिशा में पहला बड़ा प्रयोग था यह अन्य महाजनपदों को पीछे छोड़ते हुए आगे निकल गया तथा भारतीय उपमहाद्वीप के एक बड़े क्षेत्र में फैल गया। इसने ही वह आधारशिला रखी जिसने आगे मौर्यों के अधीन एक अखिल भारतीय साम्राज्य के निर्माण को संभव बनाया।

इसकी सफलता के कारण निम्न थे —

① भौतिक - आर्थिक कारण —

ⓐ मगध का मजबूत आर्थिक आधार —

मगध साम्राज्य का केन्द्रीय क्षेत्र मध्य गंगा घाटी था यह बहुत ही उपजाऊ क्षेत्र था जहाँ अधिक कृषि अधिशेष उत्पन्न हुआ। इससे उद्योग, व्यापार और नगरीय संरचना का विकास संभव हुआ। इस प्रकार राज्य को एक ठोस आर्थिक आधार मिला।

ⓑ मगध की भौगोलिक सुरक्षा —

मगध की पहली राजधानी (राजगृह) अथवा पाटलिपुत्र जो 5 पहाड़ियों से घिरी हुयी थी वहीं दूसरी राजधानी (पाटलिपुत्र) गंगा, गण्डक सोन एवं घाघरा नदियों से सुरक्षित थी इन नदियों से व्यापार को भी प्रोत्साहन मिल रहा था।

ⓒ मगध के पास प्राकृतिक संसाधन —

मगध में तांबे के साथ साथ लोहे का भी खनिज भण्डार था इसलिए उपकरणों

KD Job Updates

के साथ-साथ बेहतर किस्म के हथियारों का निर्माण भी संभव हुआ। फिर मगध के अन्तर्गत घने जंगली क्षेत्र भी थे जहाँ लकड़ी और हाथी की उपलब्धता थी अतः मगध के शासक बेहतर किस्म के गज सेना खड़ी कर सके।

(d) मगध के महत्वाकांक्षी शासकों की कूटनीतिक एवं सैन्य योग्यता —

(A) बिम्बसार —

* युद्ध – अंग
* विवाह – काशी, वज्जि
* कूटनीति → अवन्ति, गांधार

(i) मगध क्षेत्र का विस्तार — अंगराज को जीतकर मगध राज्य का विस्तार किया है।

(ii) उसने वैवाहिक संबंधों के माध्यम से मगध की स्थिति मजबूत की। कोशल देवी के साथ विवाह के बदले काशी का क्षेत्र प्राप्त, वज्जि संघ के साथ भी वैवाहिक संबंध।

(iii) इसने कूटनीतिक संबंधों के माध्यम से भी मगध की स्थिति मजबूत की उदाहरण के लिए अवन्ति के शासक चन्द्रप्रद्योत महासेन तथा तक्षशिला के शासक के साथ इसके संबंध।

श्रेणिक बिंबसार
||
स्थायी सेना का गठन

(iv) उसने सैन्य एवं प्रशासनिक संरचना का पुनर्गठन किया स्थायी सेना गठित करने के कारण उसे श्रेणिक बिम्बसार कहा जाता है।

(B) अजातशत्रु —

(i) कोशल पर सैन्य दबाव बनाकर उसने काशी को दुबारा प्राप्त किया और फिर कोशल के शासक प्रसेनजित की

KD Job Updates

मृत्यु के पश्चात् कौशल राज्य पर भी कब्जा करने में सफल रहा।

(ii) अजातशत्रु की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है वज्जि संघ के विरूद्ध मगध की सफलता वज्जि संघ गंगा नदी के उत्तर में प्रचण्ड साधनों से युक्त एवं समृद्ध साम्राज्य था। अजातशत्रु ने 16 वर्षों के निरंतर प्रयास के बाद वज्जि संघ के विरूद्ध सफलता प्राप्त कर सका इसके लिए उसने एक प्रबल कूटनीतिक उपाय का सहारा लिया। उसने अपने मंत्री (वर्षकार) के माध्यम से वज्जि संघ के विभिन्न घटकों के बीच आपसी दरार उत्पन्न करा दी। फिर उसे जीतने में कामयाब रहा।

कौटिल्य ने भी इस स्थिति को दर्शाया है कि अगर राजतंत्र के द्वारा किसी अराजक गणतंत्र पर विजय प्राप्त करनी हो तो उसके लिए उचित रणनीति है उस गणतंत्र के विभिन्न घटकों के बीच दरार उत्पन्न करवा देना। संभव है कि कौटिल्य का यह लेखन अजातशत्रु की सफलता से ही परिचालित थी।

(C) शिशुनाग —

मगध के नए शासक शिशुनाग ने लगभग पिछले 100 वर्षों की प्रतिस्पर्धा का अंत करते हुए अवन्ति को जीतकर मगध साम्राज्य में मिला लिया क्योंकि अवंति पहले एक बड़े भू-भाग को अपने

KD Job Updates

नियंत्रण में ले चुका था। इसलिए अब मगध का बड़ा विस्तार हुआ और अब वह उत्तर-पश्चिम में व्यास नदी से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी तक पहुँच गया।

(D) महापद्मनंद — कलिंग क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक महत्व को देखते हुए महापद्मनंद ने इसको जीत कर मगध साम्राज्य में मिला लिया।

[M.Q] मगध साम्राज्य की सफलता में मगध के महत्वाकांक्षी शासकों की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

[M.Q] मगध साम्राज्य के सफलता में मगध के महत्वाकांक्षी शासकों की सैन्य एवं कूटनीतिक भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

[M.Q] मगध साम्राज्य की सफलता हम कहाँ तक मगध के महत्वाकांक्षी शासकों की सैन्य एवं कूटनीतिक भूमिका को श्रेय दे सकते हैं।

[M.Q] मगध के महत्वाकांक्षी शासकों के सैन्य एवं कूटनीतिक योगदान के बिना मगध साम्राज्य की सफलता की कहानी अधूरी रह जाती है। इस कथन का परीक्षण कीजिए।

[M.Q] वज्जि संघ के साथ संबंधों के विशेष सन्दर्भ में मगध साम्राज्य एवं गणतंत्र के बीच संबंधों को निरूपित कीजिए।

KD Job Updates

ईरानी एवं यूनानी साम्राज्य —

जिस समय भारतीय उपमहाद्वीप के अंदर मगध साम्राज्य अपनी प्रगति कर रहा था उस समय उत्तर-पश्चिम भारत का (~~साम्राज्य~~) भू-भाग ईरानी साम्राज्य और यूनानी साम्राज्य की प्रसारवादी नीति का शिकार बना तथा कम्बोज और गांधार महाजनपद इन साम्राज्यों के क्षेत्रों में समाहित हो गए।

इस काल में पश्चिम एशिया में डेरियस के अन्तर्गत एक बड़े साम्राज्य की स्थापना हुयी थी इसे विश्व साम्राज्य का दर्जा दिया जाता है। डेरियस ने पूर्व की ओर विस्तार करने के क्रम में उत्तर-पश्चिम भारत के भू-भाग को भी जीता।

ईरानी साम्राज्य के प्रसार का कारण —

(1) उत्तर-पश्चिम में सिंध एवं पंजाब का क्षेत्र काफी उपजाऊ था तथा इनका व्यापक आर्थिक और सामाजिक महत्व था।

(2) उत्तर-पश्चिम में कंबोज, गांधार, और राज्य आपस में संघर्षरत थे। इस तथ्य ने भी ईरानी आक्रमणकारियों को आकर्षित किया फिर ईरानियों ने सिंधु नदी के पूर्व के भाग को जीत लिया। ~~ईरानी साम्राज्य~~

ईरानी साम्राज्य में सिंध एवं पश्चिमी पंजाब का भू-भाग शामिल था यूनानी विद्वान हेरोडोटस के

KD Job Updates

अनुसार यहाँ से ईरानी साम्राज्य को 360 टैलेन्ट सोना प्रतिवर्ष राजस्व के रूप में प्राप्त होता था। यह भाग ईरानी साम्राज्य का 30वाँ प्रांत का दर्जा प्राप्त था।

ईरानी साम्राज्य का प्रभाव —

(1) उत्तर-पश्चिम भारत का भू-भाग ईरानी साम्राज्य के माध्यम से मध्य-एशिया एवं पश्चिम-एशिया के एक व्यापक व्यापारिक नेटवर्क से जुड़ गया। अतः इस क्षेत्र में व्यापार और नगरीकरण को प्रोत्साहन मिला।

(2) ईरानी साम्राज्य के साथ संपर्क ने भारतीय राज्यों की संरचना पर भी अपना प्रभाव छोड़ा ऐसा माना जाता है कि प्रांतीय प्रशासन का मॉडल ईरान की क्षेत्रीय व्यवस्था से प्रभावित था।

(3) ईरानी संपर्क से उत्तर-पश्चिम भारत में अरामेइक लिपि और खरोष्ठी लिपि का प्रचलन आरम्भ हुआ आगे अशोक ने उत्तर-पश्चिम में अपने अभिलेख इन लिपियों में खुदवाये।

(4) बताया जाता है कि अशोक के द्वारा निर्मित स्तम्भ तथा उन पर खुदवाये गए आदेश डेरियस-प्रथम के स्तंभ से प्रभावित रहे होंगे।

KD Job Updates

यूनानी साम्राज्य
॥
फिलिप
↓(पुत्र)
सिकन्दर

यूनानी आक्रमण —

ईरानी साम्राज्य के पतन के पश्चात यूनानी साम्राज्य का उद्भव हुआ इस साम्राज्य का संस्थापक सिकन्दर का पिता फिलिप था। 336 ई.पूर्व मे सिकंदर उसका उत्तराधिकारी बना फिर उसने पूरब की ओर विस्तार किया। इसक्रम मे उसने ईरानी साम्राज्य का लगभग खात्मा ही कर दिया फिर लगभग 327 ई.पूर्व-326 ई. पूर्व में उसने भारत के दरवाजे पर दस्तक दिया और फिर एक के बाद दूसरे भू-भाग को जीतते हुए व्यास नदी पर पहुँच गया। इससे आगे उसकी सेना बढ़ने से इन्कार कर गयी इसलिए उसे वापस लौटना पड़ा। ~~वापिस~~ वापस लौटते हुए उसने निम्न प्रबंधन किया —

सिंधु नदी के पश्चिम के भू-भाग को यूनानी ~~गर्व~~ गवर्नर फिलिप के अधीन छोड़ा। सिंधु नदी और झेलम नदी के भू-भाग को तक्षशिला के शासक अम्भी के अधीन रखा तथा झेलम और व्यास ~~के~~ नदी के भू-भाग को राजा पोरस के अधीन रख दिया। (आगे इस प्रबन्धन को मौर्य शासक चन्द्रगुप्त तोड़ देगा)।

सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव —

किसी विध्वंसात्मक घटना का रचनात्मक प्रभाव हो सकता है। इसका उदाहरण है सिकन्दर का आक्रमण —

KD Job Updates

① सिकन्दर के आक्रमण के कारण उत्तर-पश्चिम के राज्य कमजोर पड़ गए। इसका फायदा आगे मौर्यों को मिला।

② सिकन्दर के आक्रमण के बाद भारत और यूरोप के बीच कई व्यापारिक मार्ग खुल गए। व्यापार को प्रोत्साहन मिला।

③ यूनान के साथ संपर्क से उत्तर-पश्चिम में यूनानी भाषा एवं लिपि का प्रचलन आरम्भ हुआ। आगे इसका उपयोग अशोक ने अपने अभिलेख में किया।

④ यूनान के साथ संपर्क से उत्तर-पश्चिम के क्षेत्र में हेलिनिस्टिक कला का प्रभाव पड़ा। फिर आगे तक्षशिला और आस-पास के क्षेत्र में मूर्तिकला की एक नवीन गांधार शैली का विकास हुआ।

⑤ सिकन्दर के साथ उसके कुछ इतिहासकार साथी भी आये थे तथा अरिस्टोबुलस और एनासिक्रिटॉज, नियार्कस आदि इनके द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए सेन्ड्रोकोट्टस शब्द का प्रयोग किया गया। जब आगे एक ब्रिटिश विद्वान विलियम जोन्स ने सेन्ड्रोकोट्टस की पहचान चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ कर दी तो भारतीय इतिहास की गुत्थियाँ सुलझ गयी।

KD Job Updates

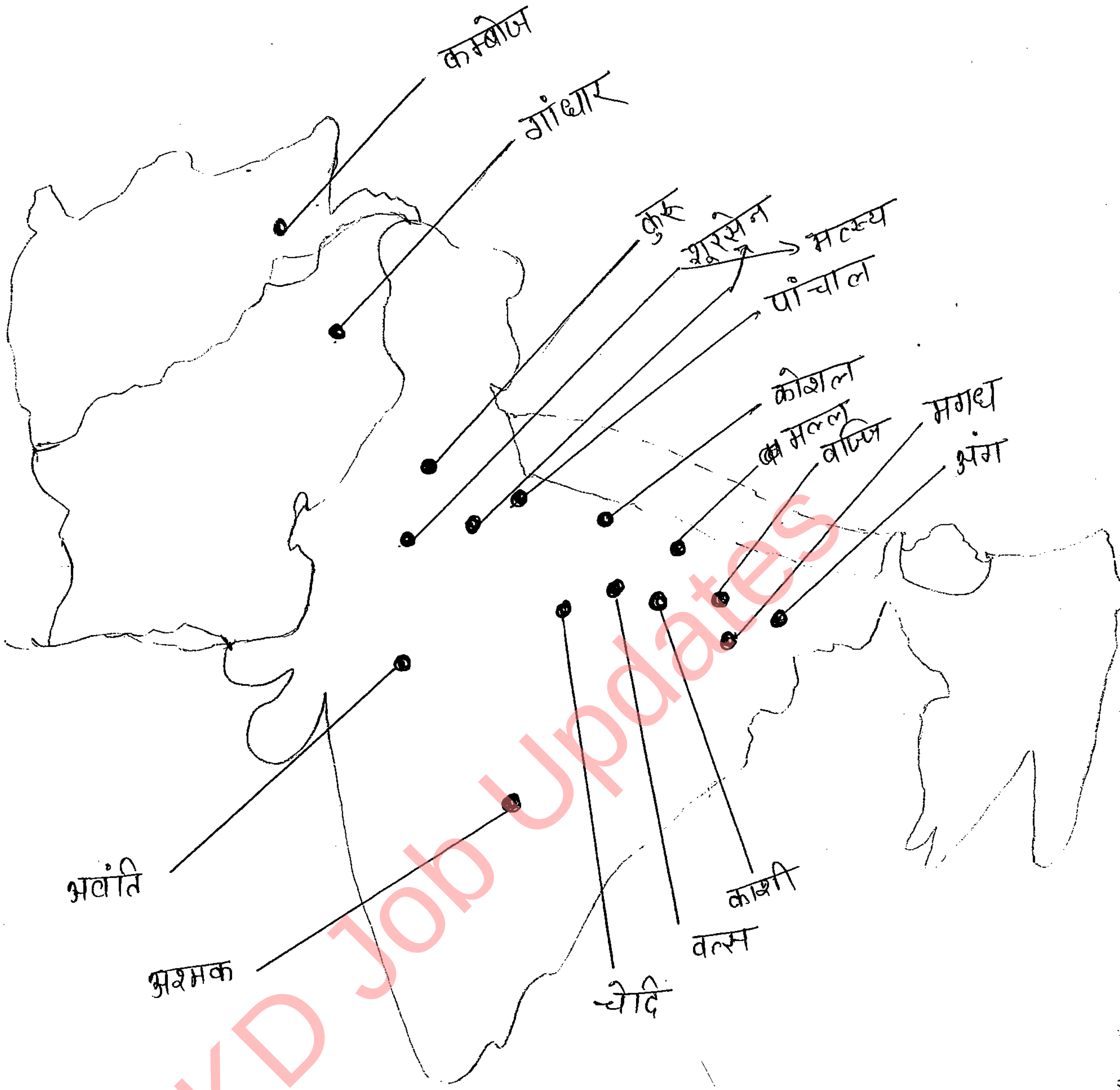

KD Job Updates

03/11/2018

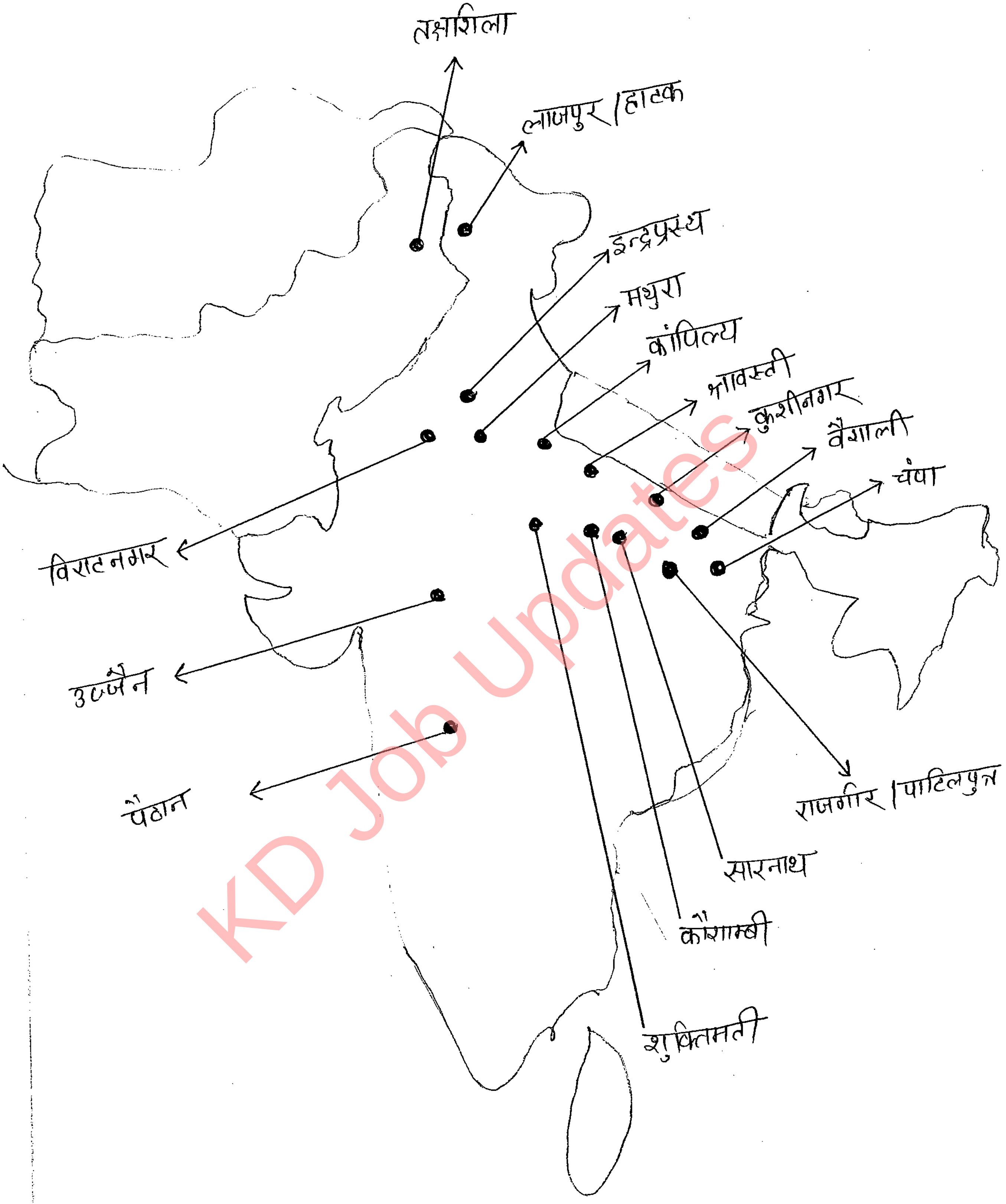

KD Job Updates

03/11/2018

अराजक गणतंत्र —

6ठी सदी ई॰ पू॰ में राजतंत्र के समानान्तर कुछ अराजकगणतंत्रों का विवरण भी प्राप्त होता है इन्हें जानने के विविध स्त्रोत है। पालि ग्रन्थों में उत्तर के 10 गणतंत्रों की चर्चा है इनमें से कुछ इस प्रकार है —

कपिलवस्तु के शाक्य, मिथिला के विदेह, पावा और कुशीनारा के मल्ल, वैशाली के लिच्छवी आदि। इसके अतिरिक्त यूनानी विद्वानों के विवरण में उ॰-प॰ के कुछ अराजक गणतंत्रों की चर्चा मिलती है यथा यौधेय, मालव, क्षुद्रक, आर्जुनायन आदि, हालांकि यूनानी विद्वानों ने इनके लिए पृथक प्रकार के नामों का प्रयोग किया है परन्तु इन राज्यों के द्वारा जो सिक्के जारी किए गए इन सिक्कों से इनके ये नाम मिलते है।

इस राजतंत्र के युग में अराजक गणतंत्र क्यों तथा इनके बनने की क्या प्रक्रिया ? —

1500 BC से 500 BC के बीच उत्तर-भारत तथा उत्तर-पश्चिम के क्षेत्र आर्थिक सामाजिक परिवर्तनों की प्रक्रिया से गुजर रहे थे। इस क्रम में राजतंत्र जैसी संस्था मजबूत हो रही थी परन्तु फिर भी गैर राजतंत्रात्मक पद्धति भी देखने को मिलती है ~~इस~~ संभवत: इसके बनने की दो प्रक्रियाएँ रहीं थी —

KD Job Updates

(1) कुछ अराजक गणतंत्र ऐसे थे जो इन परिवर्तनों के साथ अपने को नहीं जोड़ सके और पूर्व स्थिति में बने रहना पसंद किया।

(2) दूसरी तरफ कुछ ऐसे भी राज्य थे जो परिवर्तन की प्रक्रिया में आगे बढ़ चुके थे परन्तु कुछ आगे जाकर पीछे लौट गए थे उदाहरण के लिए मिथिला के विदेह तथा हस्तिनापुर के कुरु। वैसे तो हम ऋग्वैदिक काल में भी एक जनजातीय संरचना के रूप में गण की चर्चा मिलती है परन्तु इस काल के अराजक गणतंत्रों का स्वरूप पहले की तुलना में कहीं अधिक जटिल थी।

प्रशासन का स्वरूप

सामंतों का समूह
↓
मुखिया (गणज्येष्ठ)
↓
अधिकारियों का समूह

जहाँ राजतंत्र में शक्ति एक व्यक्ति के पास थी वहीं अराजक गणतंत्रों में निर्णय लेने की शक्ति कुलीनों के समूह के हाथों में होती थी और सामूहिक रूप से निर्णय लिया जाता था। कुलीनों की सभा अपने बीच से एक मुखिया भी चुनती थी इसे गणमुखिया अथवा गणज्येष्ठ माना जाता था। फिर इनके अधीन अधिकारियों का समूह काम करता था। चूल कलिंग जातक (पालि ग्रन्थ) से यह सूचना मिलती

KD Job Updates

वैशाली के लिच्छवियों
है कि ~~कालिंम~~ में लगभग 7707 राजा एक साथ संस्थागार में बैठते थे वहीं (महावस्तु) नामक ग्रन्थ हमें सूचित करता है कि वैशाली में 1 लाख 68 हजार राजा थे हालांकि यह अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण है इससे यह संकेत मिलजाता है कि इन राज्यों में कुलीनों का एक संगठन काम करता था और निर्णय सामूहिक रूप में लिए जाते थे।

गणतंत्र की अवधारणा कहाँ से ?—

1940 के दशक में लिखने वाले राष्ट्रवादी विद्वानों ने इन अराजक राज्यों के लिए गणतंत्र शब्द का प्रयोग किया है इनका तो यहाँ तक मानना है कि यूनानी विद्वानों ने भी इनके लिए गणतंत्र शब्द का प्रयोग किया है जबकि वे प्राचीन यूनान में गणतंत्र से निश्चय ही परिचित थे, परन्तु यह स्मरणीय है कि ~~यूनानी~~ ये राष्ट्रवादी लेखक उन साम्राज्यवादी विद्वानों की प्रतिक्रिया में लिख रहे थे जिन्होंने प्राचीन भारत की राजनीतिक, प्रशासनिक संरचना को निम्न कोटि को दिखाने का प्रयास किया था जबकि सच्चाई यह है कि न तो प्राचीन, यूनान और रोम में और न ही प्राचीन भारत में स्थापित यह अराजक गणतंत्र ~~भी~~ कहीं भी गणतंत्र के निकट थे।

KD Job Updates

अराजक गणतंत्रों के पतन के कारण –

(1) एक तरह से अगर देखा जाए कि अराजक गणतंत्रों का तथाकथित सबल पक्ष ही इसका सबसे निर्बल पक्ष सिद्ध हुआ। इसका निर्बल पक्ष था निर्णय लेने की गति का त्वरित नहीं होना और फिर महत्वपूर्ण मुद्दों पर परस्पर मतभेद कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इस तथ्य को अराजक गणतंत्र की सबसे बड़ी कमजोरी बताया गया है इतना तक कि महात्मा बुद्ध ने भी मगध के मंत्री वर्षा_कार से वार्ता के मध्य से इस बात की ओर संकेत किया है।

(2) यह गणतंत्र और राजतंत्र दोनों की कमजोरियों को अपने में समाहित कर चुका था एक तरफ जहाँ गणतंत्र की कमजोरी रही थी ~~वह~~, निर्णयन का त्वरित नहीं होना वहीं ~~रा~~ राजतंत्र की कमजोरी उसकी निरंकुश पद्धति। वैशाली में नगर वधू की अवधारणा तथा पावा के मल्लों के द्वारा यह आदेश दिया जाना कि सभी लोग बुद्ध के स्वागत के लिए अपने घर से निकलकर बाहर आए इसी निरंकुशता की ओर संकेत करता है।

(3) इन गणतंत्रों में जनभागेदारी नहीं थी यह एक प्रकार का कुलीन तंत्र था इसलिए संभव है कि इन्हें जन सामान्य का समर्थन नहीं मिला हो।

KD Job Updates

(4) इनकी सैन्य संरचना भी राजतंत्र की तुलना में कमजोर प्रतीत होती है वैसे तो लिच्छवी के पास एक शक्तिशाली सेना मानी जाती थी परन्तु संभव है कि शांति के समय लोग खेती का काम करते थे।

(5) हिमालय का तलहटी में स्थापित गणतंत्रों का समूह आर्थिक रूप में कमजोर प्रतीत होता है क्योंकि वह क्षेत्र कृषि के लिए उपयुक्त नहीं था इसलिए ये राज्य कोसल की साम्राज्यवादी नीति का शिकार हो गए।

M.Q.

गणसंघों (गैर राज्यतंत्रीय राज्य प्रणालियाँ) का विवरण प्रस्तुत कीजिए। इनका पतन किस कारण हुआ था? (2010)

(B) प्रशासन

महाजनपद काल तक प्रशासनिक ढाँचे के स्वरूप में परिवर्तन आने लगा यह परिवर्तन आर्थिक सामाजिक ढाँचे में होने वाले परिवर्तनों से गहरे रूप में जुड़ा हुआ था —

(1) जनपद की जगह अब बड़े-बड़े महाजनपदों ने ले लिया

(2) राजा की शक्ति एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि हुयी। अब राजा बड़ी-बड़ी उपाधियाँ लेने लगा जैसे यातेय ब्राह्मण नामक ग्रन्थ से यह सूचना मिलती है कि अलग-अलग

क्षेत्र के शासकों ने पृथक- पृथक उपाधियाँ ग्रहण की यथा पूर्व के शासकों ने अपने को सम्राट कहना पसंद किया।

(2) इस काल तक राजत्व की रहस्यवादी अवधारणा विकसित हो गयी थी और इसे ब्राह्मणों द्वारा समर्थन दिया जा रहा था इसके अनुसार राजा का पद ईश्वर द्वारा समर्थित था।

(इसके विपरीत बौद्धों के द्वारा राजत्व की एक अतिरिक्त अवधारणा दी गयी थी जिसे महासंवत की अवधारणा के नाम से जाना गया यह था राजत्व का अनुबंधात्मक सिद्धांत। इस सिद्धांत के अनुसार राजा का चयन किया जाना चाहिए यह अवधारणा अराजक गणतंत्रों के लिए अधिक उपयुक्त थी)

04/11/018

(3) इस काल में कर प्रणाली स्थापित हो गयी थी समकालीन ग्रंथों में कर प्रणाली से जुड़े हुए लगभग आधे दर्जन अधिकारियों की सूचना मिलती है उदाहरण हेतु रज्जुग्राहक (भूमि की माप करने वाला अधिकारी) द्रोणमापक (अनाजों में राजस्व माप करने वाला अधिकारी)। शौल्किक (चुंगी एवं शुल्क वसूल करने वाले अधिकारी) संग्रीहित (कोषाध्यक्ष) इसके अतिरिक्त तुंडिया और अकासियां जैसे अधिकारियों का विवरण प्राप्त होता है तथा इस बात की ओर संकेत मिलता है कि इन अधिकारियों के द्वारा बलपूर्वक राजस्व वसूल किया जाता।

सबसे पहले भूमि की माप महाजनपद काल से प्रारम्भ

KD Job Updates

④ कर प्रणाली बेहतर होने का एक परिणाम हुआ कि राजा के पास अपेक्षित संसाधन आए और फिर राजा उन संसाधनों की सहायता से ~~स्थापित~~ स्थायी सेना और स्वतंत्र नौकरशाही स्थापित कर सका।

⑤ उत्तर वैदिक काल में जनमत को जानने का साधन था सभा और समिति जैसी संस्थाएँ परन्तु महाजनपद काल तक ये संस्थाएँ लुप्त हो गयी और इनकी जगह एक नई संस्था परिषद का विकास हुआ कि राजा मंत्रिपरिषद के माध्यमसे जनमत को ज्ञात करने का प्रयास करने लगा।

⑥ महाजनपद काल तक लिपि का प्रचलन आरम्भ हो गया था अतः अब लिखित दस्तावेज के रूप में राजकीय कार्यों का रिकार्ड रखा जाने लगा फिर इससे जुड़ा हुआ एक अधिकारी अक्षपटलाधिकृत ~~अस्ति~~ अस्तित्व में आया।

⑦ उत्तर-वैदिक काल में प्रशासन की सबसे छोटी इकाई के रूप में कुल और बड़ी इकाई ~~परिषद~~ जनपद थी परन्तु इस काल में सबसे छोटी इकाई गाँव और बड़ी इकाई के रूप में महाजनपद हो गया।

M.Q. लगभग 1000 BC से 500 BC के बीच उत्तर भारत में प्रशासनिक संरचना के विकास पर टिप्पणी करो।

M.A. उत्तर-वैदिक काल की प्रशासनिक संरचना के महत्वपूर्ण

KD Job Updates

अभिलक्षणों को दर्शाते हुए यह ज्ञात करने का प्रयास कीजिए कि बुद्ध काल में आपको इनमें कौन से परिवर्तन के लक्षण दिखते हैं।

(c) अर्थव्यवस्था :-

(द्वितीय नगरीकरण)

(A) कृषि अर्थव्यवस्था –

(1) मध्य गंगा घाटी में कृषि अर्थव्यवस्था का प्रसार, ऊपरी गंगा घाटी की तुलना में चावल उत्पादक मध्य गंगा घाटी अधिक उपजाऊ थी फिर बेहतर किस्म के कृषि उपकरणों की सहायता से जंगलों को साफ करना और गहरे स्तर पर भूमि को आबाद करना भी अपेक्षाकृत आसान हो गया।

(2) बौद्ध ग्रन्थ सुत्तनिपात तथा पाणिनि के अष्टाध्यायी में गहरे स्तर पर भूमि की जुताई किए जाने की चर्चा प्राप्त।

(4) धान की रोपाई करने की तकनीकी का भी फायदा मिला इससे उत्पादन में वृद्धि हुयी।

(3) पहले परिवार के लोग मिल-जुलकर खेती करते थे परन्तु कर्मकारों (वैतनिक मजदूर) को भी खेती में लगाया जाने लगा। बौद्ध ग्रन्थों में ऐसे 'समृद्ध गृहपतियों' का विवरण मिलता है जो 500-बैलों की सहायता

KD Job Updates

(4) एक दृष्टिकोण के अनुसार जलवायु संबंधी कार्यों से उत्तर-पश्चिम से पूर्व की ओर जनसंख्या का पलायन हो रहा था इस कारण जनसंख्या बढ़ रही थी साथ ही नई प्रकार की फसलें गेहूँ और जौ तथा नवीन तकनीकी भी आयी थी इससे भी कृषि को लाभ मिला होगा।

(B) शिल्प एवं उद्योग =

बेहतर कृषि अधिशेष ने शिल्प और उद्योगों के विकास को भी प्रोत्साहन दिया। बौद्ध ग्रन्थों में 18 प्रकार के शिल्पों का विवरण प्राप्त होता है शिल्प विकास के कारण शिल्पों के विशेषीकरण को भी प्रोत्साहन मिला तथा एक खास प्रकार के शिल्पी भी एक खास क्षेत्र में बसने लगे उदाहरण हेतु वैशाली से 500 कुम्हारों की सूचना मिलती है इससे नगरीकरण को भी बल मिला।

(C) व्यापार =

कृषि एवं उद्योगों के विकास के कारण व्यापार को प्रोत्साहन मिलना बहुत ही स्वभाविक था इस काल में व्यापार विकसित अवस्था में थी। उत्तर-भारत में महत्वपूर्ण मार्गों का विकास हो चुका था जिन मार्गों से बौद्ध एवं जैन सन्यासी

KD Job Updates

गुजरते थे उन्हीं मार्गों से व्यापारी भी। जीवक की कथा से उत्तर के प्रमुख मार्गों के विकास की रचना मिलती है जिसकी पहचान आगे उत्तरापथ के रूप में हुयी (जीवक वह राजवैद्य था जो तक्षशिला से चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त कर पाटलिपुत्र को लौटा था)

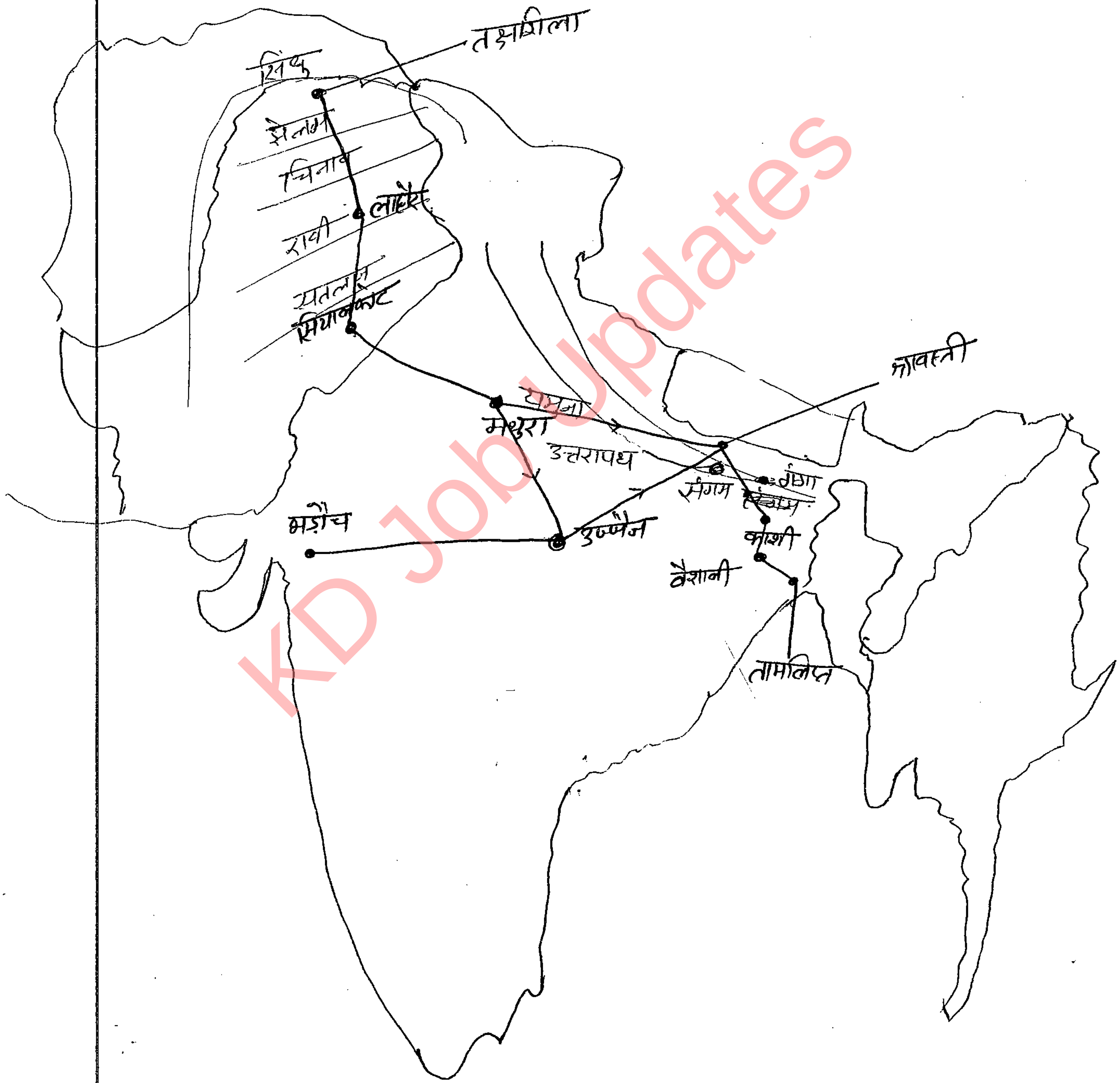

KD Job Updates

एक मार्ग तक्षशिला से लाहौर और सियालकोट होते हुए मथुरा से जुड़ता था और फिर मथुरा का यह मार्ग उज्जैन से जुड़ जाता और उज्जैन भड़ौच से फिर मथुरा से उज्जैन गंगा। यमुना नदी पार करते हुए श्रावस्ती से जुड़ता। श्रावस्ती काशी से जुड़ा हुआ था और फिर काशी से वह मार्ग वैशाली और पाटलिपुत्र होते हुए बंगाल के ताम्रलिप्त बंदरगाह से जुड़ जाता है।

व्यापार में ग्रामीण क्षेत्र से नगरों में अनाजों का निर्यात किया जाता फिर उत्तर-भारत के व्यापारिक संबंध उत्तर-पश्चिम के मध्य एशिया और पश्चिम-एशिया के मध्य से तथा पूर्व में बर्मा से जुड़ा हुआ था। मध्य-एशिया एवं पश्चिम-एशिया से लाजवर्द मणि और जेड प्राप्त किया जाता तथा बर्मा से भी जेड का आयात किया जाता।

(d) मुद्रा अर्थव्यवस्था —

इस काल में नियमित रूप में सिक्कों का प्रचलन आरम्भ हो गया था। पुरातात्विक खुदाई

KD Job Updates

के पश्चात आहत सिक्कों के साक्ष्य प्राप्त होते है ये सिक्के चाँदी तथा ~~त~~ ताँबे तथा चाँदी - ताँबे मिश्रित होते थे। इन पर वृक्ष, चन्द्रमा एवं अन्य प्रकार के चित्र उकेरे जाते। ये सिक्के सैकड़ों की संख्या में विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त हुए है। इन सिक्कों के अतिरिक्त हमें बड़ी संख्या में कौड़ियों का भी साक्ष्य प्राप्त होता। इनका उपयोग संभवतः सिक्कों के प्रयोग में किया जाता। पुरातात्विक साक्ष्यों के अतिरिक्त हमें सिक्कों के विषय में साहित्यिक साक्ष्य भी प्राप्त होते। पालि ग्रन्थ से हमें सूचना मिलती है कि राज वैद्य जीवक के द्वारा श्रावस्ती के गृहपति ~~के~~ के पुत्र को बीमारी से मुक्त करने पर गृहपति ने उसे 16000 सिक्के भेंट किए थे।

ⓔ नगरों का विकास —

इस काल को द्वितीय नगरीकरण के आरम्भ का काल माना जाता है। इस काल में विभिन्न स्रोतों से हमें अनेक नगरों का विवरण प्राप्त होता है। एक यूनानी विद्वान एरेस्टोबुलस ने सिकन्दर के द्वारा झेलम नदी और व्यास नदी के बीच नौ राज्यों के साथ-साथ 5000 नगरों को जीतने

KD Job Updates

का विवरण दिया है हालांकि यह अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण है परन्तु इससे यह सूचना मिलती है कि उत्तर-पश्चिम में अनेक नगर अस्तित्व में थे। फिर तक्षशिला की खुदाई से वहाँ नगर होने की पुष्टि हो जाती है। पालि ग्रन्थों से उत्तर-भारत में लगभग 60 नगरों का जिक्र मिलता है। इनमें 6 को महानगर का दर्जा प्राप्त हुआ।

इतिहास लेखन का मुद्दा और द्वितीय नगरीकरण

द्वितीय नगरीकरण में लोहे की भूमिका को लेकर दो प्रकार के मत देखने को मिलते है—

(1) एक तरफ D.D. कौशाम्बी और R.S. शर्मा जैसे विद्वानों ने द्वितीय नगरीकरण में लोहे की निर्णायक भूमिका स्वीकार की है। R.S. शर्मा के अनुसार— लोहा ताँबे की तुलना में न केवल अधिक ठोस धातु था बल्कि ताँबे की तुलना में बहुतायत में भी उपलब्ध था। फिर चूँकि इस काल में बेहतर तापमान विकसित किए जाने के कारण अच्छे किस्म के कृषि उपकरण बनाए जाने लगे और इन मध्य गंगा घाटी के घने जंगलों को काटकर आबाद करना आसान

लौह की भूमिका
पक्ष: D.D. कौशाम्बी, R.S. शर्मा
विपक्ष: D.K. चक्र., A घोष, R. [illegible]

KD Job Updates

हुआ चूँकि यह क्षेत्र चावल उत्पादन हेतु अधिक उपजाऊ था और बेहतर मात्रा में कृषि अधिशेष उत्पन्न किया गया इससे शिल्प एवं व्यापार तथा मुद्रा अर्थव्यवस्था को बल मिला फिर इन समस्तों का फल था द्वितीय नगरीकरण।

(२) D.K. चक्रवर्ती, B. और R. अल्चीन, A. घोष आदि ने इस विचार को चुनौती देते हुए कहा कि —

(1) अगर गौर से देखा जाए तो आरम्भिक नगर यथा श्रावस्ती, उज्जैन, काशी, वैशाली आदि राजनीतिक राजधानियाँ रहे थे। इसलिए वहाँ नगरीकरण का वास्तविक कारण राजनीतिक गतिविधियाँ थी। दूसरे

(2) दक्षिण में महापाषाणकाल के लोगों ने लोहे के उपकरणों का विकास किया परन्तु वे नगरीकरण की अवस्था तक नहीं पहुँच सके।

(3) नवीन शोधों में इटावा के पास जखेरा और लखनऊ के पास दादूपुर से प्राप्त साक्ष्य के आधार पर यह दर्शाया गया है कि लोहे के उपकरणों के प्रयोग का आरम्भ पिछले लगभग 1600 ई॰पू॰ तक चला जाता है तो फिर नगरों के विकास में 1000 वर्षों का विलम्ब क्यों?

वैसे भी अगर गौर से देखा जाए तो फिर हमें यह ज्ञात होता है कि महज प्रौद्योगिकी

KD Job Updates

अपने आप में इतना बड़ा परिणाम नहीं ला सकता बल्कि विशिष्ट राजनीतिक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में ही तकनीकी अपेक्षाकृत परिणाम पैदा कर पाता। उदाहरण हेतु 19वीं सदी के ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति को ही महज तकनीकी की उपलब्धि के रूप में नहीं देखा जा सकता इसलिए लौह प्रौद्योगिकी के प्रयोग को अन्य राजनीतिक सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से जोड़कर देखने की जरूरत है तभी हम द्वितीय नगरीकरण के विकास को समझ पाते।

[M.Q.] बुद्धकालीन अर्थव्यवस्था को प्रेरित करने वाले कारकों पर प्रकाश डालिए।

[M.Q.] क्या महाजनपद काल में नगरों के उद्भव को लौह प्रौद्योगिकी का परिणाम मानते है?

[M.Q.] 6ठी सदी ई.पू. में द्वितीय नगरीकरण को प्रेरित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।

M.Q. –
Ans –
1. लौह प्रौद्योगिकी
2. उ० पश्चिम से नवीन जनसंख्या और तकनीकी का आगमन
3. इस काल में बड़े-बड़े राज्य एवं मगध सामाज्य जैसे एक बड़े साम्राज्य के द्वारा अर्थव्यवस्था को संरक्षण।
4. N-W के क्षेत्र को ईरानी सामाज्य, यूनानी साम्राज्य के माध्यम से एक व्यापक व्यापारिक मार्ग से जुड़ जाना।

KD Job Updates

⑤ बौद्ध एवं जैन पंथों के द्वारा अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन

Source
Source change
17/11/2018

(D) बुद्ध कालीन समाज

बुद्ध समाज में ब्राह्मण
⇓
सर्वाधिक संख्या - ब्राह्मणों की रही।

आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तनों के अनुकूल सामाजिक ढाँचे में भी परिवर्तन आता गया। इस काल में सामाजिक क्षेत्र में निम्न विशेषताएँ उभर कर आयी —

(1) कृषि एवं व्यापारिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप नए सामाजिक समूह उभरकर आये यथा गृहपति (संस्कृत) (गहपति) (पालि) तथा श्रेष्ठी (सेट्टी)। गृहपति बड़े पितृसत्तात्मक परिवार के मुखिया थे और इनके पास बड़ी भूमि संपदा होती। उसी प्रकार बड़े व्यापारी और वित्त प्रबन्धक श्रेष्ठी के रूप में स्थापित हुए।

(2) नए सामाजिक समूहों के उद्भव का अर्थ यह नहीं है कि सजातीयता की भावना कमजोर हुयी अपितु रक्तसंबंध की अवधारणा भी मजबूत हुयी। इस काल में वर्ण विभाजन का आधार जन्म हो गया। यह वह काल था जब सूत्र साहित्य की रचना हुयी तथा गौतम, बौधायन, वशिष्ठ एवं आपस्तम्ब जैसे सूत्रकारों ने वर्ण विभाजन के आधार को कठोर बना दिया। (सूत्र साहित्य में इन सूत्रकारों के द्वारा, कल्प सूत्र के एक भाग धर्मसूत्र जिसमें सामाजिक नियम वर्णित थे, पर लिखा गया यह गद्य + पद्य मिश्रित था)

श्रुति साहित्य
ईश्वर ने कहा
⇓
ऋषियों ने सुना और लिखा

स्मृति साहित्य
ईश्वर ने कहा
⇓
किसी ने सुना
⇓
किसी को सुनाया
⇓
अगले ने लिखा
ज्यादा महत्व रही

(3) वर्ण विभाजन को कठोर बनाने का एक दूसरा परिणाम भी सामने आया कि अब वर्ण-नियमों का उल्लंघन शुरू हुआ प्रायः दो कारणों से उल्लंघन होता था - प्रथम विवाह के लिए, दूसरे पेशे के आधार पर नियमानुसार निम्न वर्ग के पुरुष उच्च वर्ग की महिलाओं से विवाह नहीं कर सकते थे और न ही निम्न वर्ग के लोग उच्च वर्ग के लोगों के पेशे को अपना सकते थे। उल्लंघन करने वाले वर्णसंकर की स्थिति में आ गए फिर आगे वर्ण संकर समूह जाति के रूप में विकसित होते चले गए।

(4) महिलाओं की सामाजिक दशा में तुलनात्मक रूप में गिरावट आयी इसका कारण हो सकता है उत्पादन में महिलाओं की सीमित हो रही भागीदारी। अब महिलाओं को पुरुषों के आधीन कर दिया गया तथा संभवतः इस काल में दहेज प्रथा की शुरुआत हुयी उदाहरण हेतु हमें यह ज्ञात होता है कि मगध के शासक बिम्बसार को कोशल राज्य से दहेज के रूप में काशी का क्षेत्र प्राप्त हुआ था।

(5) इस काल में नगरीकरण का आरम्भ हुआ फिर नगरीकरण की जरूरत के अनुसार कुछ नवीन पेशों का विकास हुआ किंतु इस पेशों से जुड़े हुए लोगों की सामाजिक स्थिति में गिरावट देखी गयी। उदाहरण हेतु बौद्ध ग्रंथ में हीनसिप्प (निम्न पेशे से जुड़े लोग) की चर्चा की गई है तथा इनके

KD Job Updates

इनके अन्तर्गत वेण, रथकार, चांडाल, निषाद एवं पुक्कुस का विवरण दिया गया है।

(E) बुद्ध कालीन धार्मिक स्थिति

(i) वैचारिक विकास के रूप में धार्मिक पंथों का उद्भव →

धर्म को एक वैचारिक विकास के रूप में भी देखने की जरूरत है वैदिक ग्रन्थों में प्रार्थना और यज्ञ का विवरण मिलता है परन्तु ब्राह्मण ग्रन्थों में धर्म का अनुष्ठानिक स्वरूप उभर कर आता है तथा इनमें यज्ञ की पद्धति के साथ मंत्रों उच्चारण और पशुबलि को विशेष महत्व प्राप्त हुआ आगे अरण्यक कर्मकाण्ड की पद्धति से हट जाता है और रहस्यवादी ज्ञान पर बल देता है जो जंगल में तप के आधार पर प्राप्त किया जा सकता था इसका आगे का विकास उपनिषद के चिंतन के रूप में देखने को मिलता है। उपनिषद ने यज्ञ को अस्वीकार कर दिया तथा ज्ञान एवं आत्मा और ब्रह्म के संबंधों पर बल दिया। पहली बार उपनिषद में ही कर्म पुनर्जन्म एवं मोक्ष की अवधारणा उभरकर आयी आगे बौद्ध जैन एवं अन्य पंथ भी उपनिषद के इस विद्रोह की परंपरा से जुड़ गया। इन धार्मिक पंथों के द्वारा भी कर्म, पुनर्जन्म और मुक्ति जैसी अवधारणा को भी स्वीकार किया गया।

KD Job Updates

(2) आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के आधार पर धर्म के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या—

ऋग्वैदिक धर्म का स्वरूप अपेक्षाकृत सादा और आडम्बर मुक्त रहा था। इसका संबंध तात्कालिक आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक कारक से भी जोड़ा जा सकता है। ऋग्वैदिक कालीन अर्थव्यवस्था एक निर्वाह अर्थव्यवस्था थी और समाज भी अपेक्षाकृत समतामूलक समाज था परन्तु उत्तर वैदिक काल तक अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व बढ़ गया इसलिए अधिशेष उत्पादन की स्थिति उत्पन्न हुयी इसने समकालीन समाज और धर्म पर भी अपना प्रभाव छोड़ा अधिशेष उत्पादन पर कब्जा करने के लिए एक प्रभावी वर्ग के रूप में ब्राह्मणों का उद्भव हुआ। ब्राह्मणों ने अपनी सामाजिक स्थिति को मजबूत करने के लिए यज्ञ में मंत्रोउच्चारण और पशु-बलि के महत्व को बढ़ा दिया। इस कारण धर्म भी अनुष्ठानिक होता चला गया।

आगे 6ठी सदी ईसापूर्व तक एक बार फिर स्थिति में परिवर्तन आया कर्मकाण्ड प्रधान वैदिक धर्म तात्कालिक सामाजिक, आर्थिक आवश्यकता के अनुकूल नहीं रह गया अतः इस काल में वैदिक कर्मकाण्ड के विरूद्ध प्रतिक्रिया देखने को मिली इसे निम्न रूप में समझने की जरूरत है—

KD Job Updates

(i) आर्थिक कारक —

ⓐ मध्य दोआब क्षेत्र में कृषि अर्थव्यवस्था में प्रसार के साथ पशुधन की सुरक्षा की जरूरत पड़ी वहीं वैदिक यज्ञ में बड़ी संख्या में पशुओं को आहुति दी जा रही थी।

ⓑ बढ़ते हुए वाणिज्य व्यापार के साथ मुनाफाखोरी और महाजनी आवश्यक हो गयी थी वहीं वैदिक धर्म के द्वारा उसकी आलोचना की जा रही थी।

(ii) सामाजिक कारक —

ⓐ ब्राह्मणों के बढ़ते हुए महत्व के कारण कहीं न कहीं क्षत्रिय वर्ण में भी असंतोष उत्पन्न हो रहा था। इसलिए अब क्षत्रिय भी ब्राह्मणों की बौद्धिक श्रेष्ठता को चुनौती देने के लिए आगे आए यह महज सहयोग नहीं था अधिकांश उपनिषद विदेह माधव की भूमि पर संकलित हुये जो एक क्षत्रिय थे और इन्हें दार्शनिक राजा कहा जाता था। उसी प्रकार बौद्ध, जैन और अन्य विरोधी पंथों के संस्थापक क्षत्रिय वर्ण से ही आये थे।

ⓑ वैश्य समाज के एक मात्र उत्पादक और कर दाता थे परन्तु उनकी स्थिति समाज में तीसरे दर्जे पर थी इसलिए उन्हें भी अपनी स्थिति से असंतोष था।

ⓒ कर्म एवं पुनर्जन्म की अवधारणा — बढ़ती हुयी

सामाजिक एवं आर्थिक विषमता के युग में कर एवं पुनर्जन्म की अवधारणा समाज को स्थायित्व लाने के लिए लायी गयी थी अर्थात लोगों के असंतोष को कम करने के लिए आर्थिक

सामाजिक विषमता को पिछड़े जन्म के कर्म से जोड़ दिया गया।

मॉडल प्रश्न

(1) बौद्ध धर्म के उद्भव के आर्थिक, सामाजिक आधार का विश्लेषण कीजिए।

(2) 6ठी – 4थी ई०पू० के मध्य विरोधी धार्मिक पंथों का उद्भव कहाँ तक तात्कालिक आर्थिक कारक से प्रेरित था?

धर्म
↓
ऋग्वैदिक — सादा एवं आडम्बर मुक्त
↓
उत्तर वैदिक — कर्मकाण्ड प्रधान
↓
(प्रतिक्रिया)
↑
उपनिषद् बौद्ध पंथ जैन पंथ व भौतिकतावादी चिंतन

महाजनपद कालीन धर्म की विशेषताएँ —

(1) कर्मकाण्ड प्रधान वैदिक धर्म के विरुद्ध प्रतिक्रिया

(2) धार्मिक पंथों की बहुलता ⇒ बौद्ध ग्रन्थ के अनुसार कुल 62 धार्मिक संप्रदाय वहीं जैन ग्रन्थ के अनुसार कुल 363 धार्मिक संप्रदाय।

KD Job Updates

(3) सन्यास जीवन की प्रधानता — इस काल में श्रमण-संस्कृति को प्रोत्साहन मिला, दूसरे शब्दों में विभिन्न धार्मिक पंथों से उत्पन्न हुए घुमक्कड़ साधु प्रकट हुए इन्होंने गृहस्थजीवन की जगह सन्यास जीवन को अपनाया।

(4) कर्म, पुनर्जन्म एवं मोक्ष की अवधारणा का बढ़ता हुआ महत्व तथा अधिकांश धार्मिक पंथों द्वारा इन अवधारणाओं को अपनाया जाना।

एकाधिकैक्य

इरफान हबीब

बौद्ध धर्म विश्व धर्म बन गया

– दुःख
– बीमारी
– बुढ़ापा
→ मृत्यु

18/11/2018

प्रमुख धार्मिक पंथों के चिंतन एवं दृष्टिकोण ⇒

(1) <u>उपनिषद</u> —

उपनिषद वैदिक चिंतन के चरम विकास को दर्शाता है। वेदों से लेकर उपनिषद तक वैदिक धर्म-दर्शन का क्रमिक विकास देखा जा सकता है। जैसा कि हम देखते है कि वैदिक धर्म अपने स्वरूप में बहुदेववादी था परन्तु ऋग्वेद के काल में सर्वप्रथम हमें एकेश्वरवाद का तत्व दिखने मिलता है जब ऋग्वेद में अग्नि वाले सुक्त में यह प्रश्न उठाया जाता है कि 'अग्नि एक है अथवा अनेक .....।'

इसी प्रकार ऋग्वैदिक कालीन धर्म उत्तर वैदिक काल में आकर और ब्राह्मण ग्रन्थों से समर्थन पा कर आनुष्ठानिक अथवा कर्मकाण्ड प्रधान हो गया था परन्तु यज्ञ पर आधारित वैदिक धर्म के विरूद्ध पहली प्रतिक्रिया अरण्यक ग्रन्थों में देखने को मिलती है जब अरण्यक यज्ञ की पद्धति से अलग हटकर 'तप' के महत्व पर बल देने लगता है उसके अनुसार वेदों का गूढ ज्ञान जंगल में रहकर एकांत में ही प्राप्त किया जा सकता है

KD Job Updates

इसका आगे का विकास हमें उपनिषद के चिंतन के रूप में देखने को मिलता है। उपनिषद ने यज्ञ को अस्वीकार कर दिया और यज्ञ की तुलना फूटे हुए नाव से की जिसके सहारे भवसागर पार नहीं किया जा सकता बदले में उसने 'ज्ञान' के महत्व पर बल दिया और घोषित किया कि ब्रह्म एवं आत्मा के बीच संबंधों के ज्ञान से ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। पहलीबार उपनिषद में पुनर्जन्म, कर्म और मोक्ष की अवधारणा उभर कर आयी चूँकि उपनिषद वैदिक चिंतन का निष्कर्ष प्रस्तुत करता है इसलिए इसे वेदांग के नाम से जाना गया। (पुनर्जन्म का कारण कर्म है परन्तु जिस दिन आत्मा को यह ज्ञान प्राप्त हो जाएगा वह सर्वोच्च आत्मा (ब्रह्म) का अंश है उस दिन कर्म स्वयं समाप्त हो जाएगा और पुनर्जन्म रूक जाएगा। इसी को मोक्ष का नाम दिया जाएगा)

पारलौकिकता का पहलीबार चिंतन उपनिषद में आया।

प्रासंगिकता —

उपनिषद का चिंतन भारतीय दर्शन का प्राण तत्व बन गया तथा विभिन्न दार्शनिक स्कूलों ने इसका उपयोग किया। अलग-अलग युग में इसका अलग-अलग उपयोग होता रहा उदाहरण के लिए जहाँ शंकराचार्य ने इसका उपयोग ब्राह्मण धर्म को पुनर्स्थापित करने के लिए किया वहीं राजा राममोहन राय से लेकर स्वामीविवेकानन्द तक 19वीं सदी के

विभिन्न सुधारकों ने धार्मिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए उपनिषद के विचार का उपयोग किया। इसके आधुनिक महत्व को उद्घाटित करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने ब्रह्म और आत्मा के बीच संबंधों को आधार बनाकर वैश्विक एकता की बात की।

उपनिषद, बौद्ध चिंतन तथा जैन चिंतन के बीच समानता के विरुद्ध बिन्दु ⇒

(1) तीनों का बल सन्यास अथवा श्रमण संस्कृति पर रहा था।
(2) तीनों कर्म, पुनर्जन्म और मुक्ति की अवधारणा को स्वीकार करता है।
(3) तीनों का सम्बन्ध तात्कालिक सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों से रहा है अर्थात् बौद्ध एवं उपनिषद कृषि अर्थव्यवस्था को विशेष प्रोत्साहन देता है तो जैन एवं बौद्ध चिंतन व्यापार को भी विशेष प्रोत्साहन देता है।

इसी प्रकार उपर्युक्त तीनों में कहीं न कहीं ब्राह्मणवादी श्रेष्ठता के विरुद्ध क्षत्रियों की प्रतिक्रिया व्यक्त हुयी है।

असमानता के बिंदु

(1) जहाँ उपनिषद के चिंतन का दृष्टिकोण सुधारवादी था वहीं बौद्ध एवं जैन चिंतन का दृष्टिकोण मूल परिवर्तनवादी। दूसरे शब्दों में उपनिषद वैदिक धर्म मे सुधार लाकर उसे अधिक मजबूत बनाना चाहता था वहीं बौद्ध एवं जैन पंथ ने वैदिक धर्म को ही अस्वीकार कर दिया।

KD Job Updates

(४) उपनिषद सर्वोच्च आत्मा की अवधारणा पर बल देता उसके अनुसार सम्पूर्ण एक ही आत्मा सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है वहीं जैन पंथ अनेक आत्माओं की परिकल्पना करता उसके न केवल जीव-जन्तु एवं पेड़-पौधों में आत्मा है बल्कि निर्जीव कहे जाने वाली वस्तुओं यथा पहाड़, नदी, समुद्र -सभी में आत्मा विद्यमान है दूसरी तरफ बौद्ध पंथ ने आत्मा के अस्तित्व को ही नकार दिया।

उपनिषद ने मुक्ति को 'मोक्ष', बौद्ध पंथ ने "निर्वाण" और जैन पंथ ने 'कैवल्य' का नाम दिया परन्तु तीनों का तरीका अलग-अलग था। उपनिषद मोक्ष के लिए ज्ञान, बौद्ध पंथ निर्वाण के लिए अष्टांगिक मार्ग और जैन पंथ कैवल्य के लिए कायाक्लेश पर बल दिया। उपनिषद तथा बौद्ध पंथ ने क्रमशः मोक्ष और निर्वाण का दरवाजा सभी के लिए खोल दिया था परन्तु जैन-पंथ ने कैवल्य का दरवाजा केवल भिक्षुकों के लिए खोला गृहस्थों के लिए नहीं। इसीप्रकार मोक्ष एवं निर्वाण शरीर में रहते हुए प्राप्त किया जा सकता परन्तु कैवल्य हेतु शरीर त्याग करना पड़ता।

जैन चिंतन इस सु'

KD Job Updates

(२) जैन चिंतक —

जैन चिंतक इस सृष्टि को शाश्वत मानता है अर्थात् यह आदि काल से आरम्भ और अनंतकाल तक चलता रहेगा (जैनियों की यह धारणा ब्राह्मण पंथ और बौद्ध पंथ की धारणा से बिल्कुल विपरीत थी क्योंकि ब्राह्मण पँथ के अनुसार प्रत्येक मनुवंतर पर इस सृष्टि का विनाश होता और एक नए मनु पैदा होते। वहीं बौद्ध पंथ के अनुसार प्रत्येक क्षण यह संसार बदलता है) परंतु जैनियों के अनुसार उत्थान एवं पतन का काल आता रहता है उत्थान के काल को उत्सर्पिणी और पतन के काल को अवसरपीणी कहा गया। इसके अनुसार 63 शलाका पुरूष (महान पुरूष) पैदा होते इनमें 24 तीर्थांकर और 12 चक्रवर्ती शासक होते है। वहीं पतन के काल में मानव का आकार अत्यधिक छोटा हो जाता है।

जैनियों के अनुसार जीव और अजीव के सहयोग से इस सृष्टि का संचालन होता है। जीव की श्रेणी में आता है आत्मा वहीं अजीव की श्रेणी में ~~अ~~ है धर्म (गति), अधर्म (अगति), आकाश, अंतरिक्ष, काल तथा पुद्गल (कर्म)।

जैन चिंतन का अर्थ है आत्मा को पुद्गल से मुक्त करना इसी को कैवल्य का नाम दिया गया। आत्मा अथवा जीव की मुक्ति के लिए दो प्रक्रियाओं पर बल दिया गया ~~प्रथ~~ प्रथम जीव में पुद्गल के प्रवेश को रोकना, इस प्रक्रिया को संवर कहा गया और दूसरे जीव में पुद्गल का

स्यादवाद
⇓
सत्य के अलग-अलग अवस्थायें है (७ 7 प्रकार)

जो प्रवेश हो चुका है उसे समाप्त करना इसे निर्जरा कहा गया। यहीं कायाक्लेश पर विशेष बल दिया गया क्योंकि जैनियों के अनुसार पुद्गल को समाप्त करने का वही बेहतर तरीका था।

जैन पंथ में पाँच महाव्रत अथवा अनुव्रत की अवधारणा लायी गयी है सबसे बढ़कर जैनियों ने स्यावाद अथवा अनेकांतवाद का चिंतन प्रतिपादित किया इनके अनुसार सत्य एक ही साथ एक है अथवा एक से अधिक है, स्थिर है अथवा परिवर्तनशील है इसलिए लोगों को सोच समझकर वक्तव्य देना चाहिए क्योंकि उसके विपरीत भी मत हो सकता है। जैनियों के स्याद्वाद की वर्तमान में भी प्रासंगिकता है क्योंकि इसने गांधी की अहिंसावाद को भी प्रेरित किया।

(3) **बौद्ध चिंतन :-**

बौद्धों ने इस संसार के विषय में निम्न प्रमुख अवधारणाएँ दी है —

(a) **यह संसार दुःखमय है** → यहीं से बौद्धों का 4 आर्य सत्य निकलता है यथा (i) दुःख है (ii) दुःख का कारण है (iii) दुःख का निदान है (iv) दुःख के निदान का उपाय है। फिर दुःख के निदान के रूप में अष्टांगिक मार्ग की अवधारणा दी गयी इसे मध्यम मार्ग के नाम से

KD Job Updates

भी जाना जाता है।

(b) <u>यह संसार क्षणिक है</u> → यहीं से बौद्धों का क्षण भंगवाद का चिंतन निकलकर आता है इसके अनुसार यह संसार प्रत्येक क्षण बदलता है।

(c) <u>यह संसार आत्माविहीन है</u> → यहाँ से बौद्धों के नैरात्मवाद का चिंतन निकलकर आता है। एक तरफ बौद्धों ने कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा को स्वीकार किया वहीं उसने आत्मा के अस्तित्व को नकार दिया अतः यह प्रश्न उपस्थित होता है कि अगर आत्मा का अस्तित्व नहीं है तो पुनर्जन्म कैसे?

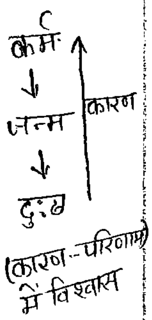

बौद्धों ने इसकी व्याख्या प्रत्युतसमुत्पाद नामक चिंतन के माध्यम से देने का प्रयास किया अर्थात इसकी व्याख्या कार्य-कारण पद्धति के आधार पर खोजा जाने लगा उदाहरण हेतु जिस प्रकार दुःख का कारण जन्म है उसी प्रकार जन्म का कारण कर्म फल रूपी चक्र है दूसरे शब्दों में एक जन से दूसरे जन में आत्मा नहीं जाती बल्कि कर्म जाता है एक दीपक के उदाहरण से इसे स्पष्ट किया जा सकता है अर्थात एक दीपक बुझते हुए भी दूसरे दीपक को जला देता है पहला दीपक दूसरे दीपक का कारण था और दूसरा दीपक पहले दीपक का परिणाम। इस प्रकार दूसरा दीपक पहले दीपक का पुनर्जन्म है।

KD Job Updates

प्रश्न – सामाजिक ~~धार्मिक~~ धर्मों के
श्रमणिक धर्मों की संकल्पना के मूल के विशेष

Q: श्रमणिक धर्मों की संकल्पना के मूल, बौद्ध-धर्म के विशेष संदर्भ में, उपनिषदीय विचारों में थे।
दोनों पक्ष > (discuss) विवेचना कीजिए (UPSC 2018)
or
एक पक्ष लेकर चलना – विश्लेषण कीजिए

Ans:-

6ठी सदी ई० पू० तथा इसके पश्चात् धार्मिक पंथों की बहुलता और विविधता एक सामान्य विशेषता रही है। जैन ग्रंथों में 363 धार्मिक सम्प्रदायों का जिक्र है इनमें बौद्ध एवं जैन पंथ अत्यधिक प्रभावी रहे। इस काल के धार्मिक पंथों की प्रमुख विशेषता रही थी सन्यास मार्ग अथवा श्रमणिक परंपरा पर विशेष बल दिया जाना। यह प्रक्रिया उपनिषद ने आरम्भ की परन्तु इसका प्रभाव अन्य धार्मिक पंथों पर भी देखा गया इसलिए ऐसा माना जाता है कि श्रमणिक धार्मिक पंथों विशेषकर बौद्ध पंथ का मूल उपनिषद के चिंतन में ही था। परन्तु एक दूसरे मत के अनुसार उपनिषद् एवं इन धार्मिक पंथों के बीच असमानता को रेखांकित करना भी कठिन नहीं है।

प्रथम पैराग्राफ → इसमें इन धार्मिक पंथों विशेषकर बौद्ध पंथ का उपनिषद के साथ समानता दिखाते हैं

दूसरा → इसमें उपनिषद के साथ उनकी असमानता दिखाती है

निष्कर्ष- इस प्रकार उपनिषद से प्रेरित होने के बाद भी इनका स्वरूप उपनिषद से अलग रहा।

⑧ उपनिषदों के सिद्धांत वैदिक चिंतन का निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं। विवेचन कीजिए (UPSC 2011)

Ans सामान्यतः उपनिषद के विचारों के मूल्यांकन के क्रम में दो भिन्न दृष्टिकोण देखे जा सकते हैं-

① प्रथम दृष्टिकोण के अनुसार यह वैदिक धर्म का स्वाभाविक विकास था।

② यह वैदिक धर्म से गुणात्मक परिवर्तन को दर्शाता है तथा विरोधी धार्मिक पंथों के लिए प्रेरणा बन जाता है इस विषय में किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व उपनिषद के विचारों का गहराई से परीक्षण आवश्यक है-

प्रथम पैराग्राफ → यह वैदिक धर्म के द्वारा प्रतिपादित एकेश्वरवाद के तत्व का स्वभाविक विकास था। - - -

दूसरा पैराग्राफ → दूसरी तरफ उपनिषद के कुछ विचार बौद्ध एवं जैन पंथ ~~के लिए~~ जैसे विरोधी पंथों के लिए प्रेरणा भी बन जाते हैं। —

निष्कर्ष → वस्तुतः उपनिषद को एक स्वभाविक विकास के रूप में देखे जाने की जरूरत है। यही वजह है कि बौद्ध और जैन पंथों के साथ कुछ समानता के बावजूद भी उपनिषद का दृष्टिकोण उनसे पृथक हो जाता है

KD Job Updates

19/11/2018

Q:- जैन धर्म दर्शन के महत्व तथा उनकी मानवता के सन्दर्भ में प्रासंगिकता का मूल्यांकन कीजिए। (UPSC 2011)

Ans:- Booklet 133

Q:-

धार्मिक पंथों

- उपनिषद
- बौद्ध धर्म
- जैनपंथ

→ पुनर्जन्म, कर्म, मोक्ष में विश्वास

- भौतिकतावादी चिंतक
- अजीत केस
- पकुद कात्यायन
- पूरन कश्यप
- मक्खली गोशाल
- संजय वेलिट्ठ पुत्र
- तथा आगे चार्वाक

→ नियतिवाद में विश्वास

* भौतिकतावादी चिंतन का महत्व -

(1) इन चिंतकों की दृष्टि इहलौकिक थी वे इस संसार और काया को महत्व देते थे उनका मानना था कि कर्म और पुनर्जन्म का अर्थ नहीं है। चार्वाक ने यह घोषित किया कि प्रत्यक्ष अनुभव ही ज्ञान का साधन है। मृत्यु ही जीवन का अंत है राजा ही देवता है अतः ऐसा माना जाता है कि अगर भौतिकतावादी चिंतन की यह धारा ने अगर प्रगति की होती तो भी प्राचीन काल में वैज्ञानिक चिंतन को विशेष प्रोत्साहन मिलता परन्तु भारत की भूमि पर * भौतिकतावादी चिंतन को विशेष प्रोत्साहन

KD Job Updates

नहीं मिला और फिर आगे प्रत्ययवाद (वह दर्शन जो भौतिक पदार्थ की जगह विचारधारा की सत्यता में विश्वास प्रकट करता है) में उसे दबा दिया।

Public Intellectual
↓
Romila Thapar

② रोमिला थापर ने हाल में लिखित अपनी एक पुस्तक Public Intellectuals में इस बात की ओर संकेत किया है कि प्राचीन काल से ही भारत में बुद्धि-जीवियों का एक ऐसा वर्ग आता रहा है जिसने अपने युग की कुरीतियों के विरूद्ध आवाज उठाई है ऐसा ही एक चिंतक था चार्वाक दूसरी तरफ अमर्त्यसेन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक अर्गुमेन्टेटिव इन्डियन्स में यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि प्राचीन काल में भी भारत में खुली बहस और तर्क-वितर्क की परंपरा थी।

सीमा –

दूसरी तरफ जैसा कि हम देखते है कि ये भौतिकतावादी चिंतक अपने दृष्टिकोण में नियतिवादी थे। उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मनुष्य का भविष्य निर्धारित है दूसरी तरफ कर्म, पुनर्जन्म की अवधारणा को अस्वीकार कर दिया किंतु जैसा कि हम देखते हैं कि कर्म, पुनर्जन्म की अवधारणा का संबंध तात्कालिक आर्थिक सामाजिक परिवर्तनों से रहा था इसलिए ये चिंतक युग के परिवर्तनों से कट गए और अंत में इतिहास के पन्नों में ही दबकर रह गए।

KD Job Updates

बौद्ध पंथ का सकारात्मक प्रभाव

① बौद्ध पंथ ने जाति व्यवस्था के प्रति लगभग असमझौतावादी रूख अपनाया इसने न केवल बौद्ध संघ का दरवाजा सभी पंथ वर्णों के लिए खोल दिया बल्कि बौद्ध साहित्य में चांडालों के प्रति भी सहानुभूति दिखाई गई है। जातक कथा में यह वर्णित है कि एक चांडाल मातंग ने शिक्षा और ज्ञान अर्जित कर ब्राह्मणों और कुलीनों को भी सिर झुकाने को विवश किया। बौद्ध पंथ की इसी विशिष्टता ने 1956 में डा॰ भीमराव अम्बेडकर को आकर्षित किया।

② बौद्ध पंथ बहुजन सुखाय और बहुजन हिताय से प्रेरित था।

③ महिलाओं के प्रति इसकी संवेदनशीलता का ज्वलंत उदाहरण है थेरी गाथा जैसे साहित्य का संकलन इसमें बौद्ध भिक्षुणियों ने गृहस्थ जीवन में अपने शोषण एवं उत्पीड़न का खुलासा किया है इसलिए महिला संवेदना की दृष्टि से यह विश्व की प्राचीनतम कृति है।

④ बौद्ध पंथ की प्रमुख विशेषता है व्यापार + नगरीय संस्कृति से इसका जुड़ाव। चैत्य एवं बिहार जैसे महत्वपूर्ण बौद्ध स्थापत्य प्राचीन

नगरों एवं व्यापारिक मार्गों पर स्थापित देखे जा सकते थे। जिन व्यापारिक मार्गों से व्यापारी जाते उन्हीं मार्गों से बौद्ध भिक्षु भी।

M.Q.

① एक सामाजिक सुधारक के रूप में महात्माबुद्ध के महत्व को उद्घाटित कीजिए। (केवल ~~सक~~ सकारात्मक पक्ष)

② क्या आप महात्मा बुद्ध को एक रेडिकल सामाजिक सुधारक मानते है?

③ महात्मा बुद्ध को एक क्रांतिकारी, समाज सुधारक मानना कहाँ तक उचित है?

④ एक सामाजिक सुधारक के रूप में महात्माबुद्ध की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

⑤ बौद्ध धर्म की लोकप्रियता का एक महत्वपूर्ण कारण था उसका प्रगतिशील सामाजिक दृष्टिकोण। इस कथन की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

महाजनपद कालीन साहित्य —

- **संस्कृत**
  - 6 वेदांग
    - शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष, व्याकरण एवं छंद।
    - कल्प → गृह सूत्र, धर्म सूत्र, श्रौत सूत्र
- **पालि / प्राकृत**
  - बौद्ध ग्रन्थ — त्रिपिटक (सुत्त एवं संघ के नियम - विनयपिटक) (बुद्ध की शिक्षा)
    - सुत्तपिटक में 5 निकाय ⇒ दिघ, मंझिम, संयुक्त, अंगुत्तर, खुद्दक (जातक कथा इसी से संबंधित है)
  - जैन ग्रन्थ — 14 पर्व

KD Job Updates

मौर्य काल
(400 – 200 BC)

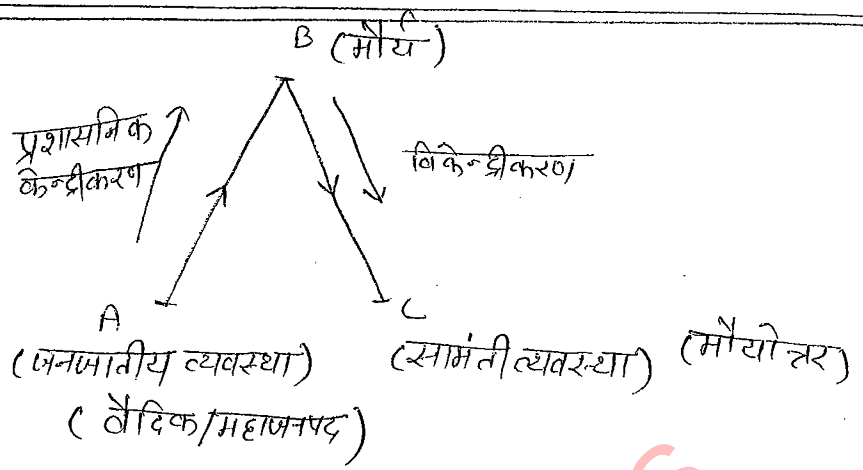

अध्ययन के स्रोत

पूर्व काल में की तुलना में इस काल में अध्ययन स्रोतों की बहुलता देखने को मिलती है। पुरातात्विक साक्ष्य के रूप में, मौर्य राज प्रसाद के खण्डहर, उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भाण्ड स्थल (NBPW), अशोक के स्तम्भ, यक्ष यक्षिणी की मूर्तियाँ (देवताओं के सेवक), आहत सिक्के आदि मिलते हैं इसी प्रकार साहित्यिक साक्ष्य के रूप में कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मेगास्थनीज के द्वारा लिखित इण्डिका तथा बौद्ध एवं जैन ग्रन्थ आदि मौजूद है।

फिर भी मौर्यकाल के अध्ययन के लिए तीन प्रमुख स्रोत माने जाते है यथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र, मेगास्थनीज की इण्डिका, अशोक के अभिलेख।

KD Job Updates

① कौटिल्य का अर्थशास्त्र —

यह कृति 1905 में प्रकाश में आयी। यह 15 अधिकरणों में विभाजित है; 8 अधिकरण विदेशनीति पर, 5 अधिकरण आंतरिक नीति पर और 2 अधिकरण मिश्रित नीति पर।

अध्ययन स्रोत के रूप में योगदान —

(1) केन्द्रीय प्रशासन, प्रांतीय प्रशासन, स्थानीय प्रशासन सब पर विस्तार से चर्चा, नगर प्रशासन एवं न्याय प्रशासन का भी विवरण।

(2) समकालीन अर्थव्यवस्था तथा उसमें राज्य की भूमिका पर विशेष चर्चा कृषि अर्थव्यवस्था शिल्प उद्योग व्यापार और नगरीकरण का विवरण प्रदान करता। भारतीय परंपरा में आइने अकबरी को छोड़कर शायद ही कोई दूसरी कृति है जो अर्थव्यवस्था पर इतना प्रकाश डालती।

(3) वर्ण एवं जाति व्यवस्था, महिलाओं, शूद्रों एवं अन्य जातियों का विवरण यह समकालीन धार्मिक पंथों पर भी प्रकाश डालता।

सीमाएँ —

अध्ययन स्रोत के रूप में इसकी निम्न सीमाएँ हैं —

(1) यह किसी एक काल की कृति नहीं है बल्कि इसका कुछ अंश पूर्व मौर्यकाल का, एक बड़ा अंश मौर्यकाल का और कुछ अंश मौर्योत्तर काल का भी।

(2) इसमें किसी मौर्य शासक का विवरण नहीं मिलता। इसलिए भी इसकी प्रामाणिकता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता।

KD Job Updates

③ कौटिल्य एक विजीगिषु राज्य (वह राज्य जो भविष्य में विजय करने वाला है) के विषय में लिखता है इसलिए इसका विवरण ~~यथार्थ~~ यथार्थवादी न होकर आदर्शवादी बन जाता है।

21/11/2018

अर्थशास्त्र एक यर्थाथवादी कृति व भारत की विदेश नीति का एजेन्डा ⇒

अर्थशास्त्र को निम्न आधार पर यथार्थवादी कृति मानी जा सकती है —

इसने एरियन में एक नवाचार लाया जहाँ भारत की प्राचीन परंपरा में धर्म को सर्वोत्तम स्थान दिया गया वहीं कौटिल्य ने अर्थ की बात की वह उसे सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना।

जहाँ धर्मशास्त्र के लेखकों ने राजा से अपेक्षा की कि उसका मुख्य कार्य धर्मशास्त्र के नियमों का पालन करवाना था वहीं अर्थशास्त्र का बल राज्य का विस्तार या उसकी मजबूती पर रहा था।

अर्थशास्त्र की इसी यथार्थवादी दृष्टि ने पाश्चात्य चिंतकों की इस धारणा को खंडित कर दिया कि भारतीय केवल धर्म व अध्यात्म में ही डूबे रहे थे।

विदेश नीति —

अर्थशास्त्र ने विदेश नीति में एक यर्थाथवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए राजमण्डल व्यवस्था पर बल दिया इसके तहत उसने राज्यों को मित्र राज्य एवं शत्रु राज्यों के बीच बाँटा एवं शत्रु एवं मित्र राज्यों के बीच संतुलन की बात की। अतः एक दृष्टि से देखा जाए तो यूरोप में शक्ति संतुलन की अवधारणा 17 वीं सदी में उभरकर आयी थी परन्तु कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वह 4थी सदी ई० पू० में ही दिखती है।

KD Job Updates

(२) मेगास्थनीज की इण्डिका ⇒

फ्लिनी, स्ट्रेबो, एरियन, जस्टिन ने इण्डिका का पुनर्लेखन।
But विचारों में विरोधाभास।

इण्डिका →

हेरोडोटस ने AFG को 7 भागों में बाँटा था।
मेगास्थनीज ने IND को 7 भाग ———।

मेगास्थनीज 4थी BC में चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में सेल्यूकस के राजदूत के रूप में रहा था। उसने भारत के भूगोल, जलवायु, प्रकृति, लोग एवं पशु-पक्षी का अवलोकन किया।

विवरण के प्रमुख अंश →

① राजा कर्मठ होता और राजकीय कार्य के लिए हमेशा प्रस्तुत होता।

② उसने नगर प्रशासन की चर्चा करते हुए नगरकमिश्नर के रूप में एरिस्टोनोमोई नामक अधिकारी का विवरण दिया है। उसके अनुसार पाटलिपुत्र नगर का प्रशासन 6 समितियों द्वारा।

③ उसने एग्रोनोमोई नामक एक अधिकारी का विवरण दिया है, उसके अनुसार यह अधिकारी मार्ग निर्माण एवं सिंचाई के विकास से संबंधित।

④ उसने अधिकारियों के एक वर्ग के रूप में निरीक्षक एवं गुप्तचर की चर्चा की है।

KD Job Updates

(5) उसने भारतीय समाज को 7 जातियों में बाँट कर देखा है।

समकालीन लेखन के रूप में मेगास्थनीज की इण्डिका को महत्व दिया जाना चाहिए।

सीमायें :-

यूनानी लेखक → सिकन्दर के साथ भारत आए —
एनासिक्रीटिस, एरिस्टोबुलस

(1) इण्डिका की मूल प्रति उपलब्ध नहीं है अपितु उसके बारे में हमें ज्ञान परवर्ती काल के लेखकों यथा एरियन (इण्डिका) स्ट्रैबो, डायोडोरस, प्लिनी आदि के विवरण से प्राप्त होता है।

(2) मेगास्थनीज मुख्यतः सेल्युकस के साम्राज्य पर अपनी दृष्टि रखता है तथा जैसा कि रोमिला थापर का मानना है कि पश्चिम एशिया के विषय में जो उसकी समझ है उसका उपयोग वह भारत के विवरण में कर देता है।

(3) उसके लेखन में कई अयथार्थ बातें यथा भारत में अकाल नहीं पड़ते थे, भारत में दास व्यवस्था नहीं थी तथा, भारतीयों को लेखन का ज्ञान नहीं था, भारत में कर अपवंचकों को मृत्युदण्ड दिया जाता था आदि।

मेगास्थनीज (4) ↑ इण्डिका ↓ एरियन (2nd)

(3) अशोक के अभिलेख =

मौर्यकाल के अध्ययन में प्रचलित अभिलेख —

(1) अशोक से पूर्व के अभिलेख —

(सहगौरा, महास्थाना)

अशोक से पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य के अभिलेख के रूप में सहगौरा और महास्थाना के अभिलेख का विवरण मिलता है। सहगौरा गोरखपुर के पास और महास्थाना बंगाल में। ... से ताम्रपत्र मिला है।

KD Job Updates

⑥ अशोक के अभिलेख :-

अशोक के अभिलेख का निम्नलिखित समूह में विभाजन ⟶

(i) 14 वृहद शिलालेख — 14 आदेश
— 9 स्थानों से मिला है ex - धौली (Odisha) मानसेहरा, शाहबाजगढ़ी, कल्सी (देहरादून) etc.

लघु शिलालेख — 21 स्थानों से प्राप्त

प्रस्तर अभिलेख — पत्थर पर खुदे

स्तम्भ अभिलेख — स्तम्भ पर खुदे

इसका अर्थ है 14 आदेश जो (पत्थरों) पर खुदे मिले है और कुल 9 स्थानों से मिले है ये है — शाहबाजगढ़ी, मनसेहरा, कल्सी, गिरनार (GuJ), सोपारा (MH), सन्नाती (KT) एर्रगुड्डी (AP), धौली + जौगा (odisha)।

प्रथम अतिरिक्त अभिलेख — (धौली) → सारी प्रजा हमारी संतान है
⇓
13 आदेश के स्थान पर (कलिंग)

महत्वपूर्ण आदेश :- (Book Let)

KD Job Updates

प्रथम अतिरिक्त अभिलेख (धौली) — यह कलिंग में स्थित था और सम्भवतः अशोक कलिंग के लोगों को युद्ध की स्मृति ताजा नहीं करना चाहता था इसलिए उसने वहाँ आदेश संख्या 13 को हटाकर एक नया आदेश डाल दिया कि 'सारी प्रजा मेरी संतान है'।

(जौगढ़) — यह भी उड़ीसा में स्थित था इसलिये यहाँ भी आदेश नम्बर 13 छोड़ दिया गया और उसकी जगह एक नया आदेश डाला गया। जिसमें कहा गया सीमांत क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों में धम्म प्रसार की चिंता की गई।

(धम्म)→धर्म

(ii) लघु शिलालेख —

ये आदेश भी (पत्थरों) पर खुदे मिलते है ये विभिन्न स्थानों से मिले है परन्तु आदेश एक दूसरे से पृथक है। ये शिलालेख (काबुल), (कंधार), राजस्थान में (भाब्रू) मध्यभारत में (रूपनाथ), दिल्ली के (बहापुर) और दक्षिण भारत के विभिन्न स्थानों से मिले है।

7 स्तंभ अभिलेख —

अशोक के द्वारा राजकीय स्तम्भ निर्मित कराये गए और उनपर आदेश खुदवाये गए। सामान्यतः

KD Job Updates

स्तम्भ अभिलेख साम्राज्य के मुख्य क्षेत्रों में मिले है। सात स्तम्भ अभिलेख से आशय है - 7 आदेश जो पहले 6 स्थानों से मिले थे और अब सात स्थानों से मिलते है -

(1) दिल्ली - टोपरा → पहले टोपरा में था किन्तु फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली मँगाया।

(2) दिल्ली - मेरठ → पहले मेरठ में स्थापित परन्तु फिरोजशाह तुगलक द्वारा दिल्ली लाया जाना।

(3) लौरिया अरेराज → बिहार में स्थित।

(4) लौरिया नन्दनगढ़ → नेपाल में स्थित।

(5) रामपुरवा → नेपाल में स्थित

(6) कौशाम्बी - (इलाहाबाद) → पहले कौशाम्बी में स्थित परन्तु जहाँगीर ने उसे इलाहाबाद में स्थापित किया इस पर तीन शासको के आदेश यथा - अशोक अभिलेख समुद्रगुप्त, जहाँगीर।

(7) अमरावती → ये साम्राज्य की परिधि के बाह्य क्षेत्र से भी अभिलेख मिला है परन्तु ये भग्न अवस्था में है।

लघु स्तम्भ अभिलेख -

कई महत्वपूर्ण स्थलों से अशोक के स्तम्भ प्राप्त हुए है परन्तु उसके आदेश अलग - अलग है उदाहरण के लिए रूम्मिनदेई स्तम्भ अभिलेख से यह सूचना

KD Job Updates

प्राप्त कि अशोक ने अपने शासन के 20 वें वर्ष में लुम्बनी की यात्रा की थी तथा बुद्ध के सम्मान में वहाँ बलि की राशि माफ कर दी थी और भाग की राशि को कम कर उसे उत्पादन का 1/8 भाग कर दिया था। इसी प्रकार निगाली सागर स्तम्भ अभिलेख से यह सूचना प्राप्त कि अशोक ने अपने शासन के 14वें वर्ष में इस क्षेत्र की यात्रा की थी तथा वहाँ बुद्ध के एक अवतार कनकमुनि के सम्मान में स्तूप के आकार को दुगुना करवाया था। इसके अतिरिक्त सारनाथ, साँची एवं कुछ अन्य स्थानों से अशोक के स्तम्भ अभिलेख प्राप्त।

अशोक का बराबर गुफा अभिलेख —

गया में बराबर की पहाड़ियों में अशोक ने कुछ गुफायें खुदवाईं और आजीवक धर्म के अनुयायियों को दान में दी। यह तत्व अशोक के सर्वधर्म समभाव के भाव को दर्शाता है।

(c) अशोक के बाद के अभिलेख —

अशोक के पौत्र दशरथ के (नागार्जुनी अभिलेख से यह सूचना मिलती है कि मौर्यों ने आजीवकों को भी संरक्षण दिया।

एक शक शासक रूद्रदामन के गिरनार या जूनागढ़ अभिलेख से यह सूचना प्राप्त होती है कि मौर्यों का नियंत्रण गुजरात पर था। एक दिलचस्प तथ्य यह है कि अशोक के गिरनार अभिलेख से हमें मौर्य अधिकारियों की कोई सूचना नहीं मिलती जबकि रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि चन्द्र

पुष्यगुप्त
↓
सुदर्शन झील
(योनराज तुषास्क → नहर)

चन्द्रगुप्त के दरबार में पुष्यगुप्त नामक प्रशासक था जो सुदर्शन झील का निर्माण कराया था वहीं अशोक के काल में योनराज तुषास्क नामक अधिकारी था जिसने सुदर्शन झील से एक नहर निकलवाया था।

अशोक के अभिलेख से सूचना –

① लोक कल्याणकारी राज्य का स्वरूप

② राजा की कर्मठता – अधिकारी तब भी मिल सकते जब वह अपने व्यक्तिगत शयन कक्ष में हो (6th वृहद शिलालेख)

③ केन्द्रीय प्रशासन

④ युक्त रज्जुक एवं प्रादेशिक नामक अधिकारी (3सरा वृहद शिलालेख)

⑤ धम्म नीति तथा धम्म महामात्र नामक अधिकारी (4th वृहद शिला०)

⑥ नगर प्रशासन के लिए नगर व्यावहारिक नामक अधिकारी

⑦ बौद्धों के अतिरिक्त ब्राह्मणों और आजीवकों को भी अनुदान देना।

⑧ वृहद समूह के अभिलेखों से अशोक की राजकीय नीति / प्रशासकीय नीति पर प्रकाश पड़ता है जबकि छोटे समूह के अभिलेखों से अशोक के व्यक्तिगत धर्म की सूचना मिलती है।

सीमायें :–

① अशोक के कुछ अभिलेख अपने मूल स्थान से हटा दिए गए है। ऐसी स्थिति में कुछ गलतफहमियाँ स्थापित हो सकती है।

KD Job Updates

(२) इन अभिलेखों में राजकीय दृष्टिकोण व्यक्त होता है।

समाधान → विभिन्न अध्ययन स्रोतों द्वारा दी गयी सूचना को एक दूसरे से परिपुष्टि करके देखने की जरूरत है।

[अशोक के अभिलेख प्राकृत भाषा में तथा ब्राह्मीलिपि में उत्कीर्ण परन्तु उत्तर-पश्चिम में उसके अभिलेख खरोष्ठी लिपि अरामेईक लिपि और यूनानी लिपि में उत्कीर्ण]

M.Q. स्रोत पर / १

(1) 6th BC व 3rd BC के बीच के काल के इतिहास के अध्ययन में अध्ययन स्रोत के स्वरूप में आने वाले बदलाव को रेखांकित कीजिए

(2)

मौर्य साम्राज्य का विस्तार

मगध साम्राज्य की स्थापना मौर्यों से पूर्व ही हो चुकी थी परन्तु मौर्यों ने एक वृहद साम्राज्य का निर्माण किया जो भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश भाग में फैला हुआ था उन्होंने जम्बूद्वीप (भारतीय परंपरा में भारतीय उपमहाद्वीप को जम्बू द्वीप की संज्ञा दी गयी है और अर्थशास्त्र में जम्बू द्वीप पर शासन करने वाले को चक्रवर्ती कहा गया) की अवधारणा को मूर्त रूप दिया। मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत पश्चिम एशिया और मध्य एशिया के व्यापारिक मार्ग शामिल हुए। उत्तर-पश्चिम में मौर्यों ने कुछ ऐसे भूभाग पर भी कब्जा किया जिसपर कब्जा करने के लिए

KD Job Updates

ब्रिटिश भी लालायित रहे परन्तु सफल नहीं रहे।

साम्राज्य के विस्तार के विभिन्न चरण –

(1) सिन्धु नदी तथा व्यास नदी के बीच का भू-भाग →

विशाखदत्त के 'मुद्राराक्षस' नामक कृति से यह ज्ञात होता कि चन्द्रगुप्त अपने गुरु-चाणक्य की सहायता से तथा व्यावहारिक रणनीति अपनाते हुए इस भू-भाग पर कब्जा किया। अशोक के शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा से प्राप्त 14 बृहद शिलालेख से मौर्यों के नियंत्रण होने की सूचना।

(2) व्यास नदी से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी और पूरब में बंगाल →

चन्द्रगुप्त मौर्य ने घनानन्द को पराजित कर सम्पूर्ण भू-भाग पर कब्जा कर लिया। मौर्य साम्राज्य के विभिन्न भागों से प्राप्त अभिलेखों से बात की पुष्टि।

(3) सिन्धु नदी से पश्चिम की ओर पश्चिम एशिया और मध्य एशिया की ओर विस्तार →

लगभग 305 BC में सीरिया के शासक सेल्युकस के साथ युद्ध के पश्चात चन्द्रगुप्त मौर्य को एरियाना का क्षेत्र प्राप्त हुआ। इसमें काबुल, कंधार, बलूचिस्तान, हेरात के भू-भाग शामिल।

KD Job Updates

काबुल एवं कांधार से प्राप्त अशोक के लघुशिला लेख से इस बात की पुष्टि।

(4) गोदावरी नदी से दक्षिण में ब्रह्मगीरि तक का विस्तार

→ यह विवाद का विषय है कि यह विस्तार चन्द्रगुप्त मौर्य के अधीन अथवा इसके अधिकारी बिन्दुसार के अधीन क्योंकि 16वीं सदी का तिब्बती लामा तारानाथ इसका श्रेय बिम्बुसार को देता है परन्तु इतना निश्चित कि मौर्यों ने ब्रह्मगीरि के भू-भाग तक कब्जा किया। दक्षिण भारत में एर्रगुड्डी से अशोक के 14 वृहद शिलालेख और एक लघु शिलालेख प्राप्त इसके अतिरिक्त ब्रह्मगीरि, मास्की तथा अन्य स्थानों से भी अशोक के लघु शिलालेख प्राप्त।

Q:- अशोक के अभिलेखों के आधार पर मौर्य साम्राज्य के विस्तार की रूप रेखा बताइए।

Deepak PHOTOSTAT
9310521834

KD Job Updates

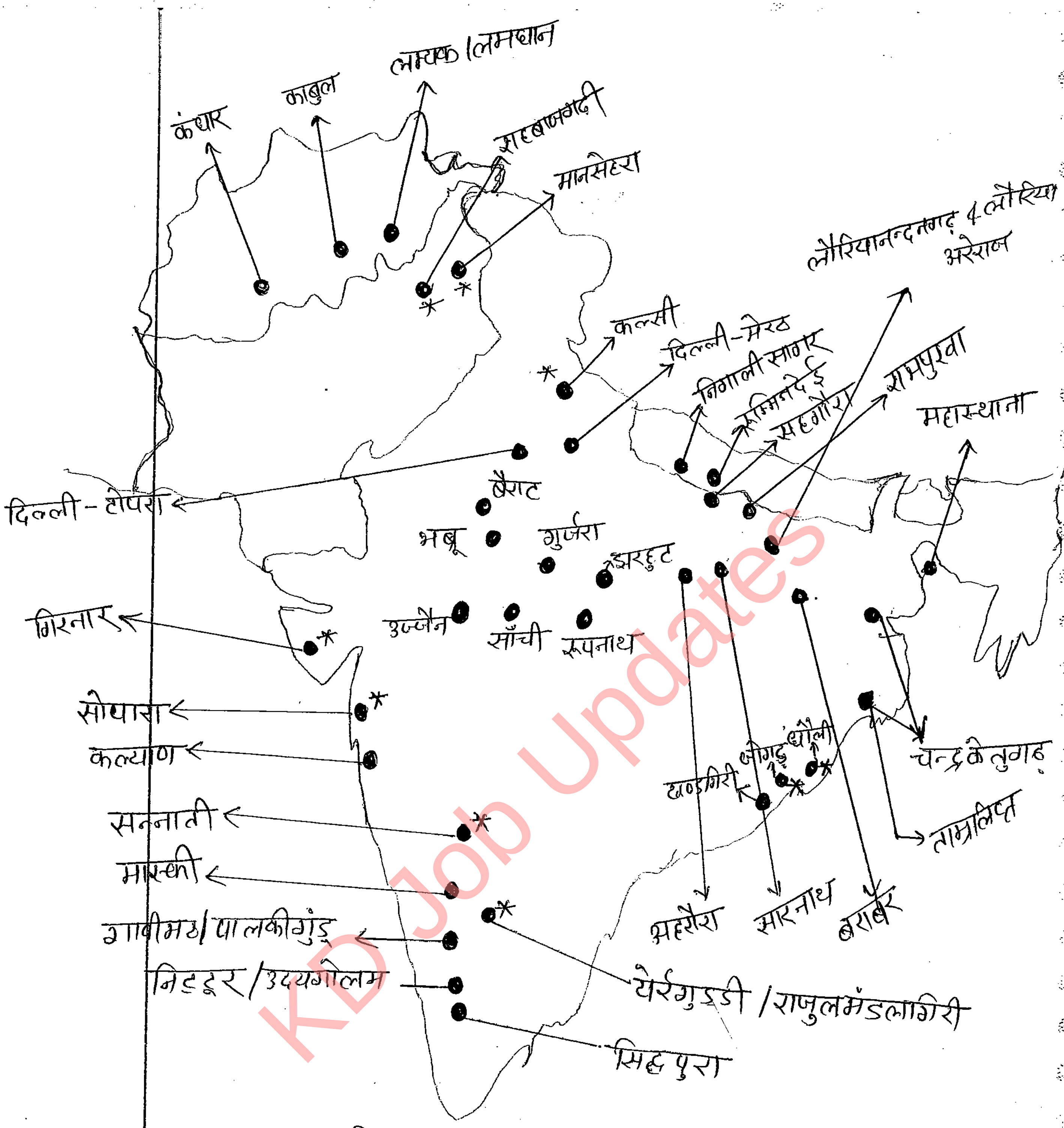

* ब 14 वृहद शिलालेख ⇒ 9 स्थान

KD Job Updates

22/11/2018

मौर्य साम्राज्य कालीन प्रशासन

प्राचीन काल में प्रशासनिक सँरचना में विकास →

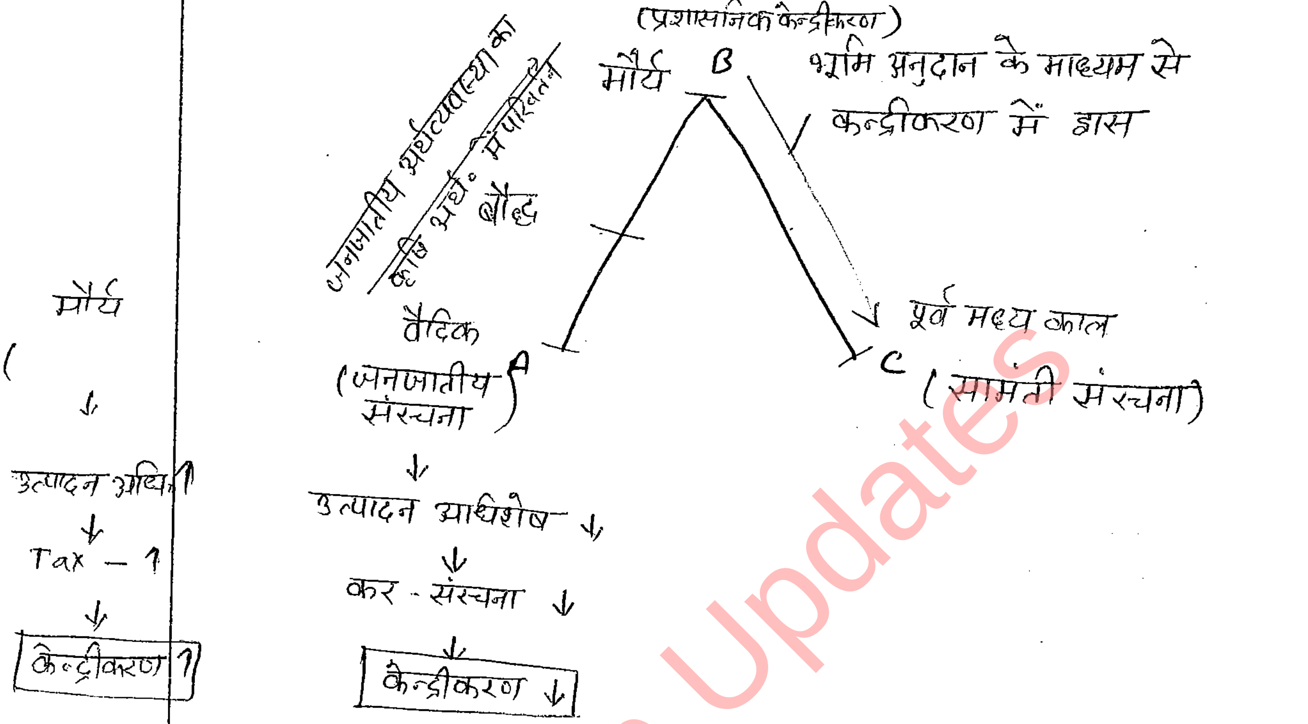

मौर्य कालीन प्रशासनिक संरचना —

पूर्व काल तथा परवर्ती काल की तुलना में मौर्य काल में प्रशासनिक केन्द्रीकरण की ओर झुकाव अधिक दिखता है।

कारण —

यह वह काल था जब जनजातीय अर्थव्यवस्था कृषि अर्थव्यवस्था में ढली थी और राज्य का आर्थिक आधार मजबूत हुआ था। राज्य के द्वारा प्रर्याप्त मात्रा में संसाधनों का दोहन किया गया अतः इस काल में अधिकारियों की संख्या में वृद्धि हुयी और साम्राज्यवादी जरूरत के अनुकूल राज्य के दायित्व में भी वृद्धि देखी गयी।

KD Job Updates

संरचना →

राजा :– राजा की शक्ति और दायित्व में पूर्व काल की तुलना में निम्नलिखित रूप में वृद्धि देखी जा सकती है—

① पूर्व काल में राजकीय शक्ति का आधार धर्मशास्त्र था तथा धर्मशास्त्र में राजा से यह अपेक्षा की गयी थी कि वह ~~पुराने~~ प्रचलित कानूनों को लागू करवाये वहीं अब राजकीय शक्ति का आधार अर्थशास्त्र हो गया जो राज्य कानून के मामले में राजा को अधिक विवेकाधीन शक्तियाँ देता। (प्रचलित कानूनों के साथ-साथ नए प्रकार के कानूनों को लागू करना)

② मौर्य शासकों ने देवानामप्रियदर्शी जैसी उपाधि ली है इसका अर्थ है देवताओं का प्रिय संभवतः इसके माध्यम से वो ब्राह्मण मध्यस्थों की भूमिका को सीमित करना चाहते।

रोमिला थापर ↓ (देवानामप्रिय) ↓ राजा Direct देवता से संवाद अब मध्यस्थता (ब्राह्मण) को हटाना चाहता था।

③ धौली अभिलेख में अशोक ने यह घोषित किया कि सारी प्रजा मेरी सन्तान है। यह राज्य के विशेष दायित्व की ओर संकेत करता।

उपीन्दर सिंह ↓ अशोक के स्तम्भ साम्राज्यवादी प्रतीक के रूप में दिखाई देता है।

④ अशोक के स्तम्भ एवं उसके द्वारा खुदे हुए अभिलेख राजकीय गरिमा व्यक्त करने के साधन बने।

मंत्रिपरिषद :–

राजा के कार्यों में सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद की उपस्थिति परन्तु इस मंत्रिपरिषद को केवल परामर्शदात्री अधिकार।

KD Job Updates

केन्द्रीय प्रशासन :-

कौटिल्य के द्वारा अधिकारियों की एक लम्बी सूची दी गई ये अधिकारी थे 18 तीर्थ अथवा अमात्य (महामात्र) महामात्र समूह से महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति की जाती थी यथा सन्निधाता (कोषाध्यक्ष), समाहर्ता (कर वसूली एवं आय-व्यय की परीक्षण), लेखपाल, लिपिकों का प्रधान, अंतपाल, दुर्ग रक्षक आदि। इनके साथ-साथ 27 अध्यक्षों का जिक्र हुआ है ये अध्यक्ष अपने-अपने विभाग के प्रधान है। इनमें से कुछ इस प्रकार थे —

पण्याध्यक्ष (व्यापार का विनियमन)
विविताध्यक्ष (चारागाह का प्रधान)
आकराध्यक्ष (खनन का प्रधान)
गणिकाध्यक्ष (गणिकाओं का निरीक्षक)

अधिकारियों की एक लम्बी सूची बढ़ते हुए केन्द्रीकरण की ओर संकेत करती।

प्रांतीय प्रशासन :-

अर्थशास्त्र के अनुसार साम्राज्य का विभाजन 4 प्रमुख प्रांतों में ये इस प्रकार —

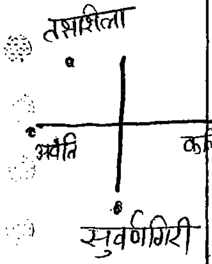

① उत्तर-पश्चिम प्रांत की राजधानी तक्षशिला
② अवंति राज्य की राजधानी उज्जैन
③ ~~पूरब में तोशली का राजधानी कलिंग~~ पूर्व में कलिंग राज्य की राजधानी तोशली
④ दक्षिण में सुवर्ण गिरि (~~की राजधानी~~)

KD Job Updates

प्रांतीय प्रशासन कुमार अथवा आर्यपुत्र नामक अधिकारी के अन्तर्गत रखा जाता था। बताया जाता है कि कुमार के अन्तर्गत भी एक मंत्रिपरिषद होती थी तथा इस मंत्रिपरिषद को यह अधिकार था वह कुछ संवेदनशील बातों की सूचना कुमार को दिये बिना वह सीधे केन्द्र को प्रेषित कर सकता था (केन्द्रीकरण की ओर संकेत)

जिला प्रशासन :-

जिला प्रशासक के रूप में युक्त, रज्जुक एवं प्रादेशिक नामक अधिकारी का विवरण। इन अधिकारियों की ~~संख्या~~ चर्चा अशोक के अभिलेख में। प्रादेशिक- सामान्य प्रशासक, रज्जुक - भू-राजस्व प्रशासन तथा युक्त - लिपिक कार्य से संबंध। इन अधिकारियों की नियुक्ति सीधे केन्द्र के द्वारा आगे यह स्थिति नहीं।

गाँव का समूह :-

गाँव के समूह के स्तर पर गोप एवं स्थानिक नामक अधिकारी। गोप सामान्य प्रशासक तथा स्थानिक - भू-राजस्व प्रशासन से संबंध। इसके अतिरिक्त गोप - जनगणना से भी संबंधित वस्तुतः जनगणना के माध्यम से राज्य करदाताओं की वास्तविक संख्या ज्ञात करने का प्रयास करता। (केन्द्रीकरण की ओर संकेत)

KD Job Updates

राज्य के द्वारा प्रशासनिक केन्द्रीकरण की दिशा में किया गया अतिरिक्त प्रयास —

① राज्य के द्वारा एक सक्षम गुप्तचर की व्यवस्था तथा उसके माध्यम से प्रशासन का निरीक्षण और जनमत की प्रतिक्रिया ज्ञात करने का प्रयास।

② राज्य के द्वारा आर्थिक उत्पादन में प्रत्यक्ष भागीदारी।

③ अशोक ने धम्म नीति के माध्यम से सामाजिक मामले में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप किया जो अब तक ब्राह्मणों का विशेषाधिकार क्षेत्र माना जाता था।

④ अशोक के द्वारा धम्मयात्रा के माध्यम से दूरवर्ती प्रशासन का निरीक्षण तथा धम्ममहामात्र नामक अधिकारी के माध्यम से नैतिक नियमों को लागू करने का प्रयास।

प्रशासनिक संरचना के कुछ महत्वपूर्ण पहलू —

Ⓐ सक्षम गुप्तचर व्यवस्था → कौटिल्य के द्वारा गुप्तचर व्यवस्था पर विस्तार से चर्चा गुप्तचर समूह में छात्र महिलायें, सन्यासी, सभी क्षेत्र के लोग शामिल। अर्थशास्त्र के अनुसार गुप्तचरों को भी दो भागों में बाँटा जा सकता था

प्रथम संस्था — एक जगह टिक कर काम करते ~~तथा संचार~~

द्वितीय संस्था — संचार (घूम-घूमकर) काम करना

इण्डिका में एक निरीक्षक समूह की चर्चा की गई है जिसकी पहचान गुप्तचर के साथ।

गुप्तचर के दायित्व बहुआयामी थे ये प्रशासन के निरीक्षण से

लेकर जनमत की प्रतिक्रिया जानने तथा धम्म नीति के प्रसार करने के लिए उत्तरदायी थे। गुप्तचर व्यवस्था मौर्यकालीन साम्राज्यवादी नीति का एक आवश्यक अंग थी

(B) न्याय व्यवस्था :-

कौटिल्य के अर्थशास्त्र और में न्याय व्यवस्था पर विस्तार से चर्चा की गई है बताया जाता है कि ग्रामीण न्यायालय से लेकर केन्द्रीय न्यायालय तक न्याय की एक संगठित प्रणाली थी। राजा स्वयं सर्वोच्च न्यायाधीश होता था। न्यायालय प्रायः दो प्रकार के थे—

i) धर्मस्थीय (दीवानी न्याय)

ii) कंटकशोधन (फौजदारी न्याय)

(C) नगर प्रशासन :-

मौर्यकालीन प्रशासन की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी एक उन्नत नगर प्रशासन का विकास। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नगर प्रशासन की विस्तार से चर्चा की गई है इसके अतिरिक्त मेगास्थनीज की इंडिका और अशोक के अभिलेखों में भी नगर प्रशासन का जिक्र है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नगर प्रशासन के प्रधान के रूप में नगरक नामक अधिकारी का जिक्र मिलता है

KD Job Updates

उसकी सहायता के लिए समाहर्ता एवं प्रादेशिक नामक अधिकारी भी होता था वहीं मेगास्थनीज ने पाटलिपुत्र के प्रशासन के लिए एस्टोनोमोई नामक अधिकारी का जिक्र करता है जो नगर प्रशासन से जुड़ा हुआ था तथा 6 समितियों में संगठित था। दूसरी तरफ अशोक के अभिलेख में नगर व्यावहारिक नामक अधिकारी का विवरण मिलता है।

अर्थशास्त्र उन्नत नगर प्रशासन का जिक्र करता है वो बताता है कि विभिन्न समूहों को नगर के पृथक पृथक भाग में स्थापित किया जाता था। नगरक के अनेक दायित्व थे यथा ~~कानू~~ कानून व्यवस्था की रक्षा इसके लिए रात में कर्फ्यू भी लगाया जाता था फिर नगर को आग से बड़ा खतरा था। नगर की जनसंख्या की गणना भी की जाती थी।

मौर्य प्रशासन के केन्द्रीकरण की अवधारणा के संबंध में इतिहास लेखन संबंधी विवाद —

रोमिला थापर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन' (1961) में मौर्य प्रशासन को अति केन्द्रित प्रशासन के रूप में दिखाया है। एक दूसरे विद्वान एम॰ बरूआ ने भी केन्द्रीकरण की अवधारणा की पुष्टि की है

परन्तु 1981 में एक विद्वान जेराल्ड फुसमैन द्वारा इस विचार को निम्नलिखित रूप में चुनौती —

उनके विचार में यद्यपि मौर्यसाम्राज्य प्रशासनिक केन्द्रीकरण

KD Job Updates

के लिए तत्पर था परन्तु इस केन्द्रीकरण की निम्न सीमायें थे –

(1) साम्राज्य का महाद्वीपीय आकार था जबकि ~~आधुनिक~~ उन्नत यातायात एवं संचार व्यवस्था अनुपस्थित थी।

(2) पाटलिपुत्र से तक्षशिला की सुरक्षा सम्भव नहीं। इसलिए तक्षशिला के प्रांतपति के अधीन एक बड़ी सेना रखना आवश्यक

(3) उत्तर-पश्चिम में एक बड़ी विदेशी जनसंख्या देखते हुए विदेशी मूल के अधिकारियों की नियुक्ति अतः प्रशासनिक एकरूपता की बात करना उचित नहीं।

(4) भारत में अबतक जो भी साम्राज्य हुए अगर उनमें हम ब्रिटिश साम्राज्य और वर्तमान भारतीय गणतंत्र की भी गणना करते है तो वे या तो सामंती हुए या संघात्मक परन्तु केन्द्रीकृत नहीं।

रोमिला थापर के द्वारा अपने विचार का पुनर्निरीक्षण

1984 में एक सेमिनार में रोमिला थापर ने अपने विचार का पुनरनिरीक्षण किया तथा 1987 मे उसे एक पृथक पुस्तक के रूप में संकलित कर दिया उसका नाम है 'Maurya Revisited'। उन्होंने अपने अध्ययन मे मौर्य साम्राज्य को तीन भागों में विभाजित कर दिया –

(i) मगध एवं आस-पास के क्षेत्र को उन्होंने मेट्रोपोलिटन स्टेट का नाम दिया

(ii) उन क्षेत्रों को जो पुराने महाजनपद के भाग थे और जहाँ राज्य निर्माण हो चुका उन्होंने उसे कोर क्षेत्र कहा।

(iii) दूरवर्ती क्षेत्र को जहाँ राज्य निर्माण नहीं हुआ था उन्होंने परिधीय क्षेत्र का नाम दिया।

KD Job Updates

उनके विचार में राज्य का नियंत्रण पृथक-पृथक क्षेत्र में अलग-अलग था। मेट्रोपोलिटन क्षेत्र में यह ~~बिंदु~~ केन्द्रीकरण अधिक था, कोर क्षेत्र में उसकी तुलना में कम था वहीं परिधीय क्षेत्र में राज्य का अप्रत्यक्ष नियंत्रण था।

केन्द्रीकरण v/s. केन्द्रीकरण की सीमा के संबंध में बहु-मान्य मत :—

यह सही है कि मौर्यों के अधीन राज्य प्रशासनिक केन्द्रीकरण के लिए प्रयत्नशील था तथा उसके लिए विभिन्न प्रकार के ~~सह~~ उपायों का सहारा ले रहा था, गुप्तचर व्यवस्था का उपयोग, धम्म नीति का प्रोत्साहन प्रशासकों का निरीक्षण etc.

फिर भी मौर्यकालीन प्रशासन को अधिक केन्द्रित मानना उचित नहीं है वस्तुतः प्रशासन के अति केन्द्रीकरण की अवधारणा कौटिल्य के अर्थशास्त्र के आधार पर निर्मित की गई है परन्तु कौटिल्य के अर्थशास्त्र की सीमा यह है कि वह महज गंगा घाटी की सच्चाई को दर्शाती है सम्पूर्ण भारत की सच्चाई को नहीं। फिर मौर्य साम्राज्य का आकार बहुत विस्तृत था जबकि यातायात एवं संचार व्यवस्था उन्नत नहीं थी इसलिए जहाँ तक प्रशासनिक केन्द्रीकरण की बात की जाती है वह मगध एवं आस-पास के क्षेत्र पर तो लागू हो सकती सम्पूर्ण साम्राज्य पर नहीं।

वस्तुतः अलग-अलग क्षेत्रों से केन्द्र का पृथक-पृथक संबंध था और नियंत्रण का ~~(समूह)~~ स्वरूप भी अलग-अलग था।

Q:- क्या आप इस लोक ~~मत~~ ~~से~~ प्रचलित मत से सहमत है कि मौर्यों ने यदि एकात्मक राजतंत्र नहीं तो भी एकात्मक और अत्यधिक केन्द्रीकृत राज्य प्रणाली की स्थापना की थी? (+) + (−) (2010)

Q:- मौर्यों के अधीन राजव्यवस्था एवं प्रशासन में केन्द्रीकरण के तत्वों को उद्घाटित कीजिए। (e)

Q:- क्या आप मौर्यों के अधीन राज्य को एक लोककल्याणकारी राज्य मानते है अपने मत के पक्ष में उत्तर दो (Booklet) (+) + (−)

Q:- ईसापूर्व 1000 तथा 300 BC के बीच राजत्व एवं राजतंत्र जैसी संस्था के विकास पर टिप्पणी कीजिए (उत्तर वैदिक काल से लेकर अशोक के काल तक के विकास पर प्रकाश डालना है।)

Q:- मौर्यों के अधीन राज्य के द्वारा प्रशासनिक केन्द्रीकरण की दिशा में कौन-से कदम उठाये गए सोदाहरण व्याख्या कीजिए। (2000)

Q:- मौर्यों के अधीन राज्य न तो उतना केन्द्रीकृत था जितना की कुछ विद्वान दावा करते है परन्तु दूसरी तरफ केन्द्रीकरण का तत्व इतना कमजोर भी नहीं था जितना की सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है। इस कथन का युक्तियुक्त विवेचन करो। [UPSC 2020]

Page 160, Page 162,

KD Job Updates

Q:- मौर्य प्रशासन के अन्तर्गत विनियमन एवं नियंत्रण के गुण एवं दोषों का परीक्षण कीजिए। (162)

Q:- मौर्य प्रशासन के अन्तर्गत अध्यक्ष की भूमिका का परीक्षण (2011) (164)

Q:- अशोक के अभिलेखों के आधार पर मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत प्रशासनिक केन्द्रीकरण को अनुरेखित कीजिए। (165)

Page (167)

मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था

मौर्य काल में अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिला बुद्ध काल में जो द्वितीय नगरीयकरण की प्रक्रिया जो आरम्भ हुयी थी मौर्यकाल में उसे और भी बल मिला इसकाल में अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देने वाला एक प्रमुख कारण था आर्थिक क्षेत्र में राज्य की भागेदारी।

कृषि अर्थव्यवस्था —

(1) मेगास्थनीज के द्वारा इस बात की पुष्टि की गई कि भारत की मिट्टी उपजाऊ थी तथा यहाँ चावल, गेहूँ विभिन्न प्रकार के दालों का उत्पादन होता था।

(2) राज्य के द्वारा खेती को प्रत्यक्ष प्रोत्साहन दिया गया राजकीय भूमि को सीता भूमि कही जाती थी तथा इसे सीताध्यक्ष नामक अधिकारी के अन्तर्गत रखा गया। कृषि को आबाद करने के लिए उसमें दासों, शूद्रों और युद्ध बंदियों को लगाया जाता।

KD Job Updates

(4) राज्य की ओर से सिंचाई के विकास हेतु भी काम किया गया। चन्द्रगुप्त के ~~अधिक~~ ~~के~~ अधीन काठियावाड़ के गवर्नर के रूप में पुष्यगुप्त ने सुदर्शन झील का निर्माण कराया गया और फिर राज्य के द्वारा सिंचाई कर भी लगाया जाता।

शिल्प एवं उद्योग :-

कृषि अधिशेष ने शिल्प एवं उद्योगों के विकास को भी प्रोत्साहन दिया। राज्य के द्वारा शिल्प श्रेणियों का पंजीकरण किया जाता। कुछ उद्योगों पर राज्य का एकाधिकार था यथा लौह उद्योग, खनज उद्योग, व्यापार व हथियारों का निर्माण आदि।

व्यापार :-

मौर्यकाल में निम्नलिखित कारणों से व्यापार को प्रोत्साहन मिला —

(1) इस काल में राज्य के द्वारा मार्ग निर्माण पर बल दिया जाता है। मेगास्थनीज ने एक एग्रोनोमोई नामक अधिकारी की चर्चा की है जो मार्ग निर्माण से संबंधित था।

(2) इस काल में उत्तरापथ का विकास हो चुका था और उत्तर-पश्चिम में पेशावर से लेकर ताम्रलिप्त और पश्चिमी तट पर भड़ौच से जुड़ा हुआ था।

(3) मौर्यों के अधीन एक विशाल साम्राज्य ने

KD Job Updates

शिल्प एवं उद्योग :- कृषि अधिशेष ने शिल्प एवं उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन दिया। राज्य के द्वारा शिल्प श्रेणियों का पंजीकरण किया जाना। कुछ उद्योगों पर राज्य का ही एकाधिकार था यथा लौह उद्योग, खनन उद्योग, हथियारों का निर्माण आदि।

व्यापार :- मौर्य काल में निम्नलिखित कारणों से व्यापार को प्रोत्साहन मिला —

(i) इस काल में राज्य के द्वारा मार्ग-निर्माण पर बल दिया जाना। मेगस्थनीज ने एक एग्रोनोमई नामक अधिकारी की चर्चा की है जो मार्ग निर्माण से संबंधित था। इस काल में उत्तरापथ का भी विकास हो चुका था जो N-W में पेशावर से लेकर पूरब में ताम्रलिप्ति बंदरगाह और पश्चिमी तट पर भड़ौच से जुड़ा हुआ था।

(ii) मौर्यों के अधीन एक विशाल साम्राज्य ने पश्चिम एशिया और मध्य एशिया के प्रमुख व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण स्थापित किया।

(iii) अशोक के द्वारा धम्म नीति के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रसार किया। इससे भारतीय वस्तुओं के लिए भी आकर्षण बढ़ा।

(iv) राज्य के द्वारा व्यापार में प्रत्यक्ष हिस्सा लिया जाता तथा राज्य की वस्तुएँ राजपण्य कहलाती। और पण्याध्यक्ष नामक अधिकारी संपूर्ण व्यापार का निरीक्षण करता।

(V) मुद्राव्यवस्था :- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पण, धरण एवं कार्षापण जैसे सिक्कों की चर्चा की गई है। पण चाँदी के सिक्के थे वहीं पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर बड़ी संख्या में आहत सिक्के मिले हैं।

(vi) इस काल में कृषि उत्पादों की उपलब्धता तथा प्रशासनिक गतिविधियों के कारण नगरीकरण को और भी बल मिला। अशोक के अभिलेखों में (7) नगरों का विवरण मिलता। दूसरी तरफ मेगस्थनीज ने आठवें नगर के रूप में मथुरा की चर्चा की है।

Date
5/11/2018

मौर्यकालीन समाज

अध्ययन स्रोतों के आधार पर मौर्यकालीन समाज को तीन भिन्न दृष्टिकोणों से देखा गया है —

(1) बौद्ध दृष्टिकोण :-

बौद्धों ने वर्ण ~~व्यवस्था~~ विभाजन का कोई विकल्प देने का प्रयास नहीं किया अपितु उसने केवल वर्ण क्रम को बदल दिया। यथा खत्तिय (क्षत्रिय), बामन (ब्राह्मण), वेस्स (वैश्य), शुद्दा (शूद्र)। इसमें क्षत्रिय को वर्ण क्रम में ब्राह्मण से ऊपर रखा गया।

2

(2) **मेगस्थनीज का दृष्टिकोण :–**

मेगस्थनीज सीरियाई राजदूत थे जो मौर्य शासक चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार पाटलिपुत्र में रहा था। हालाँकि भारत के विषय में उसका अनुभव सीमित था परन्तु उसने भी भारतीय समाज का अध्ययन प्रस्तुत किया, किंतु उसके दृष्टिकोण की निम्नलिखित सीमाएँ रही —

(a) भारत संबंधी उसका दृष्टिकोण सीरियाई साम्राज्य के अनुभव से प्रेरित रहा है। अत: उसने भी यूनानी विद्वान हेरोडोटस के द्वारा ~~[illegible]~~ मिस्त्र के समाज के विभाजन के मॉडल से प्रभावित होकर भारतीय समाज को (7) जातियों में विभाजित कर दिया।

(b) एक विदेशी होने के नाते उसका ध्यान समाज के सैद्धांतिक पक्ष पर नहीं बल्कि व्यवहारिक पक्ष पर गया। चूंकि वर्ण एक आदर्श परिकल्पना बनती जा रही थी, वहीं आर्थिक - सामाजिक परिवर्तनों के साथ नए-नए पेशे अस्तित्व में आ रहे थे। इसलिए उसका ध्यान विभिन्न पेशेवर समूहों पर गया। यथा — दार्शनिक, किसान, शिकारी एवं पशुपालक, शिल्पी एवं ~~[illegible]~~ कारीगर, योद्धा, निरीक्षक एवं गुप्तचर तथा सभासद।

KD Job Updates

③ ब्राह्मण दृष्टिकोण :-

इस दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' करता है :-

वर्ण व्यवस्था के प्रति कौटिल्य का दृष्टिकोण :-

कौटिल्य भी ब्राह्मण पृष्ठभूमि से आया था, इसलिए उसका बल भी ब्राह्मणवादी विशेषाधिकारों पर रहा है। उसने ब्राह्मणों के अधिकारों को बनाए रखा, फिर उसने क्षत्रिय वर्ण की श्रेष्ठता को भी स्वीकार किया।

परंतु फिर भी वर्ण-व्यवस्था के संचालन के संदर्भ में कौटिल्य का दृष्टिकोण धर्मशास्त्र के लेखकों से पृथक हो जाता है। तथा इसका कारण है कि कौटिल्य की प्राथमिकता का पृथक होना। कौटिल्य की प्राथमिकता थी राजा के द्वारा भूमि पर कब्जा और संसाधनों के अर्जन के द्वारा राज्य को मजबूत बनाना। इसका प्रभाव उसके सामाजिक दृष्टिकोण पर भी पड़ा। इसके निम्नलिखित उदाहरण हैं :-

ⓐ उसने शूद्रों को आर्य कहा है और उन्हें म्लेच्छों से पृथक माना है, फिर जहाँ धर्मशास्त्र के लेखकों ने शूद्र के दायित्व बताए थे - शिल्प एवं सेवा। वहीं कौटिल्य ने शूद्रों को कृषक माना है और उन्हें कृषि का दायित्व भी दिया है।

ⓑ अछूतों के प्रति भी कौटिल्य का दृष्टिकोण नरम है, उसने चांडालों को छोड़कर अन्य समूहों को शूद्र माना है।

KD Job Updates

महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण :- वैसे तो कौटिल्य पर भी पितृ सत्तावाद का प्रभाव था। फिर भी महिलाओं के प्रति कौटिल्य का दृष्टिकोण नरम है, इसका कारण है :- कौटिल्य का दृष्टिकोण धर्मशास्त्र के लेखकों से पृथक होना। जहाँ धर्मशास्त्र के लेखक सामाजिक एवं राजनीतिक नियमों का अनुपालन करवाने के लिए दृढ़ संकल्पित थे, वहीं 'अर्थशास्त्र' के लेखक का झुकाव अर्थ अथवा संसाधनों के अर्जन पर है। 'अर्थशास्त्र' का लेखक political Economy के उद्देश्य से परिचालित था। अतः महिलाओं के संदर्भ में कौटिल्य का निम्नलिखित दृष्टिकोण रहा था –

(1) कौटिल्य ने पुरुष समाज के साथ-साथ महिला समाज पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है। वह विभिन्न समूह की महिलाओं तथा उनके पेशों की बात करता है। वह संभ्रान्त महिलाओं को 'अनिष्कासिनी' कहा है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में महिलाओं की जितनी व्यापकता से उपस्थिति दिखती है वैसी उपस्थिति हमें किसी भी समकालीन स्रोत में देखने को नहीं मिलती है। इतना ही नहीं उसने गणिकाओं (वेश्या नर्तकी) को भी सम्मान की दृष्टि से देखता था। वह एक पृथक अध्यक्ष गणिकाध्यक्ष की बात करता है और कहता है कि गणिकाओं से राज्य को आमदनी होती थी। इसके अतिरिक्त धर्मशास्त्र में 8 प्रकार के विवाह का जिक्र मिलता है, परन्तु

(4) प्रकार के विवाह ब्रह्म, प्रजापत्य, दैव, आर्ष को ही उत्तम कोटि का विवाह माना गया और उन्हें स्वीकृति मिली थी। वहीं राक्षस, गांधर्व, असुर एवं पिशाच प्रकार के विवाह को अधर्मीय करार दिया गया था तथा उन्हें अस्वीकृत कर दिया गया था परन्तु कौटिल्य ने आठों प्रकार के विवाह को मान्यता दी है, यह उसके व्यवहारिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

सांस्कृतिक स्थिति

अशोक

अशोक

एक शासक के रूप में विलक्षणता :-

(1) अशोक से पूर्व भी कई महत्वपूर्ण शासक आ चुके थे यथा बिम्बिसार, अजातशत्रु, शिशुनाग एवं महापद्मनन्द, आदि प्रसेनजित, चंद्रप्रद्योत महासेन आदि। परंतु यह काल भारतीय इतिहास का वह काल था, जब शासक की कोई अपनी पहचान नहीं थी और प्रजा से उनकी दूरी थी। वहीं अशोक इस पहचानविहीन शासक के समूह से बाहर निकलकर अपनी पृथक पहचान बनाने का प्रयास किया तथा अपने अभिलेखों के माध्यम से अपनी प्रजा के साथ प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करने

का प्रचार किया।

(2) अशोक प्रथम ऐसा शासक था जिसने प्रजा के कल्याण के लिए राज्य का दायित्व स्वीकार किया तथा राजा को अपनी प्रजा के प्रति ऋणी माना। (- उपिन्दर सिंह)

(3) ~~उसने~~ वह भारत का प्रथम ऐसा शासक था जिसे इतनी व्यापक पहचान मिली। वह केवल भारत के अंदर ही नहीं बल्कि भारत के बाहर भी जाना गया।

(4) उसने राज्य शासन के आधार का व्यापक विस्तार किया। अब तक राजा का काम प्रचलित सामाजिक नियमों को लागू कराना था परन्तु अशोक ने नए सामाजिक नियम भी स्थापित किए।

(5) उसने घरेलू एवं विदेश नीति दोनों में वैकल्पिक नीति को अपनाने का प्रयास किया। घरेलू नीति में विकल्प था कम से कम दण्ड शक्ति का प्रयोग करके शासन का संचालन, वहीं विदेश नीति का बल युद्ध नीति के बदले शांति की नीति पर रहा था।

अशोक के आगमन के समय भारत में धार्मिक पंथों की स्थिति :

जैसा कि बौद्ध एवं जैन ग्रंथों से हमें ज्ञात होता है कि इस काल में धार्मिक पंथों की बहुलता थी। अशोक के अभिलेखों में भी ब्राह्मण, श्रमण

KD Job Updates

आजीवक एवं अन्य समूह की चर्चा मिलती है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी विभिन्न धार्मिक पंथों का जिक्र मिला है। फिर यह भी गौर करने की जरूरत है कि वैसे तो अनेक धार्मिक पंथ प्रचलित रहे थे परंतु बौद्ध पंथ सबसे अधिक लोकप्रिय था। अतः अशोक की धम्म-नीति का अध्ययन करते हुए इस तत्व को भी ध्यान में रखना आवश्यक है —

अशोक का धम्म :—

अशोक के धम्म का अध्ययन करते हुए कि अशोक के दो पृथक पहचानों को समझना आवश्यक है यथा अशोक एक व्यक्ति तथा अशोक एक शासक।

एक व्यक्ति के रूप में बौद्ध उपासक :- एक व्यक्ति के रूप में अशोक निश्चय ही एक समर्पित बौद्ध था।

(1) पालि ग्रंथों में उसे एक समर्पित बौद्ध उपासक माना गया है।

(2) अशोक ने स्वयं भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि पिछले ढाई वर्षों से वह बौद्ध उपासक था।

(c) भब्रू अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि उसने बौद्ध धर्म के त्रिरत्न में आस्था प्रकट की।

(d) **निगाली सागर**, **स्तंभ अभिलेख** **रूम्मिनदेई स्तंभ** अभिलेख, **संघभेद अभिलेख** ।

KD Job Updates

अशोक एक शासक के रूप में :-

आरंभ में अशोक का अध्ययन बौद्ध ग्रंथों को आधार बनाकर किया गया था इसलिए उसे एक समर्पित बौद्ध के रूप में देखा गया था परन्तु उसके अभिलेखों विशेषकर बड़े समूहों के अभिलेखों के अध्ययन पर अशोक के धम्म की एक नई तस्वीर सामने आती है, जो यह इस प्रकार है —

(1) अशोक का धम्म बौद्ध पंथ की परिधि में बंधा हुआ नहीं था, उसने बौद्ध पंथ के अतिरिक्त अन्य धार्मिक पंथों से बहुत कुछ लिया था यथा — ब्राह्मण पंथ, आजीवक पंथ आदि।
उदाहरण के लिए : बौद्ध पंथ से उसने शुद्ध आचरण एवं नैतिकता की तो ब्राह्मण पंथ से आचार शास्त्र और दंड संहिता एवं आजीविकों से ऐन्द्रजालिक पद्धति।

Date- 26/11/2018

बौद्ध पंथ के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत अनुपस्थित :-

(1) चार आर्य सत्य की चर्चा नहीं।
(2) अष्टांगिक मार्ग पर बल नहीं।
(3) निर्वाण की जगह स्वर्ग की बात की।

अशोक के धम्म के महत्वपूर्ण पहलू :-

(1) अहिंसा :- 14वें बृहद शिलालेख के प्रथम आदेश में पशुहत्या को निषिद्ध करने पर बल दिया गया।

(1) स्तम्भ लेख के 5 वें आदेश में भी पशुहत्या से हतोत्साहित किया गया।

(2) नैतिक आचरण :— लोगों से उच्च नैतिक व्यवहार की अपेक्षा की गई तथा माता-पिता एवं गुरु का आदर, नौकर - दासों के प्रति दया का भाव, पशुओं के प्रति भी करुणा।

3) सामाजिक दायित्व :— क्रोध, निष्ठुरता, क्रूरता आदि से बचना, अल्प बचत एवं अल्प व्यय को प्रोत्साहन देना अथवा प्रवृत्ति विकसित करना।

(4) धार्मिक सहिष्णुता :— अशोक के 13वें शिलालेख के 12वें आदेश में कहा गया है कि विभिन्न धर्मों के प्रति आदर का भाव रखना चाहिए।

(5) लोक कल्याण :— अशोक ने अपने 14वें शिलालेख के दूसरे आदेश में यह घोषित किया कि उसने न केवल अपनी भूमि पर बल्कि अपने पड़ोसी राज्यों की भूमि पर भी जनकल्याण के लिए कदम उठाया। सबसे बढ़कर उसके लोक-कल्याण कार्यक्रम में औषधि वृक्षों के रोपण से लेकर पशुओं की चिकित्सा का भी प्रबंध था।

प्र० क्या मौर्य साम्राज्य के सभी भागों में धम्म नीति की व्याख्या समान रूप में हुई है?

उत्तर— उत्तर पश्चिम में कंधार द्विभाषी अभिलेख में धम्म को पृथक रूप में परिभाषित किया गया है।

KD Job Updates

(द्विभाषी से तात्पर्य है कि एक ही अभिलेख में यूनानी तथा अरामाईक लिपि का प्रयोग है।

इस अभिलेख के यूनानी संस्करण में धम्म के लिए यूसेबिया (करुणा एवं पवित्र आचरण) का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार अरामाईक संस्करण में यह घोषित किया गया है कि पवित्र व्यक्ति के लिए कोई अंतिम न्याय नहीं होता। इसका अर्थ है, वहाँ अशोक ने विदेशी मूल की जनसंख्या के समझ के अनुकूल धम्म नीति की व्याख्या की।

धम्मनीति के पीछे उत्तरदायी राजनीतिक आर्थिक और सांस्कृतिक कारक :

(1) राजनीतिक कारक

(ईरानी साम्राज्य) अखमेनी साम्राज्य व रोमन साम्राज्य, इन्हें जोड़े रखने के लिए एक राजधर्म की आवश्यकता हुई थी। प्रथम ने जोरोस्ट्रियन धर्म को अपनाया था तो दूसरे ने ईसाई धर्म को। इसी प्रकार अशोक ने राजधर्म के रूप में अपनी धम्मनीति पर बल दिया तथा साम्राज्य को जोड़े रखने के लिए दंड शक्ति के बदले मेल-मिलाप की नीति को प्राथमिकता दी।

(2) **आर्थिक कारक** :- पशु हत्या को हतोत्साहित कर कृषि अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन।

(3) **सांस्कृतिक कारक** :- मौर्य साम्राज्य अपने स्वरूप में बहुभाषा-भाषी और बहुसांप्रदायिक था। अतः अशोक ने धम्म नीति पर बल देकर विविधता में एकता स्थापित करने का प्रयास किया।

अशोक के द्वारा धम्मनीति के प्रसार के लिए किए गए प्रयास :-

(1) अपने शासन के 12 वें वर्ष के पश्चात धम्म अभिलेखों को खुदवाना तथा उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित करवाना।

(2) 14 वें शिलालेख के 5 वें आदेश से धम्म-महामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति की चर्चा।

(3) अन्य अधिकारियों से भी अपेक्षा कि वे धर्म-प्रसार के लिए काम करें और फिर युक्त, रज्जुक एवं प्रादेशिक नामक अधिकारियों को ये आदेश दिया जाना कि वे प्रत्येक 5 वर्ष पर विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा करें।

(4) अशोक के द्वारा स्वयं ही समय-समय पर धर्म-यात्राएं की गई।

KD Job Updates

(5) भारत से बाहर विभिन्न क्षेत्रों में धार्मिक मिशन भेजा जाना।

विदेश नीति :-

मौर्यो का योगदान :- (1) मौर्यों से पूर्व मगध शासकों की दृष्टि केवल भारतीय उपमहाद्वीप में ही उलझी रही थी परन्तु मौर्यो ने भारतीय उपमहाद्वीप से बाहर भी देखा।

(2) **पश्चिम की ओर देखो नीति** :- मौर्य राज्य की स्थापना तथा मौर्य साम्राज्य का विस्तार उत्तर पश्चिम में होने वाले संघर्ष के कारण हुआ था। इसलिए मौर्यो ने पश्चिम की ओर देखो नीति पर विशेष बल दिया।

(3) **पूरब की ओर देखो नीति** :- वैसे तो चंद्रगुप्त मौर्य का भी कलिंग से संबंध बना था पाना फिर भी इस नीति के औपचारिक शुरुआत का श्रेय अशोक को, उदाहरण के लिए पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका में भेजना।

(4) नियमित रूप से ~~सामाजिक~~ राजनयिक संबंधों की शुरुआत। चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में मेगस्थनीज का आगमन, बिन्दुसार के दरबार में सीरिया के राजदूत डायमेकस और मिस्त्र के राजदूत डायनिसियस

का आगमन। अशोक के 14 वें शिलालेख के दूसरे आदेश में दक्षिण के तीन राज्य और श्रीलंका की चर्चा और 13 वें शिलालेख में उत्तर-पश्चिम के (5) पड़ोसी राज्यों के शासकों की चर्चा।

युद्ध के विकल्प के रूप में शांति की नीति स्थापित करने का प्रयास -

→ अशोक के द्वारा भेरीघोष को छोड़कर धम्म घोष को अपनाना तथा विभिन्न देशों में धार्मिक मिशन भेजना।

→ मौर्यों ने पश्चिम एशिया और मध्य एशिया के व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण बनाए रखा। वह ऐसा क्षेत्र था जिस पर नियंत्रण के लिए ब्रिटिश हमेशा लालायित रहे परन्तु कभी सफल नहीं रहे।

अशोक के द्वारा विदेश नीति में लाए गए परिवर्तन :-

(1) भेरीघोष के बदले धम्मघोष की नीति को अपनाया।

(2) राजदूत के बदले धम्मदूत की नियुक्ति।

(3) विभिन्न क्षेत्रों में नियमित रूप में धार्मिक मिशन भेजा जाता।

(4) पश्चिम की ओर देखो नीति के साथ-साथ पूरब की ओर देखो की नीति पर बल।

KD Job Updates

प्रश्न– अशोक की विदेश नीति के प्रभाव का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (अथवा) अशोक की विदेश नीति कहाँ तक सफल रही?

उत्तर– अशोक की विदेश नीति का मूल्यांकन दो भिन्न परिप्रेक्ष्यों में करने की जरूरत है, तब उसका वास्तविक स्वरूप प्रकट होगा।

तात्कालिक परिप्रेक्ष्य :–

तात्कालिक परिप्रेक्ष्य में हम इसकी निश्चित उपलब्धि पाते हैं। यह सही है कि उसके जीवनकाल में कलिंग युद्ध के पश्चात कोई दूसरा युद्ध घटित नहीं हुआ, उसी तरह जहाँ बिन्दुसार के शासनकाल में तक्षशिला में दो-दो विद्रोह घटित होने की सूचना मिलती है परन्तु अशोक के काल में हमें किसी विद्रोह की सूचना नहीं मिलती किन्तु फिर भी साम्राज्य की एकता और अखण्डता बनी रही। यह उसकी विदेश नीति की उपलब्धि मानी जा सकती है परन्तु दूसरी तरफ यह भी सही है कि उसकी मृत्यु के पश्चात उत्तर पश्चिम से यूनानी आक्रमण प्रारंभ हुआ और मौर्यों को उत्तर पश्चिम का क्षेत्र गँवाना पड़ा।

इस्लामी प्रभाव :–

अशोक की विदेश नीति महत्वाकांक्षी थी। इसने विदेश नीति में एक वैकल्पिक मार्ग की तलाश की जो उसके काल से लेकर वर्तमान काल तक

विश्व के समक्ष एक मॉडल के रूप में उपस्थित है। यह भारत की विदेश नीति में भी पंचशील के सिद्धांत से लेकर गुजराल सिद्धांत तक विभिन्न रूपों में प्रकट हुई है। सबसे दिलचस्प तथ्य यह है कि पिछले लगभग 2200 वर्षों में विश्व ने भौतिक क्षेत्र में महान उपलब्धियाँ हासिल की है परन्तु नैतिक क्षेत्र में वह अशोक की घोषणा से आगे नहीं बढ़ सकी है।

वर्तमान युग में अशोक की प्रासंगिकता :-

(1) घरेलू नीति में कम से कम दंड शक्ति का प्रयोग कर शासन का संचालन।

(2) कर्मठ प्रशासन पर बल देकर बेहतर गवर्नेंस का मॉडल रखा। इसलिए अशोक एक कर्मठ प्रशासन तथा उच्च नैतिकता का प्रतीक।

(3) नैतिकता पर आधारित राजनीति पर बल तथा सर्वधर्म समभाव की नीति को प्रोत्साहन।

(4) लोक कल्याणकारी नीति पर बल (मानव और पशु के लिए चिकित्सा का प्रबंध)।

(5) अहिंसा पर बल देकर इस उद्देश्य के साथ पर्यावरण सुरक्षा एवं जैव-विविधता की सुरक्षा पर भी बल।

(6) विदेश नीति में एक वैकल्पिक मॉडल की स्थापना जो वर्तमान विश्व व्यवस्था में उतना ही प्रासंगिक।

KD Job Updates

Q. (1) मौर्य साम्राज्य के विघटन के लिए धम्म नीति कहाँ तक उत्तरदायी रही थी? (अथवा) (2) मौर्य साम्राज्य के विघटन में धम्म नीति के प्रभाव का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (अथवा)

(3) धम्म नीति के प्रभाव का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

Ans:- (1) & (2)

अशोक की धम्म नीति अपने स्वरूप में बहुआयामी है। अर्थात् इसमें अहिंसा, बेहतर गवर्नेंस तथा लोक-कल्याण से लेकर धार्मिक सद्भाव की नीति सभी शामिल थी। इसलिए इसका प्रभाव भी जटिल रहा।

प्रायः निम्नलिखित आधार पर धम्म नीति को मौर्य साम्राज्य के विघटन के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया —

(1) शांति की नीति के कारण साम्राज्य का सैन्य ढाँचा कमजोर हो जाना।

(2) बौद्ध पक्षधर नीति के कारण ब्राह्मणों की प्रतिक्रिया।

परन्तु तस्वीर का एक दूसरा पक्ष भी है। साम्राज्य पर धम्म के नकारात्मक प्रभाव को हम पूरी तरह खारिज भी नहीं कर सकते, निम्नलिखित आधार पर इसे सिद्ध किया जा सकता है —

(1) लोक-कल्याणकारी कार्यों पर अत्यधिक बल दिए जाने के कारण दबाव।

(2) धम्म महामात्र अधिकारी के द्वारा लोगों के जीवन में अत्यधिक हस्तक्षेप किए जाने के विरुद्ध प्रतिक्रिया।

KD Job Updates

(3) अन्त में इस बात को पूरी तरह अस्वीकार नहीं किया जा सकता, एक लंबे समय तक निष्क्रिय रहने के कारण सेना की सक्षमता पर प्रभाव पड़ा होगा।

इसलिए मौर्य साम्राज्य के पतन में ही धम्म नीति की भूमिका को पूरी तरह अस्वीकार नहीं किया जा सकता, फिर भी इसे केवल सहायक कारक के रूप में देखा जा सकता है, मुख्य कारक के रूप में नहीं। मुख्य कारक को और खोजने की जरूरत है।

मौर्यकालीन कला

मौर्य काल में कला का एक स्पष्ट स्वरूप उभर कर आया, इसी टिकाऊपन था क्योंकि इसे पत्थर जैसे कच्चे माल के उपयोग से बनाया गया था। बताया जाता है कि हड़प्पा सभ्यता और मौर्य काल के बीच के 1500 वर्षों के कालान्तराल में कोई महत्वपूर्ण कलाकृति नहीं मिलती। इस आधार पर इस धारणा को भी निकट करने का प्रयास किया गया है कि मौर्य कला अखमिनी कला की अनुकृति थी किन्तु नवीन शोधों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि इसके बीच के काल में भी केवल इस प्रकार की कलाकृतियाँ बनती रही होंगी। परन्तु भूमि से शीघ्र नष्ट

होने वाली वस्तुओं से बनाई जाती थी, इसलिए शीघ्र नष्ट हो गई।

मौर्य कला की विशेषताएं :-

1. मुख्यत: राजकीय आश्रय में पली एवं बढ़ी और मौर्य साम्राज्य के विघटन के साथ लुप्त हो गई।
2. इसकी प्रेरणा मूलत: बौद्ध धर्म से मिली है।
3. मौर्य कला के कुछ रूपों यथा स्तूप एवं गुफा वास्तुकला ने भावी भारतीय कला को प्रेरणा प्रदान की। आगे के विविध कालों में स्तूपों का निर्माण होता रहा तथा मौर्यों के गुफा वास्तुकला ने चैत्य एवं विहार से लेकर पल्लवों के अखंड मंदिर निर्माण कला को भी प्रेरणा प्रदान की।

विविध प्रकार :-

अशोक के स्तंभ :-

बनावट :- चुनार के बलुआ पत्थर से निर्मित अपने स्वरूप में एकाश्म। इसके दो भाग यष्टि एवं गारदूम लाट। यष्टि का अर्थ हुआ स्तंभ और गारदूमलाट का अर्थ है उसका ऊपरी सिरा। स्तंभ के ऊपर के अवांगमुखी ~~छवी~~ कमल निर्मित किया गया था इसके ऊपर एक चौकी बनी होती है तथा चौकी के ऊपर पशु आकृति। इस पर प्राय: चार पशुओं का प्रतिनिधित्व यथा - सिंह, बैल, अश्व, तथा हाथी।

KD Job Updates

Date
27/11/2018

अशोक के स्तम्भ राजत्व की गरिमा व्यक्त करने के साधन बने। यह एक ऐसी प्रवृत्ति की शुरुआत थी जिसका उपयोग आगे राजराजा प्रथम (चोल) (बृहदेश्वर मंदिर) तथा अकबर (बुलंद दरवाजा) जैसे शासकों ने भी किया।

स्तूप :-

इस काल में स्तूपों का निर्माण आरंभ हुआ। स्तूप निर्माण बौद्ध पंथ से जुड़ा हुआ था। जनजातीय लोगों में यह प्रचलन था कि जनजाति मुखिया की मृत्यु के पश्चात उन्हें दफनाया जाना और उस पर एक टीला बना दिया जाना। एक लोकधर्म होने के नाते बौद्ध पंथ ने इस लोकतत्व को ग्रहण किया। फिर अशोक ने बौद्ध पंथ के सम्मान में इस पद्धति को अपनाया। वैसे तो बौद्ध परंपरा में अशोक को 84000 स्तूपों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। परन्तु यह मिथक है। पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर हमें केवल एक स्तूप की ही सूचना मिलती है और वह है — साँची का महान स्तूप।

स्तूप अपनी बनावट में अर्द्धवृत्ताकार होता था। आरंभिक स्तूप ईंटों से निर्मित किया जाता। उसका ऊपरी भाग समतल होता था। उसमें एक चैम्बर बनाया जाता जिसे हर्मिका कहा जाता था। उस हर्मिका में सोने अथवा चाँदी की डिबिया में बुद्ध अथवा किसी महत्वपूर्ण संत का अवशेष रखा जाता। उसके ऊपर एक खंभा बना होता था।

आरंभ में वह लकड़ी से निर्मित होता था। आगे वह पत्थर से निर्मित किया जाने लगा। स्तूप को एक अहाते से घेरा जाने लगा जाता था।

गुफा वास्तुकला

अशोक और उसके पौत्र दशरथ ने गया में क्रमशः बराबर एवं नागार्जुनी पहाड़ी में गुफाएँ निर्मित करायी और आजीविक संतों के निवास के लिए अनुदान में दी। आरंभिक गुफाएँ बनावट में काफी सादा होती थी। गुफा के मुख को आयताकार काटा जाता था और अंदर की तरफ खोदकर कमरा बनाया जाता। साथ ही इसके दरवाजे और छत पर काली लेप चढ़ायी जाती।

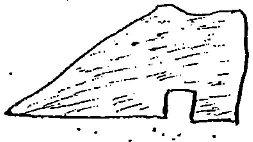

अशोक ने गुफा वास्तु कला के रूप में एक ऐसी प्रवृत्ति विकसित की ~~जिसने~~ जिसने भारतीय वास्तुकला को एक नवीन दिशा दे दी। (आगे इसका विकास उन्नत रूप में निर्मित चैत्य एवं विहार के साथ-साथ मंदिरों के रूप में भी देखने को मिलता।)

लोक कला

राज्य संरक्षण से दूर कला लोक संरक्षण में भी पलती एवं बढ़ती रही थी। इसका उदाहरण है — यक्ष यक्षिणी की मूर्तियाँ। ये पत्थर से निर्मित हैं तथा खुले आकाश के नीचे खड़ी मिलती हैं। इनमें परखम के यक्ष, दीदारगंज के चाँवरग्राही एवं बेसनगर (विदिशा) की यक्षणी की मूर्तियाँ महत्वपूर्ण हैं। ये मूर्तियाँ काफी जीवंत हैं। इन मूर्तियों ने आगे भारतीय मूर्तिकला को एक नई दिशा दी।

KD Job Updates

साहित्य :-

संस्कृत साहित्य → इस काल में संस्कृत साहित्य की वैसी प्रगति देखने को नहीं मिलती क्योंकि इसे मौर्य साम्राज्य का संरक्षण नहीं मिला था। परन्तु संस्कृत में रचनाएँ की जाती रही थी। उदाहरण के लिए – कौटिल्य का अर्थशास्त्र तथा कात्यायन की वर्तिका (व्याकरण)।

पालि / प्राकृत :-

① **राजकीय भाषा** :- प्राकृत की लोकप्रियता को देखते हुए अशोक ने इसे राजकीय भाषा के रूप में उपयोग किया। साम्राज्य के अधिकांश भाग में फैले हुए अशोक के अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखे मिलते हैं।

② **बौद्ध ग्रंथ** :- ऐसा माना जाता है कि इस काल में चलकर त्रिपिटक पूर्ण हुआ। क्योंकि पाटलिपुत्र के बौद्ध सम्मेलन में अभिधम्म पिटक अथवा इसका एक भाग कथावस्तु जोड़ा गया।

③ **जैन ग्रंथ** :- पाटलिपुत्र के सम्मेलन में श्वेतांबर तथा दिगंबर के बीच विभाजन के पश्चात् प्रचलित जैन ग्रन्थ (14) वर्ग से (12) अंगों में विस्थापित हो गया।

KD Job Updates

मौर्योत्तर काल (200 ई० पू० से 300 ई०)

अध्ययन के स्रोत

साहित्यिक साक्ष्य

(1) ब्राह्मण साहित्य

(a) पुराण :- इस काल में पुराणों का संकलन आरंभ। पुराणों से विभिन्न राजवंशों की वंशावली स्पष्ट होने लगी।

(b) महाकाव्य - इस काल में रामायण एवं महाभारत भी इतिहास जानने के प्रमुख स्रोत बने।

(2) बौद्ध साहित्य

महायान साहित्य संस्कृत भाषा में लिखा गया। हमें बड़ी संख्या में अवदान मिलते हैं। यह हीनयान साहित्य के जातक कथा से समानता रखते हैं। फिर इस काल की एक रचना मिलिंदपन्हो है जो महायान बौद्ध साहित्य होते हुए भी प्राकृत भाषा में लिखी गई है।

पुरातात्विक साक्ष्य

(a) भूमि अनुदान :- जैसा कि हम जानते हैं कि भूमि-अनुदान एक शताब्दी ईसा पूर्व में सातवाहन शासकों ने आरंभ किया। फिर अन्य राजवंशों ने भी अपनाया।

KD Job Updates

इसलिए इस काल के स्रोत के रूप में भूमि दानपत्र अध्ययन से स्थापित हो जाता है। भूमि अनुदान अपने स्वरूप में धार्मिक तथा ब्राह्मणों एवं बौद्ध भिक्षुओं को दिए जाते थे। ये दानपत्र ताँबे पर खुदवाए जाते। इसलिए इन्हें ताम्रपत्र पर भी कहा जाता। चूँकि भूमि अनुदान के साथ अनुदानकर्ता, अनुदानप्राप्त कर्ता, अनुदान के अवसर इन सभी की चर्चा मिलती। इसलिए इन दानपत्रों से राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक इतिहास पर भी प्रभाव पड़ता।

(b) **सिक्के :-**

इस काल में सिक्के अध्ययन स्रोत के रूप में अधिक महत्वपूर्ण हो गए क्योंकि जहाँ पूर्वकाल में आहत सिक्के निगमों के द्वारा जारी किए जाते थे वहीं इस काल में विभिन्न राजवंशों के द्वारा सिक्के जारी किए गए। इण्डो-ग्रीक प्रथम राजवंश था जिसने राजवंश के नाम पर सिक्के जारी किए। इन सिक्कों से निम्नलिखित बातों पर प्रकाश पड़ता —

• **राजनीतिक इतिहास :-**

(i) सिक्कों पर राजाओं के नाम लिखे हैं तथा राजवंशों की भी चर्चा है। इसलिए इन सिक्कों के माध्यम से वंशावलियाँ स्पष्ट होती। हम सिक्कों के आधार पर ही पता कर सके हैं कि भारत में तीस इण्डोग्रीक शासकों ने समानांतर रूप रूप में शासन किया था।

(ii) सिक्कों पर राजाओं के द्वारा बड़ी-2 उपाधियाँ अंकित किए जाने से यह ज्ञात होता है कि इन शासकों के अधीन अन्य छोटे-छोटे ~~शासक~~ शासक भी रहे होंगे।

(iii) सिक्कों पर राजाओं के साथ देवता के चित्र अथवा नाम राजत्व के दैवीकरण की ओर संकेत करता।

(iv) कुछ गणराज्यों की सूचना उनके सिक्कों के माध्यम से ही मिल पाती यथा — यौधेय, अर्जुनायन आदि।

- **आर्थिक** :

(i) सिक्कों की बहुलता : इस काल में सोने, चाँदी के सिक्कों के अतिरिक्त तांबे, काँसे, सीसे, पोटीन तथा शीशे तक के सिक्के जारी किए गए। सातवाहन शासकों ने शीशे के सिक्के जारी किए। सिक्कों की बहुलता है कि यह तथ्य दर्शाता है कि व्यापार विकसित अवस्था में थी तथा निचले स्तर तक मुद्रा-~~अर्थव्यवस्था~~ अर्थव्यवस्था का प्रसार हो चुका था।

(ii) दक्षिण भारत से रोमन शासक, आगस्टस और टाईबेरियस के सिक्के प्राप्त होना यह दर्शाता है कि रोमन साम्राज्य के साथ दक्षिणी भारत का गहरा व्यापारिक संबंध था।

(iii) सातवाहन शासक यज्ञश्री शातकर्णी के सिक्कों पर नाव का चित्र अंकित होना व्यापार और उसके आकर्षण को दर्शाता है।

(iv) कुषाणों के सोने के ~~सिक्के~~ सिक्के रोमन वेट पर जारी किए गए थे। फिर इन सिक्कों में धातु की शुद्धता यह दर्शाती है कि अर्थव्यवस्था में खुशहाली थी और प्रचुर मात्रा में कीमती धातु उपलब्ध था।

- **धार्मिक** :

(1) इन सिक्कों पर देवताओं के चित्र तथा नाम संबंधित शासकों के धार्मिक विश्वास पर ~~प्रका~~ प्रकाश डालता है तथा यह भी दर्शाता है कि इस काल में किन देवताओं को विशेष महत्व प्राप्त था।

(2) इस काल में सिक्कों पर ~~धार्मिक~~ आर्य देवताओं के साथ-2 गैर आर्य देवता अथवा देवी की उपस्थिति यह दर्शाती है कि इस काल में धर्म के क्षेत्र में आर्य तथा गैर-आर्य तत्वों के बीच सामंजस्य हो रहा था।

(3) उदाहरण के लिए कुषाण सिक्कों पर उमा देवी का चित्र है।

KD Job Updates

(3) कुषाण शासकों के सिक्कों पर देशी देवताओं के अतिरिक्त यूनानी तथा ईरानी देवताओं की उपस्थिति यह दर्शाती है कि धर्म के क्षेत्र में देशी तथा विदेशी तत्वों के बीच भी सामंजस्य बैठ रहा था।

(C) अभिलेख :- पूर्व काल में अशोक के अभिलेख इतिहास जानने के प्रमुख साधन के रूप में स्थापित हुए थे। मौर्योत्तर काल में भी विभिन्न शासकों के द्वारा न केवल अभिलेख जारी किए गए बल्कि इन अभिलेखों के स्वरूप में भी परिवर्तन आया, जो इस प्रकार है :—

(1) कुछ अभिलेख राजा की प्रशस्ति के रूप में जारी किए गए यथा खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख आदि।

(2) अभिलेखों का झुकाव प्राकृत भाषा से संस्कृत भाषा की ओर होने लगा। इसका अर्थ है कि भाषा के रूप में संस्कृत का महत्व बढ़ने लगा। उदाहरण के लिए गौतमी ~~प्रथम~~ बलश्री ~~पत्नी~~ का नासिक अभिलेख तथा खारवेल का हाथीगुंफा अभिलेख ये प्राकृत भाषा में लिखे गए थे परन्तु रुद्रदामन ने जूनागढ़ में संस्कृत का पहला बड़ा अभिलेख खुदवाया। उसी प्रकार कुषाणों का सुईविहार अभिलेख भी संस्कृत में लिखा गया।

(3) इन अभिलेखों से राजनीतिक इतिहास के अतिरिक्त धार्मिक तथा आर्थिक इतिहास पर भी प्रकाश पड़ता है।

प्रश्न :- सातवाहन एवं कुषाण सिक्कों के आधार पर उस काल के राजनीतिक एवं धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न :- मौर्योत्तर काल के राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन के अध्ययन में भूमिदान पत्र एवं सिक्कों के महत्व को रेखांकित कीजिए।

KD Job Updates

राजनीतिक स्थिति

यह वह काल था जब एक मौर्य साम्राज्य की जगह कई राज्य अस्तित्व में आए तथा फिर बहुराज्यीय व्यवस्था कायम हुई। इन राज्यों में से दो यथा सातवाहन एवं कुषाण साम्राज्य के स्तर तक पहुँच सके। बहुराज्यीय व्यवस्था विकसित करने में निम्न कारकों की भूमिका रही थी —

(1) उत्तराधिकारी राज्यों का निर्माण :-

(a) शुंग राज्य : इसका संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था। इस वंश ने लगभग 185 ई० पू० से 75 ई० पू० के बीच शासन किया था। ~~स्वर्णि~~ पुराणों के अनुसार (10) शासकों ने शासन किया। पुष्यमित्र शुंग का निकटस्थ उत्तराधिकारी अग्निमित्र था। आगे वह कालिदास की रचना 'मालविकाग्निमित्रम' का नायक बना। उसके पुत्र ~~वसु~~ वसुमित्र ने उत्तर-पश्चिम से होने वाले यवन आक्रमण का सामना किया था। ~~इस~~ इस वंश के एक शासक भागवत के दरबार में एक यूनानी राजदूत हेलियोडोरस आया था तथा इसने वासुदेव कृष्ण के सम्मान में शुंगों की राजधानी विदिशा में गरुड़ध्वज की स्थापना कराई। इस वंश का अंतिम शासक देवभूति था, इसे गद्दी से हटाकर उसका ब्राह्मण मंत्री वासुदेव ने कण्व वंश की स्थापना की।

(b) कण्व वंश :- इस वंश का संस्थापक वासुदेव था। इस वंश में चार ही शासक हुए — वासुदेव, भूमिमित्र, नारायण एवं सुशर्मन फिर जैसा कि पुराणों से सूचना मिलती है कि इन्हें सातवाहनों ने 30 ई० पू० में उखाड़ फेंका।

~~(c) सातवाहन~~

(2) विदेशी आक्रमणों के माध्यम से स्थापित राज्य :

(a) इंडो-ग्रीक :- इण्डो-ग्रीक मध्य एशिया में बैक्ट्रिया में स्थापित थे परन्तु उन पर एक दूसरे जनजाति समूह शकों का दबाव बढ़ रहा था।

फिर इण्डो-ग्रीक शासक डेमेट्रियस ने भारत की ओर देखा तथा लगभग 183 ई. पू. में उत्तर पश्चिम भारत के एक भाग को जीत लिया और साकल को अपनी राजधानी बनाई परन्तु तभी बैक्ट्रिया पर इंडो-ग्रीक के दूसरे राजवंश युक्रेटाइड्स ने कब्जा कर लिया और वह भी भारत की ओर बढ़ा तथा फिर उसने भी उत्तर पश्चिम के एक भू-भाग को जीता और उसने तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाई। इस प्रकार इंडो-ग्रीक के दो राजवंश समानांतर रूप में शासन करते रहे। इनकी पहचान इनके सिक्कों से की जाती है। आगे डेमेट्रियस के वंश का ही एक शासक मिनाण्डर हुआ। इसका वार्तालाप एक प्रमुख बौद्ध संत नागसेन के साथ हुआ। यह वार्तालाप 'मिलिन्दपन्हो' नामक ग्रंथ में संकलित है। नागसेन की पहचान 'नागार्जुन' से हुई है।

(b) शक राजवंश

आगे शकों ने बैक्ट्रिया पर कब्जा कर लिया और फिर उन्होंने भारत को भी जीता। जैसा कि हमें सूचना मिलती है कि विभिन्न शक राजवंश अलग-अलग क्षेत्र में शासन करते रहे थे यथा एक शाखा अफगानिस्तान में स्थापित हुई थी, दूसरी शाखा पंजाब में, तीसरी शाखा मथुरा में, चौथी शाखा पश्चिम भारत में और पाँचवी शाखा उत्तरी दक्कन में। इनमें पश्चिम भारत की शाखा सबसे अधिक महत्वपूर्ण थी। इस क्षेत्र में दूसरी सदी में एक महान शासक रुद्रदामन स्थापित हुआ। वह इतिहास में दो बातों के लिए जाना जाता है — प्रथम, उसने संस्कृत का पहला बड़ा अभिलेख खुदवाया, और ~~इसने~~ उसने ~~महाराज~~ ~~बौद्ध~~ सुदर्शन झील की मरम्मत कराई।

(c) पार्थियन :- भारत में पार्थियन वंश भी स्थापित हुआ। इस वंश के प्रमुख शासक गोंडोफर्निस हुआ। इसका काल इस बात के लिए महत्वपूर्ण है कि उसके काल में भारत में प्रथम इसाई संत टामस का आगमन हुआ।

KD Job Updates

D) कुषाण :- कुषाण यू-ची जनजाति से संबंधित थे। इन्हें संगठित करने का काम कुजुल कडफिसेस और विम कडफिसेस जैसे शासकों ने किया। इन्होंने 50 ई. से 78 ई. के बीच शासन किया। फिर 78 ई. से कनिष्क का आगमन माना जाता है। कनिष्क के अंतर्गत एक विशाल कुषाण साम्राज्य की स्थापना हुई थी जो मध्य एशिया में खुरासान से लेकर उत्तर भारत में बनारस तक फैला हुआ था। कनिष्क इतिहास में दो बातों के लिए जाना जाता है — प्रथम उसने शक संवत चलाया, दूसरा उसने महायान बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया।

राज्य निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से स्थापित नए राज्य :-

अगर भारतीय उपमहाद्वीप में राज्य निर्माण का प्रथम चरण 6वीं सदी ई.पू. तथा उसके बाद देखने को मिलता है, दूसरा चरण ईसा की आरंभिक शताब्दि में। यह वह काल था जब महाराष्ट्र में सातवाहन राज्य, उड़ीसा में खारवेल राज्य और सुदूर दक्षिण में चोल, चेर और पांड्य राज्य स्थापित हुए। नए क्षेत्रों में राज्य निर्माण में उत्तर भारत की भूमिका मानी जाती है। इसके लिए निम्नलिखित कारकों को उत्तरदायी माना जाता है —

1. मौर्य साम्राज्य के माध्यम से भौतिक संस्कृति यथा आहत मुद्रा, उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भाण्ड, धान की रोपाई की पद्धति, लोहे के गलाने की बेहतर पद्धति, घेरेदार कुएं तथा पक्की ईंटों का प्रयोग आदि विभिन्न क्षेत्रों में फैल गए और इन्होंने वहाँ नवीन आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया।
2. उत्तर से ब्राह्मणों, बौद्ध भिक्षुओं एवं जैन भिक्षुओं का भी निरंतर आगमन दक्षिण की ओर होता रहा तथा उसी के साथ नवीन विचारधारा भी फैलती रही।

फिर भी इन क्षेत्रों में राज्य निर्माण का पूरा श्रेय उत्तर भारत को नहीं दिया जा सकता क्योंकि क्षेत्रीय स्तर पर भी आर्थिक रूप से कुछ विकसित क्षेत्रों का उद्भव हुआ तथा इन क्षेत्रों ने राज्य निर्माण में भूमिका निभाई। उदाहरण के लिए सातवाहन क्षेत्र कृषि के लिए उपजाऊ था तथा यहाँ धान का अत्यधिक उत्पादन होता। उदाहरण के लिए गोदावरी तथा कृष्णा नदी के बीच का एक स्थल 'धान्य कटक' के नाम से जाना गया। उसी प्रकार कलिंग क्षेत्र कृषि के दृष्टि से भी उपजाऊ था और फिर यहाँ से मार्ग दक्षिण की ओर जाते थे, इसलिए व्यापारिक गतिविधियों को भी बल मिला। अब जहाँ तक सुदूर दक्षिण में राज्य निर्माण का सवाल है तो हमें ज्ञात है कि कावेरी डेल्टा का क्षेत्र काफी उपजाऊ था। इसके अतिरिक्त सुदूर दक्षिण के राज्यों को रोमन व्यापार का भी लाभ मिला था।

KD Job Updates

Date 28/11/2018

सातवाहन राज्य

सातवाहन शक्ति का संस्थापक शिमुख था तथा आरंभ में यह महाराष्ट्र क्षेत्र में स्थापित हुआ किंतु आगे यह आंध्र और कर्नाटक राज्य में फैल गया और इसने एक साम्राज्य का आकार भी ग्रहण किया। प्रथम महत्वपूर्ण सातवाहन शासक सातकर्णी प्रथम था, परन्तु सातवाहन वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक सम्भवतः गौतमीपुत्र शातकर्णी था। इसने दूसरी सदी में शासन किया था, उसके विजय में हमे सूचना उसकी माता गौतमी बलश्री के अभिलेख से मिलती है जो नासिक से प्राप्त हुई है। हमे यह ज्ञात होता है कि इसने संभवतः उत्तरी दक्कन के शक शासक नहपान को पराजित किया था। इसकी पुष्टि नासिक अभिलेख के साथ-साथ चाँदी के सिक्कों से भी होती है। इसका उत्तराधिकारी वाशिष्ठ पुत्र पुलुमयी हुआ। वह शक शासक रुद्रदमन के समकालीन था और उसके साथ उसका संघर्ष भी होता रहा था। आगे दोनों परिवारों में वैवाहिक संबंध कायम हुए। इस वंश का अंतिम शासक यज्ञश्री सातकर्णी को माना जाता है। बताया जाता है कि व्यापार में उसकी अतिरिक्त रुचि थी, अतः उसके सिक्के पर नाव के साथ-साथ दो पतवारों का भी चिन्ह मिलता है। बताया जाता है कि इस वंश के संभवतः (19) शासकों ने लगभग (300) वर्षों तक शासन किया था, उसके बाद सातवाहन शक्ति का

पतन हो गया तथा उत्तराधिकारी राज्य के रूप में महाराष्ट्र क्षेत्र में वाकाटक और आन्ध्र क्षेत्र में इक्ष्वाकु राज्य की स्थापना हुई।

चेदि वंश :-

उड़ीसा के कलिंग क्षेत्र में चेदि वंश की स्थापना हुई। इस वंश के एक शासक खारवेल का ही विवरण प्राप्त होता है तथा उसे जानने का स्त्रोत भी एकमात्र हाथीगुम्फा अभिलेख है। वह अपने आप को महामेघवाहन के वंश से जुड़ा हुआ बताता है। उदयगिरि पहाड़ी के पास हाथीगुम्फा अभिलेख से सूचना मिलती है कि वह कालानुक्रम की दृष्टि से इस वंश का तीसरा शासक था। (24) वर्ष की आयु में ई० पू० 24 में (प्रथम शताब्दी) वह सिंहासन पर बैठा।

महान विजेता :-

उसने उत्तर और दक्षिण की तरफ अपने राज्य का विस्तार किया। वह दावा करता है कि उसने मगध के मित्र शासक बृहस्पतिमित्र को पराजित कर वहाँ से अपार संपत्ति प्राप्त की। और भगवान ~~जिनकी~~ जिन वह मूर्ति भी उठा कर लाया जिसे (3) शताब्दी पूर्व महापद्मनन्द कलिंग से उठा कर ले गया था। इतना ही नहीं उसने यह भी दावा किया है कि अपने शासन के 12वें वर्ष में उसने सुदूर दक्षिण के पांड्य राज्य पर आक्रमण किया।

KD Job Updates

(2) नए राजवंशों के द्वारा एक नई राजनीतिक व्यवस्था कायम की गई जिसके तहत भारतीय शासकों को पराजित तो किया जाता परन्तु उन्हें गद्दी से वंचित नहीं किया गया बल्कि उन्हें अधीनस्थ शासक के रूप में बने रहने दिया जाता।

ई० पू० 200 से 300 ई० के बीच प्रशासनिक संरचना के निम्नलिखित प्रमुख लक्षण।

(1) शासकों के द्वारा भारी भरकम उपाधियाँ लिया जाना :—

शक, कुषाण एवं सातवाहन शासकों के अधीन एक नए प्रकार के राजनीतिक संबंधों की शुरुआत हुई। वस्तुतः शक, कुषाण एवं सातवाहन शासक भारतीय शासकों को पराजित करते परन्तु उन्हें सत्ता से वंचित न करके अधीनस्थ शासक के रूप में बने रहने देते और उनसे नियमित उपहार एवं राजस्व प्राप्त करते। इस कारण राज्य के अंदर राज्य की स्थिति कायम हुई। आगे इससे सामंती संबंधों को प्रोत्साहन मिला। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इस स्थिति को 'धर्म विजय' की अवधारणा के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

[अशोक के धर्म विजय एवं कौटिल्य के धर्म विजय में भिन्न अंतर।]

ऐसी स्थिति में अधीनस्थ शासकों से

1) अपनी स्थिति को पृथक करने के लिए शासकों द्वारा भारी भरकम उपाधियाँ ली जाने लगी थीं — महाराजा, राजा, तिराजा, परमेश्वर आदि। महाराजाधिराजा,

2) राजत्व का दैवीयकरण :—

इस काल में शासकों ने अपनी तुलना देवता से आरंभ कर दी। कुषाणों ने चीनी शासकों के मॉडल पर देवपुत्र की उपाधि ली। वहीं सातवाहन शासकों ने अपनी तुलना अर्जुन, भीम, कृष्ण तथा बलराम से की।

वस्तुतः इस काल के अधिकांश राजवंशों की या तो विदेशी उत्पत्ति थी अथवा जनजाति। अतः अपने राजवंश के लिए वैधता प्राप्त करने तथा जनसामान्य पर अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए उन्होंने अपनी तुलना देवताओं से आरंभ कर दी।

3) चूँकि इस काल में राज्य का भौगोलिक क्रम हुआ, इसलिए मौर्यकाल की तुलना में अधिकारियों की संख्या में भी अपेक्षा कृत कमी आई। इस काल में सातवाहन शासकों के अधीन महत्वपूर्ण अधिकारी के रूप में महामात्य अथवा अमात्य का विवरण प्राप्त होता है।

4) ~~राज्य के अधीन~~ जनजाति क्षेत्रों पर नियंत्रण के लिए उठाए गए कदम :—

इन राज्यों के अधीन एक बड़ा जनजाति क्षेत्र भी होता था। अतः उस क्षेत्र पर नियंत्रण

KD Job Updates

बनाए रखने हेतु राज्य प्रायः दो प्रकार के कदम उठाता था —

(a) जनजाति क्षेत्र में सैनिक गवर्नरों की नियुक्ति :-

(b) उदाहरण के लिए इंडोग्रीक शासकों ने स्त्रातेगो तथा सातवाहनों ने गौल्मिक नामक अधिकारी की नियुक्ति की।

(b) भूमि अनुदान :-

ब्राह्मणों एवं बौद्ध भिक्षुओं को भूमि अनुदान के माध्यम से जनजाति क्षेत्रों में स्थापित किया गया ताकि वे जनजातीय लोगों के बीच आर्य संस्कृति का प्रसार भी करें और उन्हें स्नुसासित जीवन की शिक्षा दें अर्थात् पूर्वकाल में जो भूमिका अशोक के धम्म ने निभाई थी, वही भूमिका भूमि अनुदान के द्वारा निभाया जा रहा था।

(c) प्रशासन में क्षेत्रीय तत्वों की भागीदारी :-

जब निचले स्तर पर राज्य का दबाव कम हो रहा था तो फिर प्रशासन में क्षेत्रीय तत्वों को भी भागीदारी दी जा रही थी। सातवाहनों के अधीन नगर प्रशासन में नगर परिषद् गठित किए जाने का विवरण प्राप्त होता है।

प्रश्न :- ई०पू० 200 तथा 300 ई. के बीच प्रशासनिक संरचना में कुछ विशिष्ट लक्षण उभरने लगे थे। इस कथन का परीक्षण कीजिए। (200 शब्द)

अर्थव्यवस्था

मौर्योत्तर काल तक आकर मौर्यकालीन प्रशासनिक केन्द्रीयता में ह्रास होगा तथा अर्थव्यवस्था पर राज्य का नियंत्रण कम हुआ परन्तु इससे अर्थव्यवस्था में ह्रास होने की बजाए इसमें और भी विस्तार देखा गया और इस विस्तार के निम्नलिखित कारण थे —

(1) भूमि अनुदान के माध्यम से गैर-आबाद भूमि को आबाद करना।

(2) भारतीय उपमहाद्वीप का एक व्यापक व्यापारिक नेटवर्क से जुड़ जाना जो पश्चिम में रोमन साम्राज्य से लेकर पूरब में चीन एवं द० पू० एशिया तक फैला हुआ था।

कृषि अर्थव्यवस्था :—

प्रेरित करने वाले कारक :

(1) भूमि अनुदान के माध्यम से गैर आबाद भूमि को आबाद करने का प्रयास।

(2) कृषि को प्रोत्साहित करने के लिए भूमि को आबाद करने वाले उद्यमी को भूमि का स्वामित्व दे दिया जाता था। उदाहरण के लिए मनुस्मृति में कहा गया है कि भूमि उसकी होती है जो उसके कारण झुण्ड को साफ करके इसे आबाद करता है।

KD Job Updates

(3) राज्य की ओर से सिंचाई के विकास के लिए कदम उठाया जा रहा था। तथा सिंचाई की तकनीकी में भी परिवर्तन आ रहा था —

(a) कनिष्क द्वारा पेशावर में एक नहर बनाए जाने की सूचना मिलती है।

(b) शक शासक रुद्रदामन को सुदर्शन झील की मरम्मत करवाने का श्रेय दिया जाता है।

(c) कलिंग के शासक खारवेल ने भी अपनी राजधानी में एक नहर के जीर्णोद्धार का दावा किया है।

(d) एक सातवाहन शासक हाल के द्वारा लिखित 'गाथासप्तशती' से सिंचाई के लिए अरहट्ट जैसी तकनीकी के प्रयोग की सूचना मिलती है।

(e) उत्तरी कोंकण में नारियल की खेती किए जाने की सूचना मिलती है। इस काल में विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन हो रहा था। गोदावरी नदी एवं कृष्णा नदी के बीच सातवाहनों के धान का इतना अधिक उत्पादन होता था कि इस स्थल को धान्य कटक का नाम दे दिया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के दालों का भी उत्पादन होता है।

शिल्प एवं उद्योग :—

शिल्प एवं उद्योग विकसित अवस्था में थे। मौर्योत्तर काल से सम्बन्धित एक बौद्ध ग्रंथ 'मिलिन्दपन्हो' में (75) प्रकार के व्यवसायों का

जिक्र किया गया जिसमें केवल हिन्दू ही संबद्ध है।

अगर हम विभिन्न उद्योगों पर दृष्टिपात करते हैं तो ज्ञात होता है कि काठियावाड़ एवं मगध लौह-उपकरणों के उत्पादन के लिए, मगध वृक्ष के रेशों से बने वस्त्रों के लिए, मथुरा एवं शाटक नामक वस्त्र के उत्पादन के लिए, उज्जैन मनका बनाने वाले कारखाने के लिए तथा उड़ीसा का दन्तपुर हाथी दांत के काम के लिए जाना जाता।

श्रेणी एवं निगमों की भूमिका

शिल्पियों के संगठन को श्रेणी व व्यापारियों के संगठन को निगम कहा जाता था। श्रेणी का प्रधान ज्येष्ठक और निगम का प्रधान सार्थवाह होता था। ज्येष्ठक श्रेणी का संचालन एक समिति की सहायता से करता था।

मौर्यकाल की तुलना में इस काल में श्रेणी ~~एवं निगम विकास था~~ एवं निगमों को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त थी। श्रेणियों के अपने कानून होते थे जो राज्य कानून के समानांतर चलते थे। श्रेणियों के अपने ~~दण्ड~~ झण्डे होते थे, अपनी मुहरें होती थी तथा अपनी सुरक्षा के लिए वह निजी सेना भी रखते थे।

आर्थिक क्षेत्र में भूमिका :-

(a) श्रेणियों के द्वारा वस्तुओं के मूल्य का निर्धारण

(b) वस्तुओं की गुणवत्ता का निर्धारण।

(c) बैंक की तरह लोगों के रुपये को जमा करना।

(d) ब्याज पर रुपये उधार देना।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में भागीदारी :-

श्रेणियाँ सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में भी अपनी भूमिका निभाती थी तथा ~~सदस्यों~~ सदस्यों पर अपना प्रभाव रखती थी। कहा जाता है कि अगर कोई महिला बौद्ध संघ की सदस्यता ग्रहण करनी चाहिए तो उन्हें अपने पति के साथ-2 पति के श्रेणी की भी अनुमति लेनी पड़ती थी।

फिर श्रेणियों के द्वारा स्तूप, चैत्य एवं विहारों का निर्माण कराया जाता है और उनके संरक्षण के लिए अनुदान भी दिया जाता। इस प्रकार श्रेणियाँ केवल आर्थिक जीवन में ही भूमिका नहीं निभाती बल्कि कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व का भी निर्वाहन करती।

ई०पू० 200 तथा 300 ई. के बीच आंतरिक एवं वाह्य व्यापार को प्रेरित करने वाले कारक :-

(1) व्यापक कृषि अधिशेष जिस कारण ग्रामीण क्षेत्र से नगरीय क्षेत्र में अतिरिक्त ~~अधिक~~ ~~अतिरिक्त~~ खाद्यान्न उत्पादन को उपलब्ध

बनाना संभव हुआ।

2) एक सक्षम उपभोक्ता वर्ग का उद्भव :-

(a) कृषि अधिशेष ने एक कुलीन वर्ग को स्थापित किया, जिन्होंने विलासिता संबंधी सामग्रियों की माँग बढ़ाई।

(b) इस काल में बौद्ध एवं जैन संघों में भी काफी धन इकट्ठा हो गया था और वहाँ स्तूप पूजा एवं मूर्तिपूजा आरंभ हो गई, अतः बौद्ध एवं जैन संघों ने भी उपभोक्ता की भूमिका निभाते हुए विलासिता संबंधी वस्तुओं की माँग बढ़ा दी।

3) उन्नत यातायात साधनों का विकास :-

(a) उत्तरापथ का विकास तो पूर्व काल से ही हो चुका था। इस काल में दक्षिणापथ का भी विकास हुआ। दक्षिणापथ में निम्न मार्ग शामिल थे। एक मार्ग उज्जैन को अमरावती से, एक मार्ग नासिक को प्रतिष्ठान से, एक मार्ग भड़ौच से सोपारा तक जोड़ता था। सबसे बढ़कर मध्य एशिया से एक प्रसिद्ध रेशम मार्ग गुजर रहा था जो सीधा चीन को रोमन साम्राज्य से जोड़ता था। रेशम मार्ग के एक भाग पर कुषाणों का भी अधिकार था।

Date
29/11/2018

भूमि मार्ग के समानांतर जलमार्ग का विकास हुआ और प्रथम सदी के बाद इसका महत्व काफी बढ़ गया क्योंकि मानसून की खोज हुई। मिस्र के एक नाविक हिप्पेलस ने प्रथम सदी में मानसून की खोज की।

इस कारण अरब सागर में नौपरिवहन आसान हो गया। पश्चिम से भारतीय बंदरगाह पर 40 दिनों में जलयान पहुँचने लगे। मानसून के सहारे जून में यात्रा शुरू की जाती, इसे एपिको कहा जाता।

'पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी' के लेखक ने भारत में अनेक बंदरगाहों का जिक्र किया है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण इस प्रकार थे - सिंधु नदी के मुहाने पर बारबेरीकम, गुजरात में बेरीगाजा (भड़ौच), महाराष्ट्र में सोपारा तथा मालाबार तट पर टेंडिस मुजिरिस तथा नेल्सिंडा, इनमें मुजिरिस एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था और पूरब में बंगाल में ताम्रलिप्ति एक महत्वपूर्ण बंदरगाह एक रूप में स्थापित था।

[एरीथ्रियन सी का अर्थ है - अरब सागर, लाल सागर एवं बंगाल की खाड़ी।]

रेशम के व्यापार में भी भूमि मार्ग के समानांतर जल मार्ग का महत्व बन रहा था। इसका कारण था पार्थियाई साम्राज्य और रोमन साम्राज्य के बीच प्रतिस्पर्धा, कई बार दोनों के बीच तनाव के कारण पार्थियाई साम्राज्य इस

KD Job Updates

मार्ग को अवरुद्ध करने का प्रयास करता तो चीन रेशम उत्पाद को भारत की ओर मोड़ देता और फिर भारत का भूमि मार्ग पार करते हुए यह पश्चिमी तट पर लाया जाता। वहाँ से सामुद्रिक मार्ग से रोम को निर्यात किया जाता। [एक दिलचस्प तथ्य यह है कि भारत की सहायता के बिना चीन रेशम मार्ग का संचालन नहीं कर सकता था। यही वजह है कि वर्तमान में BRI (Belt & Road Initiative) के लिए चीन भारत की सहायता पाने के लिए इच्छुक है।]

भारत के व्यापारी सहयोगी

पश्चिम में रोमन साम्राज्य, मध्य एशिया, पश्चिम एशिया तथा NE अफ्रीका के क्षेत्र, पूरब में चीन तथा S-E एशिया के देश।

निर्यात की प्रमुख मदें :-

मसाले विशेषकर काली मिर्च, लोहे से निर्मित पाकशाला की वस्तुएँ, मोती, रेशमी वस्त्र, औषधि की वस्तुएँ आदि।

आयात की वस्तुएँ :-

कीमती धातु के रूप में सोने एवं चाँदी, शराब एवं शराब के दोहत्थे कलश, अरेटाईन मृद्भाण्ड (रोम से आयातित मृद्भाण्ड), शीशे की बनी वस्तुएँ आदि।

व्यापार संतुलन निश्चय ही भारत के पक्ष में था क्योंकि इस काल का एक रोमन

लेखक प्लिनी ने रोम से भारत की ओर कीमती धातुओं के प्रवाह पर आँसू बहाया है।

प्रश्न :- प्लेनी के इस कथन का औचित्य निर्धारित कीजिए कि रोम के स्वर्ण का भारत के द्वारा बहिर्गमन ईसा की प्रथम शताब्दी में किया जा रहा था।

Average writing :- (1) रोमन व्यापार का विकास कैसे हुआ ?
(2) इस व्यापार का संचालन भूमि मार्ग से सामुद्रिक मार्ग से हो रहा था।
(3) भारत से किन वस्तुओं का निर्यात हो रहा था।
(4) किस प्रकार रोम इन वस्तुओं का मूल्य कीमती धातु के रूप में चुका रहा था। इस कारण संभवतः रोम की अर्थव्यवस्था के पर दबाव बढ़ रहा था। इस तथ्य को प्लिनी ने स्पष्ट किया है।

Standard writing :-
भूमिका :- ईसा की आरंभिक शताब्दियों में रोमन साम्राज्य के विकास में न केवल भारत और रोम की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है बल्कि पश्चिमी विश्व और पूर्वी विश्व के जटिल संबंधों को भी उजागर करता है।

1st para :- रोमन कुलीन वर्ग का पूर्वी वस्तुओं की ओर आकर्षण बढ़ रहा था। इससे पूर्व सिकंदर के आक्रमण के पश्चात भारत और भूमध्य सागरीय क्षेत्र के बीच कई व्यापारिक मार्ग कायम हो चुके थे और इसलिए ईसा के आरंभिक शताब्दियों के बीच रोमन साम्राज्य का उद्भव हुआ। पूर्वी वस्तुओं में
- - - - - । इसलिए प्लिनी शोषण व्यक्त करता है।

KD Job Updates

II para -

यह कोई नई बात नहीं थी, अगर हम इतिहास का अन्वेषण करते हैं तो पाते हैं कि जब भी भूमण्डलीकृत अर्थव्यवस्था आई तो व्यापार संतुलन भारत और चीन के पक्ष में बना रहा। इसके दो कारण रहे — प्रथम पूर्वी विश्व में अपार संसाधन होना / दूसरे पूर्वी संस्कृति के साथ-2 पूर्वी वस्तुओं के प्रति पश्चिम का आकर्षण / यह स्थिति औद्योगिक क्रांति तक कायम रही /

III rd para -

परंतु अगर हम धन के बहिर्गमन शब्द के औचित्य का परीक्षण करते हैं तो यह ज्ञात होता है कि यह प्रतिकूल व्यापार संतुलन स्वाभाविक रूप में प्रकट हुआ था और इसका कारण रहा था पूर्वी वस्तुओं में रोमन कुलीन वर्ग की रुचि इसे बदलने में सरकार भी नाकाम थी / यह जबरन थोपा हुआ बहिर्गमन नहीं था जैसा कि हम ब्रिटिश शासन में भारत के अन्तर्गत देखते हैं /

निष्कर्ष -

इसलिए असमान व्यापार संतुलन के बाद भी धन के बहिर्गमन शब्द पर सावधानी से विचार करने की जरूरत है /

KD Job Updates

धर्म

धर्म को प्रभावित करने वाले कारक :-

इस काल में सबसे महत्वपूर्ण कारण रहा धर्म के क्षेत्र में जनजाति तत्वों का आगमन तथा आर्य एवं गैर आर्य तत्वों के बीच सामंजस्य ।

विशेषताएँ :-

(1) भक्ति की अवधारणा :- गैर आर्य पंथ से लिया गया ।

(2) अवतारवाद :- आर्य एवं गैर आर्य देवताओं के बीच सामंजस्य लाया गया ।

(3) मूर्तिपूजा :- अब बुद्ध, बोधिसत्व, ब्राह्मण देवता एवं जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ बनने लगी ।

(B) ब्राह्मण पंथ :

(i) वैष्णव पंथ

मथुरा क्षेत्र में ~~पंचवृष्णि~~ ~~पंचवृष्णि~~ पंचवृष्णि नामक देवता के रूप में स्थापित यथा - वासुदेव संकर्षण (बलराम)

अष्टाध्यायी, छांदोग्य उपनिषद तथा मथुरा के मोरा अभिलेख में वासुदेव कृष्ण की चर्चा ।

KD Job Updates

आगे वासुदेव कृष्ण का एकीकरण एक दूसरे गैर - आर्य देवता नारायण के साथ। नारायण के उपासक हिमालय की तलहटियों में बसते तथा चरवाहे थे। आगे इन दोनों के ऊपर एक आर्य देवता विष्णु आरोपित। इस प्रकार वैष्णव पंथ का विकास

(ii) शैव पंथ :

एक गैर आर्य देवता शिव का एक आर्य देवता रुद्र के साथ एकीकरण।

(iii) मातृदेवी :

मातृदेवी की उपासना आरंभ।

बौद्ध पंथ :

बौद्ध पंथ में हीनयान के समानांतर महायान बौद्ध पंथ का विकास। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ —

1. महायान में बुद्ध की जगह बोधिसत्व का महत्व बढ़ गया।
2. जहाँ हीनयान में प्रतीकों की पूजा होती थी, वहीं अब महायान में मूर्तिपूजा आरंभ हो गई।
3. महायान बौद्ध पंथ के अंतर्गत संघों में धन इकट्ठा होने लगा जिसका उपयोग स्तूप, चैत्य एवं विहारों के निर्माण पर किया जाने लगा।
4. हीनयान की पालि भाषा की जगह महायान ने संस्कृत भाषा को अपनाया।

KD Job Updates

जैन पंथ :- जैन पंथ में भी अब तीर्थंकरों की पूजा आरंभ हो गई।

निष्कर्ष :- ई० पू० 200 तथा 300 ई. के बीच धर्म के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों के परिणामस्वरूप धर्म का वह जटिल स्वरूप उभर कर आया, जिसकी पहचान आगे चलकर हिन्दू धर्म के रूप में हुई।

प्रश्न :- ई० पू० 200 तथा 300 ई. के बीच धर्म के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन भारत के इतिहास के महत्वपूर्ण मुद्दों को सिद्ध हुए। इस कथन का परीक्षण कीजिए।

मौर्यकाल के बाद पाँच शताब्दियों के काल को अंधकार युग की संज्ञा किसने दी और किस आधार पर?

एक साम्राज्यवादी लेखक विंसेंट स्मिथ ने अंधकार युग की अवधारणा दी और एक राष्ट्रवादी विद्वान के. पी. जायसवाल ने इसकी पुष्टि की।

अंधकार युग कहे जाने का आधार :

(1) इस काल को विदेशी आक्रमण का काल घोषित किया गया।

KD Job Updates

(2) इस काल को दो साम्राज्यों (मौर्य एवं गुप्त) के बीच राजनीतिक विघटन का काल माना गया।

(3) ऐसा माना गया कि शक और कुषाण जैसे विदेशी शासक आए उन्होंने बैलों और सांडों की बलि चढ़ाई तथा भारतीय संस्कृति को प्रदूषित किया।

परंतु निम्नलिखित आधार पर इस मत का खंडन करना संभव —

(1) शासकों को देशी और विदेशी के बीच बाँटकर देखना सही नहीं। शक शासकों के लगभग 400 वर्षों तक गुजरात पर शासन किया था, तो क्या यह बिना देशी स्वीकृति के संभव था।

(2) राजनीतिक विघटन का काल कहना उचित नहीं। प्रथम — राज्यों की संख्या में वृद्धि नए राज्यों के निर्माण के कारण। दूसरे, इनमें से कम से कम सातवाहन एवं कुषाण राज्य साम्राज्य के स्तर पर पहुँच गए।

(3) कुषाण शासक कनिष्क महायान बौद्ध पंथ के संरक्षक। उससे पूर्व शासक वीमा कडफिसस शैव पंथ का संरक्षक था; उसके सिक्के पर शिव, नंदी एवं त्रिशूल का चित्र अंकित। फिर कुषाणों को बैल एवं सांडों की बलि चढ़ाने वाला करार देना कहाँ तक उचित।

KD Job Updates

Date
01/12/201

(5) हम इस तथ्य को भी अस्वीकार नहीं कर सकते कि भारत में संस्कृत के अभिलेख का प्रचलन तथाकथित विदेशी शासकों ने ही चलाया है। उदाहरण: रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख।

(6) यह काल आर्थिक दृष्टि से प्रगति का काल था क्योंकि रोमन व्यापार से भारत को व्यापक आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा था तथा भारत में कीमती धातुओं का आगमन हो रहा था।

(7) यह भारत और भूमध्य सागरीय क्षेत्र के बीच आर्थिक संबंधों का ही नहीं बल्कि तीव्र सांस्कृतिक संबंधों का भी काल था। उदाहरण: उत्तर-पश्चिम में मूर्तिकला के क्षेत्र में यूनानी रोमन एवं भारतीय तत्वों के बीच सामंजस्य परिणामस्वरूप मूर्तिकला की गांधार शैली विकसित हुई, और आगे मथुरा एवं गांधार शैली के मिश्रण से सारनाथ कला का विकास हुआ।

इस प्रकार वस्तुत: इस काल में पतन के तत्वों को खोजे जाने के बदले कुछ प्रगतिशील तत्वों को खोजना आवश्यक है। धर्म और कला के क्षेत्र में हम इस काल में कुछ ऐसी प्रवृत्तियों का विकास पाते हैं जो आगे चलकर गुप्तकाल में स्थापित हो गया। इसलिए इसे अंधकार का युग मानने के बजाय क्लासिकल युग का पूर्वगामी माना जाना चाहिए।

KD Job Updates

संगम युग

सुदूर दक्षिण में राज्य निर्माण ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में हुआ तथा चोल, चेर, पाण्ड्य राज्य स्थापित हुए। खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में इन राज्यों का जिक्र मिलता है फिर यही काल है जब सुदूर दक्षिण के क्षेत्र में प्रथम नगरीकरण का विकास देखा गया।

उत्थान एवं परिवर्तन के कारण :—

(1) कावेरी डेल्टा क्षेत्र में कृषि के प्रसार के साथ उत्पादन अधिशेष की स्थिति उत्पन्न हुई।

(2) रोमन व्यापार का लाभ इन राज्यों को प्राप्त विशेषकर इसलिए की रोम के द्वारा मांग की जाने वाली दो प्रमुख उत्पाद मसाले एवं मोती की इन क्षेत्रों में उपलब्धता।

सुदूर दक्षिण के इतिहास में यह काल निर्माण एवं संरचना का काल :

यह वह काल था - जब सुदूर दक्षिण में तमिल। ब्राह्मी लिपि का विकास हुआ तथा तमिल भाषा साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित हुई। संगम साहित्य के विकास को इस संदर्भ में समझने की जरूरत है।

संगम साहित्य

संगम का अर्थ होता है — कवियों का सम्मेलन तमिल परम्परा के अनुसार सुदूर दक्षिण में तीन संगम हुए थे, जो 9990 वर्ष तक चलते रहें। (197) पांड्य शासकों ने उन्हें संरक्षण दिया और (8598) कवियों ने उसमें हिस्सा लिया, परन्तु यह एक मिथक है। वास्तविकता यह है कि ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में लगभग 1000 वर्षों तक तमिल साहित्य

KD Job Updates

का विकास हो रहा था।

यही काल था जब सामाजिक – सांस्कृतिक क्षेत्र में उत्तर एवं दक्षिण के तत्वों के बीच सांस्कृतिक आदान – प्रदान चलता रहा था। इसलिए जब हम तमिल साहित्य का विश्लेषण करते हैं तो उसमें हमें विकास का तीन भिन्न स्तर देखने को मिलता है।

मेलकन्कु साहित्य (आख्यानात्मक साहित्य) :– इसमें (8) ग्रंथ (एट्टुथोगई) तथा (10) ग्राम्य गीत (पात्तुपात्तु) शामिल हैं। कुल मिलाकर (18) ग्रंथ होते हैं। ये ग्रंथ युद्ध तथा राजा की प्रशस्ति से संबंधित कविताओं से भरे पड़े हैं। इनमें प्रेम का तत्व भी प्रबल है। ये चारण एवं भाट के द्वारा लिखे गए थे।

गौर से देखने पर हमें ज्ञात होता है कि इन पर भी कुछ उत्तर भारत का प्रभाव है। उदाहरण के लिए इसमें भी वर्ण व्यवस्था, चक्रवर्ती शासक की अवधारणा आदि का विवरण मिलता है, जिस पर उत्तर भारत का प्रभाव माना जा सकता है। परन्तु परवर्ती काल के तमिल साहित्य की तुलना में इस पर उत्तर भारत का प्रभाव अपेक्षाकृत कम है।

किलकन्कु साहित्य (उपदेशात्मक साहित्य) :– इसमें (18) लघु ग्रंथ शामिल हैं। इस पर जैन दृष्टिकोण का प्रभाव दिखता है। इन ग्रंथों में महत्वपूर्ण है 'तिरुकुरल' एवं 'नालदियार'। इसमें उपदेश पर अधिक बल दिया गया है। इसलिए इस पर उत्तर भारत के तत्वों का प्रभाव अधिक माना जा सकता है।

महाकाव्य :– शिलप्पादिकारम एवं मणिमेखलै – महाकाव्यों पर उत्तर भारत का प्रभाव सबसे अधिक माना

KD Job Updates

जा सकता है। निम्नलिखित आधार पर इसे सिद्ध किया जा सकता है —

1) संगम कवि छोटी कवितायें लिखते के आदि थे, इनकी कविताओं का आकार (3) पंक्ति से लेकर (800) पंक्तियों तक होते थे, परन्तु महाकाव्य अपने आकार में काफी बड़े थे।

2) ये महाकाव्य उत्तर भारत के संस्कृत महाकाव्य रामायण एवं महाभारत के प्रारूप पर लिखे गए।

(3) उत्तर के प्रभाव में तमिल साहित्य पर भी मोक्ष और निर्वाण की अवधारणा का प्रभाव बढ़ने लगा।

Date
02/12/2018

संगम कालीन समाज –

संगमकालीन साहित्य का अध्ययन इसके साहित्यिक महत्व के आधार पर होता रहा परन्तु अब उसका अध्ययन ईसा की आरंभिक शताब्दियों की राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज एवं संस्कृति के अध्ययन स्रोत के रूप में भी होने लगा है।

अध्ययन स्रोत के रूप में वैदिक साहित्य की तुलना में संगम साहित्य अधिक महत्वपूर्ण और उपयोगी प्रतीत होता है। इसके निम्नलिखित कारण है —

(1) वैदिक साहित्य मौखिक परंपरा से चला, इसलिए इसकी प्रमाणिकता ज्यादा संदिग्ध हो गई परन्तु संगम साहित्य लिखित रूप में मिलता है।

(2) वैदिक साहित्य ब्राह्मणों के द्वारा लिखा गया था। इसलिए यह समाज के आदर्श पक्ष को दर्शाता है, वहीं संगम साहित्य चारण एवं भाटों के द्वारा लिखा गया अतः उसका दृष्टिकोण समाज के यथार्थ पर है।

KD Job Updates

(5) वैदिक साहित्य जनसामान्य पर कम दृष्टि डालता है, जबकि संगम साहित्य के केंद्र में कुलीन से लेकर जनसामान्य सभी उपस्थित है। संगम साहित्य राजदरबार, बाजार, खेत, विभिन्न पेशे तथा समाज के विभिन्न वर्गों पर अपनी दृष्टि डालता है।

परन्तु एक साहित्यिक साक्ष्य के रूप में संगम साहित्य की अपनी सीमा भी है। यह लगभग 1000 वर्षों में संकलित हुआ, इसलिए यह किसी एक काल का इतिहास नहीं बताता। यही वजह है कि इससे जुड़े कुछ महत्वपूर्ण पुरातात्विक साक्ष्य यथा महापाषाण स्थलों से प्राप्त सूचना के साथ कई बातों में इसका मतभेद दिखता है। इसलिए उस काल में सुदूर दक्षिण के समाज के अध्ययन में संगम साहित्य के द्वारा प्रदत्त सूचना को तमिल ब्राह्मी अभिलेख, महापाषाण काल की उत्तर अवस्था से प्राप्त स्थल, पेरीप्लस के लेखक तथा कुछ रोमन लेखक प्लिनी, स्ट्रैबो, डायोडोरस आदि के द्वारा प्रदत्त सूचनाओं से जोड़कर देखने की जरूरत है।

राजनीतिक अवस्था

जैसा कि हमें ज्ञात है कि ईसा की आरंभिक शताब्दियों में सुदूर दक्षिण में चोल, चेर और पांड्य राज्य का निर्माण हो चुका था। खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से इस बात की पुष्टि होती है। परंतु हम महापाषाण काल की उत्तर अवस्था से प्राप्त स्थलों तथा संगम साहित्य के द्वारा प्रदत्त सूचनाओं में अन्तर पाते हैं। महापाषाण-कालिक स्थल जनजातीय संबंधों पर आधारित समाज की झलक देता है।

KD Job Updates

जो राज्य निर्माण से पूर्व अवस्था में है, वही संगम साहित्य एक विकसित राजव्यवस्था की झलक देता है, जिसकी विशेषता है — राजपद के गौरव एवं महत्व की प्रतिष्ठा, विकसित नौकरशाही, संगठित सेना आदि।

दक्षिण के शासकों के द्वारा ली गई बड़ी-बड़ी उपाधियाँ भी यह दर्शाती है कि राजतंत्र विकसित अवस्था में था यद्यपि ये शासक अपने पद के लिए अतिरिक्त प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए यह उपाधियाँ लेते थे। एक चेर शासक उदियन जेरल ने यह दावा किया कि वह महाभारत के युद्ध में शामिल होने वाले दोनों पक्षों के योद्धाओं को दावत दिया था। इसी आधार पर उसने 'महाभोज' की उपाधि ली। इसी के उत्तराधिकारी नेडु जेरल ने उत्तर में हिमालय पर्वत को जीतने और उस पर चेरों के राजचिन्ह धनुष को अंकित करने का दावा किया। इस आधार पर उसने 'इमैवरैयन' की उपाधि ली। इसी तरह एक चोल शासक करिकाल के बारे में कहा गया कि जब वह जहाज चलाता था तो हवा भी उल्टी दिशा में चलने को विवश होती।

अर्थव्यवस्था —

संगम साहित्य समकालीन अर्थव्यवस्था पर भी प्रकाश डालता है। इससे एक जनजातीय अर्थव्यवस्था की झलक मिलती है, किन्तु

हमें यह ज्ञान होना चाहिए कि संगम साहित्य का संकलन लगभग 1000 वर्षों में हुआ। इसलिए अर्थव्यवस्था भी स्थिर नहीं है बल्कि यह क्रमिक रूप में विकसित होती चली। इसलिए संगम साहित्य का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर इससे अर्थव्यवस्था के विभिन्न चरण और विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों की सूचना मिल जाती है। संगम साहित्य में आर्थिक गतिविधियों को (5) क्षेत्रों (तिनई) में बाँटकर देखा गया है —

(1) कुरुंजी (पहाड़ी क्षेत्र) (2) पलै (शुष्क भूमि) (3) मुल्लै (जंगल भूमि) (4) मरुदम (कृषि भूमि) (5) नेयतल (तटीय क्षेत्र)।

इन सभी क्षेत्रों में अलग-2 आर्थिक गतिविधियाँ थी। इसके अनुरूप पेशेवर समूह भी अलग-2 थे। आरंभ में मरुदम (कृषि भूमि) को अधिक महत्व प्राप्त था तो आगे विदेश व्यापार के विकास के पश्चात् नेयतल (समुद्री तट) को विशेष महत्व प्राप्त हो गया।

इस काल में रोमन व्यापार का विकास हुआ था, इससे इन राज्यों को निश्चय ही बड़ा लाभ प्राप्त हुआ। सुदूर दक्षिण से रोमन शासक आगस्टस और टाइबेरियस के सिक्के प्राप्त हुए हैं। फिर अरिकमेडु से एक रोमन बस्ती प्राप्त हुई है, ये तथ्य रोमन व्यापार की ओर संकेत करते हैं। दक्षिण से प्राप्त दो वस्तुओं यथा मसाले और मोती की रोमन समाज में अत्यधिक माँग थी।

मालाबार तट पर मुजरिस एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था

समाज :-

यह काल उत्तर तथा दक्षिण के तत्वों के बीच पारस्परिक आदान-प्रदान का था। इसका प्रभाव समाज पर भी देखा गया। उत्तर के मॉडल पर दक्षिण में भी चतुर्वर्ण व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश की गई परन्तु दक्षिण के समाज में इसे पूरी तरह लागू करना संभव नहीं हुआ। वस्तुतः सुदूर दक्षिण का समाज कुडी प्रथा (वंश परंपरा) पर आधारित था। दक्षिण का समाज मूलतः (दो वर्णों में विभाजित रहा यथा - ब्राह्मण एवं गैर - ब्राह्मण। क्षत्रिय एवं वैश्य नियमित वर्ण के रूप में स्थापित नहीं हुए। साथ ही दक्षिण का समाज विभिन्न पेशों के आधार पर विभाजित रहा यथा वेल्लार (धनी कृषक), आयर एवं ईदैयर (पशुपा परवतवर (मछुआरे), पुलैयन (रस्सी बनाने वाला) आदि।

सुदूर दक्षिण का समाज एक विभाजित समाज था। धनी लोग ईंटों के मकान में रहते थे तो निर्धन लोग झोपड़ियों में। समाज में महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी। बालविवाह का प्रचलन था तथा विधवाओं की स्थिति भी दयनीय थी। अर्थात् उत्तर की तरह सुदूर दक्षिण के समाज में भी अनेक बुराईयाँ घर कर गई थी।

KD Job Updates

धर्म :-

धर्म के क्षेत्र में भी उत्तर एवं दक्षिण के तत्वों के बीच सामंजस्य देखा जा सकता था। उत्तर के महत्वपूर्ण ऋषि अगस्त्य का सुदूर दक्षिण से गहरा संबंध रहा। तथा सुदूर दक्षिण में अनेक ऐसे मंदिर है जिन्हें अगस्त्येश्वर मंदिर के नाम से जाना गया।

दक्षिण में ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन पंथों का आगमन हुआ और उन्होंने दक्षिण के समाज को प्रभावित किया। इस काल में उत्तर और दक्षिण के देवताओं के बीच एकीकरण भी देखा जा सकता था। उदाहरण के लिए दक्षिण के प्रमुख देवता मुरुगन का एकीकरण उत्तर के देवता स्कंद के साथ है, दक्षिण के देवता मेयन का उत्तर के देवता विष्णु के साथ तथा दक्षिण की एक देवी कोरवाई का एकीकरण उत्तर की देवी दुर्गा के साथ हुई। इस प्रकार संगम काल में उत्तर और दक्षिण के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के बीच एक स्वतंत्र तमिल व्यक्तित्व का विकास हुआ।

प्रश्न :- ईसा की आरंभिक शताब्दियों में सुदूर दक्षिण के समाज के अध्ययन में संगम साहित्य के महत्व का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

प्रश्न :- ईसा की आरंभिक शताब्दियों में सुदूर दक्षिण के समाज के अध्ययन में महापाषाण कालीन स्थल तथा संगम साहित्य के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

KD Job Updates

मौर्योत्तर कालीन कला :-

मौर्योत्तर काल में कला के स्वरूप को प्रभावित करने वाले कारक :-

(1) इस काल में कृषि अर्थव्यवस्था एवं व्यापार के विस्तार के साथ कुलीन भूमिधारी एवं व्यापारी वर्ग अस्तित्व में आया तथा उनके द्वारा कला को संरक्षण दिया गया। इसलिए जहाँ मौर्यकालीन कला राजकीय संरक्षण में ही पली-बढ़ी थी, वहीं इस काल में कला को शासक वर्ग के अतिरिक्त कुलीन, व्यापारी, भिक्षुक एवं भिक्षुणियों सभी का संरक्षण प्राप्त। अतः कला के सामाजिक ~~विस्तार~~ आधार का विस्तार हुआ।

(2) इस काल में बौद्ध पंथ के साथ-2 ब्राह्मण एवं जैन पंथों के स्वरूप में भी परिवर्तन आया था। बौद्ध पंथ के महायान शाखा ने चैत्य, स्तूप एवं विहार के निर्माण के साथ-साथ मूर्तियों के निर्माण पर भी बल दिया गया था। फिर ब्राह्मण देवता एवं जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ भी बनने लगी थी। इन सभी का प्रभाव समकालीन कला पर देखा गया।

(3) यह वह काल था जब भारत एवं भूमध्य सागरीय क्षेत्र के बीच आर्थिक आदान-प्रदान के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी हो रहा था। इसका प्रभाव भी समकालीन कला पर देखा गया। उदाहरण के लिए मूर्तिकला के क्षेत्र में यूनानी-रोमन शैली के प्रभाव से गांधार मूर्तिकला का विकास हुआ।

स्थापत्य कला :-

स्तूप कला :-

स्तूप निर्माण की प्रक्रिया पूर्व काल में ही आरंभ हो गई थी। साँची से प्राप्त अशोक का महान स्तूप इसका उदाहरण है परन्तु इस काल के स्तूप पूर्वकाल की तुलना में अधिक विकसित थे। उदाहरण के लिए —

1. बनावट में अर्द्धवृत्ताकार
2. ऊपर का भाग समतल और फिर केन्द्रीय भाग में हर्मिक का निर्माण व उसमें किसी पवित्र अस्थि का अवशेष रखा जाना।
3. उसके ऊपर पत्थर का एक स्तम्भ निर्मित, उस पर तीन छत्रियों का बना होना।
4. स्तूप के ऊपर वेदिका (Railing) का निर्माण जो प्रदक्षिणा पथ का भी काम करता था।
5. स्तूप के विभिन्न दिशाओं में प्रवेश द्वार का निर्माण। उस द्वार को अलंकृत करना तथा उस पर पशु, सर्प, पक्षी - यक्षिणी एवं मानव - मूर्तियों का निर्माण।
6. स्तूप को एक दीवार से घेरा जाना।

प्रश्न :- व्याख्या कीजिए कि कैसे प्रारंभिक स्तूप कला में लोक अभिप्राय तथा कथाएँ एवं सामान्य सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग करते हुए इन विषयों को बौद्ध आदर्शों में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त की ?

KD Job Updates

(1) बौद्ध पंथ आरंभ से ही लोक-चेतना से जुड़ा इसलिए बौद्ध कला पर लोकतत्वों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक।

(2) स्तूप की संपूर्ण संकल्पना ही जनजाति तत्व से ली गई थी। उदाहरण के लिए जनजाति मुखिया के शवदाह स्थान पर एक टीला बनाया जाता।

(3) पहले अशोक के धम्म में उत्सव एवं समारोहों को हतोत्साहित कर बौद्ध पंथ को विशुद्ध रूप में ढालने का प्रयास किया गया था किन्तु इस काल में बौद्ध पंथ लोक-तत्वों से अधिक गहरे रूप में जुड़ चुका था।

(4) बौद्ध स्तूप के प्रवेश द्वार पर पशु, वृक्ष, यक्ष-यक्षिणी एवं मानव की मूर्तियाँ बनाई जाती थी। इन सभी का संबंध लोककथा से था परंतु बौद्ध पंथ ने इन्हें अपने में समाहित कर लिया था —

(a) पशुओं में हाथी का संबंध बुद्ध के गर्भ में आने, बैल का संबंध यौवन, घोड़े का संबंध गृहत्याग तथा सिंह का संबंध अपने आप से विजय प्राप्त करने से था।

(b) नाग पूजा एक लोकप्रिय पद्धति था, इसलिए बौद्ध पंथ ने उसे अपना लिया।

(c) यक्ष-यक्षिणी अर्ध देवता थे और जन-सामान्य के बीच उन्हें बहुत महत्व प्राप्त था। इसलिए बौद्ध पंथ ने भी उन्हें अपना लिया।

(d) इसके अतिरिक्त सांची के स्तूप के प्रवेश द्वार पर पेड़ की टहनी से लटकी हुई महिलाओं को दिखाया गया है।

बताया जाता है कि वे लोक प्रचलित कथा की सालभंजिका थी जो समृद्धि का प्रतीक होती थी तथा जिनके बारे में कहा जाता था कि अगर वे पेड़ को छू दें तो फल बन जाता। बौद्ध पंथ ने उन्हें भी अपने में समाहित किया।

चैत्य :- अशोक के द्वारा जो गुफा वास्तुकला की शुरूआत की गई थी उसका विकास इस काल में चैत्य एवं विहार के निर्माण के रूप में देखने को मिलता जो अपनी शैली में कहीं अधिक विकसित थी। इस काल में महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों पर चैत्य एवं विहारों का निर्माण देखने को मिलता यथा पश्चिम भारत में भाजा, कन्हेरी, कार्ले तथा पूर्वी भारत में उदयगिरि - खण्डगिरि (उड़ीसा)।

चैत्य का निर्माण :

(a) आयताकार बनावट परंतु उसका अंतिम भाग अर्द्धवृत्ताकार। उसके केन्द्र में एक स्तूप का निर्माण जिसका उद्देश्य उपासना क्योंकि चैत्य बौद्धों का पूजागृह।

(b) आगे स्तूप के साथ मूर्ति भी निर्मित।

(c) चैत्य ~~स्तूप~~ की छत को घोड़े के नाल के आकार का बनाया जाता ताकि बाहर से रोशनी सीधा स्तूप पर पड़े। इसे चैत्य खिड़की कहा जाता।

विहार :- यह भिक्षुओं का निवास स्थल एवं चैत्य के आस-पास ही इसका भी निर्माण।

मूर्तिकला :- मौर्य काल में पशुओं की जीवंत मूर्तियाँ निर्मित जो अशोक के स्तंभों पर देखा जाता। इस काल तक ये मूर्तियाँ लुप्त हो गई परंतु उनकी क्षतिपूर्ति मानव-मूर्तियों के निर्माण से की गई।

① **गांधार कला** - ⓐ इसका विकास लगभग दूसरी सदी ई॰ पू॰ एवं सातवीं ईस्वी के बीच।

ⓑ यह यूनानी - रोमन एवं भारतीय तत्वों का मिश्रण।

ⓒ (i) **यूनानी तत्व** :- बड़े ही सुडौल एवं यथार्थवादी ढंग से शरीर का अंकन। मूर्तियों का निर्माण यूनानी देवता अपोलो की तरह।

[पीछे हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त मूर्तियाँ बड़े उदर वाली होती थी।]

ⓒ (ii) **रोमन तत्व का प्रभाव** :- मूर्तियों की साज-सज्जा एवं आभूषण रोमन शैली में।

ⓓ (iii) **भारतीय तत्वों का प्रभाव** :- मूर्ति के चेहरे पर आध्यात्मिकता भी दर्शायी गई। इसलिए भले ही अपने बनावट में यूनानी रोमन किंतु आत्मा से भारतीय।

KD Job Updates

विशेषताएँ :-

(1) कच्ची सामग्री के रूप में गहरे नीले अथवा काले पत्थर का प्रयोग।

(2) शरीर के यथार्थवादी अंकन अर्थात शरीर के बनावट तथा कपड़ों की तहों का भी अंकन।

(3) तक्षशिला एवं आस-पास के क्षेत्र में स्थापित तथा इसे प्रेरणा बौद्ध पंथ से। इसलिए बुद्ध एवं बोधिसत्वों का अंकन।

(2) मथुरा शैली :-

विशेषताएँ :-

(1) ईसा की आरंभिक शताब्दियों में विकसित। इस पर गांधार शैली का भी प्रभाव।

(2) कच्ची सामग्री के रूप में लाल पत्थर का प्रयोग।

(3) इस शैली में मूर्तिकला का बल मूर्ति के चेहरे पर आध्यात्मिकता दर्शाने पर न कि शरीर की यथार्थवादी बनावट पर। इसलिए इसका दृष्टिकोण आदर्शवादी।

(3) अमरावती शैली :-

विशेषताएँ :-

(1) अमरावती, नागार्जुन कोण्डा एवं ईसा की आरंभिक शताब्दियों में विकसित।

(2) कच्ची सामग्री के रूप में संगमरमर का प्रयोग।

KD Job Updates

(3) चूंकि रोमन व्यापार के कारण इस क्षेत्र में समृद्धि आई और भौतिक एवं सांसारिक चीजों के प्रति आकर्षण बढ़ गया। इसलिए मूर्तियों के निर्माण का मुख्य बल ऐन्द्रिक सुख पर न कि धर्म एवं आध्यात्मिकता दर्शाने पर।

चित्रकला :-

अजंता के आरंभिक चित्रकला यथा गुफा संख्या (9) एवं (10) इस काल में विकसित तथा सातवाहनों से संबंधित।

प्रश्न :- मौर्योत्तर काल में कला की समकालीन धार्मिक पंथों के द्वारा प्रेरित थी। टिप्पणी कीजिए।

प्रश्न :- मौर्योत्तर काल में कला के विभिन्न रूपों के विकास पर प्रकाश डालिए।

भाषा - साहित्य

- **प्राकृत**
  - साहित्यिक भाषा
    - सातवाहन दरबार में इसे राजकीय एवं साहित्यिक भाषा का दर्जा मिला। एक सातवाहन शासक 'हाल' के छद्म नाम से 'गाथासप्तसती' नामक रचना लिखी।
  - अभिलेख में प्राकृत भाषा का प्रयोग
    - गौतमी बलश्री का नासिक अभिलेख तथा खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
  - लोकभाषा के रूप में प्राकृत का प्रयोग
- **संस्कृत**
  - संस्कृत में अभिलेख-लेखन आरंभ
    - रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख तथा उषवदात का पुंडिवर्धन अभिलेख
  - साहित्यिक भाषा के रूप में पुनरुत्थान
    - ब्राह्मण साहित्य
      - पुराणों की रचना, मनुसंहिता, रामायण, महाभारत
    - महायान बौद्ध साहित्य
      - अवदान साहित्य, अश्वघोष की बौद्ध चरित, एवं सौन्दरानन्द

KD Job Updates

Date
03/12/2010

गुप्त काल (300 ई. – 600 ई.)

अध्ययन स्त्रोत :–

पुरातात्विक स्त्रोत –

1) **भूमिदान पत्र :–** मौर्योत्तर काल में भूमिदान आरंभ हुआ था। इस काल में उनकी संख्या में और भी वृद्धि हुई। चूँकि पाँचवीं सदी से भूमिदान प्राप्त कर्ता को प्रशासनिक अधिकार भी सुपुर्द किए जाने लगे। इसलिए आर्थिक सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन दिखने लगा जिसका ज्ञान हमें भूमि दान पत्र से मिलता है।

2) **सिक्के :–** गुप्त शासकों ने सर्वाधिक संख्या में स्वर्ण सिक्के जारी किए। इसके अतिरिक्त चाँदी तथा सीमित रूप में ताँबे के सिक्के भी जारी। इन सिक्कों से निम्नलिखित बातों का ज्ञान :–

① शासकों एवं महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम का ज्ञान।
② शासकों के धार्मिक विश्वास का ज्ञान।
③ गुप्तकालीन सिक्के बड़े ही बेहतरीन प्रकार के अतः कलात्मक विकास का भी ज्ञान।

③ **अभिलेख :–** समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, चंद्रगुप्त द्वितीय का महरौली स्तंभ अभिलेख, स्कंदगुप्त का भीतरी स्तंभ अभिलेख और जूनागढ़ अभिलेख आदि।

KD Job Updates

→ राजनीतिक घटनाक्रम एवं शासकों का ज्ञान।

→ शासकों के धार्मिक विश्वास का ज्ञान।

(4) साहित्यिक साक्ष्य :-

(i) पुराण साहित्य

(ii) याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद-स्मृति और पराशर स्मृति।

(iii) रामायण एवं महाभारत का अंतिम रूप में संकलन

(iv) कालिदास एवं विशाखदत्त की रचनाएँ।

गुप्त शक्ति का उद्भव तथा विस्तार :-

प्रेरित करने वाले कारक

(1) कुषाण शक्ति के पतन के पश्चात उत्तर भारत में एक राजनीतिक शून्य की स्थिति उत्पन्न हुई, इसे पहले मुरुण्ड एवं नागवंश ने भरने का प्रयास किया और आगे फिर गुप्तों ने लाभ उठाया।

(2) गुप्तों को सैन्य तकनीकी में कुषाणों की विरासत प्राप्त हुई। यथा - कुशल घुड़सवारी, बड़े जूते, लम्बे कोट, पगड़ी आदि का प्रयोग आरंभ।

(3) इस काल में साम्राज्य निर्माण की पहल ~~ऊपरी~~ दोआब के क्षेत्र की ओर से हुई। उदाहरण के लिए गुप्त शासक चंद्रगुप्त प्रथम ने पहले प्रयाग को जीता और फिर मगध की ओर विस्तार किया।

(4) नागशक्ति उत्तर भारत की एक महत्वपूर्ण शक्ति थी। उत्तर भारत पर नियंत्रण के लिए गुप्त शक्ति एवं नाग शक्ति के बीच एक प्रतिस्पर्धा चल रही थी। जो भी शक्ति विजेता होती वह अपना राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करती। चूँकि इसमें विजेता गुप्त हुए इसलिए गुप्तों ने साम्राज्य को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया।

गुप्त शक्ति के उद्भव तथा विकास में वैवाहिक संबंधों की भूमिका :- (page 49 - Booklet)

चंद्रगुप्त प्रथम :

लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमार देवी से विवाह कर अपनी राजनीतिक स्थिति को उद्दृढ़ करना।

समुद्रगुप्त :- अपने सामंतों की वफादारी को सुनिश्चित करने के लिए कन्योपायन (पुत्री अर्पित करना) को एक आवश्यक शर्त के रूप में रखना।

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य :- स्वयं अपना विवाह नागवंश की राजकुमारी के साथ और अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वकाटक शासक रुद्रसेन-II के साथ।

गुप्तों की सफलता में वकाटकों की भूमिका पर प्रकाश डालिए। (Booklet - page - 49)

प्रयाग प्रशस्ति के आधार पर एक विजेता के रूप में समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

समुद्रगुप्त भारतीय शासकों में एक महान विजेता के रूप में स्थापित है। उसकी साम्राज्यवादी उपलब्धियों को स्वीकृति देते हुए एक ब्रिटिश विद्वान ने उसे 'भारत का नेपोलियन' कहा है। परन्तु चूंकि उसकी उपलब्धियों के आकलन में हम मुख्यतः उसके दरबारि लेखक हरिषेण के विवरण पर निर्भर है, इसलिए हमें उसकी उपलब्धियों पर सावधानी से विचार करने की जरूरत है।

हरिषेण ने उसके विजयों की चर्चा विस्तार से किया है। उसने यह कार्य विभिन्न चरणों में पूरा किया —

(1) नाग एवं कोटकुल वंश के शासकों को पराजित करना।

(2) गंगा यमुना दोआब में (8) राज्यों को पराजित करना।

(3) इसमें चंपावती, विदिशा और अहिच्छत्र भी।

(4) आटविक राज्यों को पराजित करना।

(5) दक्षिण के (12) राज्यों को पराजित करना।

(6) उत्तर पश्चिम के गणराज्यों को पराजित करना।

(7) विदेशी राजवंशों को पराजित करना।

परन्तु एक दरबारी लेखक होने के नाते हरिषेण के द्वारा तथ्यों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया होगा। उदाहरण के लिए उसने श्रीलंका को भी कर देने वाला राज्य करार दिया। परन्तु फिर भी हम प्रयाग-प्रशस्ति के विवरण को अयथार्थ मानकर खारिज

KD Job Updates

नहीं कर सकते क्योंकि उसके कही गई कुछ बातों की पुष्टि समुद्रगुप्त के सिक्कों, कंकाटक के अभिलेख तथा कालिदास के 'रघुवंशम' में की गई है।

date 5/12/2018

गुप्त प्रशासन

मौर्यकालीन प्रशासन

मौर्यकालीन प्रशासन उस स्थिति को दर्शाता है जब जनजातीय अर्थव्यवस्था कृषक अर्थव्यवस्था में ढली तथा राज्य का आर्थिक आधार मजबूत हुआ। इसके परिणाम स्वरूप राज्य का दायित्व बढ़ गया तथा प्रशासनिक केन्द्रीयकरण को बल मिला।

) देवनाम प्रियदर्शी की उपाधि यह दर्शाती है कि राज्य के द्वारा ब्राह्मण मध्यस्थों की भूमिका को सीमित करने का प्रयास कर रहा था फिर कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजा को अधिक विवेकाधीन शक्तियाँ देता। आगे अशोक के 'धौलि' अभिलेख राज्य के लोक कल्याणकारी स्वरूप की घोषणा करते जान पड़ते।

गुप्तकालीन प्रशासन

गुप्त काल में प्रशासन के स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिलता है। इस काल में क्षेत्रीय स्तर पर केन्द्र का निरीक्षण अपेक्षाकृत सीमित हुए और क्षेत्रीय स्तर के प्रशासन में क्षेत्रीय तत्वों की भागीदारी बढ़ी। इस तथ्य की व्याख्या इतिहास लेखन में दो भिन्न दृष्टिकोणों से की जाती है, एक दृष्टिकोण इसे सामंतवाद के उद्भव के संदर्भ में देखने की कोशिश करता है तो दूसरा इसे समन्वित राज व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में व्याख्या करने का प्रयास करता है।

(1) राजा के द्वारा भारी भरकम उपाधियाँ ली जाने लगी यथा 'परमभट्टारक', 'परमेश्वर', महाराजाधिराज आदि। इसके अतिरिक्त राजत्व के दैवीकरण की प्रवृत्ति देखी गई, राजा की तुलना देवता से की जाने लगी। प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त ने अपनी तुलना इन्द्र, वरुण, यम एवं कुबेर से किया है। इसकी व्याख्या पुनः दो भिन्न दृष्टिकोणों से की जाती है यथा सामन्तवाद जो केन्द्रीयकरण में ह्रास की ओर संकेत करता है, दूसरे समन्वित राज्य व्यवस्था जो नए क्षेत्रों में राज्य विस्तार के कारण जटिल हो रही राजनीतिक व्यवस्था की ओर संकेत करता है।

KD Job Updates

केन्द्रीय अधिकारियों की संख्या में व्यापक वृद्धि यथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र (18) तीर्थ या महामात्य और (27) अध्यक्षों का विवरण यह बदली हुई केन्द्रीयकरण की ओर संकेत करता।

(2) इस काल में अनेक अधिकारियों का विकास यथा संधि विग्रहक (विदेश मंत्रालय), दण्डनायक और महादण्डनायक (न्यायकारिक), बलाधिकृत और महाबलाधिकृत (सैनिक अधिकारी), प्रतिहार एवं महाप्रतिहार (राजमहल का रक्षक), कुमारामात्य (सर्वोच्च अधिकारियों का वर्ग जहां से महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति)।

सामंतवाद की अवधारणा को मानने वाले विद्वान यह स्थापित करने का प्रयास करते हैं कि अधिकारियों का पद वंशानुगत हो गया था तथा एक अधिकारी को एक से अधिक पद दिया जाने लगा था। उदाहरणतः हरिषेण एक ही साथ कुमारामात्य, संधि विग्रहक एवं महादण्डनायक के पद को सुशोभित करता था।

(3) साम्राज्य का विभाजन प्रांतों में। प्रांत के ऊपर कुमार अथवा आर्यपुत्र नामक अधिकारी की नियुक्ति। बताया जाता है कि कुमार के अधीन एक मंत्रीपरिषद और इसको यह अधिकार था कि वह कुछ संवेदनशील सूचना सीधा केन्द्र को प्रेषित करता था। यह केन्द्रीयकरण की ओर संकेत करता है।

(3) साम्राज्य का विभाजन प्रांत में। इसे 'भुक्ति' कहा जाता तथा भुक्ति को 'उपरिक' अथवा 'उपरिक महाराज' नामक अधिकारी के अन्तर्गत रखा जाता। ऐसा माना जाता है कि संभवतः मौर्यकालीन 'प्रांतपति' की तुलना में 'उपरिक' अथवा 'उपरिक महाराज' अधिक स्वायत्तता का उपभोग करते।

(4) प्रांत का विभाजन जिला में था। जिला के स्तर पर जिसे विषय कहा जाता, युक्त, रज्जुक एवं प्रादेशिक नामक अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी। इन अधिकारियों की नियुक्ति सीधा केन्द्र से होती थी।

(4) प्रांत का विभाजन जिला ~~स्तर~~ अथवा विषय में किया गया। यह कुमारामात्य अथवा विषयपति नामक अधिकारी के अन्तर्गत रखा जाता। जिला स्तर के प्रशासन के संचालन के लिए एक जिला-परिषद (विषय अधिकरण) होती। इसमें क्षेत्रीय तत्वों की भागीदारी दी जाती। इसी प्रकार नगर में एक नगर परिषद होती जो ~~नगर~~ ~~प्रशासक~~ नगर प्रधान के सम्भाल में रहती। नगर परिषद को 'अधिष्ठानाधिकरण' कहा जाता। इसमें निम्नलिखित तत्वों को प्रतिनिधित्व दिया जाता — नगर श्रेष्ठी, सार्थवाह (व्यापारियों का प्रधान), प्रथम कुलिक (शिल्पियों का प्रधान) तथा प्रथम कायस्थ (लिपिक …)

KD Job Updates

(5) जिला के नीचे गोप का समूह एक प्रशासनिक इकाई होती है, इस पर 'गोप' एवं 'स्थानिका' नामक अधिकारी की नियुक्ति।

इसी प्रकार कौटिल्य एवं मेगस्थनीज दोनों नगर प्रशासन का जिक्र करते। कौटिल्य समाहर्ता एवं प्रादेशिक नामक अधिकारी की चर्चा करता तो मेगस्थनीज (6) समितियों के माध्यम से पाटलिपुत्र के प्रशासन के संचालन का विवरण देता। वस्तुतः सामान्य मान्यताओं के विपरीत ये समितियां सीधे तौर पर केन्द्र के द्वारा नियुक्त की जाती, इसमें क्षेत्रीय तत्वों की भागीदारी नहीं होती।

(5) जिला प्रशासन की नीचे की इकाई विथि कहलाती तथा वह एक विथि महामात्य नामक अधिकारी के अन्तर्गत रखी जाती तथा उसके कार्यों में सहायता के लिए विथि परिषद होती। इसमें कुटुम्बिन (किसान), महत्तर (मुखिया) को प्रतिनिधित्व मिलता (गुप्तकालीन प्रशासन में स्थानीय तत्वों की भागीदारी को सामान्यतः दो भिन्न दृष्टिकोणों से व्याख्या करने का प्रयास किया गया है। सामंतवाद के दृष्टिकोण के अनुसार इसे केन्द्रीकरण के ह्रास के रूप में देखा गया, तो समन्वित राज्य की अवधारणा के परिप्रेक्ष्य से इसे विकेन्द्रीकरण के तत्वों की अभिव्यक्ति मानी गई।

इसके अतिरिक्त गुप्त काल में हम ग्रामीण प्रशासन, शिल्प संगठन तथा व्यापारिक निगमों की भूमिका भी प्रशासन में पाते हैं।

प्रश्न :- गुप्त साम्राज्य की प्रांतीय एवं जिला प्रशासन के इकाईयों एवं उनके अधिकारियों के पदनामों और कर्तव्यों की विवेचना कीजिए।

प्रश्न :- गुप्तकालीन और मौर्यकालीन स्थानीय प्रशासन के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

प्रश्न :- गुप्तकालीन स्थानीय प्रशासन के विकास को आप राजनीतिक विघटन का उदाहरण मानते हैं अथवा प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण का तर्क उत्तर दीजिए।

प्रश्न :- मौर्यकालीन तथा गुप्तकालीन नगर प्रशासन के स्वरूप के अध्ययन का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

KD Job Updates

1/2018

गुप्तकालीन धर्म

गुप्तकालीन धर्म एक जटिल अवस्था में दिखता है, क्योंकि इस काल में आर्य एवं गैर आर्य ब्राह्मणवादी तथा गैर ब्राह्मणवादी अभिजात्य एवं लोक तत्व सभी का मिश्रण धर्म के क्षेत्र में देखने को मिलता है। अतः गुप्तकालीन धर्म अपने स्वरूप में विविधतामूलक रहा।

विशेषताएँ :

(1) ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान के कारण यज्ञ की पद्धति का पुनरुत्थान, उदा. के लिए समुद्रगुप्त एवं कुमारगुप्त के द्वारा यज्ञ का संचालन अश्वमेध यज्ञ के रूप में। जनसामान्य के द्वारा भी घरेलू यज्ञों का निष्पादन।

(2) परन्तु भक्ति कहीं अधिक प्रभावकारी विचारधारा के रूप में उभर कर आई। इसने जनसामान्य के बीच लोकप्रियता हासिल की। भक्ति के साथ अवतारवाद की अवधारणा भी जुड़ गई। साथ ही मूर्तिपूजा का आरंभ हुआ। ब्राह्मण देवता मंदिरों में स्थापित किए गए तथा उनकी उपासना आरंभ हुई।

भक्ति की अवधारणा ने सभी धार्मिक पंथों पर प्रभाव डाला यथा ब्राह्मण पंथ, बौद्ध पंथ एवं जैन पंथ।

(3) गैर आर्य तत्वों के प्रभाव से तंत्रवाद की अवधारणा का विकास। इस तरह की अवधारणा विकसित हुई कि पुरुष की क्रियाशीलता बढ़ाने के लिए महिलाओं का साहचर्य आवश्यक। फिर इसके बाद देवता के साथ देवियाँ जुड़ गईं।

KD Job Updates

(4) प्राचीन काल में विभिन्न प्रकार के मत - मतांतर दृष्टिकोण प्रचलित थे। गुप्त काल तक आकर इन्होंने षड्दर्शन का रूप ले लिया। ये दर्शन इस प्रकार थे — सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा, उत्तर मीमांसा।

(5) गुप्त काल तक आकर त्रिदेव यथा ब्रह्मा, विष्णु और महेश की परिकल्पना स्थापित हो गए।

(6) गुप्त काल में सृष्टि के संदर्भ में एक चक्रिक अवधारणा का विकास हुआ। इसके तहत सृष्टि के संदर्भ में निम्नलिखित अवधारणा विकसित हुई — (चार) युग का (एक) महायुग (71) महायुग का एक मन्वंतर तथा (14) मन्वन्तर का (1) कल्प। प्रत्येक मन्वन्तर के बाद सृष्टि का विकास होता है और एक नए मनु को पैदा होना है।

प्रश्न :- गुप्तकालीन धर्म का मूल स्वरूप भक्ति रही है। इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

प्रथम भाग :- संक्षिप्त रूप में भक्ति अवतारवाद और मूर्ति पूजा का विभिन्न धार्मिक पंथों पर प्रभाव दिखाना है।

दूसरा भाग :- यह दर्शाना है कि भक्ति का संबंध तात्कालिक सामाजिक सच्चाई से भी है। कुछ विद्वान ऐसा मानते रहे हैं कि भक्ति के तहत जो भक्त एवं भगवान के संबंध हैं, वे किसान एवं भूस्वामी के संबंधों में व्यक्त करते जान पड़ते हैं।

KD Job Updates

प्र. गुप्तकालीन धर्म तात्कालिक समाज के यथार्थ को व्यक्त करता है। परीक्षण कीजिए।

1st भाग: भक्ति को परिभाषित करते हुए यह दिखाना है कि किस प्रकार भक्ति ने विभिन्न धार्मिक पंथों पर अपना प्रभाव छोड़ा।

2nd भाग: भक्ति समकालीन समाज के यथार्थ को निम्न रूप में व्यक्त करती —

(1) भक्त एवं भगवान का संबंध कृषक एवं भू-स्वामी के संबंधों को व्यक्त करता।

(2) भक्ति लगभग सभी वर्गों की आवश्यकता को पूरा करती। धनी लोग मंदिर का निर्माण कर अथवा उन्हें आर्थिक अनुदान देकर फल प्राप्त करते थे तो निर्धन लोग ~~सेवा~~ निजी देवता की उपासना कर और मंदिर को सेवा प्रदान कर पुण्य लाभ प्राप्त करते।

(3)

~~गुप्त काल~~

संस्कृति

गुप्तकाल सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यधिक समृद्धि का काल माना जाता है। यह वह काल था जब साहित्य एवं कला ने क्लासिकल मानदंड ग्रहण किये। क्लासिकल से तात्पर्य है कि साहित्य एवं कला विकास के उस स्तर पर पहुँच जाती है ~~पहुँचे~~ तब आने वाली पीढ़ी के लिए मानदंड बन जाती है तब हम उसे क्लासिकल कहते हैं।

गुप्तकाल के संस्कृत काव्य ने वे मानदंड ग्रहण किए कि आने वाले युग में होने वाले युग में इसे संस्कृत लेखन को गहरे रूप से

प्रभावित किया। कालिदास और विशाखदत्त की रचनाओं से आने वाली पीढ़ी के लेखकों के लिए प्रेरणा बन गई।

इसी प्रकार पूर्व काल से कला की विभिन्न शैलियाँ प्रचलित रही थी। उन्होंने गुप्त काल में चलकर काफी प्रौढ़ता प्राप्त कर ली। उदा. के लिए अशोक के काल में गुफा वास्तुकला आरंभिक रूप में शुरु हुई थी। आगे इसका विकास चैत्य एवं विहार के रूप में विकसित हुआ। परन्तु इसका अति विकसित रूप गुप्तकालीन ब्राह्मण मंदिर, उदयगिरि का वराह मंदिर और अजंता के बौद्ध मंदिर के रूप में देखने को मिलता है। आगे इसका विकास एलोरा एवं बादामी के गुफा मंदिर तथा फिर आगे पल्लवों के द्वारा पहाड़ को काटकर बनाए गए भव्य मंदिरों के रूप में देखने को मिलता है।

इसी प्रकार मूर्तिकला में मथुरा कला एवं गांधार कला के मेल से गुप्त काल में सारनाथ कला का विकास हुआ। मूर्तिकला की सारनाथ शैली अपने स्वरूप में क्लासिकल कही जाती है। कुषाणों की मूर्तियों की तुलना में गुप्तकालीन मूर्तियाँ अधिक संयत एवं नैतिक दिखते हैं। मूर्तियों को उचित रूप में कपड़ों से ढका गया है तथा मूर्ति के चेहरे पर विभिन्न प्रकार की भाव भंगिमाएं व्यक्त होती हैं। मूर्तियों में आभामंडल का भी प्रयोग हुआ है। यह सारनाथ शैली इतनी प्रभावी रही कि इसने न केवल भारतीय मूर्तिकला पर अपना प्रभाव छोड़ा बल्कि S.E.Asia से लेकर मध्य एशिया तक मूर्तिकला के रूप में प्रभावित किया।

KD Job Updates

गुप्त काल में चित्रकला ने भी मानक रूप ग्रहण किए। अजंता के चित्र विश्व विख्यात हैं। वैसे तो इसके आरंभिक चित्र गुफा संख्या (9) और (10) से मिलते हैं परन्तु गुप्त एवं वाकाटक काल से जुड़े हुए गुफा संख्या (16), (17) एवं (19) हैं अत्यंत बेहतरीन चित्रकला का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। गुफा के दीवारों पर चित्र इस प्रकार उकेरे गए हैं कि चित्र दीवाल से निकलते प्रतीत होते हैं तथा त्रिआयामिक (3D) प्रभाव पैदा करते हैं। फिर गुप्तकालीन चित्रकला का उदाहरण ग्वालियर के पास बाघ से मिले हैं। इन चित्रों से गुप्तकालीन सामाजिक जीवन की झलक मिलती है। सबसे दिलचस्प तथ्य यह है कि गुप्तकालीन चित्रकला ने न केवल उत्तर में राजपूतकालीन चित्रकला और दक्षिण में पल्लवकालीन और चोलकालीन कला पर बल्कि N-E एशिया और मध्य एशिया के कला पर भी अपना प्रभाव डाला।

गुप्तकालीन साहित्य

संस्कृत साहित्य

धार्मिक साहित्य

⇓

पुराणों का संकलन

रामायण एवं महाभारत का अंतिम रूप में संकलन,

याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, एवं पराशर स्मृति

~~पंचतंत्र – विष्णुशर्मा~~

- विशाखदत्त : ① मुद्राराक्षस (चंद्रगुप्त और चाणक्य के द्वारा कूटनीतिक योजना)
  ② देवीचंद्रगुप्तम् (चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के द्वारा शक शासक रुद्रसिंह को पराजित कर ध्रुवस्वामिनी की रक्षा)
  अभी तक के इतिहास इसके रचयिता ... पुनर्प्राप्त ही इसका लिखा था।
- शूद्रक : मृच्छकटिकम् (ब्राह्मण चारुदत्त ... वसंतसेना ...)

गैर-धार्मिक साहित्य

⇓

- **कालिदास** :-

① नाट्य रचना :- मालविकाग्निमित्र (शुंग शासक अग्निमित्र)

विक्रमोर्वशीयम् (राजा पुरूरवा-उर्वशी की प्रणय कथा)

अभिज्ञान शाकुन्तलम् (राजा दुष्यंत-ऋषिपुत्री शकुन्तला की प्रेम कथा)

② काव्य रचना :-

रघुवंशम् (राजा राम की विजय कथा के माध्यम से समुद्रगुप्त के विजय की ओर संकेत।)

कुमारसंभवम् (शिव-पार्वती की प्रणय कथा और कुमार कार्तिकेय का जन्म)

ऋतुसंहार (6 ऋतुओं का मनोहारी वर्णन)

मेघदूतम् (एक शापित यक्ष के द्वारा अपनी पत्नी)।

वैज्ञानिक साहित्य :-

① आर्यभट्ट का आर्यभट्टीय।

② वराहमिहिर का वृहद संहिता, वृहद जातक एवं लघु जातक

③ ब्रह्मगुप्त का ब्रह्मसिद्धांत और खंडखाद्यक

④ एक औषधि शास्त्री वाग्भट्ट के द्वारा लिखित ग्रंथ अष्टांग हृदय तथा अष्टांग संग्रह

⑤ हाथियों के चिकित्सा पर लिखे ग्रंथ हस्त्यायुर्वेद, औषधिशास्त्र पर ग्रंथ नवनीतकम्।

⑥ खगोल शास्त्र पर लिखित ग्रंथ :-

(i) सूर्य प्रज्ञप्ति

(ii) ज्योतिष वेदांग

KD Job Updates

गुप्तकालीन स्थापत्य कला :-

(1) चूँकि गुप्त कालीन कला को ब्राह्मण पंथों के साथ बौद्ध पंथ को भी प्रेरणा मिली थी। इसलिए इस काल में भी पहले की तरह चैत्य, विहार और धर्मीय स्तूप (सारनाथ) इसके उदाहरण।

(2) <u>पहाड़ों को काटकर बनाए गए</u> मंदिर :- अशोककालीन गुफा स्थापत्य कला → चैत्य एवं विहार के रूप में विकसित होते हुए अजंता के मंदिर और उदयगिरि के वराह मंदिर के रूप में स्थापित थे गुफा वास्तुकला के विकसित रूप।

(3) <u>स्वतंत्र रूप से बनाए गए मंदिर</u> इस काल में स्वतंत्र रूप से बनाए गए मंदिर अस्तित्व में आए। ब्राह्मण देवताओं का मंदिर में स्थापित किया गया तथा उनकी उपासना आरंभ कर दी गई, अतः मंदिर निर्माण को प्रोत्साहन मिला। मंदिर निर्माण में कच्चे माल के रूप में पत्थर और ईंट दोनों का इस्तेमाल देखने को मिलता है। संभवतः लकड़ी से भी कुछ मंदिर बने होंगे पर उनके प्रमाण नहीं मिलते।

सबसे बढ़कर गुप्तकालीन मंदिर निर्माण कला ने स्थापत्य की <u>नागर शैली की पृष्ठभूमि</u> निर्मित की —

(a) मंदिर को ऊँचे चबूतरे पर बनाया जाता था तथा उस पर चढ़ने के लिए चारों ओर से सीढ़ियाँ बनाई जाती।

(b) मंदिर के गर्भगृह में मुख्य प्रतिमा स्थापित की जाती, और उसके चारों ओर अन्य मूर्तियाँ भी बनने लगी।

(c) मंदिर के सामने प्रवेश द्वार होता था जो एक सभाभवन की ओर खुलता था।

(d) मंदिर के प्रवेश द्वार पर मण्डप का भी निर्माण किया जाने लगा।

KD Job Updates

(१) मंदिर का भीतरी भाग सादा होना जबकि बाहरी भाग अलंकृत।

(२) सामान्यतः मंदिर का छत सपाट होता था परन्तु आगे उन पर शिखर भी बनने लगे। उदा. के लिए देवगढ़ का दशावतार मंदिर।

मूर्तिकला

सारनाथ शैली :- (Booklet)

चित्रकला :-

अजंता चित्रकला तथा बाघ चित्रकला

• बुद्ध से जुड़ी कलाकृतियाँ - गुफा 16, 17

प्रश्न :- गुप्त - वाकाटक काल के दौरान कला एवं चित्रकला संबंधी प्रयोगों पर चर्चा कीजिए। विश्लेषण

प्रश्न :- गुप्त काल का मूल्यांकन करते हुए उसे स्वर्ण युग कहना कहाँ तक उचित है?

गुप्त काल की उपलब्धियों के मूल्यांकन के क्रम में दो विरोधी दृष्टिकोण देखे जाते रहे हैं। एक दृष्टिकोण उसे 'स्वर्ण युग' करार देता रहा तो दूसरा दृष्टिकोण 'सामंती काल' तथा आने वाले युगों में इतिहास के अध्ययन में जानकारी करने के बाद स्वर्ण युग शब्द ने अपना महत्व खो दिया क्योंकि ऐसा देखा गया कि स्वर्ण युग विशेषकर अभिजात्य वर्ग के लिए अपना विशेष अर्थ रखता है, जन सामान्य के लिए इतना उपयोगी नहीं परंतु कहीं इससे तरह गुप्त काल को मात्र सामंती काल मानकर खारिज कर देना भी अनुचित ही लगता।

KD Job Updates

पल्लव एवं चालुक्य

[500 ई. - 750 ई.]

वस्तुतः इस काल में, जैसा कि किसी विद्वान ने दावा किया है कि भारत की शक्ति एवं ओज नर्मदा नदी से दक्षिण रहा था। और इसने अपने को मुख्यतः सांस्कृतिक क्षेत्र में व्यक्त किया था।

महाराष्ट्र में चालुक्य राज्य स्थापित हुआ तथा इसने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सेतु का काम किया। इसी प्रकार दक्षिणी आन्ध्र प्रदेश एवं उत्तरी तमिलनाडु में पल्लव शक्ति की स्थापना हुई। चालुक्य शक्ति का संस्थापक पुलकेशिन प्रथम था तो पल्लव शक्ति का संस्थापक थे विष्णु।

नवीन शक्तियों के उद्भव के कारण :-

(1) नए क्षेत्रों में कृषि अर्थव्यवस्था का प्रसार हो रहा था।

(2) नवीन राजवंशों के द्वारा जनजातीय क्षेत्रों को जीता जा रहा था।

(3) ब्राह्मण और बौद्ध भिक्षुओं के माध्यम से नए क्षेत्रों में राजकीय प्रभाव को फैलाने का प्रयास किया जा रहा था।

(4) यही काल है जब उत्तर भारत से दक्षिण की ओर राजत्व की अवधारणा का प्रसार हो रहा था और उत्तर के राजत्व के मॉडल को दक्षिण में भी अपनाया जा रहा था।

KD Job Updates

चालुक्य - पल्लव संघर्ष :-

यह संघर्ष भौगोलिक था न कि वंशानुगत क्योंकि ये दोनों राज्य गोदावरी डेल्टा तथा कृष्णा - तुंगभद्रा दोआब के क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। इस संघर्ष की शुरुआत चालुक्य शासक पुलकेशिन - II ने की जब उसने पल्लवों पर हमला कर गोदावरी नदी के पास वेंगी का क्षेत्र छिन लिया। पल्लव शासक महेन्द्रवर्मन प्रथम उसके हाथों पराजित हुआ परन्तु ~~उसके~~ महेन्द्रवर्मन के उत्तराधिकारी नरसिंह वर्मन - I ने इस घटना का प्रतिशोध लेने का निर्णय लिया और उसने चालुक्यों की राजधानी बादामी पर 642 ई० में आक्रमण कर दिया। चालुक्य शासक पुलकेशिन II पराजित हुआ और मारा गया। फिर नरसिंह वर्मन I ने उसकी राजधानी पर कब्जा कर लिया। इस घटना के बाद उसने 'वातापीकोण्ड' तथा 'महामल्ल' की उपाधि ली। लगभग (13) वर्षों तक चालुक्यों का सिंहासन खाली रहा। फिर पुलकेशिन - II का एक उत्तराधिकारी विक्रमादित्य I गद्दी पर स्थापित हुआ। वह एक योग्य शासक था। अतः उसके साथ एक बार फिर संघर्ष शुरू हो गया।

यह संघर्ष आगे भी जारी रहा परन्तु इस संघर्ष का कोई स्पष्ट परिणाम सामने नहीं आया। दोनों लगभग शक्ति में बराबर थे। अंत में दोनों राजवंशों का पतन हो गया। चालुक्यों को राष्ट्रकूटों ने तथा पल्लवों को चोलों ने विस्थापित कर दिया।

को भी संरक्षण मिला था। दण्डिन ने 'दशकुमारचरितम्' तथा भारवि ने 'किरातार्जुनीयम्' नामक ग्रंथ की रचना की। उसी प्रकार चालुक्य दरबार में रविकीर्ति नामक विद्वान को संरक्षण मिला जिसने एहोल अभिलेख लिखा।

स्थापत्य कला

स्थापत्य कला के क्षेत्र में पल्लवों एवं चालुक्यों का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। उन्होंने क्रमशः ~~विविध~~ द्रविड़ स्थापत्य शैली तथा बेसर शैली की आधारभूत संरचना विकसित की।

पल्लव स्थापत्य :

निर्माण के निम्नलिखित महत्वपूर्ण केन्द्र :— तंजौर, कांचीपुरम, महाबलिपुरम और पुदुकोट्टई।

मंदिर निर्माण के चरण :

(I) **एकाश्म मंदिर** — में मंदिर पहाड़ों को काटकर बनाए जाते थे। ये मन्दिर एकाश्म मंदिर होने के बावजूद भी बेहतर कलात्मक योजना दर्शाते हैं। इसमें प्रायः दो प्रमुख शैलियाँ देखने को मिलती हैं — ~~महेन्द्रवर्मन~~

(1) **महेन्द्रवर्मन शैली** — इसमें प्रायः मण्डप प्रकार के मंदिरों का निर्माण हुआ है। मण्डप का अर्थ है— स्तम्भयुक्त बरामदा। इस शैली में पहाड़ को काटकर स्तम्भयुक्त बरामदा निर्मित किया जाता तथा

KD Job Updates

03/12/2018

पल्लव और चालुक्यों की सांस्कृतिक उपलब्धता =

धार्मिक पंथों के प्रति उदारता की नीति –

पल्लवों के द्वारा ब्राह्मण पंथ के साथ - साथ बौद्ध पंथ को भी संरक्षण दिया गया था स्वयं ह्वेनसांग ने दक्षिण की यात्रा के साथ यह विवरण देता है कि दक्षिण में लगभग 100 संघाराम थे जिनमें 10000 बौद्ध भिक्षु निवास करते थे काँचीपुरम बौद्ध शिक्षा का महान केन्द्र था। उसी प्रकार चालुक्यों ने ब्राह्मण पंथ के साथ साथ जैन पंथ को भी संरक्षण दिया (यह तथ्य भारतीय परंपरा की महत्वपूर्ण विशेषता रही है क्योंकि भारत से बाहर अन्य क्षेत्रों में जिनमें यूरोप भी शामिल है किसी शासक ने केवल एक पंथ को संरक्षण दिया जबकि अन्य पंथों को उत्पीड़ित किया)

साहित्य एवं विज्ञान →

पल्लव शासक महेन्द्रवर्मन -1 स्वयं एक बड़ा विद्वान था उसने मत्तविलासप्रहसन तथा भगवदज्जुक नामक ग्रन्थों की रचना की। फिर पल्लव दरबार में दण्डिन तथा भारवि जैसे विद्वानों को भी संरक्षण मिला था। दण्डिन ने दशकुमार चरितम तथा भारवि ने किरातार्जुनीय नामक ग्रंथ की रचना की। उसी प्रकार चालुक्य दरबार में रविकीर्ति

KD Job Updates

नामक विद्वान रहता था उसने एहोल अभिलेख लिखा।

स्थापत्य कला —

स्थापत्य कला के क्षेत्र में पल्लवों एवं चालुक्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है माना जा सकता है। पल्लव और चालुक्यों ने क्रमशः द्रविड़ स्थापत्य शैली तथा बेसर शैली की आधारभूत संरचना विकसित की।

पल्लव स्थापत्य —

निर्माण के निम्नलिखित महत्वपूर्ण क्षेत्र — तंजौर, काँचीपुरम, महाबलीपुरम और पुड्डुकोट्टई

मंदिर निर्माण के प्रकार —

(1) एकाश्म मंदिर — ये मंदिर पहाड़ों को काटकर बनाये जाते थे। ये मंदिर एकाश्म मंदिर होने के बावजूद भी बेहतर कलात्मक योजना दर्शाते है इसमें प्रायः दो प्रमुख शैलियाँ देखने को मिलती है —

(a) महेन्द्रवर्मन शैली — इसमें प्रायः मण्डप प्रकार के मंदिरों का निर्माण हुआ है मण्डप का अर्थ है स्तम्भ युक्त बरामदा इस शैली में पहाड़ को काटकर स्तम्भ युक्त बरामद निर्मित

KD Job Updates

किया जाता तथा अंदर की तरफ खोदकर 2-3 कक्ष बनाये जाते। मुख्य कक्ष में देवता की प्रतिमा स्थापित की जाती वह गर्भगृह कहलाता। इस शैली के मंदिर हमें महाबलीपुरम में देखने को मिलते है।

ⓑ नरसिंह वर्मन शैली—

इस शैली के अन्तर्गत भी पहाड़ों को काटकर मंदिर बनाये जाते रहे नरसिंह वर्मन शैली में मण्डप प्रकार के मंदिर बनते रहे थे इसका उदाहरण है महाबलीपुरम में महिष मंदिर, वराह मंदिर और पंच पाण्डव के मंदिर परन्तु इसके साथ-साथ रथ शैली में भी मंदिरों का निर्माण किया जाता रहा। इस शैली में छोटे-छोटे रथ के आकार के मंदिर दिखते है इसका उदाहरण है सप्त पैगोडा का मंदिर। इसमें 8 रथ बने मिलते है यथा युधिष्ठिर रथ, भीम रथ, अर्जुन रथ, नकुल-सहदेव रथ, द्रौपदी रथ, गणेश रथ, पिडारी रथ और वलैकुट्टम रथ। इसमें युधिष्ठिर रथ सबसे बड़ा है तथा द्रौपदी रथ सबसे छोटा

② स्वतंत्र रूप से बनाये गए मंदिर—

राजसिंह शैली में यद्यपि पहाड़ों को काटकर मंदिर बनाये जाते रहे परन्तु स्वतंत्र रूप से भी मंदिरों का निर्माण

KD Job Updates

किया जाने लगा। इसका उदाहरण है महाबलीपुरम का तटीय मंदिर।' इस मंदिर में द्रविड़ शैली की कई प्रमुख विशेषताएँ प्रकट हुयी है यथा स्तम्भ मण्डप खण्डीय शिखर तथा विमान (गर्भगृह से लेकर स्तूपिका तक की ऊँचाई)।

चालुक्य कालीन स्थापत्य—

निर्माण के केन्द्र —

एहोल, बादामी तथा पट्टादकल

मंदिर निर्माण की शैली —

चालुक्यों के अधीन नागर एवं द्रविड़ दोनों शैलियों में मंदिरों का निर्माण होता रहा है आगे चलकर दोनों शैलियों के संयोग से बेसर शैली का विकास हुआ उदाहरण हेतु पट्टादकल का विरूपाक्ष मंदिर द्रविड़ शैली का उदाहरण है। द्रविड़ शैली में खण्डीय शिखर बनते रहते थे इसीप्रकार मंदिर के द्वार पर मण्डप का भी निर्माण होने लगा। विरूपाक्ष मंदिर में यह देखने को मिलता है तथा मण्डप को दिवाल से घेरा जाने लगा। इसी प्रकार पट्टादकल में निर्मित पार्श्वनाथ मंदिर, नागर शैली का उदाहरण है। इसकी विशेषता है रेखीय शिखर।

नागरशैली में प्रदक्षिणापथ खुले आकाश में द्रविड़शैली में छत के नीचे बनता था।

पापनाथ मंदिर →

KD Job Updates

मूर्तिकला —

पल्लव कालीन मूर्तिकला पर अमरावती कला का प्रभाव देखा जा सकता है। महाबलीपुरम से प्राप्त अनेक मंदिरों में जिनमें सप्त पैगोडा के मंदिर शामिल है भव्य मूर्तियाँ देखने को मिलती है।

चालुक्यों की मूर्तिकला पर अजन्ता मूर्तिकला का प्रभाव देखा जा सकता है। चालुक्य मूर्तिकला के तीन प्रमुख केन्द्र थे अजन्ता, एलोरा और बादामी

चित्रकला ->

पल्लवों के अधीन सित्तानवसाल की गुफा से बेहतर चित्रकला के उदाहरण मिलते है (इसमें जैन चित्रकला का प्रभाव) दूसरी तरफ चालुक्यों के अधीन अजन्ता, एलोरा और बादामी की गुफा से भव्य चित्रों के उदाहरण मिले है।

(135 — last तक)

सामंतवाद, पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट, राजपूतों

त्रिदलीय संघर्ष, सांस्कृतिक योगदान

KD Job Updates

M.Q. पल्लव और चालुक्य स्थापत्य कला ने भारतीय कला को नवीन गति प्रदान की। इस कथन का परीक्षण कीजिए।

M.Q. अशोक कालीन गुफा वास्तुकला का चरम विकास पल्लव कालीन कला के रूप में देखने को मिलता है इस कथन का परीक्षण कीजिए।

M.Q. यह कहना कहाँ तक उचित है कि 500-750 ई० के बीच भारतीय संस्कृति का शक्ति और ओज नर्मदा से दक्षिण में प्रकट हुआ?

विज्ञान और तकनीक

इतिहास लेखन संबंधी मुद्दा —

पाश्चात्य विद्वानों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि प्राचीन भारत के लोग धर्म और अध्यात्म में ही डूबे रहे थे परन्तु प्राचीन भारत के लोगों ने विज्ञान गणित और तकनीकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ स्थापित की थी इतना तक कि अंकगणित और बीजगणित से संबंधित कुछ बातों के लिए भी स्वयं यूरोपीय विद्वान भी भारतीय ज्ञान पर निर्भर।

गणित	खगोल	भौतिकी	रसायन	
ब्रह्मगुप्त ⇓ ऋणात्मक अंकमाल	आर्यभट्ट पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ चक्कर चन्द्रग्रहण, सूर्य ग्रहण	पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि आकाश से संसार का निर्माण हुआ	* चमड़े से निर्मित उत्पाद * औषधि बनाने का ज्ञान * रंगों का निर्माण	वस्त्र निर्माण लौह तकनीकि — तलवार सिक्कों का निर्माण

KD Job Updates

गणित —

① लगभग तीसरी सदी ई० पू० में अंकमाला का विकास यूरोप के लोगों ने भी अंकमाला का ज्ञान अरब वालों के माध्यम से भारत से प्राप्त किया।

② 2nd BC से Zero का प्रयोग (यूरोप के लोग शून्य से परिचित नहीं)

③ बीजगणित में प्राचीन भारत के लोगों की प्रगति यूरोप पर भी इसका प्रभाव।

④ आर्यभट्ट को दशमलव का ज्ञान, इनके द्वारा त्रिकोणमिति का विकास।

⑤ ब्रह्मगुप्त द्वारा ऋणात्मक अंकों का प्रयोग

खगोल विज्ञान —

① खेती में सुविधा के लिए तथा भारतीयों के द्वारा ग्रहनक्षत्रों को देवता समझने के कारण खगोल विज्ञान की ओर आकर्षण।

② आर्यभट्ट के द्वारा पृथ्वी की परिधि का मान निकाला जाना, जो कुछ परिवर्तनों के साथ आज भी सत्य।

③ आर्यभट्ट द्वारा सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण का पता लगाया जाना तथा यह भी पता लगाया जाना कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है

④ वाराहमिहिर के द्वारा यह पता लगाया जाना कि चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है

ब्रह्मगुप्त का ब्रह्मसिद्धांत खगोलशास्त्र पर एक ग्रन्थ।

भौतिक शास्त्र –

विभिन्न धार्मिक पंथों के साथ यह स्थापित करने का प्रयास पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश से इस सृष्टि का निर्माण, फिर वैशेषिक दर्शन के द्वारा परमाणुवाद का सिद्धांत दिया जाना।

रासायन शास्त्र –

① वैदिक आर्यों को चमड़े शोधन का ज्ञान।

② चरक एवं सुश्रुत संहिता से विभिन्न पौधों के रसायन से औषधि बनाने का ज्ञान।

③ प्राचीन भारत के लोगों के द्वारा सभी रंगों को खोज लिया जाना यथा नीला रंग एवं टिकाऊ रंग।

औषधिशास्त्र –

① अथर्ववेद प्रथम ग्रन्थ के रूप में स्थापित।

② चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता औषधि शास्त्र पर महत्वपूर्ण ग्रन्थ इनसे शैल्य चिकित्सा तथा छूत की बीमारी का भी ज्ञान।

③ गुप्तकाल में धन्वंतरि महत्वपूर्ण चिकित्सक इसके अतिरिक्त भागवद की भी चर्चा।

KD Job Updates

तकनीकी —

① बेहतर किस्म के मृदभाण्डों का निर्माण यथा PGW व NBPW
② रेशमी वस्त्र उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग।
③ लोहे व इस्पात इसे स्टील कहा जाता था। भारतीय तलवार का विश्व में कहीं भी जवाब नहीं।
~~④ धातु~~

धातु कला —

① गुप्त कालीन साहित्य में 64 कलाओं का चर्चा।
② आभूषण निर्माण एक महत्वपूर्ण उद्योग
③ विभिन्न प्रकार के कलात्मक सिक्कों का निर्माण
④ महरौली के लौह स्तम्भ और बिहार के सुल्तानगंज से काँसे की बनी बुद्ध की विशाल प्रतिमा विकसित धातु कला के उदाहरण।

स्थापत्य निर्माण —

उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक विभिन्न शैलियों में बनी भव्य मूर्तियाँ विकसित इन्जीनियरिंग के उदाहरण।

* प्राचीनकाल में स्त्री की भूमिका (119)
* वर्णव्यवस्था (120)

KD Job Updates

KD Job Updates

पूर्व मध्यकालीन भारत

(750 – 1200 ई॰)

KD Job Updates

पूर्व मध्यकाल – I

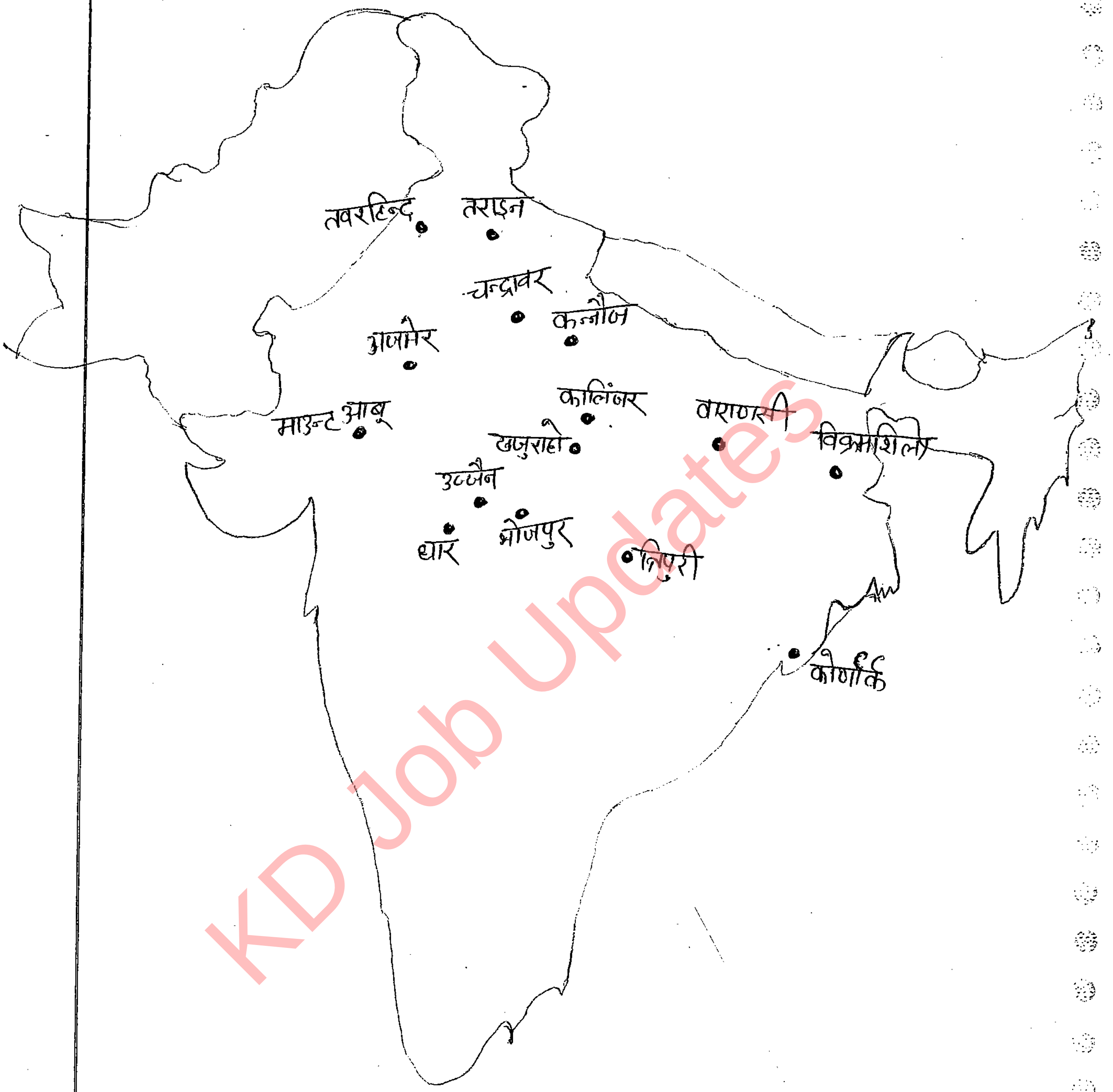

KD Job Updates

10/12/2018

पूर्व मध्यकाल की अवधारणा का आधार—

यूरोपीय मॉडल पर भारतीय इतिहास को भी 3 कालों में बाँटे जाने की प्रवृत्ति रही थी। इस दिशा में पहल ब्रिटिश विद्वान जेम्स मिल ने की थी जिसने 1817 में भारतीय इतिहास को हिन्दू काल, मुस्लिम काल और ब्रिटिश काल में बाँटा था उसने मुस्लिम काल का आरम्भ उत्तर-भारत में तुर्की शासन की स्थापना से माना था।

आगे चलकर राष्ट्रवादी विद्वानों ने जेम्स मिल के नामाकरण को चुनौती देते हुए इसे प्राचीनकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल का नाम दिया। परन्तु इन विद्वानों ने भी मध्यकाल का आरम्भ उत्तर-भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना से ही माना था।

परन्तु 1950 के दशक में मार्क्सवादी विद्वानों ने परिवर्तन की व्याख्या में राजनीतिक घटनाक्रम की तुलना में आर्थिक सामाजिक परिवर्तन को विशेष महत्व दिया। इस आधार पर उन्होंने इतिहास के काल विभाजन को चुनौती दी तथा यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मध्यकाल का आरम्भ मुस्लिम शासन की स्थापना जैसी घटना से न मानकर सामंतवाद के उद्भव से जोड़कर देखा जाना चाहिए। इसी आधार पर इन्होंने पूर्व मध्यकाल की अवधारणा लायी तथा 7-8वीं सदी से मध्यकाल का आरम्भ माना।

KD Job Updates

युग का मूल्यांकन —

इस युग का मूल्यांकन करते हुए एक धारणा राजनीतिक विघटन एवं पतन की उभर कर आयी। माना गया कि इस काल में साम्राज्य की जगह ~~जगह~~ छोटे-छोटे राज्य थे तथा राजनीतिक विघटन एक सामान्य प्रवृत्ति रही आर्थिक क्षेत्र में भी इसे व्यापार एवं मुद्रा अर्थव्यवस्था के पतन के रूप में देखा गया था।

परन्तु नवीन इतिहास लेखन में पतन की अवधारणा को निम्न आधार पर (मना) अस्वीकार कर दिया गया —

(1) एक साम्राज्य की जगह छोटे-छोटे राज्यों की स्थापना ~~मैं~~ ने क्षेत्रों के महत्व को बढ़ाया तथा क्षेत्रीय स्तर पर आर्थिक एवं सामाजिक गतिविधियों को बल मिला।

(2) इस काल को आर्थिक पतन का काल न मानकर अभूतपूर्व रूप में कृषि अर्थव्यवस्था के व्यापार का काल माना जाना चाहिए क्योंकि जनजातीय क्षेत्र में इस काल में कृषि का विकास हुआ तथा जनजातीय जनसंख्या कृषक जनसंख्या में ढली।

(3) यह वह काल था जब क्षेत्रीय भाषा एवं साहित्य को प्रोत्साहन मिला यथा, हिन्दी, उड़िया, मैथिली, मराठी, गुजराती जैसी क्षेत्रीय भाषाएँ अपनी पहचान बनाने लगी।

(4) इस काल में स्थापत्य कला की 3 प्रमुख शैलियाँ नागर बेसर 4 द्रविड़ ने क्लासिकल मानदण्ड ग्रहण की।

KD Job Updates

(5) इस काल में संस्कृत, तमिल तथा कन्नड़ साहित्य में भी प्रगति देखी गयी तथा मूर्तिकला, चित्रकला को भी प्रोत्साहन मिला।

पूर्व-मध्यकाल में परिवर्तन की व्याख्या –

एक समय ऐसा था जब कार्ल मार्क्स ने एशियाई उत्पादन प्रणाली की व्याख्या देकर एशियाई एवं भारतीय समाज में परिवर्तन-हीनता की बात कही थी परन्तु भारतीय विद्वानों के द्वारा इस विचार को चुनौती मिली तथा यह निर्धारित किया जाने लगा कि भारतीय समाज में निरंतर परिवर्तन होते रहे।

इस काल का अध्ययन करते हुए राष्ट्रवादी विद्वानों ने परिवर्तनहीनता की अवधारणा को अस्वीकार कर परिवर्तन की बात की। परन्तु उनके लिए परिवर्तन का अर्थ था राजनीतिक परिवर्तन अर्थात साम्राज्य का विघटन और छोटे राज्यों की स्थापना।

दूसरी तरफ कुछ अन्य विद्वानों ने परिवर्तन को स्वीकार किया तथा इन्होंने परिवर्तन को आर्थिक सामाजिक ढाँचे में प्र होने वाले परिवर्तन से जोड़कर देखा। परन्तु ये विद्वान भी दो भिन्न दृष्टिकोणों से परिवर्तनों की व्याख्या करते रहे हैं एक दृष्टिकोण 'सामंतवाद' के मॉडल पर बल देता है तो दूसरा दृष्टिकोण 'समन्वित राज्य' के मॉडल पर।

KD Job Updates

- परिवर्तन
  - अपरिवर्तन (मार्क्स)
  - राजनीतिक परिवर्तन
  - सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन
    - विघटन → सामंतवाद
    - विकेन्द्रीकरण → समन्वित

अध्ययन के स्रोत —

इस काल के अध्ययन स्रोत के रूप में निम्न साक्ष्य महत्वपूर्ण है —

① भूमि अनुदान पत्र — भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी संख्या में भूमि अनुदान पत्र के रूप में ताम्रपत्र मिले है। इन ताम्रपत्रों से हमें इसकाल में आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक ढाँचों में होने वाले परिवर्तनों की सूचना मिलती है।

② शासकों के अभिलेख — फिर इसकाल में विभिन्न राजवंशों के द्वारा समय-समय पर अभिलेख भी जारी किये जाते रहे थे इनमें उनकी उपलब्धियों का व्याख्यान है इन्हें भी अध्ययन स्रोत के रूप में देखा जा सकता है यथा मिहिरभोज का ग्वालियर अभिलेख, विजयसेन का देवपारा अभिलेख आदि।

③ इस काल में बड़ी संख्या में क्षेत्रीय राज्यों के उद्भव के साथ क्षेत्रीय साहित्य प्राप्त होता है। उदाहरण हेतु राजपूत शासकों के दरबार में चारण एवं भाटों ने

KD Job Updates

रासो साहित्य की रचना की उदाहरण हेतु परमालरासो व विशलदेवरासो, पृथ्वीराजरासो आदि। इसके साथ ही कश्मीर में कल्हण के द्वारा लिखित राजतरंगणी की चर्चा की जा सकती है।

महत्वपूर्ण टॉपिक –

उत्तर - भारत

① अरबों की सिंध विजय तथा उसका प्रभाव।

② पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट शक्ति के बीच संघर्ष तथा उसका प्रभाव।

③ राजपूत राज्यों का उद्भव, राजपूतों की प्रशासनिक एवं सामाजिक संरचना, सामंतवाद तथा समन्वित राज्य की अवधारणा।

④ अलबरूनी का विवरण, अर्थव्यवस्था – कृषि अर्थ व्यवसाय शिल्प एवं उद्योग, मुद्रा अर्थव्यवस्था तथा नगरीकरण।

⑤ उत्तर - भारत में धर्म की स्थिति तथा तंत्रवाद

⑥ साहित्य – संस्कृत एवं अपभ्रंश, स्थापत्य की नागरशैली, मूर्तिकला एवं चित्रकला।

दक्षिण - भारत

① राष्ट्रकूट एवं चोल – चोलों के अधीन साम्राज्यवाद, प्रशासन, स्थानीय स्वशासन, अर्थव्यवस्था, समाज एवं संस्कृति।

② अर्थव्यवस्था में मंदिरों की ~~व्यवस्था~~ भूमिका – दक्षिणभारत में नाडु एवं नगरम् की भूमिका।

KD Job Updates

③ भाषा, साहित्य एवं कला —

तमिल एवं कन्नड़ भाषा का एवं साहित्य का विकास, स्थापत्य की बेसर एवं द्रविड़ शैली, मूर्ति कला एवं चित्रकला।

सामंतवाद

सामंतवाद की अवधारणा मध्यकाल की यूरोपीय समाज के सन्दर्भ में विकसित हुयी। रोमन साम्राज्य के विघटन के पश्चात यूरोप में जो व्यवस्था कायम हुयी थी उसे सामंतवाद के नाम से जाना गया तथा इसकी विशेषता बतायी गई कृषि अर्थव्यवस्था पर आधारित मेनर प्रणाली अथवा कृषि दासता का विकास है, राजा एवं सामान्य लोगों के बीच मध्यस्थ एवं बिचौलियों के रूप में लॉर्ड, बैरन, नाईट का उद्भव तथा राजस्व एवं सैनिक सेवा के लिए राजा की (इन मध्यस्थों) लार्ड पर निर्भरता।

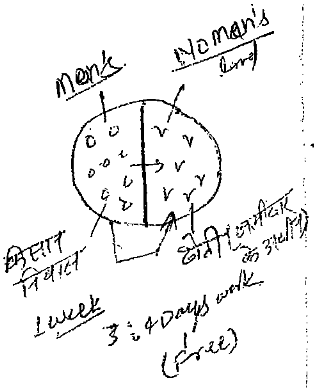

कुछ भारतीय विद्वानों ने भारत में भी सामंतवाद की स्थिति स्वीकार की इसे 'ऊपर से सामंतवाद और नीचे से सामंतवाद' का नाम दिया। ये विद्वान थे (डी॰ डी॰ कौशाम्बी)

KD Job Updates

इन विद्वानों (डी. डी. कौशाम्बी) ने सामंतवाद के उद्भव को 'भूमि अनुदान' से जोड़ा। उनके विचार में जब राजा के द्वारा भूमि-अनुदान दिया गया तो किसानों के ऊपर एक जमींदार स्थापित हो गया उन्होंने उसे ऊपर से सामंतवाद कहा। फिर उनका यह भी मानना था कि धीरे धीरे किसानों के बीच से निकलकर क्षेत्रीय स्तर पर एक जमींदार स्थापित हो गया उसे उन्होंने नीचे से सामंतवाद का नाम दिया।

आगे (R. S. शर्मा) ने भारतीय सामंतवाद की विस्तृत व्याख्या की उन्होंने भी सामंतवाद के उद्भव को भूमि अनुदान से जोड़कर देखा परन्तु उन्होंने इसका विभाजन ऊपर से सामंतवाद और नीचे से सामंतवाद को समाप्त कर केवल सामंतवाद का नाम दिया। उन्होंने 1965 में लिखित अपनी पुस्तक 'भारतीय सामंतवाद' की व्याख्या निम्न रूप में की —

① सर्वप्रथम प्रथम सदी ईसा पूर्व में एक सातवाहन शासक ने यज्ञ कराने वाले पुरोहित को भूमि अनुदान दिया फिर बड़ी संख्या में ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को भूमि अनुदान दिये गए किन्तु आरम्भ में दान ग्रहिता को केवल राजस्व प्राप्त करने का अधिकार दिया गया प्रशासन का अधिकार नहीं परन्तु आगे उन्हें प्रशासनिक अधिकार भी सुपुर्द किए जाने लगे।

② लगभग 5वींसदी से दानग्रहिता को प्रशासनिक अधिकार प्राप्त होने लगे इसकारण क्षेत्रीय स्तर पर इनका प्रभाव बढ़ गया

तथा राज्य का नियंत्रण कमजोर हुआ।

③ फिर जब गुप्तकाल के अंत में व्यापार का पतन हुआ तो फिर मुद्राओं की कमी पड़ गयी इसलिए गुप्त काल के पश्चात राजकीय अधिकारियों को भी भूमि अनुदान के रूप में वेतन दिया जाने लगा।

④ लगभग 7वीं सदी तक निजी लोगों को तौर पर भी भूमि अनुदान दिया जाता था परन्तु 7वीं–13वीं सदी के बीच बड़ी संख्या में मठों एवं मंदिरों को भूमि अनुदान दिये गए।

⑤ 10वीं सदी के बाद सैनिक अनुदानों की संख्या बढ़ने लगी।

11/12/2018

हरिवंश मुखिया
राजनीतिक शक्ति का राजा का पतन ⇓ सामंतवाद
मेनर प्रणाली ⇓ कृषिदास ⇓ सामंतवाद नहीं था भारत में ⇓ उपजातियाँ

सामंतवाद के उद्भव को प्रेरित करने वाले कारक—

① भूमि अनुदान का आरम्भ तथा दान ग्रहिता को प्रशासनिक अधिकार सुपुर्द किया जाना।

② व्यापार तथा मुद्रा-अर्थव्यवस्था के पतन के कारण भूमि अनुदान का विस्तार।

③ ईसा के आरम्भिक शताब्दियों में धर्म विजय की अवधारणा के विकास के कारण बड़े राज्य के अन्दर छोटे राज्य की स्थापना तथा इसके परिणामस्वरूप पिरामिड नुमा ढाँचे का विकास।

④ हूणों के आक्रमण के कारण राजनीतिक विघटन को प्रोत्साहन।

KD Job Updates

भारतीय सामंतवाद की विशेषताएँ—

(1) एक भू-स्वामी वर्ग एवं एक अधीनस्थ कृषक वर्ग की उपस्थिति
(2) मध्यस्थ और बिचौलियों के द्वारा किसानों का शोषण।
(3) जनजातीय समूह का कृषक के रूप में ढलना।
(4) मंदिरों एवं मठों का भू-स्वामी वर्ग के रूप में उद्भव।
(5) शिल्प एवं व्यापार का भी सामंतीकरण।
(6) 10वीं सदी के बाद सैनिक अनुदानों की उपस्थिति।
(7) धर्म के क्षेत्र में भक्ति तथा स्थापत्य में भी सामंती दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति।
(8) मंदिर में देवताओं की उपस्थिति सामंत-चक्र की अवधारणा को अभिव्यक्ति करती।

मध्यवर्ग-निवेश
कुलीन संचय
में विश्वास

समन्वित राज्य का मॉडल—

इसके प्रतिपादक बी॰डी॰ चट्टोपध्याय तथा हरमन कुल्के। यह मॉडल भारतीय सामंतवाद की मूल मान्यताओं को अस्वीकार करता है। सामंतवाद पर काम करने वाले विद्वानों ने भूमि अनुदान के प्रभाव पर विशेष बल दिया तथा भूमि अनुदान को पूर्व मध्यकाल में होने वाले आर्थिक सामाजिक परिवर्तनों का मुख्य कारण माना। समन्वित राज्य के मॉडल को स्वीकार करने वाले विद्वान भी भूमि अनुदान तथा उनके आर्थिक सामाजिक प्रभाव पर विशेष रूप से बल देते रहे है फिर भी दोनों के मौलिक दृष्टिकोण में भी अंतर है।

KD Job Updates

सामंतवाद का मॉडल

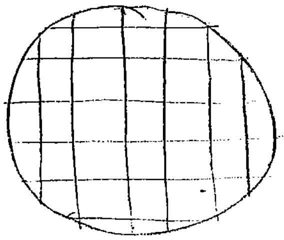

राजनीतिक विघटन

समन्वित राज्य का मॉडल

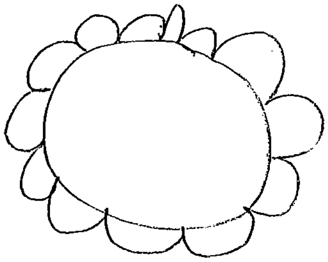

राजनीतिक संघटन

(i) गुप्तोत्तर काल तथा पूर्व मध्यकाल में जो बहुराज्यीय व्यवस्था कायम हुयी उस सन्दर्भ में सामंतवाद तथा समन्वित राज्य के मॉडल के दृष्टिकोण पृथक है। सामंतवाद का मॉडल बहुराज्य व्यवस्था को राजनीतिक विघटन का परिणाम मानता है तो समन्वित राज्य का मॉडल इसे राजनीतिक संघटन का परिणाम मानता है। दूसरे शब्दों में सामंतवाद के अनुसार पुराने राज्यों के टूटने से यह व्यवस्था कायम हुयी तथा समन्वित राज्य के मॉडल से नए राज्य के बनने से यह व्यवस्था कायम हुयी।

(ii) सामंतवाद का मॉडल भूमि अनुदान को –ve प्रभाव से तथा समन्वित राज्य का मॉडल इसे +ve मानता है। प्रथम इसके माध्यम से नये क्षेत्रों में कृषि का प्रसार हुआ दूसरे इसके माध्यम से नए राजवंशों ने वैधता प्राप्त की।

(iii) समन्वित राज्य के मॉडल के अनुसार भूमि अनुदान के माध्यम से न केवल राजनीतिक संघटन बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक संगठन को भी प्रोत्साहन मिला उदाहरण हेतु भूमि अनुदान के मॉडल से जनजातीय समूह कृषक के रूप में ढले

KD Job Updates

साथ ही जनजातीय देवताओं का भी मुख्य देवताओं के साथ एकीकरण हुआ। जगन्नाथ पहले उड़ीसा के जनजातीय देवता थे परन्तु एकीकरण के पश्चात विष्णु के एक अवतार के रूप में स्वीकृत हुए।

(1) Q क्या हमारे समक्ष उपलब्ध भू-स्वामित्व के साक्ष्य प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत में सामंतवाद के प्रचलन की सिद्धांत (Theory) का समर्थन करते हैं? (2015)

(2) Q पूर्व मध्यकालीन समाज के लिए भारतीय सामंतवाद शब्द की प्रासंगिकता पर टिप्पणी कीजिए।

(3) Q प्रारम्भिक भारत के भूमि अनुदान पत्रों में अदानी को क्या विशेषाधिकार दिये जाते थे। सामाजिक राजनीतिक परिवेश के एकीकरण or विघटन के लिए भूमि अनुदान पत्र कहाँ तक उत्तरदायी थे?

(4) Q वर्ष 750-1200 ई. के मध्य कृषि अर्थव्यवस्था की आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए (150)

(5) Q भारतीय सामंतवाद पर इतिहासकारों द्वारा किन परिवर्तनों की परिकल्पना की गई है आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

Ans 1 ⇒ दो प्रमुख पहलू

प्रथम पहलू – कुछ ऐसे भूमि अनुदान के साक्ष्य जिनसे पूर्व मध्यकाल तक आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों की पुष्टि हो रही है।

दूसरा पहलू – इसमें अपना झुकाव दर्शाना है कि क्या ये परिवर्तन भारत में सामंतवाद के उद्भव की पुष्टि कर पाती।

KD Job Updates

Introduction —

प्राचीन काल एवं पूर्व मध्यकाल में प्रचुर संख्या में मिलने वाले भूमि अनुदान के साक्ष्य भारत के आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक ढाँचे में होने वाले परिवर्तन की ओर संकेत करते है। परंतु इन परिवर्तनों को सीधे तौर पर सामंतवाद के उद्‌भव से जोड़ना थोड़ा कठिन है

साक्ष्य —

① प्रथम सदी ई० पू० में सातवाहन शासकों द्वारा भूमि अनुदान का साक्ष्य परंतु यह महज धार्मिक अनुदान तथा दान ग्रहिता को प्रशासनिक ~~अनुदान~~ अधिकार सुपुर्द नहीं किया जाता।

② 4th सदी के पल्लव अभिलेख 4 5वीं सदी के वाकाटक अभिलेख से प्रशासनिक अधिकार सौंपे जाने के साक्ष्य।

③ हर्षवर्धन के काल में राजकीय अधिकारियों को भूमि अनुदान दिए जाने के साक्ष्य।

④ रूद्रदमन के जूनागढ़ अभिलेख से यह सूचना की दूसरी सदी तक लोगों से बेगार लिया जाता।

⑤ 397 ई० में इंदौर से के प्राप्त एक ताम्रपत्र से उपसामंतीकरण (सामंत के अंदर सामंत) के विकास की सूचना।

⑥ समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में पराजित शासकों और सामंतों की सूची।

⑦ प्रतिहार एवं ~~[illegible]~~ राजपूत शासकों के द्वारा सैनिक अनुदान दिए जाने के साक्ष्य।

KD Job Updates

परंतु भारतीय सामंतवाद में यूरोपीय सामंतवाद का एक महत्वपूर्ण अभिलक्षण अनुपस्थित और वह है कृषि दासता इसलिए भारतीय सामंतवाद को अर्धसामंती माना गया।

(Q2) Ans - प्रथम कारक — सामंतवाद के महत्वपूर्ण पहलुओं को स्पष्ट करना है।

दूसरा कारक → भूमि अनुदान पत्रों का उदाहरण देकर यह दर्शाना है कि (क्या) इनके द्वारा किस प्रकार आर्थिक सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन लाया जा रहा है।

(3) यह देखना है कि क्या ये परिवर्तन सामंतवाद की पुष्टि कर पाते

(Q4) दो पक्ष

प्रथम पक्ष – कृषि अर्थव्यवस्था का प्रसार — भूमि अनुदान के माध्यम से कृषि का विस्तार ब्राह्मण एवं दानग्रहिता के माध्यम से सिंचाई का विस्तार, बृहद्संहिता, कृषि पराशर आदि ग्रन्थों से बागवानी फसलों के विकास की सूचना।

दूसरा पक्ष → मध्यस्थ और बिचौलियों के उद्भव के कारण किसानों का शोषण यथा इसकाल के दानपत्रों में दान ग्रहिताओं को सभी प्रकार के अधिकार सुपुर्द किया जाना इसकाल से किसानों के समानान्तर दान ग्राहिताओं की स्थिति मजबूत। वात्स्यायन के कामसूत्र में बेगार लिए जाने, और स्कन्दपुराण में बंधुआ मजदूरी का जिक्र

KD Job Updates

Q5-

* प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट शक्ति तथा त्रिदलीय संघर्ष —

हर्षवर्धन की मृत्यु 643 ई० में हो चुकी थी उसके बाद उत्तर-भारत में अस्थिरता का माहौल रहा था समकालीन साहित्य में यह मत्स्य न्याय के रूप में व्यक्त हुआ। आगे उत्तर-पश्चिम में प्रतिहार शक्ति और उत्तर-पूर्व में पाल शक्ति के उद्भव के पश्चात फिर एक बार राजनीतिक सुव्यवस्था की स्थिति आयी। प्रतिहार शक्ति का संस्थापक नागभट्ट-I को माना जाता है आगे वत्सराज नागभट्ट-II और मिहिरभोज जैसे महत्वपूर्ण शासक हुए वहीं पाल शक्ति का संस्थापक गोपाल था उसके योग्य उत्तराधिकारी के रूप में धर्मपाल और देवपाल स्थापित हुये।

दक्षिण-भारत मे महाराष्ट्र क्षेत्र में चालुक्य शक्ति को विस्थापित कर राष्ट्रकूट स्थापित हुए। राष्ट्रकूट वंश का संस्थापक दंतीदुर्ग था यह एक विलक्षण वंश था जिसने शक्तिशाली राजवंशों की एक पूरी कतार खड़ी कर दी। उदाहरण हेतु ध्रुवधारा वंश, गोविन्द-III, इन्द्र-III तथा कृष्ण-III।

इस काल की एक महत्वपूर्ण घटना है कि त्रिदलीय संघर्ष अर्थात प्रतिहार एवं पाल शक्ति के बीच संघर्ष

KD Job Updates

आरम्भ हुआ था उस संघर्ष मे राष्ट्रकूट भी शामिल होकर इसे त्रिदलीय संघर्ष बना दिया।

त्रिदलीय संघर्ष के कारण —

(1) हर्षवर्धन के काल से ही कन्नौज 08 महोदयश्री राजनीतिक प्रभुत्व के केन्द्र बन चुका था जिसपर विभिन्न शक्तियाँ नियंत्रण स्थापित करने के लिए प्रयासरत रहती।

(2) पाल, प्रतिहार शक्ति बनारस से लेकर बिहार तक के क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए संघर्षरत थे।

(3) सैनिक विजय राजतंत्र की प्रतिष्ठा से भी जुड़ा हुआ था। तीनों शक्तियों के द्वारा बहुत बड़ी सेना स्थापित की गई थी इन्हें बनाये रखने के लिए संसाधनों की जरूरत थी।

(4) तीनों राजवंशों के द्वारा भव्य मंदिरों का निर्माण किया जाता। इन मंदिरों के निर्माण के लिए भी संसाधनों की जरूरत थी।

परिणाम — इसका कोई निश्चित परिणाम सामने नहीं आया राष्ट्रकूटों की कन्नौज से कहीं अधिक दूरी थी इसलिए कन्नौज पर नियंत्रण बनाये रखना उनके लिए व्यावहारिक रूप से संभव नहीं हुआ फिर ऐसा माना जाता है कि उत्तर में उनका अधिक उलझाव नहीं हुआ होता तो वो दक्षिण में सम्भवतः अधिक विस्तार कर पाते यह आगे चलकर मराठों के अन्तर्गत ही संभव हुआ उत्तर व दक्षिण दोनों में एक ही साथ विस्तार की नीति जारी रखी गयी तथा इसका कारण था मराठों के पास अधिक मानव संसाधन होना।

KD Job Updates

इस संघर्ष के कारण प्रतिहार एवं पाल शक्ति दोनों का पतन हो गया तथा इनके पतन के पश्चात् उत्तर में राजपूत राज्यों की स्थापना हुयी।

* राजपूतों का उद्भव —

राजपूतों के उद्भव को सामान्यतः देशी V/s विदेशी उद्भव के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता रहा है परन्तु इसके उद्भव के जटिल प्रक्रिया के परिणाम के रूप में देखने की जरूरत है। —

① प्राचीन काल से चला आ रहा क्षत्रिय वर्ग राजपूतों की श्रेणी में शामिल।

② विभिन्न वर्गों के लोग जो भी शासक वर्ग में शामिल आगे उन सभी को क्षत्रिय का दर्जा प्राप्त।

③ भूमि दान प्राप्त करने वाले कुछ कुलीनों ने क्षेत्रीय स्तर पर शक्ति अर्जित कर ली उन्होंने किले बनाये अपनी सेना स्थापित की फिर राजपूतों की श्रेणी मे शामिल हो गए।

④ जनजातीय क्षेत्र में कृषि अर्थव्यवस्था के प्रसार के परिणामस्वरूप क्षेत्रीय स्तर पर शासकों का उद्भव हुआ और वो भी राजपूतों की श्रेणी में शामिल हुए।

राजपूतों के उद्भव को एक सामाजिक प्रक्रिया का भी परिणाम माना जाता —

KD Job Updates

(a) बताया जाता है कि व्यावहारिक संबंधों के माध्यम से निम्न पृष्ठभूमि से आए हुए भूमिधारी समूह ने अपना ~~सामूह~~ सामाजिक दर्जा ऊपर उठाया तथा राजपूतों की श्रेणी में शामिल हुए।

(b) राजपूतों के उद्भव में ब्रह्म-क्षत्र की अवधारणा को भी विशेष महत्व दिया जाता है। बताया जाता है कि कुछ राजवंशीय राजपूतों ने क्षत्रिय से पूर्व ब्राह्मण के स्तर का दावा कर दिया आगे इन्हें राजपूत का दर्जा प्राप्त हो गया।

प्रमुख राजपूत राजवंश –

अजमेर एवं दिल्ली में चौहान
कन्नौज — गहड़वाल
कलिंजर, महोबा, खजुराहो — चंदेल
गुजरात — सोलंकी
मालवा — परमार
गोरखपुर के पास डाहलमंडल — कलचुरी
उत्तर-पश्चिम में पेशावर के पास ओहिन्द — हिन्दूशाही

KD Job Updates

प्रशासनिक संरचना –

① राजा के द्वारा भारी भरकम उपाधियाँ ली जाती उदाहरण के लिए पृथ्वीराज-चौहान ने भारतेश्वर की उपाधि धारण की।

② राजा के अधीन और भी छोटे - छोटे शासक और सामंत होते थे इनके द्वारा विभिन्न प्रकार की उपाधियाँ ली जाती थी यथा मांडलिक, मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर etc.

③ राजत्व के दैवीकरण की प्रवृत्ति जारी रही तथा राजा की तुलना देवता से की जाती रही यथा प्रतिहार शासकों ने गोपाल or हरी जैसे पदनाम का अपने लिए प्रयोग किया।

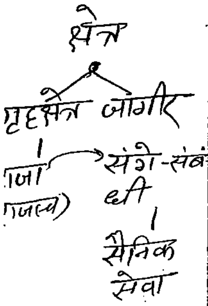

④ सम्पूर्ण क्षेत्र को दो भागों में बाँटा जाता था गृहक्षेत्र तथा जागीर। गृहक्षेत्र का राजस्व राजा के पास जाता था जबकि जागीर भूमि 12 or 16 गाँव or उनके गुणकों (16, 32, 64 - -) में विभाजित कर अपने रक्त संबंध के लोगों के बीच आवंटित किया जाता था बदले में उनके द्वारा सैनिक सेवा प्रदान की जाती।

⑥ इस काल की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही नौकरशाही का सामंतीकरण अर्थात कुछ सामंतों को प्रशासनिक पद दिये जाते वहीं कुछ प्रशासनिक सामंतों को भी सामंती उपाधि प्रदान की जाती।

KD Job Updates

⑥ राज्य का विभाजन मंडल, विषय एवं गांव के बीच किया जाता।

⑦ राजपूत शासकों को अपने क्षेत्र वंश तथा अपनी भूमि से गहरा लगाव होता इसलिए कई अवसरों पर वे ~~एक~~ ~~अधिक~~ अपने राज्य की परिधि से बाहर उठकर तुर्की आक्रमण के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाने में जुट गए।

12/12/2018

पूर्व मध्यकालीन अर्थव्यवस्था —

कृषि अर्थव्यवस्था —

कृषि अर्थव्यवस्था का प्रसार हो रहा था। कृषि अर्थव्यवस्था को प्रेरित करने वाले निम्न महत्वपूर्ण कारण थे —

① भूमि अनुदान के माध्यम से नए क्षेत्रों को कृषि के लिए आबाद किया जा रहा था हालाँकि यह सही है कि दूरवर्ती क्षेत्रों के बदले बसे - बसाए गांव भूमि अनुदान में दिए जा रहे थे परन्तु गौर करने वाली बात यह है कि ये वैसे गांव थे जहाँ अकाल अथवा किसी अन्य कारण से आबादी का एक भाग इसे खाली ~~कर~~ कर चुका था और यहाँ एक बड़ी भूमि परती हो चुकी थी। दान ग्रहिता द्वारा इन क्षेत्रों में नई जनसंख्या को बसाकर इस भूमि को आबाद कराया गया।

② सिंचाई का विकास —

इस काल में राज्य, कुलीन, भूमिधारी वर्ग तथा ग्रामीण समुदाय इन सभी के द्वारा सिंचाई के

KD Job Updates

विकास के लिए काम किया जा रहा था शासकों के द्वारा तालाब, जलाशय एवं कुओं का निर्माण कराया जाता। कुलीन भूमिधारी वर्ग भी इनके विकास के लिए काम करते। कुछ शासकों के द्वारा नहरों एवं बांधों का भी निर्माण कराया गया था; कश्मीर के शासक (ललितादित्य) के विषय में कहा गया है कि उसने झेलम नदी से एक नहर निकलवाया था फिर, इसकी एक सदी के बाद कश्मीर में एक मंत्री (सूय्या) जो एक इन्जीनियर भी था ने झेलम नदी पर एक बाँध बनवाया था, इसी प्रकार चोल शासक (राजेन्द्र - I) को एक चोलगंग झील बनाने का श्रेय दिया जाता है इसके अतिरिक्त सुदूर दक्षिण में ग्रामीण सभा ने भी सिंचाई के विकास के लिए भी काम किया इसके लिए एक समिति का गठन किया जाता था जिसे एनिवारियम कहा जाता था।

सिंचाई विकास हेतु गठित समिति ⇓ एनिवारियम

गुजरात में सिंचाई के लिए सीढ़ीदार कुँआ का निर्माण किया गया इसे वापिज कहा जाता यह सिंचाई में तकनीकी विकास को दर्शाता है। इसका एक उदाहरण अरघट्ट भी है। अरघट्ट में पहले रस्सी के माला का प्रयोग होता था परन्तु 11वीं सदी तथा इसके पश्चात लोहे की जंजीर का प्रयोग आरम्भ हो गया।

KD Job Updates

③ कृषि उत्पादन —

इस काल में विभिन्न प्रकार की फसलों का प्रचलन था विदेशी यात्रियों के द्वारा भी विभिन्न प्रकार के फसलों का विवरण दिया गया है खाद्यान्न फसलों के साथ-साथ गन्ना, कपास जैसे नगदी फसलों का भी विकास हुआ है। कृषि विकास का एक पहलू है बागवानी फसलों का विकास। बृहद संहिता नामक ग्रन्थ में कलम लगाने जैसी पद्धति की सूचना प्राप्त होती है।

खाद्यान्न फसल + नगदी फसलों

शिल्पों का विकास —

ग्रामीण क्षेत्र में शिल्पी यजमानी पद्धति के आधार पर संगठित थे अर्थात वे किसानों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उत्पादन करते थे और बदले में उन्हें अनाज प्राप्त होते थे।

इसके अतिरिक्त नगरीय शिल्पी जो होते थे जो व्यापार की जरूरत के अनुकूल शिल्प उत्पादन करते थे वे नगर एवं आस-पास के क्षेत्र में बसे होते इसके अतिरिक्त उत्पादन की जरूरत को देखते हुए अन्य क्षेत्रों से भी शिल्पियों का वहाँ आगमन होता थे।

शिल्पी श्रेणियों में संगठित होते। श्रेणी का मुखिया श्रेष्ठी अथवा ज्येष्ठक कहलाता था। समितियों के माध्यम से श्रेणी के कार्यों का संचालन होता था कई बार एक ही श्रेणी के एक से अधिक मुखिया होते थे उदाहरण के लिए

KD Job Updates

ग्वालियर से तेलियों की एक श्रेणी की सूचना मिलती है जो 10 मुखिया के अधीन रखी गयी थी उसी प्रकार माली की श्रेणी के ऊपर 7 मुखिया थे।

आर्थिक और सामाजिक जीवन में श्रेणियों की भूमिका —
--- (पीछे से लिखना है)।

व्यापार एवं नगरीकरण से संबंधित विवाद =

इस मुद्दे पर इतिहास लेखन के दो भिन्न दृष्टिकोण रहे है —

प्रथम दृष्टिकोण —
(R. S. Sharma) तथा उनके समर्थकों के द्वारा व्यापार एवं नगरीकरण के विषय में निम्नलिखित दृष्टिकोण रहा है —

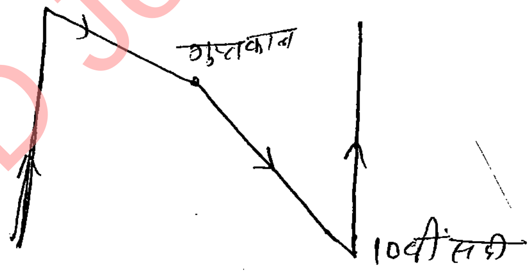

इनके अनुसार ईसा के आरम्भिक शताब्दियों में रोमन व्यापार के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को अत्यधिक बल मिला तथा द्वितीय नगरीकरण विकास की उच्च अवस्था में पहुँच गया। परन्तु मौर्योत्तर काल के अंत तक रोमन व्यापार में पतन के कारण कुछ नगरों के पतन की प्रक्रिया आरम्भ ही हुयी थी तभी पूर्वी रोमन

साम्राज्य or बिजेन्टियाई साम्राज्य के साथ भारत का व्यापारिक संबंध जुड़ गया। इस कारण गुप्त काल में आर्थिक समृद्धि बनी रही और नगर बने रहे।

समृद्धि नगरों की चर्चा वात्स्यायन के कामसूत्र एवं फाह्यान के विवरण से प्राप्त होता है परन्तु आगे 6ठी सदी के मध्य में जब पूर्वी रोमन साम्राज्य के साथ भारत के व्यापार को धक्का लगा तथा रेशम व्यापार का पतन हुआ तो फिर नगरीय स्थलों का पतन हुआ। पुरा-तात्विक साक्ष्य इन नगरीय स्थलों के पतन की ओर इंगित करता है उनका मानना था कि यह वह काल था जब न केवल बाह्य व्यापार का पतन हुआ था बल्कि आंतरिक व्यापार का भी सामंतीकरण हो चुका था। आंतरिक व्यापार के सामंतीकरण का आशय है कि मध्यस्थ और बिचौलियों का उद्भव और उनके द्वारा चुंगी लगाना।

फिर आगे उनका मानना है कि 10वीं सदी के पश्चात स्थिति में परिवर्तन आया। पश्चिम एशिया में एक वृहद अरब साम्राज्य का निर्माण हुआ इसने फिर एक बार भारतीय वस्तुओं की माँग बढ़ा दी इस प्रकार बाह्य व्यापार पुनर्जीवित हुआ फिर ~~यह~~ वह काल था जब कृषि का प्रसार, सिंचाई तकनीकी में विकास तथा नगदी फसलों के प्रचलन के कारण एक सम्पन्न भूमिधारी वर्ग का उद्भव हुआ और इसके द्वारा विलासिता संबंधी वस्तुओं की माँग

बटाई गयी इस कारण आंतरिक व्यापार भी जीवित हुआ। इन सभी के परिणामस्वरूप 10 वीं सदी में एक बार फिर ~~नवसे~~ आंतरिक व्यापार पुनर्जीवित हुआ। इसको तृतीय नगरीकरण का नाम दिया गया। ~~किस~~

<u>दूसरा दृष्टिकोण</u> – B. D. चट्टोपाध्याय और रणबीर चक्रवर्ती जैसे विद्वानों ने इस मान्यता को चुनौती दी है उन्होंने निम्न आधार पर इस मत का खण्डन किया है—

① भले ही पुरातात्विक साक्ष्य नगरों के पतन की ओर संकेत करते है ये पुरातात्विक साक्ष्य अप्रर्याप्त है इनके समानांतर साहित्यिक साक्ष्य में विभिन्न नगरों का जिक्र मिलता है।

② अगर कुछ नगर लुप्त हुए तो कुछ नए नगर भी स्थापित हुए मालवा तक उत्तर-भारत में विभिन्न नगरों की सूचना प्राप्त होती है।

③ अगर ह्वेनसांग ने अपने विवरण में कपिलवस्तु, श्रावस्ती आदि जैसे पतनशील नगरों का जिक्र ~~मिलता~~ किया है तो बनारस जैसे कुछ समृद्धि नगरों की भी चर्चा की है।

④ रणबीर चक्रवर्ती का मानना है कि नगरों के निर्माण में बाह्य व्यापार की नहीं बल्कि <u>कृषि आधिशेष की भूमिका</u> रही है और जब इस काल में कृषि अर्थव्यवस्था का प्रसार हो रहा था तो नगरों का पतन कैसे सम्भव था?

⑤ इस काल में कला और साहित्य के क्षेत्र में व्यापक प्रगति देखी गई थी वस्तुतः कला और साहित्य को संरक्षण एक नगरीय जनसंख्या ही दे सकती थी।

KD Job Updates

निष्कर्ष – उपरोक्त तथ्यों के प्रकाश में हम ऐसा कह सकते है कि भले ही गंगा घाटी में नगरीकरण में कुछ ~~शिथिलथा~~ शिथिलता आ गयी हो अथवा कुछ नगरों का पतन हो गया हो परन्तु इस अखिल भारतीय स्तर पर नगरों के पतन की प्रवृत्ति से इसे जोड़ना तार्किक नहीं लगता।

Q:- क्या आप पूर्व मध्यकाल को मौद्रिक रुग्णता का काल मानते है?

पूर्व मध्यकाल में व्यापार और मुद्रा प्रयोग के परस्पर संबंधों के आधार पर प्रायः दो प्रकार के दृष्टिकोण देखने को मिलते है। एक दृष्टिकोण के अनुसार पूर्व मध्यकाल तक व्यापार एवं मुद्रा अर्थ-व्यवस्था का पतन हुआ एक दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार इस धारणा का खण्डन किया गया है। इस विषय में किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले तथ्यों की गहराई से परीक्षण करने की जरूरत है।

पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर गुप्तकाल के पश्चात न केवल मुद्राओं की कमी बल्कि मुद्रा बनाने वाले साँचों की कमी भी दर्शायी गयी है, परन्तु वहीं समकालीन (साहित्यिक) साक्ष्य अनेक मुद्राओं का जिक्र करता है इतना ही नहीं बड़ी संख्या में कौड़ियों का प्रचलन भी देखा जा सकता था। इनका प्रयोग भी

KD Job Updates

मुद्राओं की तरह हो रहा था फिर दक्षिणी पश्चिमी बंगाल से मुद्राओं के साक्ष्य मिले है और गहड़वाल शासकों से संबंधित सिक्कों का एक ढेर भी प्राप्त हुआ है इसके अतिरिक्त जे० एस० डेयल नामक विद्वान यह सिद्ध करने का प्रयास करते है कि परंपरागत मुद्रा की अनुपलब्धि मौद्रिक रूग्णता की स्थिति नहीं मानी जानी चाहिए। यूरोप से दृष्टांत लेकर वे बताते है कि कई बार धातुओं की कमी होने की स्थिति में कुछ अन्य चीजों का प्रयोग भी मुद्रा के रूप में आरम्भ हो जाता था।

निष्कर्ष— उपरोक्त तथ्यों के प्रकाश में यह कहा जा सकता है कि यद्यपि इस काल में कुछ परंपरागत मुद्रा अनुपस्थित दिखते है परन्तु इसे मौद्रिक रूग्णता से नहीं देखा जाना चाहिए।

KD Job Updates

पूर्व मध्यकाल में सामाजिक स्थिति —

विशेषताएँ —

① ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान के कारण वर्ण व्यवस्था का जटिल होना।

② इस काल में जाति से उपजातियों का विकास हुआ तथा कुलमिलाकर जातियों की संख्या बढ़ी। इसका कारण था एक तरफ जनजातीय समूह का जाति समूह में ढलना वहीं दूसरी तरफ विभिन्न शिल्प समूहों का भी जनजातीय समूह के रूप में ढलना। एक विदेशी लेखक अलबरूनी ने 4 वर्ण एवं 8 अंतर्ज्यातीयों का विवरण दिया है वहीं इब्न खुर्दादब नामक विद्वान ने 7 जातियों का जिक्र किया है, कल्हण 64 जातियों का विवरण देता है दूसरी तरफ इस काल के ग्रन्थ ब्रह्मवैवर्त पुराण में 100 जातियों का विवरण प्राप्त होता।

③ वैश्यों की सामाजिक दशा में क्रमिक गिरावट और शूद्रों की दशा में सुधार के परिणामस्वरूप दोनों की स्थिति लगभग समान हो गयी। अलबरूनी अपने विवरण में यह लिखता है कि वैश्य एवं शूद्र दोनों एक साथ निवास करते थे और दोनों में किसी को भी वेद पाठ्य करने or उनका श्रवण करने का अधिकार नहीं था।

④ महिलाओं की स्थिति में दोहरा मानदण्ड देखने को मिलता है

KD Job Updates

एक तरफ उसे कुछ अधिकार दिये जाने के साक्ष्य मिलते है यथा याज्ञवल्क्य स्मृति पर विज्ञानेश्वर के द्वारा लिखित टिका से यह ज्ञात होता है कि महिलाओं की सम्पत्ति विषयक अधिकारों में वृद्धि हुयी साथ ही इस काल में स्वयंवर की स्वीकृति देकर राजकीय परिवार में स्त्रियों को वर चयन का अधिकार मिला परन्तु व्यवहार में उनकी सामाजिक स्थिति और भी नीचे गिरी। बाल विवाह, सतीप्रथा जैसी सामाजिक बुराईयाँ पहले से ही प्रचलित थी अब ~~उन्हें~~ एक नई सामाजिक बुराई के रूप में जौहर प्रथा का प्रचलन हुआ।

(5) इस काल में अछूतों की संख्या में भी वृद्धि देखी गई है। दो कारणों से इस व्यवस्था को प्रोत्साहन मिला प्रथम जनजातीय तत्वों का आगमन दूसरा ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान के कारण कुछ पेशों से जुड़े हुए लोगों का सामाजिक स्तर नीचे गिर जाना।

अलबरूनी का विवरण —

* महमूद गजनवी के साथ भारत आया।
* संस्कृत का अध्ययन कर ग्रन्थ को पढ़ा।

अलबरूनी 11वीं सदी के आरम्भ में महमूद गजनवी की सेना के साथ हिन्दुस्तान आया था परन्तु इसने स्वतंत्र रूप में भारत का अवलोकन कर अपना एक विवरण

KD Job Updates

किताब-उल-हिन्द नामक ग्रन्थ में छोड़ा।

अलबरूनी के विवरण का महत्व-

① यह आधिकारिक दृष्टिकोण को व्यक्त नहीं करता है और यह राजकीय प्रभाव में नहीं लिखा गया है दूसरे शब्दों में यह दरबारी लेखन का उदाहरण नहीं है।

② अलबरूनी भारतीय समाज और संस्कृति के अध्ययन में गहरी अभिरूचि रखता था इसलिए उसने सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का भी अंकन किया है।

③ ग्यारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारत के समाज और संस्कृति के अध्ययन के लिए हमारे पास अध्ययन का कोई दूसरा स्त्रोत उपलब्ध नहीं है।

विवरण के प्रमुख अंश —

① उस काल में भारतीय अभिजात्य वर्ग के संकीर्ण दृष्टिकोण का अध्ययन करते हुए अलबरूनी कहता है कि हिन्दू अहंकारी एवं आत्माभिमानी होते है उनका मानना है कि उनके देश से बढ़कर कोई दूसरा देश नहीं है, उनके राजा से बढ़कर कोई दूसरा राजा नहीं है, उनके विज्ञान से आगे किसी दूसरे क्षेत्र का विज्ञान नहीं है परन्तु अलबरूनी ने यह स्वीकार किया कि उनके पूर्वज ऐसे नहीं थे।

② वह कहता है कि हिन्दू छुआ-छूत में अत्यधिक विश्वास करते थे किसी अपवित्र चीज को आग से शुद्ध किया जाता था अगर कोई वस्तु मुसलमान के सम्पर्क में आ जातीये उसे त्याग देते इतना तक कि यदि थोड़ा भी मुस्लिमों द्वारा

KD Job Updates

पकड़ लिया जाता है तो वह बहिष्कृत हो जाता।

③ इसने वर्णव्यवस्था पर प्रकाश डालते हुए बताया है कि 4 वर्ण 4 अंगों से निकले है क्षत्रिय ब्रह्मा के भुजा से निकला है इसलिए ब्राह्मणों से अधिक नीचा नहीं है इसने यह भी इंगित किया है कि भारतीयों में इस मुद्दे पर गहरा मतभेद है कि मोक्ष का अधिकारी कौन है। कुछ केवल उच्च वर्ग को इसका अधिकारी मानते है तो वहीं कुछ अन्य सभी वर्णों को इसका अधिकारी मानते है।

④ वह वैश्यों और शूद्रों की समान स्थिति का बात करता है।

⑤ वह राजपरिवार में सती प्रथा का भी जिक्र करता है

⑥ वह भारत में तीर्थयात्रा, व्रत, उत्सव का जिक्र करता है वह बनारस, कन्नौज, कुरुक्षेत्र आदि को महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल बनाता है।

⑦ वह हिन्दुओं की कुछ विचित्र आदतों की भी चर्चा करता है यथा वे खाने से पहले मदिरा का सेवन करते, वे शरीर के बाल एवं नाखून नहीं काटते, वे पान खाते, थूक फेंकते, छोटे समय खर्राटा लेते और छोटी-छोटी बात पर अपनी पत्नी से राय लेने जाते।

KD Job Updates

13/12/2018

सीमाएँ—

(1) अलबरूनी का विवरण वास्तविक अवलोकन पर कम तथा ग्रन्थों के अध्ययन पर अधिक आधारित है। इसलिए कई स्थलों पर यह वर्णन अयथार्थ प्रतीत होता है।

(2) किताब-उल-हिन्द से उस काल के सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास पर प्रकाश तो पड़ता है परन्तु आर्थिक राजनीतिक इतिहास पर नहीं।

(3) इस विवरण में कहीं भी राजपूत शब्द का प्रयोग नहीं दिखता जबकि यह राजपूत काल है।

M.Q.

- अलबरूनी के विवरण के विशेष परिप्रेक्ष्य में 8-12वीं सदी के बीच उत्तर-भारत के समाज के महत्वपूर्ण लक्षणों को स्पष्ट कीजिए।

- अध्ययन स्त्रोत के रूप में अलबरूनी के विवरण के महत्व का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

निष्कर्ष → अलबरूनी का विवरण 11वीं सदी का एक मात्र साक्ष्य /साहित्यिक स्त्रोत है, जिसमें भारत की सामजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

KD Job Updates

पूर्व मध्यकालीन धर्म

पूर्व मध्यकाल में धर्म के क्षेत्र में सामान्य प्रवृत्तियाँ

① आर्य एवं गैर - आर्य तत्वों के बीच धर्म के क्षेत्र में सम्मिश्रण होता रहा यह सम्मिश्रण पुराणों में देखने को मिलता है वस्तुतः पुराण वेदों की परंपरा से इस रूप में भिन्न दिखते है कि इसमें महान और लघु का मिश्रण देखने को मिलता है।

② हरिहर की परिकल्पना में धार्मिक सद्भाव की स्थिति देखने को मिलती है क्योंकि एक ही साथ शिव और विष्णु की मूर्तियाँ बनने लगी।

③ उत्तर - भारत में तंत्रवाद की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला और इसने लगभग सभी धार्मिक पंथों पर अपना प्रभाव छोड़ा।

④ धर्म के क्षेत्र में स्त्री तत्वों की प्रधानता बढ़ी

⑤ दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन का आरम्भ हुआ

उत्तर-भारत

तंत्रवाद का विकास—

गैर आर्य तत्वों के प्रभाव से तंत्रवाद का विकास हुआ धर्म के क्षेत्र में स्त्री तत्वों की

तंत्रवाद आगे चलकर नाथपंथ के रूप में बदल गया जो कबीर तक पर अपना प्रभाव छोड़ा।

KD Job Updates

प्रधानता बढ़ी।

विशेषताएँ—

① तंत्रवाद में स्त्री तत्वों पर बल देते हुए यह घोषणा की कि पुरुषों की क्रियाशीलता को बनाये रखने के लिए महिलाओं का सहचर्य आवश्यक है

② इसने वामाचार्य पर बल दिया अर्थात् पंचमकारों की साधना पर विशेष बल दिया गया ये थे माँस, मदिरा मैथुन, मत्स्य और मुद्रा।

③ इसने मोक्ष की जगह सांसारिक और लौकिक जगत पर विशेष बल दिया।

④ यह ब्राह्मणवाद के विपरीत निम्न तत्वों का प्रतिनिधित्व करता था—

विभिन्न धार्मिक पंथों पर इसका प्रभाव—

1. बौद्ध पंथ— वज्रयान शाखा का विकास

2. ब्राह्मण पंथ—

a- शैव पंथ- कापालिक और कालामुख उपसम्प्रदाय का विकास

b- वैष्णव पंथ – सहजयान शाखा का विकास

c- मातृदेवी की उपासना

d- आगे नाथ पंथ का विकास— नाथपंथ का संस्थापक मत्स्येन्द्रनाथ परन्तु आगे का महत्वपूर्ण संत गोरखनाथ।

3. जैन पंथ— यद्यपि जैन पंथ पर इसका सबसे कम प्रभाव परन्तु इसके अन्तर्गत ही यक्ष एवं यक्षणी की पूजा आरम्भ।

KD Job Updates

भक्ति आंदोलन को आरम्भ करनेवाले संत अलवार और नयनार संत शिल्पी समूह से आए थे।

भक्ति आंदोलन एक सामाजिक आंदोलन के रूप में

① इसने ब्राह्मणवादी अभिजात्य वाद की प्रतिक्रिया में निम्न जाति एवं महिलाओं के लिए भी धर्म का दरवाजा खोल दिया।

② इसका बल मोक्ष की जगह सांसारिक और लौकिक बातों पर रहा। उदाहरण के लिए इसमें साँप और बिच्छु के विष को उतारने के लिए मंत्र का प्रावधान था तथा अन्य प्रकार के बीमारियों से छुटकारा हेतु भी मंत्र का प्रावधान।

③ इसने मंदिर एवं उपासना की ब्राह्मणवादी पद्धति का ~~किया~~ विरोध किया।

④ इसके अन्तर्गत महिलाओं की उच्च स्थिति स्वीकार की गई। महिला को गुरु का दर्जा भी प्राप्त होता।

इसने किस प्रकार ब्राह्मणवादी पितृसत्तावाद को चुनौती दी — (पुरुष प्रधानता)

① तंत्रवाद में स्त्री तत्वों को महत्व दिया गया तथा इसमें स्त्री की आवश्यक भूमिका स्वीकार की गई।

② देवियों की पूजा का महत्व बढ़ा, बंगाल में मनसा देवी तथा तमिलनाडु में मीनाक्षी देवी जैसी देवियों

KD Job Updates

को उच्च स्थान प्राप्त हुआ वहीं आन्ध्रप्रदेश में ~~ममता~~ पद्मा देवी को महत्व मिला।

③ धर्म के क्षेत्र में महिलाओं को प्रवेश मिला तथा पुरुषों के ~~ही~~ साथ उन्हें समान दर्जा प्राप्त हुआ।

④ इनमें महिलाओं को उच्च स्थान मिला उन्हें गुरू का दर्जा भी प्राप्त हो जाता।

पितृसत्तावाद के विरुद्ध चुनौती की सीमा —

यह चुनौती धर्म के क्षेत्र तक ही सीमित रही तथा सैद्धांतिक स्तर पर ही कायम रही। व्यावहारिक स्तर पर यह समाज सुधार आंदोलन का रूप नहीं ले सकी।

प्रासंगिकता —

तंत्रवाद विशेषकर नाथपंथ का प्रभाव आगे भी बना रहा नाथपंथ के द्वारा निराकार ईश्वर तथा योग की साधना पर विशेष बल दिया गया। इसने उन तत्वों का प्रतिनिधित्व किया जो समाज के हासिये पर थे अतः ब्राह्मणवाद और जाति व्यवस्था का यह कट्टर आलोचक बना रहा फिर आगे इसने भक्ति आंदोलन एवं सूफी पंथ पर भी अपना प्रभाव छोड़ा। महाराष्ट्र धर्म तथा कबीर एवं नानक के विचारों में जो जाति व्यवस्था के विरोध का स्वर है उस पर नाथपंथ का प्रभाव माना जा सकता।

KD Job Updates

M.Q.

1 भारतीय धार्मिक पंथों पर तंत्रवाद के प्रभाव को दर्शाइए यह ब्राह्मणवादी पितृसत्तावाद को कहाँ तक चुनौती दे सका

भक्ति आंदोलन

दक्षिण-भारत में भक्ति आंदोलन के उद्‌भव एवं प्रसार के कारण —

① बताया जाता है कि पल्लवों और चोलों के अधीन मंदिर के परिसर में शिल्पियों को बसाया गया तथा उन्हे उत्पादन में लगाया गया इसकारण उनकी आर्थिक स्थिति थोड़ी बेहतर हुयी तथा फिर बेहतर आर्थिक स्थिति ने उनकी सामाजिक अपेक्षाओं को भी बढ़ाया।

② दक्षिण में जैन एवं बौद्ध पंथ के प्रभाव को सीमित करने में भी भक्ति आंदोलन ने भी अपनी भूमिका निभाई।

③ भक्ति आंदोलन के माध्यम से ब्राह्मणों ने भी अपने आप को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया था।

उत्तर तथा दक्षिण-भारत की भक्ति —

उत्तर में पुराणों पर आधारित भक्ति जब दक्षिण आयी तो वह संगम साहित्य के द्वारा प्रतिपादित प्रेम के तत्व से जुड़ गयी। इसलिए दक्षिण की भक्ति

KD Job Updates

में उत्तर की भक्ति की तुलना में भावनात्मक तत्व अधिक प्रबल हो गया।

आरम्भ में भक्ति आंदोलन धार्मिक आंदोलन के साथ-साथ सामाजिक आंदोलन का भी रूप लिया यद्यपि अलवार (विष्णु भक्त) तथा नयनार (शिव भक्त) संत मिश्रित जाति समूह से आए थे जिनमें निम्न एवं उच्च दोनों जाति के लोग थे परन्तु इन संतो ने जाति विभाजन को नजरअन्दाज किया था और धार्मिक समानता के साथ सामाजिक समानता पर भी बल दिया था।

भक्ति संत

परंपरा के अनुसार 12 अलवार तथा 63 नयनार संतो का विवरण प्राप्त होता है। अलवार संतो के द्वारा प्रबन्धम का संकलन किया गया अलवार संतों में एक पाड्य शासक कुलशेखर तथा एक महिला संत अंदाल का भी विवरण प्राप्त होता है। नयनार संतों में अप्पर, ज्ञानसंबंदर तथा सुन्दरमूर्ति जैसे संत महत्वपूर्ण थे। आगे इन संतों की जीवनी का संकलन शेकिकलार के द्वारा पेरीयपुराणम नामक ग्रन्थ में किया गया।

इन संतों के लोकजीवन में अत्यधिक महत्व प्राप्त था तथा इन्हें अत्यधिक सम्मान मिला इनके भजन काफी

KD Job Updates

लोकप्रिय हुए इनके द्वारा दक्षिण में विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा कर महत्वपूर्ण स्थलों की पहचान की गई आगे इन स्थलों पर मंदिरों का निर्माण हुआ फिर इन मंदिरों में इनकी मूर्तियाँ भी स्थापित हुई।

आचार्यों का आगमन –

जैसा कि हम जानते है कि ये संत मिश्रित जाति से आए थे वहीं आचार्य ब्राह्मण पृष्ठभूमि से थे इन आचार्यों में नाथमुनि, यमुनाचार्य तथा रामानुजाचार्य (12वीं सदी) प्रमुख थे। इन आचार्यों ने भक्ति के विकास में निम्न भूमिका निभाई–

(1) प्रबन्धन की परंपरा को वेदों से जोड़ दिया— इस प्रकार इन्होंने लोक तत्व एवं अभिजात्य तत्वों के बीच सामंजस्य लाने का प्रयास किया।

(2) भक्ति को एक स्पष्ट दर्शन का आधार दिया— रामानुज ने शंकर के अद्वैत की अवधारणा में यथा संभव संशोधन लाकर उसे भक्ति भावना के अनुकूल बना दिया। इसे निम्न रूप में समझा जा सकता है—

(a) शंकर ने यह स्थापित करने का प्रयास किया था कि ब्रह्म एवं जीव दोनों एक तत्व से निर्मित है तथा एक है। रामानुज ने यह घोषित किया कि यद्यपि दोनों

ब्रह्म & जीव
शंकर – एक है
रामानुज – एक सत्व है, ब्रह्म-परिणाम, जीव-गुण

KD Job Updates

एक तत्व से निर्मित है परन्तु एक नहीं है। ब्रह्म अगर परिणाम है तो जीव उसका गुण है।

(b) शंकर के अनुसार मोक्ष के लिए ज्ञान आवश्यक है परन्तु रामानुज ने ज्ञान के महत्व को स्वीकार करते हुए भी ईश्वर की कृपा पर विशेष बल दिया।

(c) शंकर के अनुसार जीव की मुक्ति ब्रह्म में लीन हो जाने में है वहीं रामानुज के अनुसार जीव की मुक्ति ब्रह्म से मिलने तथा उस मिलन का साक्षी बनकर आनन्द को महसूस करने में है।

(3) भक्ति आंदोलन को वर्ण विभाजन से जोड़ना—

अलवार और नयनार संतों ने धार्मिक समानता के साथ सामाजिक समानता की भी बात उठायी थी परन्तु आचार्यों ने वर्ण विभाजन को स्वीकृति प्रदान की। रामानुज ने द्विवादी फार्मूला के तहत भक्ति आंदोलन को वर्ण विभाजन से जोड़ दिया। अर्थात धर्म के क्षेत्र में सभी समान थे परन्तु सामाजिक क्षेत्र में जाति विभाजन बना रहा था।

दक्षिण-भारत में भक्ति आंदोलन का योगदान—

इस परिवर्तित भक्ति आंदोलन ने 12वीं सदी के बाद दक्षिण भारत के इतिहास में निम्न भूमिका निभाई—

इसके माध्यम से ब्राह्मणों ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली तथा दक्षिण में लगभग बौद्ध एवं जैनपंथ का सफाया हो गया।

KD Job Updates

(२) विभिन्न नवोदित राजवंशों (नवीन) ने भक्ति एवं ब्राह्मणों को संरक्षण देकर अपने राजत्व के लिए वैधता प्राप्त की उनके द्वारा मंदिरों का निर्माण (कराया गया) फिर चोल शासकों ने मन्दिरों में अपनी प्रतिमाएँ भी स्थापित करायी।

यह कहना क्या उचित है कि शंकराचार्य के अद्वैत में भक्तिवाद की जड़ ही काट दी ? —

यह सही है कि सैद्धांतिक स्तर पर शंकर का अद्वैत भक्ति की अवधारणा के विपरीत प्रतीत होता है शंकर ने ब्रह्म एवं जीव की एकता की बात कही ईश्वर के निराकार रूप की परिकल्पना की तथा ज्ञान की पद्धति पर अतिशय बल दिया। ये सभी कारक भक्ति भाव के विरोधी प्रतीत होते है।

परन्तु व्यवहार के स्तर पर शंकर ने भक्ति का समर्थन कर दिया। निम्न कारकों के आधार पर हम इसे सिद्ध कर सकते है —

(1) उन्होंने विद्वान एवं जनसामान्य दोनों के समक्ष धर्म की अलग-अलग अवधारणा प्रस्तुत की जहाँ विद्वानों के समक्ष उन्होंने अद्वैत चिंतन प्रस्तुत किया वहीं जनसामान्य के बीच मूर्तिपूजा को भी स्वीकृति दे दी। उन्होंने यह घोषित किया कि ब्रह्म ब्रह्मा के रूप में सृष्टि के निर्माणकर्ता। विष्णु के रूप में पालनहार और

KD Job Updates

शिव के रूप में संहारक की भूमिका निभाई।

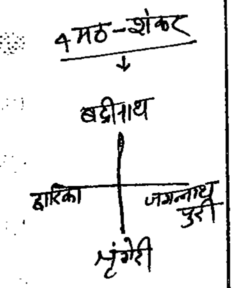

② उन्होंने हिन्दू धर्म की भावात्मक एकता को देखकर भारत के 4 दिशाओं में 4 मठों की स्थापना करवाई। यथा उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में शृंगेरी, पूर्व में जगन्नाथपुरी और पश्चिम में द्वारिका।

③ वे जीवन पर्यन्त शिव और पार्वती के भक्त बने रहे पार्वती की उपासना पर उन्होंने एक पुस्तक भी लिख डाली।

इस प्रकार शंकर भले ही स्वयं ज्ञानमार्गी रहे परन्तु उन्होंने कुछ ऐसे सूत्र छोड़ दिए जिन्हें आधार बनाकर परवर्ती काल के आचार्य भक्ति की ओर मुड़ गए इसलिए ऐसा मानना उचित नहीं लगता कि शंकर ने भक्ति की जड़ ही काट दी।

KD Job Updates

Deepak PHOTOSTAT
9310521834

18/12/2018

लिंगायत or वीरशैव (कर्नाटक)

दक्षिण मे भक्ति आंदोलन के समानान्तर एक और धार्मिक आंदोलन हुआ था जिसका केन्द्र कर्नाटक था और इसके संस्थापक (बासवन्ना) था जो 12वीं सदी में कलचुरी वंश के संस्थापक विज्जल कलचुरी के यहाँ मंत्री के पद पर रहा था वैसे वीरशैव की परंपरा से 5 संतों को जोड़ा जाता रहा है। वीरशैव के अनुयायी चाहे वे पुरूष हो or स्त्री अपने बाएँ कंधे पर शिवलिंग लेकर चलते थे और उनमें यह धारणा थी कि मरने के पश्चात वे शिव में लीन हो जाएँगे और दुबारा जन्म नहीं लेंगे अत: इन्हें लिंगायत के नाम से भी जाना गया। इनके ग्रन्थ को वचन शास्त्र कहा गया।

वैसे तो इसे भक्ति आंदोलन के एक भाग के रूप में देखा गया है परन्तु भक्ति आंदोलन की तुलना में इसमें सामाजिक प्रतिरोध का बल अधिक रहा है।

इसने ब्राह्मणवाद, मूर्तिपूजा, मंदिर जैसे आडम्बरों का विरोध कर धर्मसुधार को प्रोत्साहन दिया इसी प्रकार बाल विवाह जाति विभाजन, विधवाओं की निम्न दशा आदि का विरोध कर इसने समाज सुधार की भी पहल की

KD Job Updates

राज परिवार की एक महिला महादेवी अक्का वीरशैव संत के रूप में स्थापित हुयी वर्तमान में भी कर्नाटक के सामाजिक जीवन में लिंगायत की महत्वपूर्ण भूमिका बनी हुयी है इतना ही नहीं ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत इसने समाज सुधार को बल प्रदान किया था।

KD Job Updates

चोल साम्राज्य

दक्षिण भारत में चोल साम्राज्य का उद्भव एक महत्वपूर्ण घटना सिद्ध हुयी चोलों के अधीन दक्षिण भारत में एक बड़े क्षेत्र को न केवल एक साम्राज्य के अन्तर्गत संगठित किया गया बल्कि चोलों ने दक्षिण एशिया से लेकर दक्षिण पूर्व एशिया तक अपनी नौसैनिक शक्ति की धाक जमा दी इतना ही नहीं उत्तर-भारत में बंगाल का अभ्यांकर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि न केवल दक्षिण भारत की बल्कि समस्त भारत की वे प्रबल शक्ति बन चुके थे। यह एक दिलचस्प तथ्य है कि जिस समय उत्तर-भारत का क्षेत्र महमूद गजनी के घुड़सवार सेना द्वारा रौंदा जा रहा था तथा महमूद गजनी हिन्दुस्तान के एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल सोमनाथ को लूटकर अपनी सैन्य क्षमता को सिद्ध कर रहा था उस समय चोल दक्षिण-पूर्व एशिया में अपनी प्रबल नौसैनिक क्षमता के बल पर सबसे प्रतिष्ठित साम्राज्य शैलेन्द्र साम्राज्य को विवश कर चुके थे।

KD Job Updates

चोल कालीन प्रशासन :—

चोल कालीन प्रशासन के अध्ययन में इतिहास लेखन की समस्या :—

केन्द्रीकृत राज्य की संकल्पना —

(विघटन व संगठन — सम्राट, सामन्त)

एक प्रमुख विद्वान नीलकण्ठ शास्त्री ने चोल साम्राज्य की तुलना बिजेन्टीयाई साम्राज्य से की जहाँ ऊपर के स्तर पर केन्द्रीकरण रहा था जबकि नीचे के स्तर पर गणतंत्र।

खण्डित राज्य की अवधारणा —

बर्टेनस्टीन ने चोल राज्य के अध्ययन में खण्डित राज्य की अवधारणा दी है इसने यह मॉडल दक्षिणी अफ्रीका को अल्लूरी समाज से लिया है एक विद्वान के० साउथ हॉल ने यह मॉडल अल्लूरी समाज के अध्ययन में अपनाया था।

1980 में बर्टेनस्टीन के द्वारा प्रतिपादित इस अवधारणा ने चोल राज्य के अध्ययन के सन्दर्भ में एक बड़ा विवाद छेड़ दिया उनका बल निम्न बातों पर रहा है—

(1) खण्डित राज्य की अवधारणा के अनुसार अनुष्ठानिक प्रधान और वास्तविक प्रधान में अंतर होता है। चोल शासक अनुष्ठानिक प्रधान ~~में अंतर होता है।~~ तो थे परन्तु वास्तविक प्रधान नहीं क्योंकि निचले स्तर के प्रशासन पर इनका नियंत्रण नहीं था।

KD Job Updates

② निचले स्तर पर नाडु एक स्वयत्त प्रशासनिक इकाई थी यहाँ पर ब्राह्मणों एवं वेल्लारों के गठबन्धन का वर्चस्व था परन्तु सत्ता केन्द्र का नियंत्रण नहीं था।

③ चूँकि निचले स्तर के प्रशासन एवं राजस्व पर राज्य का नियंत्रण नहीं था इसलिए राजा के पास कोई संगठित सेना नहीं होती अतः वह भाड़े के सैनिकों की सहायता से अपनी आवश्यकता पूरा करता था।

उपरोक्त मत का निम्नलिखित आधार पर खण्डन —

① स्टीन महोदय ने ~~निचले~~ स्तर पर ब्राह्मणों एवं वेल्लारों के गठबन्धन की बात की है जबकि सच्चाई यह थी कि राजा के द्वारा ब्रह्मदेय अनुदान इसलिए दिये गए थे कि निचले स्तर पर ब्राह्मण राज्य के प्रभाव क्षेत्र को स्थापित कर सके।

② यह सही है नाडु के स्तर पर प्रशासन को स्वयत्ता प्राप्त थी परन्तु यह भी सही है कि राज्य के द्वारा मंडल एवं वल्लनाडु जैसी प्रशासनिक इकाई स्थापित कर नाडु की स्वयत्ता को दबाने का प्रयास किया गया था इस प्रकार केन्द्रीकरण की दिशा में कदम उठाया गया था।

KD Job Updates

③ फिर हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि चोल शासक राजराजा -1 और कुलोत्तुंग -1 के द्वारा भूमि माप कराए जाने का साक्ष्य मिलता है यह तथ्य दर्शाता है कि राजा राजस्व के प्रति (संग्रहण) सजग था।

सामंतवाद का मॉडल :—

सुब्बारायालु और काराशिमा जैसे विद्वान खण्डित राज्य की अवधारणा को अस्वीकार करते हुए सामंतवाद के मॉडल के आधार पर चोल राज्य का अध्ययन करने का प्रयास किया है इसप्रकार बहस आज भी जारी है।

M.Q.

क्या खण्डित राज्य की अवधारणा चोल राज्य के स्वरूप का वास्तविक व्याख्या करने में सक्षम है?

केन्द्रीय प्रशासन (राजा)

- ↓ पेरून्दानम (उच्च अधिकारी)
- ↓ सेरून्दानम (निम्न अधिकारी)
- ↓ ओलैकुट्टम (राजा के द्वारा जो आदेश जारी किया जाता उसपर हस्ताक्षर करता)

केन्द्र
↓
मंडलम (प्रांत)
↓
वलनाडु (जिला)
↓
नाडु (तहसील)
↓
गाँव

KD Job Updates

सामान्य गांव – मिश्रित जनता – उर (स
ब्रह्मदेय गांव } – ब्राह्मण – सभा } – महिलाओं व शूद्रों X
अग्रहार गांव
(शिक्षा प्राप्त हेतु ब्राह्मण समूह)
वर्ष में 1 बार बैठक

समिति (सदस्य हेतु योग्यता / अयोग्यता)
→ सभा
→ उर

चोल कालीन अर्थव्यवस्था :—

चोल कालीन अर्थव्यवस्था का गठन नाडु, ब्रह्मदेय तथा मंदिरों के माध्यम से होता था साथ ही अर्थव्यवस्था को गति देने में राज्य की भूमिका होती थी। राज्य के द्वारा ब्रह्मदेय अनुदान दिया जाता था इसका उद्देश्य था दूरवर्ती क्षेत्र में कृषि का प्रसार जैसा कि हम जानते है कि ब्राह्मणों को कृषि एवं मौसम का ज्ञान होता था इसलिए कृषि के प्रसार में वे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, मंदिर भी कृषि एवं सिंचाई के विकास के लिए कार्य करता था। फिर ग्रामीण सभाओं के द्वारा भी जलाशय तलाब एवं सिंचाई के अन्य साधनों के विकास के लिए कार्य किया जाता।

नौवीं सदी में सुदूर दक्षिण में द्वितीय नगरीकरण में नाडु एवं नगरम की भूमिका :—

जैसा कि हम जानते है कि नर आबाद क्षेत्र को

KD Job Updates

ब्रह्मदेय एवं पुराने गाँव को नाडु के माध्यम से संगठित किया गया था। बताया जाता है कि जिस प्रकार प्रथम नगरीकरण में रोमन व्यापार की भूमिका रही थी उसी प्रकार द्वितीय नगरीकरण में कृषि अधिशेष की भूमिका रही। माना जाता है कि चोलों के अधीन कृषि एवं सिंचाई के विकास के साथ समृद्ध गाँव का विकास हुआ और ये गाँव नाडु के अन्तर्गत संगठित हुए। कृषि अधिशेष ने एक सम्पन्न किसानों के वर्ग को जन्म दिया अब उनकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए कुछ आवश्यक वस्तु की जरूरत पड़ी दूसरे शब्दों में सम्पन्न किसानों के इस वर्ग ने वस्तुओं की माँग को बढ़ा दिया। इस कारण व्यापार को प्रोत्साहन मिला इसलिए संपन्न नाडु के आस-पास नगरम स्थापित होने लगे। नगरम व्यापारियों का संगठन होता था जो किसानों के साथ वस्तुओं का आदान-प्रदान करता था। ये नगरम एक तरफ नाडु से वहीं दूसरी तरफ बंदरगाह उत्पादन केन्द्र से जुड़े हुए थे।

व्यापारियों का समूह ↓ नगरम

कुछ नगरम महत्वपूर्ण व्यापारिक नेटवर्क से जुड़े हुए थे अतः ये नगरम आगे कस्बे एवं नगर के रूप में विकसित होते चले गए फिर यह वह काल था जब दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्वी एशिया के साथ भी गहरे व्यापारिक संबंध कायम हो गए थे। इसके परिणामस्वरूप कुछ

KD Job Updates

महत्वपूर्ण व्यापारिक संगठन यथा नानादेशी, वलंजियर देशसलातुगोंड्डा आदि संगठित हुए और ये दूरवर्ती व्यापार से जुड़ गए। कुछ नगरम भी इन व्यापारी संगठनों से जुड़े हुए थे इस प्रकार नौवीं सदी के पश्चात जो दूसरे नगरीकरण का उद्भव हुआ उसकी जड़ कृषि अधिशेष में थी।

सुदूर दक्षिण की अर्थव्यवस्था में मंदिरों की भूमिका -

Page 41 → 5 Point

सांस्कृतिक योगदान :-

Page 42

KD Job Updates

KD Job Updates

KD Job Updates